

अथ शार्ङ्गधरसंहितायाः सूचीपत्रम्

अथ कलिंगपरिभाषा ॥

इति शार्ङ्गधरप्रथमाध्यायः ॥

इति पञ्चमाध्यायः ॥

अथ षष्ठाध्यायः ॥

इति षष्ठाध्यायः ॥

अथ सप्तमाध्यायः ॥

इति सप्तमाध्यायः॥

(इति प्रथमखण्ड)

इति षष्ठाध्यायः ॥

अथ सप्तमाध्यायः ॥

इति सप्तमाध्यायः ॥

इति द्वादशाध्यायः ॥

(इति मध्यखण्डः)

अथ उत्तरखण्डः ॥

इति प्रथमाध्यायः ॥

अथ द्वितीयाध्यायः ॥

इति द्वितीयाध्यायः ॥

अथ तृतीयाध्यायः ॥

अथ दशमाध्यायः ॥

अथ एकादशाध्यायः ॥

इति एकादशाध्यायः ॥

अथ द्वादशाध्यायः ॥

इति द्वादशाध्यायः ॥

अथ त्रयोदशाध्यायः ॥

इति श्रीमत्कुलशाकिधररिरचितशार्ङ्गधरसंहितायाः सूचीपत्रसमाप्तिमगादितिशिवम् ॥



शार्ङ्गधरसंहिता ॥

भाषाटीकासमेता ॥

श्रियंसदद्याद्भवताम्पुरारिर्यदङ्गतेजःप्रसरेभवानी ।
विराजतेनिर्मलचन्द्रिकायां महौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ १

श्रियमिति स कहे सो श्रीके देनवारे होहु सो पुरारि कैसे हैं जिनके तेजप्रसारित अंग में भवानी विराजमान हैं कैसी हैं भवानी जिनके निर्गत निर्मलमुखमयङ्ककी चन्द्रिकाकहे चादनी प्रकाश करिरही है कांगिव कावीनाई जैसे हिमकहे पाला अद्रिकहे पर्वत हिमाद्रि विषे महाओषधि संजीवन्यादि ज्वलितकहे प्रकाशित होइ रहीहैं यह अर्द्धांगी अनुपम स्वरूप निराकार निर्विकार जगदाधार सदाशिव परमेश्वर ने अनादिरचनादि एकत्वलोपकरि अनेकत्व प्रकाशकरन इच्छामय अदृश्य प्रकृति पुरुषसंयुक्त दृश्यमान अर्द्धांगीस्वरूप धारण किया है इस स्वरूप की महिमा वा उपमा वेदशास्त्र पुराण काव्यादि नहीं कहिसक्ते काहेसे कि एकही रूपहै इस स्वरूप की उपमा उपमाविना है रूपसंयुक्त किये नहीं होसक्ती है और द्वै उपमासे द्वैत भासित होता है इसलिये परमेश्वर की उपमा हिमाद्रि परमेश्वरी की उपमा महौषधि करते भये फिर हिमाद्रिगुण शीतलता भगवती के मुखचन्द्र की चन्द्रिका में घटितकरी और ओषधिन की प्रज्वलिता भगवान् के तेजमें घटित करी अथवा तेज चन्द्रिका का एक ठौर होना असंगत है परन्तु इहां दोनों समान प्रकाश करते हैं क्योंकि भगवती की शीतल चन्द्रिका करिके सदा शांतिमूर्ति सतोगुणी श्वेत कर्पूरवर्ण विश्वनाथ शोभित होरहे हैं और श्रीभगवान् के तेजकरिकै त्रैलोक्यजननी श्रीपार्वतीजी काञ्चनवर्ण दीप्यमान है रही है अर्थात् दोनों उपमा

प्रसिद्धयोगामुनिभिः प्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्ये बहुशाऽनुभू ताः । विधीयतेशार्ङ्गधरेणतेषांसुसंग्रहस्सज्जनरञ्जनाय २ हेत्वादिरूपाकृतिसात्म्यजातिभेदैः समीक्ष्यातुरसर्व्वरो गान् । चिकित्सितंकर्षणबृंहणाख्यंकुर्व्वीतवैद्योविधिवत्सु योगैः ३ दिव्यौषधीनांबहवःप्रभेदा वृन्दारकाणामिवविस्फुरन्ति । ज्ञात्वेतिसन्देहमपास्यधीरैस्सम्भावनीयाविविधप्रभावाः ४ स्वाभाविकागन्तुककायिकान्तरारोगाभवेयुः

अर्द्धांगी सूचित भई क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पायेगये पुरुष की उपमा के गुण प्रकृति में पायेगये पुनरर्थः प्रथम कविलोग अपने इष्टदेवसे मंगलाचरण में याञ्चमानहोइ ग्रंथको घटित करते हैं कि महादेवजीका तेज उष्ण पित्ताधिपति पार्वतीजी की चन्द्रिका शीतल श्लेष्माधिपति और मसारणधर्म वा व्याल भूषण करिके वाताधिपति जैसे गौरीशङ्कर को ये भारूपी गुणसहित सेइरहे तैसे शार्ङ्गधरवेत्ता वैद्यों की सेवा में श्रीयशके देनेवाले होहिंगे कैसा है शार्ङ्गधर जैसे हिमाद्रि महाओषधीन करिकै ज्वलित कहे प्रकाशित होइरहाहै तैसे शार्ङ्गधर महौषधीयुक्त है ॥ १ ॥ शार्ङ्गधर जू कहते हैं कि मैं सज्जन मनुष्यन के मनोरंजन के निमित्त सुश्रुत चरकादि मुनि और श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध योग या शार्ङ्गधर में संग्रहकरि ग्रन्थित करताहूं ॥ २ ॥ प्रथम वैद्य इन पंचप्रकारमें व्युत्पन्नहोय हेतु १ आदिरूप २ आकृति ३ सात्म्य ४ जातिभेद ५ तब पीड़ित रोगी की निदानपूर्वक कर्षण बृंहणादि चिकित्साकरै कर्षण कहे घटावना बृंहणकहे बढ़ावना वातादि दोषन को घटावै हेत्वादिलक्षण हेतु कहे निदान आदिकारण *जिससे रोगकी उत्पत्ति है १ आदिरूप कहे प्रथम रोगी की देहटूटना जँभवाईआवना* २ आकृति कहे चेष्टा मलिनहोना तृष्णा मूर्च्छा सम्भ्रम दाह निद्रानाश ३ सात्म्य कहे रोगीकी अपेक्षा जिस वस्तुको मन चाहै यथा गर्मीलगै पवनप्यासे में पानी वा हितकारक जैसे जाड़ालगै वस्त्र हित करै ४ जाति कहे इन्द्रियपरिज्ञान अपने अङ्गमें सावधान वा विह्वलता ॥ ३ ॥ जैसे वृन्दारक कहे देवतनमें बहुत श्रेष्ठ गुण विस्फुरित कहे प्रकाशित हैं तैसेही दिव्यकहे उत्तम ओषधिन में भी भासित है सो ज्ञात्वा कहे जानिकै धीर वैद्य सन्देह छोड़िकै ऐसी सम्भावना करैं कि मेरे निश्चय से भी अधिक गुण और प्रभाव ओषधिन में है ॥ ४ ॥ और स्वाभाविक

किलकर्मदोषजाः। तच्छेदनार्थंदुरितापहारिणःश्रेयोमया न्योगवरान्नियोजयेत् ५ प्रयोगानागमात्सिद्धान्प्रत्यक्षाद् नुमानतः। सर्वलोकहितार्थायवक्ष्याम्यनतिविस्तरात् ६ प्रथमंपरिभाषास्याद्भैषज्याख्यानकन्तथा। नाडीपरीक्षा दिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ७ ततःकालादिकाख्यानमा हारादिगतिस्तथा। रोगाणांगणनाचैवपूर्वखण्डोऽयमी रितः ८ स्वरसःक्वाथफाण्टौचहिमःकल्कश्चचूर्णकम्। तथै वगुटिकालेहौ स्नेहसन्धानमेवच ९ धातुशुद्धिरसाश्चैव खण्डोऽयंमध्यमःस्मृतः। स्नेहपानंस्वेदविधिर्वमनंचविरे चनम् १० ततस्तुस्नेहवस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरूहणम्।

आगन्तुक कायिक आन्तरिक इन चारों से वा तीनों दोषन से वा प्रारब्धकर्म से रोग होइ ताके नाश करिबे को दुरित कहे पातक प्रहार करनवारे श्रेष्ठ योग वैद्य करै स्वभावादिलक्षण स्वाभाविक विहाराहार विषमता यथा क्षितुक्षुधा गतक्षुधा- राम या हीन विपरीत भोजन वा निर्भोजन योंही तृषा और जन्म से मरणपर्यंत अवस्थासे विपरीत कर्म्म होना १ आगन्तुक शस्त्राघात पतन प्रहार विष मद सर्प पशु पीड़िनादि २ कायिक व्यायाम श्रम मैथुनादि धातुन्यूनाधिकत्वसे दोषन कुपित होना ३ अन्तर मनमें खेद क्रोध चिन्ता शोक मूर्च्छा संन्यास श्वासनिरो- धादि ४॥ ५॥ प्रत्यक्ष से औ अनुमानसे शास्त्रसे जे प्रसिद्धयोग सो लोकके हितार्थ संक्षेप करि कहता हूं॥ ६॥ या शार्ङ्गधर के तीन खण्ड हैं ताके प्रथमखण्ड में पहिले परिभाषा कहे औषधि की तोलकी फिरि भैषज्याख्यान कहा औषधिम- क्षणविधि फिरि नाड़ीपरीक्षा स्वप्न शकुन विचार अरु दीपन अग्निप्रज्वलित क- रना पाचन जो मलको भस्म करि पचावै॥ ७॥ ताके पीछे ओषधिभक्षण समय फिर आहार अन्तरप्रवेश गति कही और रोगोंकी संख्या कही इतनी बातें प्रथम खण्डमें हैं॥ ८॥ (अथ मध्यखण्डेऽनुक्रमणिका) द्रव्यनका रस क्वाथ कही काढ़ा फाण्ट कही द्रव पदार्थ का अग्नियोगसे फाड़ना रातिकी भिजोई ओषधि का प्रातः जल लेइ इसे हिम कहिये कल्ककहे पीठी चूर्ण गोली अवलेह कही चटनी तेल॥ ९॥ धातुशुद्धिरसक्रिया ये मध्यखण्ड में कही (अथोत्तरखण्डानुक्र- मणिका) घृततेल पीना स्वेदविधि ढेकना और ओषधियों से पसीना निकालना

ततश्चाप्युत्तरोवस्तिस्ततोनस्यविधिर्मतः ११ धूमपा
नविधिश्चैव गण्डूपादिविधिस्तथा । लेपादीनांविधिः
स्यातस्तथाशोणितविस्रुतिः । नेत्रकर्मप्रकारश्चखण्डः
स्यादुत्तरस्त्वयम् १२ द्वात्रिंशत्प्रमिताध्यायैर्युक्तेयंसंहिता
स्मृता । षड्विंशतिशतान्यत्रश्लोकानांगणितानिच १३॥

परिभाषा॥ नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांजायतेक्वचित् ।
अतःप्रयोगकार्यार्थंमानमत्रोच्यतेमया १४ जालान्तरगते
भानौयत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः ।तस्यत्रिंशत्तमोभागःपरिमाणुः
सउच्यते १५ त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशतापरिमाणुभिः।त्रस
रेणुस्तुपर्यायेर्नाम्नावंशीनिगद्यते १६ जालान्तरगतैःसूर्य
करैर्वंशीनिगद्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिस्तु
राजिका । तिसृभीराजिकाभिश्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः १७
यवोऽष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुञ्जास्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तुरक्ति
काभिःस्यान्माषकोहेमधान्यकौ। माषैश्चतुर्भिःशाणःस्या

वमन कही उछार विरेचन कही दस्त ॥ १० ॥ स्नेहवस्ति कहे गुदमार्ग से पिच-
कारी देना निरूहण कहे काढा दूधकी पिचकारी देना उत्तरवस्ति कहे पिचकारी
का विधान अनन्तर नासविधि ॥ ११ ॥ धुवां पीनेकी विधि गण्डूषविधि जिसे
पवनकुल्ला कहते हैं लेपादि की विधि अरु शोणितस्रुति कही रक्त निकालना
नेत्रांजन ये सब उत्तरखण्ड में कहे हैं ॥ १२ ॥ यह बत्तिस अध्याय में कहा
इस में दो सहस्र छःसौ श्लोक हैं ॥ १३ ॥

(परिभाषा) बिनतुली ओषधि अयोग्यहै इसलिये प्रयोगके निमित्त मैं मागध
परिभाषाको कहताहूं ॥१४॥ झरोखोंके छिद्रोंमें जो सूर्यकी आभासे रजकणउड़ते
देखपड़ते हैं उनके तीसवें भागको परिमाणु कहते हैं॥१५॥ किसी २ के मतसे जो
छिद्रमें सूर्यकी किरणें दिखाई पड़ती हैं उस ३० परिमाणुका एक त्रसरेणु होताहै
इसीको वंशी कहते हैं वा छः वंशीकी एक मरीचीछः मरीचीकी एक राई तीन राई
की एक सरसों॥ १६ । १७॥ आठ सरसोंका एक यव चार यवकी गुंजा अर्थात्
रत्ती छः रत्तीका एकमाशा सोई हेम औ धान्यक कहा है चारमाशेका एक

ध्वरणःसनिगद्यते १८ टङ्कःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते। क्षुद्रःकोलवटश्चैवद्रङ्क्षणस्सनिगद्यते १९ कोलद्वयंचकर्षःस्यात्सप्रोक्तापाणिमानिका। अक्षःपिचुःपाणितलंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् २० विडालपदकंचैवतथा षोडशिकामता। करमध्यंहंसपदंसुवर्णंकवलग्रहः २१ उदुम्बरश्चपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते। स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा २२ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयं मुष्टिराम्रंचतुर्थिका। प्रकुञ्चःषोडशीविल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते २३ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते। प्रसृतिभ्यामञ्जलिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः २४ अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यांचमानिका। शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः २५ शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्प्रस्थैस्तथाढकम्। भाजनंकांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् २६ चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोर्म्मणः। उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञितः २७ द्रोणाभ्यांशूर्पकुम्भौचचतुःषष्टिशरावकः।

शाण यही धरण॥ १८॥ यौ टङ्क कहाताहै दो टङ्कका एक कोल उसी को क्षुद्र,कोलवट,द्रंक्षण कहतेहैं॥ १९॥ दो कोलका कर्ष होताहै उसे पाणिमानिका, अक्ष, पिचु,पाणितल,किञ्चित्पाणि,तिंदुक, ॥ २०॥ विडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपद,सुवर्ण,कवलग्रह॥ २१॥ और उदुम्बर कहतेहैं ये सब कर्षके पर्यायहैं दोकर्षको अर्द्धपल,शुक्ति व अष्टमिका कहते हैं॥ २२॥ दो शुक्तिको एकपल औ मुष्टि, आम्र,चतुर्थिका,प्रकुञ्च,षोडशी,बिल्व कहतेहैं ये सब पलकी पर्याय कहिये॥ २३॥ और दोपलकी एक प्रसृति जानना चाहिये औरप्रसृतभी कहते हैं दो प्रसृतको अञ्जलि,कुडव और अर्धशराव कहतेहैं॥ २४॥ और अष्टमान भी कहते हैं दोकुडवको मानिका उसीको जो सदैव है अष्टपल कहते हैं॥ २५॥ दो शरावकी एक प्रस्थ संज्ञा है ४ प्रस्थ वा आठ शराव वा चौसठि पल की आढक संज्ञाहै इसे भाजन औ कांस्यपात्र भी कहते हैं॥ २६॥ चार आढकको एक द्रोण उसके सात नाम हैं कलश, नल्वण, अर्म्मण, उन्मान, घट, राशि द्रोण॥ २७॥ दो द्रोणका एक

शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवाहोगोणीचसास्मृता २८ द्रोणी चतुष्टयंखारी कथितासूक्ष्मबुद्धिभिः। चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिकाचसा २९ पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः। तुलापलशतंज्ञेयंसर्वत्रैवैषनिश्चयः ३० माषटङ्काक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम्। राशिर्गोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः ३१ गुञ्जादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः। द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम् ३२ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः। मानंतथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम् ३३ मृदस्तुवेणुलोहादेर्भाण्डंयच्चतुरङ्गुलम्। विस्तीर्णंचतथोच्चंचतन्मानंकुडवंवदेत् ३४ यदौषधन्तुप्रथमंयस्ययोगस्यकथ्यते। तन्नाम्नैवसयोगोहिकथ्यतेऽत्रविनिश्चयः ३५॥ इति मागधपरिभाषा॥

स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाः कालमग्निंवयोबलम्। प्रकृतिंदोषदेशौच दृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् ३६ यतोमन्दाग्न

शूर्प, कुम्भ इसे चौंसठि शरावभी कहते हैं दोशूर्पकी एकद्रोणी और वाह और गोणी भी कहते हैं॥ २८॥ चारद्रोणी की एक खारी चारिसहस्र छानवे पलकी खारी संज्ञाहै॥ २९॥ दोसहस्र पलको भार कहिये सौपलकोतुला कहिये सब ठौर यही निश्चय जानो॥ ३०॥ माशे से चौगुना टङ्क टङ्कते चौगुना अक्ष अक्षते ४ बिल्व बिल्वते ४ कुडव कुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ४ आढक आढकते ४ राशि राशिते ४ गोणी गोणीते ४ खारी एकते एक चौगुनी जानो॥ ३१॥ गुञ्जाते कुडवलौं सजलवस्तु सम लेना॥ ३२॥ कुडवते तुलालौं सजलीदूनीलेना तुला ते ऊपर ओदी द्रव्य दूनीलेना॥ ३३॥ चारि अंगुल चौड़ा वा ऊंचा समान बासन माटी वा लोहादि किसीका होय उसको कुडवसंज्ञा जानो॥ ३४॥ जिस रोगपर जो औषध कहेंगे तिस में जिस द्रव्यका प्रथम नाम आवै उसीको योग निश्चित करते हैं जो रास्नादिकाथ इसमें प्रथम नाम रास्नाहै॥ ३५॥ इति मागधपरिभाषा॥

(अथ कलिंगपरिभाषा) मात्राका कुछप्रमाणनहीं स्थिरकिया समयअग्नि अवस्था बल प्रकृति रोग देश देखकर वैद्य मात्राका प्रमाणकरै॥ ३६॥ क्योंकि

प्रोहृस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेसुश्रसम्मता ३७ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेवुधैः । यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवल्लउच्यते३८ माषोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् । स्याच्चतुर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टङ्कएवच ३९ गद्यानोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषकः । चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः । चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ४० कालिङ्गंमागधंचेति द्विविधंमानमुच्यते । कालिङ्गान्मागधंश्रेष्ठमितिमानविदोविदुः ४१ नवान्येवहियोज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षिकैः ४२ गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी । अश्वगन्धासहचरौ शतपुष्पाप्रसारणी । प्रयोक्तव्यास्सदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ४३ शुष्कन्नवीनंयद्द्रव्यंयोज्यंसकलकर्मसु । आर्द्रञ्चद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ४४ कालेऽनुक्तेप्रभातंस्यादङ्गेऽनुक्तेजटाभवेत् । भागेऽनु

कलियुगमें मनुष्य मन्दाग्नि लघुशरीर और वलहीन होयगे इससे सद्वैद्योंका मतहै कि मात्रा रोगी को यथायोग्य देनी ॥ ३७ ॥ वारह गौर सरसों का एक यव दो यव की एक गुंजा तीन गुंजाका एक वल्ल कहाताहै ॥ ३८ ॥ आठ गुंजा वथा सात गुंजाका माशा चार माशे का शाण उसी को निष्क और टंकभी कहते हैं ॥ ३९ ॥ छःमाशे का गद्यान दश माशे का कर्ष चार कर्षका पल उसे दश शाणभी कहतेहैं चारि पलका कुडव और प्रस्थादिकोंको प्रथम कही रीतिसे जानो ॥ ४० ॥ कलिंगप्रमाण से मागधप्रमाण सद्वैद्य उत्तम मानते हैं ॥ ४१ ॥ सर्वकर्मों में सब औषध नवीन लेना विना पीपरि, विडंग, धनियां, घी और शहदके ॥ ४२ ॥ गुर्च, कुरैया, रूसा कुम्हड़ा, श्वेतशतावरि, असगन्ध, पात कटसरैया, कृष्णकटसरैया, सौंफ, गंधप्रसारणी ये द्रव्य ओदी दूनी न लेना और सूखी द्रव्य सकल प्रयोगमें नवीन देना और ओदी द्रव्य सूखी से दूनी देना यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४३ । ४४ ॥ जिस औषधिके स्नान पानका काल नहीं कहा उसका प्रातःकाल जानना और जिस औषधिके अंग

क्वचसाम्यंस्यात्पात्रेऽनुक्तेचमृन्मयम् ४५ एकमप्यौषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरुच्यते। मानतोद्विगुणंप्रोक्तंतद्द्रव्यं तत्त्वदर्शिभिः ४६ चूर्णस्नेहासवालेहाः प्रायशश्चन्द नान्विताः। कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचन्दनम् ४७ गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौषधम्। मासद्वयात्तथाचूर्णं हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ४८ हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरा त्परम्। हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ४९ ओषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम्। पुराणाःस्यु र्गुणैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ५० व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगु णोक्तमपितत्त्यजेत्। अनुक्तमपियुक्तंयद्योजयेत्तत्रतद्बुधः॥ आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिर्मतः ५१ अत स्तदौषधानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः। अन्येष्वपिप्ररोह

का नाम नहीं लिखा तहा मूल लेना जहां कई ओषधि हैं और भागभेद नहीं है वहा समभाग लेना जहा ओषधि बनाने के पात्र की जाति नहीं लिखी तहा मा टीकाही पात्र लेना जहा ओषधि को गीली करना होय और रस वा पानी वा दूध सिरका या मूल कुछ नहीं लिखा तहा जान लेना ॥ ४५ ॥ जिस प्रयोगमें प्रक र जहा एकही ओषधि को दोबार लिखें तहा वही ओषधि के दोभाग लेना यह प्रकार तत्त्वदर्शी वैद्य कहते हैं ॥ ४६ ॥ और चूर्ण, तेल, घृत हिम अर्क अवलेह आदिकन में केवल चन्दन लिखा हो तहां श्वेत लेना काढे और लेपमें लालच न्दन लेना ॥ ४७ ॥ वर्षभर ओषधिमेंगुण रहता है फिर कम होजाताहै दोमास बीते चूर्ण क्षीणताको प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥ वर्षबीते गोली अवलेह का गुणहीन होताहै सोलह मास बीते घी, तेल गुणरहित होते हैं ॥ ४९ ॥ वर्षबीते लघुपाक निर्गुण होतेहैं जैसे मेथी, मोदक और दारू, धातु, रस पुराने गुणदायकहोतेहैं ॥ ५० ॥ जो ओषधि रोगको अवगुणदायकहो उसे ग्रंथमें लिखी भी त्यागदेइ और जो रोग को हितकरै सो अनलिखी भी ग्रहणकरै ॥ ५१ ॥ दक्षिणके विंध्याचलादि पर्वत उष्णप्रकृति हैं उनपर उत्पन्न ओषधि भी उष्णप्रकृति होती हैं उत्तर के हिमाद लादि पर्वत शीतल हैं उनपरकी उत्पन्न ओषधि भी ठण्डी होतीहैं और वन

न्ति वनेषूपवनेषुच ५२ गृह्णीयात्तानिसुमनाः शुचिः प्रातःसुवासरे। आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ साधारणंधराद्रव्यं गृह्णीयादुत्तराश्रितम् ५३ वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोपरमार्गजाः । जन्तुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्यसाधकाः ५४ शरद्यखिलकार्यार्थं ग्राह्यंसरसमौषधम् । विरेकवमनार्थंचवसन्तान्तेसमाहरेत् ५५ अतिस्थूलजटायास्तुतासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः । गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ५६ न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्यासारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेश्चपत्राणिफलं स्यात्त्रिफलादितः ॥ धातक्यादेश्चपुष्पाणिस्नुह्यादेःक्षीरमाहरेत्५७॥इतिशार्ङ्गधरेपरिभाषाऽध्यायःप्रथमः १ ॥

वन में जो द्रव्य होती हैं सो जैसा उस पृथ्वीका स्वभाव होताहै वैसाही उसकी उत्पन्न द्रव्यका भी स्वभाव होताहै ॥ ५२ ॥ मनुष्य प्रातःकाल पवित्रहो शुभदिन मौनहोके हृदयमें शिवका ध्यानकरि सूर्यके सन्मुखहो औषधिलावै साधारण जगहकी द्रव्य उत्तर मुखही होके लेना ॥ ५३ ॥ और इतनी जगहकी द्रव्य न लेना सर्पकी बांबी कुत्सितभूमि जहां रणभयाहो श्मशानकी ऊसर जहां रेह चूना निकलता होइ खरमार्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्गकी दलदल कृमिस्थान की दग्धभूमि की पाला मारी हुई इत्यादि भूमिकी द्रव्य कार्य साधक नहीं हैं ॥ ५४ ॥ सर्व कार्य अर्थ शरद्ऋतु में ओदी ओषधि लावै और वमन विरेचन के अर्थ वसन्त के अन्त में ओदी वस्तुलावै ॥ ५५ ॥ और अतिस्थूल वृक्षके जड़की छाल सदैव लेते हैं और सब छोटे वृक्षन की जड़ ग्राह्य है ॥ ५६ ॥ और बरगदादि वृक्षनकी छाल ग्राह्यहै विजयसारादि वृक्षका हीर लीजै तालीसादि वृक्षकी पाती लीजे त्रिफलादिक का फल लीजै धवआदिकके पुष्प लीजै सेंहुड़ादिक का दूध लीजै इस रीति से वही ग्रहणकरै जहां केवल वृक्षका नाम है अङ्ग नहीं है ॥ ५७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यायांपरिभाषाऽध्यायःप्रथमः ॥ १ ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कषायश्चविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः १ ज्ञेयःपञ्चविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि २ प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थंचभैषज्यंप्रभातेतत्समाचरेत् ॥ एवंस्यात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् ३ भैषज्यंविगुणेपाने भोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ४ समानवातेविगुणेमन्दाग्नावग्निदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ५ व्यानकोपेचभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत्। हिक्काक्षेपककम्पेषुपूर्वमन्तेचभोजनात्॥एवंद्वितीयःकालश्चप्रोक्तोभैषज्यकर्मणि ६ उदानेकुपितेवातेस्वरभङ्गादिकारिणि। ग्रासेग्रासान्तरेदेयंभैषज्यंसान्ध्यभोजने ७ प्राणेप्रदुष्टेसान्ध्यस्यभु

वैद्यलोग ओषधि सभेरे खवावैं और कषायादि विशेष प्रातःकाल में फांट हिम स्वरस कल्क मावश्यक देना और जो ओषधि देने का समय है सो आगे कहता हूं ॥ १ ॥ ओषधि खानेके पांच समय हैं प्रथमकाल किञ्चित् सूर्योदयमें दूसरा दिनके भोजन समय में तीसरा संध्याको चौथा निशिमें भोजनके समय पांचवां रात्रिमें सोने के समय ॥ २ ॥ जिस मनुष्यको पित्त और कफका वेगहो उसे रेचन वा वमनकी उद्धार वा लेखनक्रिया प्रातःकाल करै लेखन कहे चमड़ेकी पट्टी माथेपर बांधिकै ओषधि भरे पित्त के अधिकार में वमन कफके अधिकार में रेचन और लेखन यह ओषधि करनेका प्रथम कालबांधा ॥ ३ ॥ अपानवायुके बिगरे में भोजनके प्रथम ओषधिदेय अरुचि में विचित्र भोजनके संग रुचिकारक ओषधि खवावे ॥ ४ ॥ सद्वैद्य समानवायु और मन्दाग्नि में अग्निज्वलित कारक द्रव्य भोजन के मध्यमें देय ॥ ५ ॥ व्यानवायु के कोपमें भोजन के अन्त में ओषधि खवावे और हिचकी आक्षेपक कम्पवायु में भोजनके आदि अन्त में देय यह दूसरा कालहै ॥ ६ ॥ स्वरभंगादि करनेवाली उदानवायु के कोप में सन्ध्या समय ग्रास ग्रासके अन्त में ओषधि देइ ॥ ७ ॥ प्राण वायु के कोप में

क्तस्यान्तेचदीयते। औषधंप्रायशोधीरैःकालोयंस्यात्तृतीयकः ८ मुहुर्मुहुश्चतट्छर्दिहिकाश्वासगरेषुच। सान्नञ्च भेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः ९ ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुलेखनेबृंहणेतथा। पाचनंशमनंदेयमनन्नंभेषजंनिशि॥ इतिपञ्चमकालस्स्यात्प्रोक्तोभैषज्यकर्मणि १० द्रव्येरसोगुणोवीर्य्यं विपाकःशक्तिरेवच। सम्बन्धेनक्रमादेताःपञ्चावस्थाःप्रकीर्तिताः ११ मधुरोऽम्लःपटुश्चैव तिक्तःकटुकषायकः। इत्येतेषड्रसाख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः १२ धराम्बुद्मानलजलज्वलनाकाशमारुतैः। वाय्वग्निक्ष्मानिलैर्भूतद्वयैरसभवःक्रमात् १३ गुरुस्निग्धश्च तीक्ष्णश्च रूक्षोलघुरितिक्रमात्। धराम्बुवह्निपवनव्योम्नां प्रायोगुणाःस्मृताः। एष्वेवान्तर्भवन्त्यन्येगुणेषुगुणसञ्चयाः १४ वीर्यमुष्णंतथाशीतंप्रायशोद्रव्यसञ्चयम्। तत्सर्वमग्निषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये॥ अत्रैवान्तर्भविष्य

सांझको भोजन के अन्त में देइ यह तृतीय काल बांधा ॥८॥ और बार बार प्यास छर्दि हिचकी श्वास मे और विषपीड़ित को अन्न के संग ओषधि देइ यह चौथा काल बांधा ॥ ९ ॥ हसली के ऊपर कर्णरोग नेत्र मुख नासिका के रोगनमें लखनके निमित्त रातको विना अन्नपाचन समय ओषधि देइ यह पञ्चम काल जानना ॥ १० ॥ ओषधि के पांच अधिकार है रस १ गुण २ वीर्य ३ विपाक ४ शक्ति ५ ॥ ११ ॥ सब द्रव्यों में छःस्वादु हैं मधुर १ खट्टा २ लवण ३ तीक्ष्ण ४ कडुआ ५ कषाय ६ ॥ १२ ॥ पृथ्वी और जलमे मधुर रस होताहै १ पृथ्वी पवनसे खट्टा होताहै २ जल और अग्निसे लवण होताहै ३ आकाश और वायु से तीक्ष्ण होताहै ४ वायु और अग्नि से कडुआ होताहै ५ पृथ्वी और अग्नि से कसैला होताहै ६ यों दो तत्त्व मिलके एकरस होताहै ॥ इति रसोत्पत्तिः ॥ १३ ॥ (अथ गुण) पृथ्वीका गुण भारी है जलका चिकना अग्निका तेज वायु का रूखा और आकाश का गुण हलका है ये पांचों तत्त्व के पांच गुण हैं और जो गुणादि भी इनके मेल से होते है सो अनुमान से जानना॥ इति गुण ॥ १४ ॥

न्तिवीर्य्याण्यन्यानियान्यपि १५ मिष्टःपटुश्चमधुरमम्ले
ऽम्लंपचयतेरसः । कषायकटुतिक्तानां पाकःस्यात्प्राय
शःकटुः १६ मधुराज्जायतेश्लेष्मापित्तमम्लाच्चजायते।
कटुकाज्जायतेवायुःकर्माण्येतानिपाकतः १७ प्रभावस्तु
यथाधात्री लकुचश्चरसादिभिः। समोपिकुरुतेदोषत्रित
यस्यविनाशनम् १८ क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं कर्म्मकुर्यात्प्रभा
वतः । ज्वरंहन्तिशिरोबद्धासहदेवीजटायथा १९ क्वचि
द्रसोगुणोवीर्य्यंविपाकःशक्तिरेवच। कर्म्मस्वंस्वंप्रकुर्वन्ति
द्रव्यमाश्रित्ययेस्थिताः २० चयकोपसमायस्मिन्दोषा

(अथ वीर्य्य)सब द्रव्यका स्वभाव गर्म या ठंढा होताहै सो सूर्य्य वा चन्द्रमा करिकै उष्ण शीतहैं इन्हीं दोनों से तो मधुरादि स्वादु द्रव्य के अन्दर उत्पन्न होताहै ॥ इति वीर्य्य ॥१५॥ (अथ विपाक) मीठे लुनखरे से मधुर रस होताहै खट्टा विपाकपर भी खट्टा रहताहै, कषाय कटु तिक्त ये तीनों विपाक पर कडुये होते हैं ॥१६॥ मधुररस से कफ होताहै अम्ल से पित्त होताहै कडुवे से वायु होताहै रसोंके पाक से तीनों दोष होते हैं ॥इति विपाकः ॥ १७। (अथ प्रभावगुण) आंवरेका रस गुणवीर्य्य विपाक अधिकारते समान गुण हैं यद्यपि हलकाहै तौ भी त्रिदोष नाश करै कहीं लकुचस्य ऐसा पाठहै (आंवरेका गुण) वीर्य्य विपाक त्रिदोषनाशकहै और बड़हलका गुण ॥ वीर्य्य विपाक त्रिदोषनाशकहै जो दोनों मिलायकै देइ तो भी आंवरा अपने प्रभावसे त्रिदोष नाश करताहै यह राजनिघण्टुका मतहै ॥१८॥ कोई कोई केवल द्रव्य के प्रभावसे रोग दूर होजाते हैं जैसे सहदेई की जड़ माथे पर बांधने से ज्वर छूटजाताहै ॥इति प्रभाव॥ १९॥ किसी औषधि का रस किसी का गुण किसी का वीर्य्य किसी का विपाक किसीकी शक्ति ये सब द्रव्य के आधीनहैं अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार गुण करती हैं गुरचका रस कडुवा औ गर्म है तौ भी पित्त नाश करता है ॥ इति रस उदाहरण (गुण उ०) मूली कडुई है तौभी कफ करती है (वीर्य्य उ०) बड़े पञ्चमूल का क्वाथ कडुहै तौभी वातशमन करताहै क्योंकि उष्ण वीर्य्य विपाकहै ॥ सोंठि तीक्ष्णहै तौभी वातशमनहै क्योंकि मधुर विपाकी (शक्ति उ०) जैसे सुश्रुतमें कहाहै स्वर दुष्टको नाश करताहै ॥२०॥ वात पित्त कफ के बढानेवाली औ कुपित करनेवाली सम करनेवाली ऋतु का

णांसम्भवन्तिहि । ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसङ्क्रमात् २१ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तौप्रावृट्मिथुनकर्कयोः। सिंहकन्येस्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत्।धनुर्ग्राहौचहेमन्तोवसन्तःकुम्भमीनयोः २२ ग्रीष्मेसञ्चीयतेवायुःप्रावृट्कालेप्रकुप्यति । वर्षासुचीयतेपित्तंशरत्कालेप्रकुप्यति २३ हेमन्तेचीयतेश्लेष्मावसन्तेचप्रकुप्यति । प्रायेणप्रशमंयातिस्वयमेवसमीरणः २४ शरत्कालेचहेमन्तेपित्तंप्रावृट्तौकफः । कार्त्तिकस्यदिनान्यष्टावष्टावाग्रहणस्यच । यमदंष्ट्रासमाख्याताअल्पाहारीसजीवति २५ चयकोपसमादोषाविहाराहारसेवनैः । समानैर्यान्त्यकालेपिविपरीतैर्विपर्य्ययम् २६ लघुरूक्षमिताहारादतिशीताच्छ्रमात्त

प्रमाण संक्रांति सेहै॥२१॥मेषकी संक्रांति से वृषकी संक्रांतिताईं ग्रीष्मऋतुहै मिथुनते कर्कताईं प्रावृट्है सिंहते कन्याताईं वर्षा है तुलाते वृश्चिकताईं शरद्है धनते मकरताईं हेमन्त है कुम्भते मीनपर्यंत वसन्तहै यौंयौं दो दो मासकी एक एक ऋतु होतीहै॥२२॥ग्रीष्म में वायु संचित कहे इकट्ठीहो प्रावृट् में कोप करती है वर्षा में पित्त बढ़के शरद् में कोप करताहै॥२३॥ हेमन्त कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो वसन्त में कोप करताहै और वायु इन महीनों के बीते आपसे आप पांचवें महीने में समान होजाती है॥२४॥शरद्ऋतु औ हेमन्तऋतु में पित्त सम होजाताहै और प्रावृट्ऋतु पाइके कफ समवर्ती होताहै और कार्त्तिकशुक्लाष्टमी से मार्गकृष्ण अष्टमीताईं सोलहदिन पर्यंत इनदिनों की यमदंष्ट्रा संज्ञाहै इस यमदंष्ट्रा भर सूक्ष्म आहार करनेवाला मनुष्य सुखी रहताहै क्योंके इन दिनों में पित्त के कोपसे विशेष अग्नि दीप्तहो रुचि बढ़ाताहै तो भोजन विशेष करताहै विशेष भोजन अग्नि सन्तुष्ट करदेताहै तिस के आगेकी ऋतु में कफ संचय होताहै उससे अग्नि मन्द होतीहै तब अन्नके परिपाक न होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं और जो यमदंष्ट्रा के दिनोंमें अग्नि सन्तुष्ट न होतो वर्षभर अग्नि दीप्त रहै॥२५॥ जे मनुष्य आहार विहार के समयका सेवन रखतेहैं उनके दोष सम रहतेहैं और जो समय से विपरीत करते हैं उनके दोष बढ़ने घटने कोप करने सम होते रहते हैं॥२६॥और हलके, रूखे, थोड़े, ठंढे आहार और श्रम सन्ध्याके समय मैथुन

था। प्रदोषेकामशोकाभ्यांभीचिन्तारात्रिजागरैः २७ अ
भिघातादपाङ्गाहाज्जीर्णेन्नधातुसङ्क्षयात्। वायुःप्रकोपंया
त्येभिःविपरीतैश्चशाम्यति २८. विदाहिकटुकाम्लोष्ण
भोज्यैरत्युष्णसेवनात् । मध्याह्नेक्षुत्तृषारोधाज्जीर्यत्यन्ने
र्द्धरात्रके। पित्तंप्रकोपंयात्येभिःविपरीतैश्चशाम्यति २९
मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया । मन्देग्नौतुप्र
भातेच भुक्तमात्रेतथाश्रमात् । श्लेष्मप्रकोपंयात्येभिः
प्रत्यनीकैश्चशाम्यति ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्ग
धरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वि
तीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अथ नाडीपरीक्षा ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनीजीवसाक्षिणी। तच्चेष्टया
सुखंदुःखं ज्ञेयंकायस्यपण्डितैः १ नाडीधत्तेमरुत्कोपे
जलौकासर्पयोर्गतिम् । कुलिङ्गकाकमण्डूकगतिंपित्त
स्यकोपतः । हंसपारावतगतिं धत्तेश्लेष्मप्रकोपतः २
लावतित्तिरवर्त्तीनागमनंसन्निपाततः । कदाचिन्मन्दग

अह शोक भय चिन्ता रातिके जागने से ॥ २७ ॥ चोट ॥ पैरने से बासी भोजन से धातुक्षय से वात कोप करताहै जो इनते बचै तो वायु समहै ॥ इति वायुः ॥ २८ ॥ दाहवाली वस्तु कटु, खट्टी, गरम, अतिगरम वस्तु सेवन दोपहरी को भूख प्यास रोकना आधी रात्रि के भोजन इनसे पित्त कुपित होताहै इनसे सावधान रहै सम होताहै ॥ इति पित्त ॥२९॥ मीठा खटमिट्ठा ठंढे दिनमें निद्रा भूखे रहना सबेरे खाना अनश्रम इनसे कफ कुपित होताहै ॥ इति कफ ॥ ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनु शार्ङ्गधरेणविरचितायांसंहितायांसूत्रस्थानेभैषज्याख्यानकद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

(अथ नाडीपरीक्षा) हाथके अगूठे की जड़ में जो नाड़ी चलतीहै सो जीव की साक्षीहै वैद्य उसकी चेष्टा देखिकै दुःख सुख पहिचान लेइ ॥१॥ वायुप्रधान नाड़ी जोंक सर्पकी नाईं चलती है पित्तप्रधान नाड़ी गौरा और मेडककी चाल चलती है कफप्रधान नाड़ी हंस और कबूतर की चाल चलतीहै ॥२॥ सन्निपात

मनाक्कदाचिद्वेगवाहिनी ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेया हन्तिच स्थानविच्युता ३ स्थिरत्वास्थिरत्वाचलातियासास्मृताप्राण नाशिनी । अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहन्त्यसंशयम् ४ ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीमता । कामक्रोधाद्वेगव ह्वाक्षीणाचिन्ताभयप्लुता ५ मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडी मन्दतराभवेत् । असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीय सी ६ लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता । सुखित स्यस्थिराज्ञेयातथाबलवतीस्मृता ॥ चपलाक्षुधितस्य स्यात्तृप्तस्यवहतिस्थिरा ७ ॥ अथ दूतलक्षणम् ॥ दूताः स्वजातयोऽव्यङ्गाः पटवोनिर्म्मलाम्बराः । सुखिनोश्ववृ षारूढाः शुभ्रपुष्पफलैर्युताः ८ सुजातयस्सुचेष्टाश्चस जीवदिशिसंश्रिताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणस्सुखहेत वे ९ ॥ इति दूतलक्षणम् ॥ वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतो रोगिणःकृते । न शुभं सौम्यशकुनं प्रदीप्तंच सुखाव

की तीतर व बटेर की चाल चलती है द्वन्द्वज दो दोषकी नाड़ी कहीं धीमे कहीं जल्दी चलती है और जो नाड़ी अपने स्थानको त्यागदे तो प्राणकी हरनेवाली है ॥ ३ ॥ जो नाड़ी दश पांचबेर चलके बन्दहोके चलै वा अतिक्षीण धीरी चलै औ अतिठण्डीहो तो रोगी न जिये ॥ ४ ॥ ज्वर की नाड़ी गरम है जल्द चलती है कामातुर और क्रोधीकी नाड़ी जल्दी चलती है चिन्ता औ भयकी नाड़ी क्षीण होतीहै ॥ ५ ॥ मन्दाग्नि औ धातुक्षीण भये नाड़ी धीरेधीरे चलती है रक्तविकार की कुछ गरमहो पत्थरसी भारी चलतीहै आंवसंयुक्त तडे भारीपनकी गति होती है ॥ ६ ॥ जिसकी अग्नि दीप्तहै उसकी नाड़ी हलकी औ जल्दी चलती है आ- रोग्यकी स्थिर बलवान् होतीहै भूखेकी चपल अघानेकी स्थिर चलती है ॥ ७ ॥ इति नाड़ीपरीक्षा (अथ दूतलक्षणम्) अच्छी जातिका अपनी जाति अंगशुद्ध श्वेताम्बरधारी चतुर सुखी घोड़ेपर सवार श्वेत फूल फलसंयुक्त दूतहो सो श्रेष्ठ दूतजानिये ॥ ८ ॥ अपनी जाति होय सुन्दरहो औ वैद्यकी चलव रवाना की ओर बैठे वैद्यके पास शुभ समय जाय तो रोगी सुखी होय ॥ ९ ॥ इति दूतलक्ष-

हम् १० चिकित्सांरोगिणःकर्तुंगच्छतोभिषजःशुभम् । यात्रायांसौम्यशकुनंप्रोक्तंदीप्तंनशोभनम् ११ नारीपुत्रवतीमार्गेकुमारीदीपमालिका । ज्वलतोग्नेश्शुभाश्शब्दामङ्गलंशङ्खनादिकम् १२ मृदङ्गादिध्वनिःपूर्णाकलशोदधिमृत्तिका । फलंचमदिरामांसंमत्स्यादिकुङ्कुमादिकम् १३ गजाश्वरथताम्बूलंचामरंकनकादिकम् । शुभंस्याद्गच्छतोमार्गेवैद्यस्यलाभदायकम् १४ ॥ इति शकुनम् ॥ निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तस्सत्वेनसंयुतः । चिकित्स्योभिषजारोगीवैद्यभक्तोजितेन्द्रियः १५ ॥ इति रोगिलक्षणम् ॥ कुचेलःकर्कशस्स्तब्धःकुग्रामीस्वयमागतः ॥ पञ्चवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमाअपि १६ वैद्यःस्याद्गुरुसन्निधानकुशलःपीयूषपाणिः शुचिर्दक्षःकालवयोव

यम् ॥ और दूतरो वैद्यके बुलाने जाते समय राहमें शुभशकुनते शुभ अशुभते अशुभ जानो ॥ १० ॥ जब वैद्य रोगीके यहां यात्राकरै और उस समय यदि सौम्य शकुनहोय तो शुभहै और दीप्त शुभ नहींहै ॥ ११ ॥ जो मार्गमें पुत्रवती स्त्री मिलै तथा दीपककी माला ग्रहण कियेहुये कन्या मिलै, प्रज्वलित अग्निशिखा शंख मृदंगादिकी ध्वनि होती मनुष्य दृष्टिपरे तथा कुम्भ दही मिट्टी फल मदिरा मांस मछली आदिक केसर आदि सुगन्ध पदार्थ हाथी घोड़ा रथ पान चामर सुवर्णादि पदार्थ यदि जातेहुये मार्गमें मिलें तो शुभहैं ॥ १२ । १४ ॥ इति शकुनविचारः ॥ चिकित्सायोग्य जिस रोगीकी प्रकृति और वर्ण जैसेका तैसाहो और सत्त्वसंयुक्तहो और रोगीको वैद्यसे भक्तिहोय अर्थात् वैद्यके वाक्यमें निश्चय होय और जितेन्द्रिय अर्थात् कुपथ्यसेवी न होय इन्द्रिनके संयममें सावधानहो ऐसा रोगी चिकित्साके योग्यहै ॥ १५॥ इति रोगीलक्षणम् ॥ कुचैल कहो जो मैले कुचैले कुत्सितवस्त्र धारणकरै और विवादी कर्कशही जड कुग्रामवासी होय और विना बुलाये आपही आवै ये पांच वैद्य यदि धन्वन्तरि के भी समान होवैं तौभी पूज्य नहीं हैं ॥ १६ ॥ जिस वैद्यने सद्गुरु से शास्त्राध्ययन कियाहोय और जिसकी औषधिसे प्रायशः रोगी आरोग्य होतेहोवैं अर्थात् जिसके हाथकी दीहुई औषधि अमृत सरीसा गुणकरे व जो पवित्र व दक्ष कही

षौषधिगदज्ञानोदितःशास्त्रवित्।धीरान्तःकरणःक्रियासु कुशलःकारुण्यपूर्णोस्पृहायुक्तोभूतनियन्त्रमन्त्रचतुरोवा ग्मीप्रगल्भःसुखी १७ इतिवैद्यलक्षणम्॥स्वप्नेषुनग्नान्मु ण्डांश्चरक्तकृष्णाम्बराष्ठतान् । व्यङ्गांश्चाविकृतान्कृष्णा न्सपाशान्सायुधानपि १८ बध्नतोनिघ्नतश्चापिदक्षिणांदि शमाश्रितान् । महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोर्यस्तुपश्यति । सस्वस्थोलभतेव्याधिं रोगीयात्येवपञ्चताम् १९ अधोयो निपतत्युच्चाज्जलेऽग्नौवाविलीयते।श्वापदैर्हन्यतेयोपिम त्स्याद्यैर्गिलितोभवेत् २० यस्यनेत्रेविलीयेतेदीपोनिर्वा णतांव्रजेत्।तैलंसुरांपिबेद्वापिलोहंवालभतेतिलान् २१ प क्वान्नंलभतेऽश्नातिविशेत्कूपंरसातलम् । सस्वस्थोलभते रोगंरोगीयात्येवपञ्चताम् २२ दुःस्वप्नानेवमादींश्चदृष्ट्वाब्रू यान्नकस्यचित् । स्नानंकुर्य्यादुषस्येवदद्याद्धेमतिलानिच २३ पठेत्स्तोत्राणिदेवानांरात्रौदेवालयेवसेत् । कृत्वैवंत्रि

मनीषी तथा काल पराक्रम वयोनुसार रोगका यथार्थ ज्ञान करिके औषधिकरै और शास्त्रवेत्ता अत्यन्तधीर क्रियामें कुशल कही मनीषी और दयालु तथा धनादि वाञ्छारहित यंत्र मंत्रमें अतिही चतुर-अत्यन्त प्रगल्भ प्रसन्नचित्त धनी सम्पूर्ण सुखकरके सहित सर्वदा मधुर संभाषणकरै-ऐसे वैद्यकी औषधि सर्वदा श्रेयस्कर होतीहै॥ १७॥ इति वैद्यलक्षणम्॥ रोगी स्वप्नमें नंगा शिरमुंडा रक्त कृष्णवस्त्र पहिरे भयंकर अंगभंग काला व फांसी और शस्त्रभी धरे॥ १८॥ बांधता मारता किसीको दक्षिण लियेजाता आता देखे वा भैस ऊंट व गधेपर सवार नारी पुरुष कोई देखै तो आरोग्यके रोगहोय और रोगीहो तो मरिजाय॥ १९॥ और ऊंचेसे नीचे गिरा जलमेंबूडा अग्निमें जलता जिवर्चिमें पड़ा या कुत्तेने काटाहो या मित्र बांधव वा मकरादि के मुखमें लीलताहुआ देखे॥ २०॥ नेत्रसे अन्ध भए दीखैदीपक बुझता देखै तैल सुरापिये स्वप्नमें लोहा वा तिलपावै॥ २१॥ पक्वान्नपातेवसातेकुयां में गिरै वा रसातल जाय ऐसे स्वप्नदेखनेवाला अच्छाहो तो रोगीहो रोगीहो तो मरै॥ २२॥ ऐसे २ स्वप्नोंको देखिकर किसीसे न कहै

दिनंमर्त्योदुःस्वप्नात्परिमुच्यते २४ स्वप्नेषुयःसुरान्भूपा ञ्जीवतःसुहृदोद्विजान्। गोसमिद्धाग्नितीर्थानिपश्यन्सुख मपाप्नुयात् २५ तीर्त्वाकलुषनीराणिजित्वाशत्रुगणानपि। आरुह्यसौधगोशैलकरवाहान्सुखीभवेत् २६ शुभ्रपुष्पा णिवासांसिमांसमत्स्यफलानिच। दृष्ट्वातुरःसुखीभूयात्स्व स्थोधनमवाप्नुयात् २७ अगम्यागमनंलेपोविष्ठायारुदि तंमृतम्। आममांसाशनंस्वप्नेधनारोग्यायतेविदुः २८ जलौकाभ्रमरीसर्पोमक्षिकावापियंदशेत्। रोगीसभूया दारोग्यःस्वस्थोधनमवाप्नुयात्-२९-इति श्रीशार्ङ्गधर संहितायांसूत्रस्थाने नाडीपरीक्षादिस्वप्नलक्षणदूतशकु नरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्यानं नामाध्यायोयंतृतीयः३॥

पचेन्नामंवह्निकृच्चदीपनंतद्यथामिशिः। पचत्यामंनव ह्निंचकुर्याद्यत्तद्धिपाचनम्। नागकेसरवद्विद्याच्चित्रोदीप

सबेरे नहाके सोना तिल वस्त्रदानकरै ॥ २३ ॥ वतीन दिन प्राणी देवताओं के स्तोत्रादिकों का पाठकरै और रात्रिको देवस्थानमें रहै तो दुःस्वप्नके फलसे छूटजाताहै ॥२४॥ (अथ सुस्वप्न) स्वप्नमें जो देवता औ राजा औ जीवत, मित्र, ब्राह्मण, गऊ, यज्ञ व तीर्थादि ऐसा स्वप्नदेखै तो वह सुखको प्राप्तहोय॥२५॥ और मलिन जलमें पैरत शत्रुकी सेना जीतै अटारी वा पर्वत वा हाथी वा घोडा इनसबन पर चढा देखै तो सुखहोय ॥ २६ ॥ श्वेतफूल, सूक्ष्म वस्त्र, मांस, मछरी व फलों को रोगी स्वप्नमें देखै तो रोगसे निर्मुक्तहोय जो आरोग्य होय दीखै तो धनप्राप्त होय ॥ २७ ॥ अगम्यागमन कहे जिन स्त्रीन से गमन अयोग्यहै तिनकागमन करै, मललपेटे, रोता, मरता, कच्चामांस खाता देखै वा बातेंकरै तो रोगी आरोग्य होय, और अच्छेको द्रव्य मिलै ॥ २८ ॥ और जोंक, भौंरी, सर्प, माखी इन्हें डसे देखै तो रोगी आरोग्य होय और आरोग्य द्रव्य पावै ॥ २९ ॥

इति दामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांभाषाटीकायांसूत्रस्थाननाडीपरीक्षा स्वप्नलक्षणदूतशकुनरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्याननामाध्यायोऽयंतृतीयः ३ ॥

(अथ दीपनपाचन) आमको न पचावै व अग्नि ज्वलितकरै उसे दीपन कहतेहैं

१ । वैश्वानरोरस । सद्यामसंशकोशेय सर्वदोषमकोपनः ॥

नपाचनः १ नशोधयतिनद्वेष्टिसमान्दोषांस्तथोद्धतान्। शमीकरोतिविषमाञ्छमनंतद्यथामृता २ कृत्वापाकंमलानांयद्भित्वाबन्धमधोनयेत्। तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ता हरीतकी३ पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्ठेमलादिकम्। नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकः ४ मलादिकमबद्धंचबद्धंवापिण्डितंमलैः। भित्त्वाधःपातयति तद्भेदनंकटुकी यथा ५ विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत्। रेचयत्यपि तज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा ६ अपक्वपित्तश्लेष्माणौबलादूर्ध्वं नयेत्तुयत्। वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ७ स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसञ्चयम्। देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा ८ श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात्। छेदनंतद्यवक्षारोमरिचानिशिलाजतु ९ धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत्। लेखनंतद्यथा

यथा सौंफ और आंवको पचावै अग्नि न बढ़ावै उसे पाचन कहते हैं यथा नागकेसर और चीता ये दोनों दीपन व पाचन कहाते हैं ॥ १ ॥ जो द्रव्य कोठे को न शुद्ध करै व मल न बांधै और बढ़ेदोष को शमन करै उसे शमन कहते हैं यथा गुर्च ॥ २ ॥ और जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावै उसको अनुलोमन कहते हैं यथा हड़ ॥ ३ ॥ जो वस्तु पकनेयोग्य अनपची होय कोठे में लपटिकै रहिगई हो तिसे अधोमार्ग से गिरावै उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमलतास ॥ ४ ॥ जो मल वातादिक दोष से बँधा होय वा गोटे पड़गये हों उसे फोरिकै अधोमार्ग से गिरावै तिस द्रव्यको भेदन कहते हैं यथा कुटकी ॥ ५ ॥ जो मल वातादि दोषसे विशेष पकगया हो या अपकहो उसे पतलाकरि बहावै उसको रेचन कहतेहैं यथा निशोथ ॥ ६ ॥ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से निकालै उसे वमन कहतेहैं यथा मैनफल ॥ ७ ॥ जो द्रव्य दुष्टमल वा पित्त कफ स्थान छुड़ाकर ऊर्ध्व मार्ग या अधोमार्ग से गिरावै उसे शरीरशोधन कहते हैं ऐसी शरीरशोधनी कौन द्रव्य है यथा देवदाली कहे बंदाल ॥ ८ ॥ जो [illegible] शोधन[illegible] शक्तिकरि निकारै उसे छेदन कहते हैं यथा यवाखारादि और सोंठि, मिर्च, पीपरि,

क्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः १० दीपनंपाचनंयत्स्याद्रूष्णत्वा
द्रसशोषकम्।ग्राहितच्चयथाशुण्ठीजीरकंगजपिप्पली ११
रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् । वातकृत्स्त
म्भनंतत्स्याद्यथावत्सकटुण्टकौ १२ रसायनञ्चतज्ज्ञेयंयज्ज
राव्याधिनाशनम् । यथाऽमृतारुदन्तीचगुग्गुलुश्चहरी
तकी १३ यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरञ्चतत् ।
यथानागबलाद्याःस्युर्बीजंचकपिकच्छुजम् १४ सद्यःशु
क्रकरंयच्चतद्वृष्यंस्याद्यथापयः । देहस्थूलकरंयच्चबृंह
णंतद्यथामिषम् । यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलञ्चतदु
च्यते । यथाश्वगन्धामुशलीशर्कराचशतावरी १५ दुग्धं
माषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच । प्रवर्त्तकानिकथ्य
न्तेजनकानिचरेतसः १६ प्रवर्तनंस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहती
फलम्।जातीफलंस्तम्भनञ्चशोषणीचहरीतकी १७ दे
हस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते।तद्यथासैन्धवंक्षौ

शिलाजीत इति छेदन ॥ ९ ॥ रसादि धातु और शरीरके मल तिन्हें सुखा के देहको दुर्बल करै उसे लेखन कहते हैं यथा उष्णजल वच यव ॥ १० ॥ जो दीपन और पाचन करै और गर्मी करिके कफ धातुमल इनके रसको सुखावै तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेतजीरा और गजपीपरि ॥ ११ ॥ जो द्रव्य रूखा हो और ठण्डा हो कषाय हो और पाचनशक्ति थोड़ीहो उस वातकृत द्रव्यको स्तंभन कहते हैं यथा कुँरया और (स्योनाक) सोहनपत्ती ॥ १२ ॥ जो द्रव्य जरा अवस्थाके रोगन को दूरकरै उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्चे,रुद्रवन्ती,गुग्गुल ॥ १३ ॥ जिसद्रव्यसे मैथुनमें विशेष सुखहो उसे वाजीकरण कहतेहैं यथा वरियारा क्रियाचमोंगी ॥ १४ ॥ जो शीघ्रही शुक्र कहीं वीर्यको बढावै उसे वृष्य कहतेहैं यथा दूध—और जो देहको स्थूल करी हृष्ट पुष्ट मोटाकरै उसे बृंहण कहते हैं यथा आमिष कही मास—जो धातुको बढावै उसे शुक्रल कहते हैं यथा असगन्ध, मुशली, शर्करा और शतावरि॥ १५ ॥ और जो धातुकी हृद्धिकरै उसे रेतजन्य कहतेहैं यथा,दूध, उर्द भिलौमी आंवरा ॥ १६ ॥ शुक्रको प्रकट करनेवाला स्त्रीकी धातुको रेचन करनेवाला बड़ी

द्रंनिम्बतैलंरुवूद्भवम् १८ पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकऽचगच्छति।व्यवायितद्यथाभङ्गाफेनंचाहिसमुद्भवम् १९ सन्धिबन्धास्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विश्लेष्योजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवः २० बुद्धिंलुम्पन्ति यद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्चयथामद्यंसुरादिकम् २१ व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मंछेदिमदावहम् । आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् २२ निजवीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा २३ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वारसवहाःसिराः। धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यन्दियथा दधि २४ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धात्वाशयान्तरस्थस्तुयःक्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्मणाविपक्वोयःसाकलेत्यभिधीयते । कलास्सप्ताशयास्सप्त

भटकुटैया का फल है और वीर्यस्तंभी जायफल है और वीर्यरेचक [illegible] है ॥ १७ ॥ जो वस्तु रोममार्ग से शरीरमें पैठै उसे सूक्ष्म कहते हैं जैसे [illegible] शहद, नींब और रेंडीका तेल ॥१८॥ प्रथम शरीरको व्याप्तकर [illegible] व्यवायी कहते हैं यथा भांग और अफीम ॥ १९ ॥ देहके [illegible] धातु और शुक्रको क्षीणकरै उसेविकाशी कहते हैं यथा [illegible] और कोदव ॥२०॥ जो वस्तु बुद्धिको संभ्रमकरै मदकरै और [illegible] सो [illegible] यथा सुरादि नशा ॥२१॥ व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, छेदनकर्ता, मदकर्ता, अग्निवर्द्धन और मृत्युकारक ये सब द्रव्य जिस औषधिकासंग पावें उसीका सा गुणकरें ऐसा विष होता है ॥ २२ ॥ जो द्रव्य अपने पराक्रमसे संचित दोषोंको निकाल डारै उसे प्रमाथी कहतेहैं यथा मरिच और वच ॥२३॥ जो पदार्थ अपने पिच्छिलगुरुत्वके रसवाहिनी सिराओंको निरोधकरै और शरीरको [illegible] उसे अभिष्यन्दी कहतेहैं यथा दही॥२४॥ इति श्रीशार्ङ्गधरभाषाटीकायां [illegible] चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो आर्द्रपदार्थ धातु और आमाशय के अन्तर में स्थित और देहकी ऊष्मासे

धातवस्सप्ततन्मलाः १ सप्तोपधातवस्सप्तत्वचस्ससप्र कीर्तिताः। त्रयोदोषानवशतंस्नायूनांसन्धयरतथा। द शाऽधिकंचद्विशतमस्थ्नांचत्रिशतंमतम् २ सप्तोत्तरंमर्म शतंसिरास्सप्तशतंतथा। चतुर्विंशतिराख्याताधमन्योर सवाहिकाः। मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतंबुधैः३ स्त्रीणांचविंशत्यधिकाःकण्डराश्चैवषोडशानृदेहेदशरन्ध्रा णिनारीदेहेत्रयोदश। एतत्समासतःप्रोक्तंविस्तरेणाधुनो च्यते ४ मांसासृग्मेदसांतिस्रोयकृत्प्लीह्नोश्चतुर्थिकाः। पञ्चमीचतथान्त्राणां षष्ठीचाग्निधरामता। रेतोधरास प्तमीस्यादितिसप्तकलाःस्मृताः५ श्लेष्माशयः स्यादुरसि तस्मादामाशयस्त्वधः। ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्वामभागे व्यवस्थितः ६ तस्योपरितिलंज्ञेयं तदधःपवनाशयः। मलाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्त्वधः। जीवरक्ता

विपक्व हो उसका कलानाम है (अथ शारीरक) शरीरमें कला ७ स्थान ७ धातु ७ धातुमल ७ ॥ १ ॥ उपधातु ७ त्वचा ७ दोष ३ सूक्ष्म नस ९०० जोड़ २१० हड्डी ३०० ॥ २ ॥ मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० शूलनाड़ी २४ पुरुष के मांसग्रंथि ५०० ॥ ३ ॥ स्त्रीके मांसकी गांठि ५२० पुरुषसे फैलने समिटने वाली १६ पुरुषके शरीर में छेद १० स्त्रीके १३ यह संक्षेप कहा आगे विस्तारसे कहेंगे ॥४॥ (अथ शरीर की सात कला पहिले कहते हैं) मांसको धारण करनेवाली मांसधरा पहलीकला रक्तको धारण करनेवाली रक्तधरा दूजी कला२ मेदको धारे यह मेदोधरा तीसरी ३ कफको धारण करनेवाली चौथी यकृत्प्लीहा४ अन्न धारणेवाली पाचवीं पुरीषधरा ५ अग्निधारिणी छठीकला पित्तधरा ६ शुक्रधारणी सतई कला रेतोधरा ७ ये सातों कला है॥ ५ ॥ छातीमें कफस्थान है तिससे कुछ नीचे आमस्थान है नाभि के ऊपर बाईओर अग्निस्थानहै ॥६॥ तिस अग्निस्थानके ऊपर तिलहै उसे क्लोम कहतेहैं यही प्यासस्थान कहतेहैंऔर अग्निस्थानके तरे पवनाशयहै उसे वायुस्थान कहते हैं उसी के नीचे वामभागमें मलस्थान है जिसे पक्वाशय कहते हैं और उसी पवनाशय के नीचे दक्षिणभाग

शयमुरोज्ञेयास्सप्ताशयास्त्वमी ७ पुरुषेभ्योधिकाश्चा
न्येनारीणामाशयास्त्रयः । धरागर्भाशयःप्रोक्तःस्तनौस्त
न्याशयौमतौ ८ रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि
धातवः । जायन्तेन्योन्यतःसर्वे पाचिताःपित्ततेजसा ९
जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरञ्जकम् । कर्णविड्रसनाद
न्तकक्षामेढ्रादिजंमलम् १० नखानेत्रमलंवक्रेस्निग्धत्वंपि
टकास्तथा। जायन्तेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ११
कफपित्तमलश्चैव प्रस्वेदोनखरोमच । स्नेहाक्षित्वग्वसो
जश्चधातूनांक्रमशोमलाः । रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मे
दःप्रजायते १२ मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्जायाश्शुक्र
संभवः । स्तन्यंरजश्चनारीणांकालेभवतिगच्छति ।
शुद्धमांसभवःस्नेहो यस्सात्सोल्पितिवसा १३ स्वेदोदं

तास्तथाकेशास्तथैवौजश्च सप्तमम्। ओजःसर्वशरीरस्थं शीतं स्निग्धंस्थिरंमतम्। सोमात्मकं शरीरस्य बलपुष्टि करंमतम्। इति धातुभवा ज्ञेया एते सप्तोपधातवः १४ ज्ञेयावभासिनीपूर्वा सिध्मस्थानं च सा मता। द्वितीयालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः १५ श्वेतातृतीयासङ्ख्याता स्थानञ्चर्म्मदलस्यसा। ताम्राचतुर्थीविज्ञेया किलासश्वित्रभूमिका १६ पञ्चमीवेदिनीख्याता सर्व्वकुष्ठोद्भवाचसा। विख्यातालोहितापष्ठी ग्रन्थिगण्डापचीस्थितिः १७ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याता विद्रध्यादेः स्थितिश्चसा। इति सप्तत्वचः प्रोक्ताः स्थूलाव्रीहिद्विमात्रया १८ वायुः पित्तं कफो दोषा धातवश्च मलास्तथा। तत्रापि पञ्चधा ख्याताः प्रत्येकं देहधारणात् १९ पवनस्तेषुबलवान्विभागकरणान्मतः। रजोगुणमयः

धातुकी उपधातु रजजो स्त्रीके काल पाय होती है अरु कालही पाय जाती रहती है शुक्र मांसकी उपधातु, वसा मेदकी उपधातु पसीना अस्थिकी उपधातु, दांत मज्जाकी उपधातु, बल पुरुषार्थ ऐसेही सातों धातुनमे सातों उपधातु होती हैं ॥१३। १४॥ (अथसप्तत्वक्) यही अवभासिनी ऊपरकी खाल जिसमें सेहुआंकी जन्मभूमिहै १ दूजी लोहिता तिसमें तिलकालक रोम होते हैं॥ १५ ॥ तीजी श्वेतामें दाह होताहै ३ चौथी ताम्रा जिसमें किलास कुष्ठ होताहै ४ ॥ १६ ॥ पञ्चमी वेदिनी सर्वकुष्ठभूमि है ५ छठी लोहिता में गण्डमाला ग्रंथि अपची ये रोगहोते हैं ६ ॥ १७॥ सतईं स्थूना में जहरवात नासूर भगंदरादि होते हैं ये सातों मिलकै दो यव समान मुटाई पाती है यह चरक कहते हैं जहां मांसविशेष मोटा होता है वहां इतनी मोटी होती है॥ १८ ॥ (अथ तीनों दोष) वात, पित्त, कफ ये प्रत्येक देहधारी के प्रसिद्ध हैं सो रसादिक धातुन का मलिन करते हैं इससे इनका नाम मल भी है सो पांच पांच प्रकारके सुश्रुत में लिखेहैं (संस्कृत) तत्रप्रस्पन्दनोद्वहनपूरणविवेकधारणलक्षणोवायुः ॥ १९ ॥ वायु सर्वनस्तुन को निज निज स्थानमें पहुँचा देता है इस कारण तीनों दोष में वायुही प्रबलहै और रजोगुणी सूक्ष्म ठंढी रूखी

सूक्ष्मःशीतोरूक्षोलघुश्चलः—। शरीरदूषणाद्दोषाधातवो
देहधारणात् २० वातपित्तकफाज्ञेया मलिनीकरणान्म
लाः । पित्तंपङ्गुःकफःपंगुःपङ्गवोमलधातवः । वायुनाय
त्रनीयन्तेतत्रगच्छन्तिमेघवत् २१ मलाशयेचरन्कोष्ठे
वह्निस्थानेतथाहृदि । कण्ठेसर्वाङ्गदेशेषुवायुःपञ्चप्रकार
तः । अपानःस्यात्समानश्चप्राणोदानौतथैवच २२ व्या
नश्चेतिसमीरस्यनामान्युक्तान्यनुक्रमात् । हृदिप्राणोगु
देऽपानःसमानोनाभिसंस्थितः । उदानःकण्ठदेशस्थोव्या
नस्सर्वशरीरगः २३ पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तर
म् । कटुतिक्तरसंज्ञेयंविदग्धंचाम्लतांव्रजेत् । अग्न्याशये
भवेत्पित्तमग्निरूपंतिलोन्मितम् २४ त्वचिकान्तिकरंज्ञेयं
लेपाभ्यङ्गादिपाचकम् । दृश्यंयकृतियत्पित्तंतद्रसंशोणितं
नयेत् । यत्पित्तंनेत्रयुगलेरूपदर्शनकारितत् २५ यत्पित्तं
हृदयेतिष्ठन्मेधाप्रज्ञाकरञ्चतत् । पाचकंभ्राजकञ्चैवराञ्ज

कालोचकेतथा । साधकंचैवपञ्चैवपित्तनामान्यनुक्रमात् २६ कफःस्निग्धोगुरुःश्वेतःपिच्छिलःशीतलस्तथा। तमोगुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् २७ कफश्चामाशयेमूर्द्धिकण्ठेहृदिचसन्धिषु । तिष्ठन्करोतिदेहेषुस्थैर्यंसर्वाङ्गपाटवम् २८ क्लेदनःस्नेहनश्चैवरसनश्चावलम्बनः । श्लेष्मणश्चेतिनामानिकफस्योक्तान्यनुक्रमात् २९ स्नायवोबन्धनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमेदसाम् । सन्धयश्चाङ्गसन्धानाद्देहेप्रोक्ताःकफान्विताः । आधारश्चतथासारःकायेस्थीनिबुधाविदुः ३० मर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयो

और धारणा चैतन्यता रखता है ताकी पांच नाम से स्थिति जानना पाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४ साधक ५ इसप्रकार पित्तके पांच स्थान व पांच नाम क्रमसे जानना चाहिये ॥ २६ ॥ (अथ कफ) कफ चिकना,भारी, लसलसा श्वेत, ठण्ढा, तमोगुणी विशेष है और मधुर है दग्धभये नुनखरा होजाता है अन्य मतवाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरताहै सो कारण यहहै कि स्निग्धता करिके पानी में प्रवेश नहीं करता वास्तव गुरुही है ॥ २७ ॥ और आम स्थान में माथेमें कण्ठमें हृदयमें संधिन में ऐसे देहमें स्थितहो पुष्ट रखता है ॥ २८ ॥ तिसके नाम क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बन ४ और श्लेष्मण ५ ये नाम स्थानक्रमसे जानना यथा आमस्थाने क्लेदन इसप्रकार से ॥ २९ ॥ नौसै संधिवाली नसैं मांस हाड़ चरबीको लपटी रहती हैं और देहमें अंग २ प्रति संधिरूहै जो उसे कफसे लपटे हैं सो संधि दोप्रकारकी है चर और अचर चरतो ठोढी कमर शाखा कण्ठ की हैं और अंगनकी अचर रहते हैं जैसे तेलके संयोग से रथके पहिया अपने ठौरमें फिरते हैं तैसे कफके संयोगसे हड्डी विना श्रम फिरा करती हैं और बुधजन कहते हैं कि अस्थिन के आधार देहहै ताते देहका सारहै ॥ ३० ॥ और मर्मस्थान मुनि जीवाधार कहते हैं सो पांचप्रकारकाहै मांसमर्म ११ सिरामर्म ४१ स्नायुमर्म २७ अस्थिमर्म ८ संधिमर्म २० सब मर्म १०७ हैं संधिबंधनी सिरा दोष और धातुवाहकहैं सो २४ हैं तिनमें दश नाभिस्थानमें हो नीचेजाती हैं वात,मूत्र,मल,शुक्र,अन्नपान रसका नीचे पहुँचाना उनका कर्महै और दश ऊर्ध्वगतहै सो शब्द,रस,गन्ध,श्वास,जमुहाई और क्षुधा, तृषा,शक्ति,डकार इन सबनको अपने २ स्थान में दीपन करती हैं और चार

जगुः। सन्धिबन्धनकारिण्योदोषधातुवहाःसिराः ३१ धम न्योरसवाहिन्योधमन्तिपवनंतनौ। मांसपेश्योबलायस्युर वष्टम्भायदेहिनाम् ३२ प्रसारणाकुञ्चनयोरङ्गाणांकण्डरा मताः। नासानयनकर्णानांद्वेद्वेरन्ध्रेप्रकीर्तिते ३३ मेहना पानवक्त्राणामेकैकंरन्ध्रमुच्यते। दशमंमस्तकेप्रोक्तंरन्ध्राणी तिनृणांविदुः ३४ स्त्रीणांत्रीण्यधिकानिस्युःस्तनयोर्गर्भ वर्त्मनः। सूक्ष्मछिद्राणिचान्यानिमतानित्वचिजन्मिनाम् ३५ तद्वामेफुप्फुसंप्लीहादक्षिणाङ्गेयकृन्मतम्। उदानवायो राधारःफुप्फुसंप्रोच्यतेबुधैः ३६ रक्तवाहिसिरामूलंप्लीहा ख्यातोमहर्षिभिः। यकृद्रञ्जकपित्तस्यस्थानंरक्तस्यसंश्र यम् ३७ जलवाहिसिरामूलंतृष्णाच्छादनकंतिलम्। वृ

जिनकी तिर्छी गतिहैं सो अगणित शाखाहो सर्वांगमें जालेकी नाईं रोम२ प्रति पूरित हैं उन्हीं के मुखों से स्वेद देहके बाहर रोमों में होके आताहै और उसी मार्गको लेपन मर्दनादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ॥ ३१ ॥ और रसवाहिनी धमनी को नाड़ी कहतेहैं ये वायुको अपने वेगसे शरीरमें पहुँचाती हैं सो सिरा दोप्रकार की है सूक्ष्म और स्थूल तिनकी जड़ नाभिमें है वहां होके तले ऊपर दहिने बायें आगे पीछे सर्वत्र फैलतीहैं ये चालिसहैं ४० वातवाहिनी १० पित्तवाहिनी १० कफवाहिनी १० रक्तवाहिनी १० सब ४० वातवाहिनी सिराके समीप दूसरी वात चारी १७५ नसें हैं ऐसे दश २ चारों के पास उतनी२ हैं इसतरह सातसै७००हैं और देह में फैलीहैं सो चलके और रोकने के लियेहै ॥ ३२ ॥ अंगके फैलने समेट- ने को कंडराहै और दो छिद्र नाकमें दो नेत्रमें दो कान में कहेहैं ॥ ३३ ॥एक मुख एक गुदा एक लिङ्ग एक मस्तक के ऊपर ये दशछिद्रहैं ॥३४॥ स्त्रीके तीन छिद्र विशेषहैं दो पयोधरपर एक गर्भस्थान और अतिसूक्ष्म छिद्र त्वचामें अगणितहैं ॥ ३५ ॥ हृदयके वामभागमें फुप्फुस और प्लीहाहै दक्षिणभाग में यकृत्है फुप्फुसको उदानवायुके आश्रित वैद्यलोग कहते हैं ॥ ३६ ॥ और रुधिरवाही सिराओंकी जड़को प्लीहा कहतेहैं और यकृत्को सद्वैद्य रंजक पित्तका स्थान कहतेहैं और रक्तका आधारहै ॥ ३७॥ शोणितकी कीटसे उत्पन्न हुआ दक्षिणभागमें यकृत् के पास तिलहै उसे क्लोम कहिये सो जलवाहि सिराकी जड़में रहिके प्यास लगाताहै और

क्रौपुष्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्यमेदसः ३८ बीजवाहिसिरा धारौवृषणौपौरुषावहौ।गर्भाधानकरंलिङ्गमयनंवीर्य्यमूत्र योः।त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्वतमोगुणैः। तस्मात्स त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन्।हृदयंचेतनास्थानमो जसश्चाश्रयंमतम् ३९ सिराधमन्योनाभिस्थास्सर्वाव्या प्यस्थितास्तनुम् । पुष्णन्तिचानिशंवायोस्संयोगात्सर्व धातुभि ४० नाभिस्थःप्राणपवनःस्पृष्ट्वाहृत्कमलान्तरम्। कण्ठाद्बहिर्विनिर्याति पातुंविष्णुपदामृतम् ४१ पीत्वा चाम्बरपीयूषंपुनरायातिवेगतः । प्रीणयन्देहमखिलंजी वेचजठरानलम् ४२ शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरु च्यते । कालेनतद्वियोगाच्चपञ्चत्वंकथ्यतेबुधैः ४३ न जन्तुःकश्चिदमरः पृथिव्यांजायतेक्वचित्। अतोमृत्युर वार्यं स्यात्किन्तुरोगान्निवारयेत् ४४ याप्यत्वंयातिसा ध्यश्चयाप्योगच्छत्यसाध्यताम् । जीवितंहन्त्यसाध्य

जठरमें जो मेद और रक्तहै सो दो पुष्टिकारक गोलाकार दोनों कहेहैं ॥ ३८ ॥ बीजवाही सिराके आधार पुरुषार्थ करनेवाले वृषणहैं और गर्भ धारण करनेवाला लिङ्गवीर्य और मूत्रका मार्गहै सो लिङ्ग हृदय गलेको ग्राहक चारि कण्डराकार मरोड़ है और चेतनाका स्थान हृदय बलका आश्रयहै ॥ ३९ ॥ और नाभिमें स्थित चौबीस सिरानाम धमनी सो सब शरीर में व्याप्त होके वायुके संयोगसे रसादि धातुन को सींचिकै सदा शरीर को पुष्ट करती हैं ॥ ४० ॥ नाभिवासी प्राणवायु हृदयकमल को स्पर्श करिकै विष्णुपदामृत पीनेको कण्ठसे बाहिरहो शिरसे जाइकै ब्रह्माण्ड से गिरताहुआ अमृत पीके फिर उसी मार्गसे आयके सब शरीरको सन्तुष्टकरती हुई अग्निको पाचनशक्ति देती है ॥ ४१ । ४२ ॥ पूर्वभाषित शरीर और प्राणके संयोग रहनेको बुधजन आयु कहते हैं और शरीर प्राण के वियोग होने को काल कहते हैं ॥ ४३ ॥ पृथ्वी में कोई शरीर अमर नहीं है इसी से मरने की ओषधि नहीं है रोगनिवारणीय ओषधि हैं ॥ ४४ ॥ जो मनुष्य ओषधि नहीं करते सो सुखसाध्य रोगको कष्टसाध्य करते हैं कष्टसाध्य से असाध्य होते हैं।

स्तुनरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरुग्भ्यस्तनुरक्ष्यानरः कर्मविपाकवित् । धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरंसाधनंच यत् ४६ धातवस्तन्मलादोषानाशयन्त्यसमास्तनुम् । समाःसुखायविज्ञेया बलायोपचयायच ४७ ॥ इति कलादिकथनम् (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनेरनिच्छस्यचिदानन्दैकरूपिणः । पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिच्छायेवभास्वतः ४८ अचेतनापिचैतन्ययोगेनपरमात्मनः । अकरोद्विश्वमखिलमनित्यंनाटकाकृति ४९ प्रकृतिर्विश्वजननीपूर्वंबुद्धिमजीजनत् । इच्छामयींमहद्रूपामहङ्कारस्ततोभवत् ५० त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्वतमोगुणैः। तस्मात्सत्त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन् । मनश्चजातं तान्याहुःश्रोत्रंत्वङ्नयनंतथा ५१ जिह्वाघ्राणत्वचोहस्तपादोपस्थगुदानिच।पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःसंप्रोक्तानीतराणिच। कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथ्यन्तेसूक्ष्मबुद्धिभिः५२तमः

असाध्य होके प्राण देते हैं ॥ ४५ ॥ जिससे कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनका साधनहेतु शरीर है इससे शुभाशुभ ज्ञाता पुरुष अवश्य शरीर की रक्षाकरै ॥ ४६ ॥ घटे,बढे रसादिक धातु वा धातुमल वा वात पित्त कफ देहके हन्ता हैं जब ये सम रहते हैं तब सुख देते हैं व बल और पुष्टिको करते हैं ॥ ४७ ॥ इति कलादिकथनम् ॥ (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनि इच्छारहित ज्ञानधर्मका एकही रूपहै ऐसे विष्णुकी नित्यप्रकृति सूर्यकी छायाकी नाईं है ॥ ४८ ॥ सो प्रकृति चेतनरहित चैतन्य इन्द्रजालकी नाईं परमात्मा के योगकरिकै अनित्य संसार रचती भई ॥ ४९ ॥ ऐसी विश्वजननी प्रकृतिने पहिले बुद्धिको उत्पन्न किया सो इच्छामयी महद्रूपा कहे सूक्ष्मरूपा है उसी बुद्धिसे अहङ्कार होताहै सो भी अहङ्कार रजः सत्त्व तमोगुणों से तीन प्रकारका हुआ ॥ ५० ॥ इन तीनों अहङ्कारे सहित पूर्व अहङ्कार से दशइन्द्रिय और मनभया सो इन्द्रिय दोप्रकारकी कहताहौं श्रवण त्वचा, नेत्र ॥ ५१ ॥ जीभ, नाक ५ वाणी, हाथ, पाँव, लिंग, गुदा ५ पहिले

१ पूर्वजन्मकृतंपापव्याधिरूपेणबाधते। यतोदानादिकंकुर्यात्सर्वतोप्यतिविघ्नण इति ॥

सत्त्वगुणोत्कृष्टादहङ्कारादथाभवत्। तन्मात्रंपञ्चकंतस्यनामान्युक्तानिसूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकंस्पर्शतन्मात्रंरूपमात्रकम्। रसतन्मात्रकंगन्धतन्मात्रंचेतितद्विदुः ५४ तन्मात्रपञ्चकात्तस्मात्सञ्जातंभूतपञ्चकम्। व्योमानिलानलजलक्षोणीरूपंपतन्मतम् ५५ शब्दस्पर्शश्चरूपंचरसगन्धावनुक्रमात्। तन्मात्राणांविशेषास्स्युःस्थूलभावमुपागताः ५६ बुद्धीन्द्रियाणांपञ्चैवशब्दाद्याविषयामताः। कर्मेन्द्रियाणांविषयाभाषादानविहारतः। आनन्दोत्सर्गकौचैवकथितास्तत्त्वदर्शिभिः ५७ प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा। एतानितस्यानामानिशिवमाश्रित्ययास्थिता ५८ महानहङ्कृतिः पञ्चतन्मात्राणिपृथक्पृथक्। प्रकृतिंविकृतिंचैवसप्तैतानिबुधाजगुः ५९ दशेन्द्रियाणिचित्तञ्चमहद्भूतानिपञ्चच। विकाराःषोडशज्ञेयाःसर्वव्याप्यजगत्स्थिताः ६० एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धंवपु

कहीहुई ज्ञानइन्द्रिय जानो पीछे कही पांच कर्मेन्द्रियहैं ॥ ५२ ॥ सत्व और तम से उत्कृष्ट रजोगुणी अहंकार भया जिसमें पंचतन्मात्रा भई उनका नाम पण्डितजन कहते हैं ॥ ५३ ॥ शब्द तन्मात्रा १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ ये पंचतन्मात्राहैं सो पांचों ज्ञानइन्द्रिन के लक्ष्य हैं लक्ष्य यह कि जिसकी जो तन्मात्रा है उसी का उस इन्द्रियको ज्ञानहै ॥ ५४ ॥ तिन तन्मात्रासे पंचभूत भये आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ॥ ५५ ॥ इनको क्रमसे जानना सो शब्दादिक क्रमसे स्थूलभाव को प्राप्तहोके ये पांचों विशेष हैं ॥ ५६ ॥ ज्ञानेन्द्रिन के शब्दादिक पांच विषय माने हैं सोई कर्मेन्द्रिन के वचन १ गहिलेना २ चलना ३ सुखो ४ मल त्याग ५ पण्डित कहे हैं ॥ ५७ ॥ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविकृत ५ ये प्रकृति के नामहैं इसी रीति से जानना जोकि परब्रह्मका आश्रयकरि स्थितहैं ॥ ५८ ॥ महत्तत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्रा इन सातों को पण्डितजन प्रकृति व विकृति कहते हैं ॥ ५९ ॥ और दशइन्द्रिय एक चित्त पंचमहाभूत ये सोलह विकार जानना ये सब जगत् में व्याप्तहो स्थितहैं ॥ ६० ॥ इन चौबिस तत्त्वनसहित देहमें

गेहे । जीवात्मानियतोनित्यंवसतिस्वान्तदूतवान् ६१ सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिः । व्याप्तोबद्धश्च मनसा कृत्रिमैःकर्म्मबन्धनैः ६२ कामक्रोधौलोभमोहावहङ्कारश्चपञ्चमः । दशेन्द्रियाणिबुद्धिश्चतस्यबन्धायदेहिमः ६३ आप्नोतिबन्धमज्ञानादात्मज्ञानाच्चमुच्यते । तंदुःखयोगकृद्व्याधिरारोग्यंतत्सुखावहम् ६४॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेकलादिकाख्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

याल्यामाशयमाहारः पूर्वंप्राणानिलेरितः । माधुर्य्यंफेनभावञ्चषड्रसोपिलभेतसः १ अथपाचकपित्तेनविदग्धश्चाम्लतांव्रजेत् । ततःसमानमरुताग्रहणीमभिधीयते २ ग्रहण्यां पच्यते कोष्ठवह्निनाजायतेकटुः । रसोभवतिसम्पक्वादपक्वादामसम्भवः ३ वह्नेर्बलेनमाधुर्यं स्निग्धतांयातितद्रसः । पुष्टिःपित्तधरानामसाकलापरिकीर्त्तिता४पक्वामाशयमध्यस्थाग्रहणीत्यभिधीयते । पुष्णातिधातूनखि

जीवात्मा सदैव स्थित रहताहै और जो मनहै सो उसका दूत है ॥६१॥ व उसीको देही कहते हैं जो पाप,पुण्य,दुःख व सुख करिकै व्याप्तहै सो मनके करे कर्मनके संग बँधाहै॥६२॥काम,क्रोध,लोभ,मोह,अहङ्कार ५इन्द्रिय १०और बुद्धि ये सोलह देह बन्धनके हेतु हैं ॥ ६३ ॥ जीवात्मा अज्ञान करिकै इनमें बँधारहताहै और ज्ञान करिकै बन्धनते मुक्त होजाताहै अज्ञानते दुःखके योगमें दुःखपाताहै और ज्ञान करिकै सुख पाताहै ॥ इति सृष्टिक्रमः॥६४॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेकलादिकाख्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५

(अथाहार) जो कछु भोजनकिया सो प्राणवायुसे प्रेरित प्रथम आमाशयमें जाताहै षट्रस में कोई रसहो मधुर और फेनासा होजाताहै॥ १ ॥"अन्यग्रन्थों में लिखाहै कि कफाशयमेंहो आमाशयमें जा फेनभाव होजाताहै इति,, सो रसपाक हो पाचक पित्त में दग्धमय खट्टाहोजाताहै तब समानवायुका प्रेरित ग्रहणीमें पहुँचता है॥ २ ॥ फिर ग्रहणीसे अग्निकोष्ठमें पचिकै कडुवा होजाताहै जो अग्नि आमाशय में अच्छीतरह पचा तो रसहुआ अरु जो अपक्वरहा तो आंव होगया ॥३॥ वोन रस अग्निके बलसे पचिकै मधुर और चिकना होजाताहै सोवह पित्तधरा पुष्टिकला

लान्सम्यक्पक्कोऽमृतोपमः ५ मन्दवह्निविदग्धश्च कटु श्चाम्लोभवेद्रसः।विषभावंव्रजेद्वापिकुर्याद्वारोगसङ्करम् ६ आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः । सिराभिस्तज्जलं नीतंवस्तौमूत्रत्वमाप्नुयात्।तत्किट्टंचमलंज्ञेयंतिष्ठेत्पक्वाश येचतत् ७ वलित्रितयमार्गेणयात्यपानेननोदितम् । प्रवा हिनीसर्जनीचग्राहिकेतिवलित्रयम् ८ रसस्तुहृदयंयातिस मानमरुतेरितः । रञ्जितःपाचितस्तत्रपित्तेनायातिरक्तता म् ९ रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धंगुरु चलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् १० पाचिताःपित्ततापेनर साद्याधातवःक्रमात्।शुक्रत्वंयान्तिमासेनतथास्त्रीणांरजो भवेत् ११ कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः।गर्भः सञ्जायतेनार्याःसजातोबालउच्यते १२आधिक्याद्रजसः

कहातीहै और पक्काशय आमाशय के मध्यमें स्थित ग्रहणी कही जातीहै सो अच्छी तरह पकारस अमृतकी तुल्य अखिल धातुनको पोषताहै ॥ ४ । ५ ॥ जो मन्दाग्नि करि अपक्वरहा तब कडुवा खट्टा विषसमान बहुतरोग उत्पन्न करताहै ॥६॥सोरस आहारका सार है जब आहार से रस भिन्नभया सो सारहीन आहार मल और जल रहगया उस जलको मूत्रवाहिनी सिराने लेके वस्ती जो मूत्रकी थैली तिस में छोड़ा सो मूत्रहै तिसके नाम उसीकी कीटमलहो पक्वाशय में रहताहै ॥ ७ ॥ सो मल अपानवायुप्रेरित त्रिवली में हो निकलताहै त्रिवली कहै मलमार्ग जिस में तीन वल शंखकी नाई हैं तिसके नाम प्रवाहिनी,सर्जनी,ग्राहिका ३ ॥ ८ ॥ सो रस समानवायुप्रेरित हृदय में जाताहै व रंजित पित्तसे पचिके रक्त होजाताहै॥९॥ वह रक्त उत्तम जीवाधार सर्व शरीरमें स्थितहै और चिकनाहै गुरुहै चरहै स्वादुहै व जब दग्ध होताहै तब पित्तसम कटु होजाताहै ॥ १० ॥ पित्तकी आंचसे पचिके मासभरे में रसादिक धातु क्रमसे शुक्रको प्राप्तहोतीहैं तथा स्त्रीके शरीरमें उसी क्रम से रज होताहै इसरीतिसे एक दिनमें भोजनका रस फिर रस पचिके पांचदिनमें रु धिर ऐसे प्रतिधातु पांच दिनमें पचि पचिके महीनाभर में शुक्र होताहै ॥ ११ ॥ जब स्त्री पुरुषकी कामना से संयोगद्वारा शुद्ध रक्त वीर्यमिश्रित होताहै तब स्त्री

कन्यापुत्रःशुक्राधिकेभवेत् । नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापार
मेश्वरी १३ अस्थीनिमज्जाशुक्रंचपितुरंशास्त्रयोमताः ।
शुक्राश्रितोभवेच्छ्यावोगौरश्चरजसाश्रितः १४ बालस्य
प्रथमेमासिदेयाभेषजरक्तिका । अवलेहीकृतैकैवक्षीरक्षौद्र
सिताघृतैः १५ वर्द्धयेत्तावदेकैकांयावद्भवतिवत्सरः । माषै
र्वृद्धिस्तदूर्ध्वंस्याद्यावत्षोडशवत्सरः १६ ततःस्थिराभवे
त्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः । ततोबालकवन्मात्राह्रसनीया
शनैःशनैः । मात्रेयंकल्कचूर्णानांकषायाणांचतुर्गुणा १७
अञ्जनंचतथालेपःस्नानमभ्यङ्गकर्मच । वमनंप्रतिमर्श
श्चजन्मप्रभृतिशस्यते १८ कवलःपञ्चमाद्वर्षाद्दष्टमान्न
स्यकर्मच । विरेकःषोडशाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनम् १९
बाल्यंवृद्धश्छविर्मेधात्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ । बुद्धिकर्मेन्द्रि

थंचैतोजीवितंदशतोह्रसेत् २० (इति आहारपाकगर्भो
त्पत्तिकुमारपोषणानि) अल्पकेशःकृशोरूक्षो वाचाल
श्चलमानसः । आकाशचारीस्वप्नेषु वातप्रकृतिकोनरः
२१ अकालेपलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेदी च रोषणः । स्वप्ने
षुज्योतिषांद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः २२ गम्भीरबुद्धिः स्थू
लाङ्गःस्निग्धकेशोमहाबलः । स्वप्नेजलाशयालोकीश्ले
ष्मप्रकृतिकोनरः २३ ज्ञातव्यामिश्रचिह्नैश्चद्वित्रिदोषो
ल्वणानराः । कौमारंयौवनंवार्द्धंप्राणिनांत्रिविधंवयः । क
फपित्तानिलप्रायंक्रमतःप्रकृतिस्त्रिधा २४ (इतिहितोपदे
शात्)तमःकफाभ्यांनिद्रास्यान्मूर्च्छापित्ततमोभवा।रजः
पित्तानिलैर्भ्रान्तिस्तन्द्राश्लेष्मतमोनिलैः २५ग्लानिरोज
क्षयाद्दुःखादजीर्णाच्चश्रमाद्भवेत्।यःसामर्थ्येप्यनुत्साहस्त

धारणशक्ति पचासतक त्वचा साठतक दृष्टि सत्तरलौं वीर्य अस्सीतक बल नव्वे लौं बुद्धि सौतक कर्मेंद्रिय चलनशक्ति एकसौ दशतक चेत एकसौ बीसतक जीवत्व दश दशवर्ष प्रति यह क्रम जानना ॥ २० ॥ इति आहारपाकगर्भोत्पत्तिकुमारपोषणानि (वातप्रकृतिलक्षण) सूक्ष्मकेश दुर्बल रूखा बकवादी मनस्थिर नहीं आकाशचारी स्वप्न देखै ये वातप्रकृति नरके लक्षणहैं॥२१॥(पित्तप्रकृति)लघुवयसमें केश पकैं बुद्धितीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखै ये पित्तप्रकृति मनुष्य के लक्षणहैं ॥२२॥ (कफप्रकृतिलक्षण)गम्भीर बुद्धि स्थूलशरीर चिकने केश अधिक बल जलादि स्वप्नमें देखे सो कफप्रकृति पुरुषके लक्षणहैं॥२३॥(अथ द्वित्रिदोषप्रकृतिलक्षण)जो दो दोषके लक्षणहों तौ द्विदोषजप्रकृति जानो तीनोंके लक्षणहोंयतौ त्रिदोषजप्रकृति जानो कौमार-यौवन-वृद्ध यह तीनप्रकारकी अवस्थाहैं—और कफपित्त वायुकी आधिक्यता से प्रकृतिभी तीनप्रकारकी है ॥ २४ ॥ इति हितोपदेशात् ॥ तमोगुण और कफ मिलके नींद आती है इसे स्वप्नावस्था कहते हैं पित्त में तमोगुण मिलने से अचेत होताहै तिसे मूर्च्छा कहते हैं रजोगुण पित्तवात मिलेसे संभ्रम होता है तमोगुण कफवात संयुक्त होनेसे तंद्रा होतीहै जृम्भा बढ़े निद्रा स्थिर न होय ॥ २५ ॥ बलहानिसे दुःखसे

दालस्यमुदीर्यते २६ चैतन्यशिथिलत्वाद्यःपीत्वैकंश्वास
मुद्वरेत्। विदीर्णवदनःश्वासंजृम्भासाकथ्यतेबुधैः २७ उ
दानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्त्रवात्। शब्दस्सञ्जाय
तेतेनक्षुतंतत्कथ्यतेबुधैः २८ उदानकोपादाहारस्सुस्थिर
स्वाश्रयव्रजेत्। पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारंप्रचक्षते २९
इति प्रकृतिलक्षणानि ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेषष्ठोऽध्यायः ६॥
रोगाणांगणनापूर्वमुनिभिर्याप्रकीर्तिता। मयात्रशो
च्यतेसैवतद्भेदाबहवोमताः १ पञ्चविंशतिरुद्दिष्टाज्वरा
स्तद्भेदउच्यते। पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वन्द्वभेदेनत्रिविधःस्मृतः
२ एकश्चसन्निपातेनतद्भेदाबहवस्स्मृताः। प्रायशःसन्निपा
तेनपञ्चस्युर्विषमज्वराः ३ सन्ततःसततश्चैव अन्येद्युष्क
स्तृतीयकः। चातुर्थिकश्चपञ्चैतेकीर्तिताविषमज्वराः ४
तथागन्तुज्वरोप्येकस्त्रयोदशविधोमतः। अभिचारग्रहावे

अजीर्ण से ग्लानि होतीहै सामर्थ्य रखकर कृत न करै उसे आलस्य कहतेहैं॥२६॥ चैतन्य स्थानकी शिथिलता से एकश्वासको खैंचिके मुख फैलायके छोड़ै उसे जंभाईकहतेहैं॥ २७॥ उदान और प्राणवायु के ऊपर चढ़ने से शिरका कफ गिराताहै उसके शब्दको छींक कहते हैं॥ २८॥ जब आहार अपने स्थान में गया वहां की भरीहुई उदानवायु कोपकरि ऊपर निकलती है उसे डकारकहतेहैं॥२९॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंहितायामाहारकथनन्नामषष्ठोऽध्यायः ६॥

प्रथम मुनियोंकी कहीहुई रोगों की गणना सो इस ग्रन्थ में मैं कहताहूं रोगोंके बहुत भेद हैं॥ १॥ पचीस भांति के ज्वरका भेद कहाहै व तीनप्रकार के भिन्न भिन्न हैं वातज्वर कफज्वर औ दो दो दोष वे तीनिप्रकार के हैं वातपित्तज्वर वातकफज्वर कफपित्तज्वर ऐसे कहते हैं॥ २॥ और एक सन्निपातज्वरहै तिसकेबहुतसे भेद कहे हैं बहुधा सन्निपातसे पांचप्रकार के विषमज्वर उत्पन्न होते हैं॥ ३॥ वा जो ज्वर सदैव बनारहै उसे सन्तत कहते हैं १ एक बसा है दूसरा किसीबेर फिर आवै उसे सतत कहतेहैं २ दूसरे दिन आवे उसे अन्तरिया कहते हैं ३ तीजे दिनवाले को तिजरिया कहैं ४ चौथे दिन आवे उसे चातुर्थिक कहैं ५ ये पांच वि-

शंशापैरागन्तुकस्त्रिधा ५ श्रमाच्छेदात्क्षताद्दाहाच्चतुर्धाघा तजोज्वरः। कामाद्भीतेःशुचोरोषाद्विषादोपधगन्धतः। अ भिषङ्गज्वराःषट्स्युरेवंज्वरविनिश्चयः ६ पृथग्दोषैःसम स्तैश्चशोकादामाद्भयादपि। अतीसारस्सप्तधास्या्द्ग्रह

पमज्वरहै ॥ ४ ॥ एकप्रकारका आगन्तुकज्वरहै सो तीन कारण करके तेरह प्रकारका होताहै अभिचार कहे टोना मन्त्रादि से १ ग्रहदशा से २ शाप से ३ ये तीन प्रकार हैं॥ ५ ॥ श्रमसे १ चोटसे २ चतसे ३ व जलनेसे ४ ये चारप्रकार आघातके कहे कामचेष्टा में स्त्रीका अभाव भये अथवा चित्तासक्त स्त्रीके वियोग से १ डर से २ शोकसे ३ क्रोधसे ४विषसे अथवा विषगन्ध से ५ प्रबलऔषधिसे-वनसे ६ ये छः अभिषंगज्वरहैं ये सब ज्वर २४ निश्चय कियेगयेहैं॥६॥ अब १२ प्रथम कहे और तेरह आगन्तुक पचीसों के लक्षण कहताहूं ज्वर के आनेसे देहकांपै ज्वर आनेका कोई समय बन्धन नहीं ॥दोहा॥ मूखहोठ गरनींदनहिं अंशुविरस मुखफीक। शिरहृदि शूलोदरफुले मलबधजम्भालीक ॥ इति वातज्वर ॥ वेगदस्त कफहववकि कण्ठघ्राणमुखपाक। श्वेतमलापी मूद कटु मूर्च्छादाहमदाक ॥ तृष्णा पियरो मूत्रमल नयनत्वचान्हसुपीत। वचन भुलानें भ्रमसहित सो पित्तज्वर नीत ॥२॥ इति पित्तज्वर ॥ शीतलता संकुचिततन आलस मध्य सताय। श्वेत मूत्रमलमीठगुरु गुरुताअरुचिजड़ाय ॥ जाड़ारोमांचौ उबकि अतिनिद्रा तन पीर। रोध नासिका श्रवणहल भवलमूत्र गम्भीर॥ सूक्ष्मस्वेद लघुउष्णता अपचनासि-द्रवकासु। अरुचिनयन सितनयनरँगकफज्वर कहियेतासु ॥ इति कफज्वर ॥ तृष्णा मूर्च्छा दाहभ्रमनींद नमस्तकपीर। रोमहर्षगरमुखसुखैधुंअरुचिउपकीर ॥ कांटि यांडि पीड़ाकरै मत पित्तज्वर जाल॥ इति वातपित्तज्वर ॥ संकुच शीतल जकड़ तन खांसी नींद प्रधान। सन्धिपीर मस्तक जकड़ प्राण द्राव अतिस्वेद। मध्यमज्वरसंतापयुतवातकफज्वरखेद ॥ इति वातकफ ॥कटुलसलसमुख दन्तचत हिक्काकासरुप्यास ।छनजाड़ाछनहीअरुचिकफपित्तज्वरत्रास॥ इतिकफपित्त॥छन जाड़ा छनदाहपुनि अस्थिमाथमेंपीर। लालनयनजल श्रवणमेंशब्दविलत्तणचीर तंद्राकंटककंठगत मोहप्रलापकास। स्वासअरुचिभ्रमजम्भखरदग्धसदृशआभास॥ तनमस्तपरसतउतअधिररक्तसुपित्तकफन। प्यासअनिद्राहृदयभय दुष्टस्वेद मनहैन॥ अति दुर्बलतायातनहिं घरघर कण्ठहि होइ। उष्णगात फिरकौअसित दागकले-वरजोइ॥ गुंगकान पक पेटगुरु दोष बहुत दिनपाक। दोषप्रदेपायकघटैलक्षण

णीपञ्चधामता ७ पृथग्दोषैः सन्निपातात्तथा चामेन पञ्चमी। प्रवाहिका चतुर्द्धास्यात् पृथग्दोषैस्तथास्रतः ८ अजीर्णं

त्रि निशाक ॥ कहि असाध्य लक्षण सकल कष्टसाध्यजोनाट । थोरेलक्षण साध्य ये जो लघु सरितापाट ॥ इति सन्निपात ॥ सातकि दश द्वादश दिवस घटेनसंतत ताप । सततचढ़े द्वैवार नित कहत वैद्य निष्पाप ॥ इतिसंततसततज्वर ॥ चढ़ै अन्येद्युः वारइक दिकैचढ़ीउश्वास । अंतरिया दिन वीचुदै तिजरी द्वैतनित्रास ॥ चातुर्थिक दिनत्रै विते कहते सकल रुजहार । भूत प्रेत विपरीतजप होमजनित अभिचार ॥ राक्षसादि पीडाजनित कहिज्वरग्रह आवेश ॥ वृद्ध सिद्धद्विजगुरु शपित कहतशाप ज्वर देश ६ ॥ अतिसारसप्तप्रकार । प्रतिदोष दोषविकार ॥ पुनिशोकआंवडराय । ग्रहणीपुंचकहाय ॥ प्रतिदोषसंतोआम । रहिजातजोभुगलाम ७ (अथातीसार रोग) अतीसार सातप्रकारकेहैं वातातीसार, पित्तातीसार, कफातीसार, त्रिदोषा तीसार, शोकातीसार, आमातीसार और भयातीसार ७ (लक्षण) जिसकेमलमेंमांव वा फेनामिला पतला गिरै लालरंग रूखा वा हलका होय वारबार वेग होहो भर-भराहटसे शूल से होवे वातातीसारके लक्षण हैं ॥ पीत व नीला व ताम्रमल गिरै मूर्च्छा होय गुदा में जलन और गुदा पक जाय प्यास ये पित्तातीसारके लक्षणहैं॥ श्वेतरंग गाढ़ा कफसहित निसेदी गंधमलठंढादेहमेंरोमहर्षहोय इति कफातीसार ॥ सूकर मेना तथा मांस धोवन सा मल गिरै और वातादि दोषातीसारनके लक्षण मिलैं उसे त्रिदोषातीसार जानिये बहुत कठिनसाध्यहै ॥ इति ॥ जो धन पुत्रादि वा प्रतिष्ठादि हानिके शोकसे भोजन न करे उसके शोककी उष्णता ओझड़ी में हो अग्निको विकल करती है उसके तेज से रुधिर उफना ताम्ररंगहोय मलकेसाथ गिरै वा केवल रुधिर गिरै औ आमगन्ध हो वा अतिदुर्गन्ध हो उसे शोकाती सार कहते हैं सो भी अतिही कष्टसाध्य है अतिउष्णचीज औ पित्तकचीज खाने से वा व्रतसे गरमी होके निरे रुधिर का झाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहतेहैं और मूलव्याधि अर्श शोक से भी निरारक्त गिरताहै इति रक्तातीसार॥ और अन्न व रसके परिपाक न होनेसे आंवहोतीहैसोमलके संगअनेकरंगहो गिरतीहैऔरशूल करती है उसे आमातीसार कहतेहैं भयसे अतीसार होता है भयसे तीनों दोषकोप करते हैं जिस दोष के लक्षण मिलैं उसी दोषका कोपजानना ॥ इति अतीसार-लक्षण (अथ ग्रहणीरोग) पांचतरहकी ग्रहणी होतीहै॥ ७॥ वातग्रहणी, पित्त-ग्रहणी, कफग्रहणी, त्रिदोषग्रहणी, आमग्रहणी ५ (गृहणीलक्षण) जब अग्न्याशय

त्रिविधंप्रोक्तंविष्टब्धंवायुनामतम् । पित्ताद्विदग्धंविज्ञेय कफेनामंतदुच्यते ६ विपाजीर्णरसाद्वेकंदोषैः स्यादलसस्त्रिधा। विसूचीत्रिविधाप्रोक्ता दोषैःसास्यात्पृथक्पृथक् ॥ दण्डकालसकश्चैवमेकैकस्याद्विलम्बिका १० अ

में वातादिकदोष स्थित होके कोपकरतेहैं उससे उत्तममंग्रहणीरोग होताहै उससे आंव गिरता है दुर्गन्धसमेत वा वायुकरिके रुधिर खुल के भाड़ा नहीं होता औ पित्त करिके सणमण भर में दिशालगती है तब कभी आंव या जितनी पकै पत, नी गिरती है शक्ति घटतीहै आलस्य बढ़ता है अग्नि मन्दहोती है उससे अन्न का पाक अ॰श्रीमरह नहीं होता और वही आम शरीरको जड़ करती है यह संग्रहणी का प्रथम रूप है वायु के कुपितभये शूल, पेटफूलना, खांसी और श्वास होता है उसे वातसंग्रहणी कहिये-पित्तके कुपितभये खट्टीडकारआतीहै छाती कंठ जलता है रुचि न होइ उसे पित्तसंग्रहणी कहतेहैं-कफ केकुपित भये उबासी, मुखमीठा, लिबलिबा, खासी, नाकबहना, आलस्य ये कफसंग्रहणी के लक्षण जानिये- जिसमें तीनोंदोष के लक्षण होवैं वह सन्निपातसंग्रहणी है आमवातसेहो सो आम संग्रहणी और संचितहोके अठयें चौथेदिन गिरै तिसे आमातीसार कहतेहैं और प्रवाहिका चार भांतिकी है सो अतीसारके भेद जानो वातसे पित्तसे कफसे वरक्तसे इन चारों से होताहै वायु कोप करिके ओझड़ीमें कफसंचयकरै फिर कुपथ्यके कारण पाके कफ मल में मिल पतला करि बहताहै उसे प्रवाहिका कहते हैं जो वायुहोतो शूल हो और मलके संग फेन गिरै यह वातप्रवाहिकाहै और दाहहो पीतमल गिरै सो पित्तप्रवाहिका है जो देह टूटै आलस्य होके कफमिश्रित पांडुरंगमलगिरै उसे कफप्रवाहिका कहतेहैं जो रुधिर मिल पतलामलबहै फेननहीं उसे रक्तप्रवाहिकाकहतेहैं॥८॥ अजीर्ण के तीन भेदहैं किया हुआ भोजन यथ योग्य न पचै उसे अजीर्णकहते हैं जो वायु करके कोष्ठबद्ध होता है तब शरीरमें शूल, हड़फूटन, पेटफूलै, उसे विष्टब्ध अजीर्ण कहते हैं जो सम्भ्रम, मूर्च्छा, दाह, देहपीर, खट्टी डकारआवै जो वायुकरके कोपुबंधे उसे पित्तविदग्धाजीर्ण कहते हैं जो उबकाई, डकार, देहभारी, देहसूजन उसे कफ आमाजीर्ण कहते हैं॥६॥ जो अन्नभोजनकरि रस होताहै उससे एक विषाजीर्ण होताहै जो रस न पचै सो विष तुल्य होके मरणावस्थाके अनेक रोगको संचय करताहै सो तीनप्रकारकाहै विसूची, दण्डालस, विलंबिका, लक्षण) भाड़ा उल्टी न आवै मूर्च्छा, क्षुधाकी शूल, भ्रम, देह में दाह, जृम्भा, देहधुनना

र्शांसिषड्विधान्याहुर्वातपित्तकफास्रतः । सन्निपाताच्च संसर्गात्तेषांभेदोद्विधास्मृतः । सहजोत्तरजन्मभ्यांतथाशुष्कार्द्रभेदतः ११ त्रिधैवचर्मकीलानिवातात्पित्तात्कफादपि। द्वाविंशतिप्रकारेणकृमयःस्युर्द्विधोच्यते १२ बाह्यास्तथाभ्यन्तराःस्युस्तेषुयूकावहिश्चराः १३ लिख्याश्चान्येभ्यन्तरास्स्युःकफात्तेहृदयादकाः। अन्त्रादाउदरावेष्टाश्चुरवश्चमहागुहाः १४ सुगन्धादर्भकुसुमास्तथारक्ताश्चमातरः। सौरसालोमविध्वंसारोमद्वीपाह्युदुम्बराः १५ केशादाश्चतथैवान्येशक्त्ज्जातामकेरुकाः। लेलिहाश्चमलूनाश्च

अतिस्वेद इसे विसूचिका कहतेहैं कोई हलका कहतेहैं शरीर दंडाकारहो अकड़ जाय प्यास डकार इसे दण्डालस कहतेहैं व अधो ऊर्ध्ववायुरुंधके पेटस्तब्धहो फूले शूलहो इसे विलम्बिका व गुमशीतरस व बन्द हैजा कहतेहैं ॥ १० ॥ अर्शरोग व-वासीर छःप्रकारकी है वातार्श, पित्तार्श, कफार्श, सन्निपातार्श, रक्तार्श व संसर्गार्श इनके दो भेदहैं एक शरीरसे होताहै जिसे शुष्क कहतेहैं दूसरा विपरीताहार विहार से होताहै जो शंखाकार चक्र मलमार्गमें साढ़े पांच अंगुलकाहै उसमें वातादिक के कोपसे मांसका अंकुर उभर आताहै (लक्षण) माथेमें शूल, कटिपीड़ा, मन्दाग्नि ये लक्षण वातार्शकेहैं ज्वर, दाह, स्वेद, मूर्च्छा ये लक्षण पित्तार्शकेहैं श्वासभेद, अरुचि, माथाभारी औ अंकुरफूलके पीड़ाकरै बैठने में क्लेश ये लक्षण कफार्शकेहैं ऐसेही सन्निपातार्शहै और अति गरमी से रक्त गिरै देह पीली बलक्षीण यह रक्तार्शहै मलके वेगसे अंकुर रक्तदेह कांटेसे गड़ै ये संसर्गार्श के लक्षणहैं॥ ११ ॥ चर्मकील तीनि भांतिकी होतीहै वातज, पित्तज व कफज देहमें बाईसतरह के कृमिहैं तीन ऊर्ध्ववासी जुंवा चीलहर किलनी ये केश वस्त्रकी मलिनता से होतेहैं और सदारह अन्तरवासीमें सात भेदहैं सो कफसे होतेहैं हृदयादक १ अन्त्राद २ उदरावेष्ट ३ चुरव (चिलूना) ४ महागुह ५ सुगन्ध ६ दर्भकुसुम ७ ये कफाशय से आमाशय दूषित होते हैं कुपित होके ऊर्ध्वमार्ग अधोमार्ग हो निकलतेहैं श्वेतवर्ण, ताम्रवर्ण, मोटे, लम्बे तथा धानसमान लक्षण मन्दाग्नि छर्दी ज्वर नाभिलाल ॥ १२ ॥ १३ ॥ और छः रक्तसे होते हैं मातर १ सौरस २ लोमविध्वंस ३ रोमद्वीप ४ उदुम्बर ५ ॥ १५ ॥ और केशाद ६ ये रक्तवाही सिराके स्थानमें होतेहैं (लक्षण) लाल अतिसूक्ष्म जो

सौसुरादामकेरुकाः। तथान्येकफरक्ताभ्यांसञ्जाताःस्नायुकाःस्मृताः १६ व्रणस्यकृमयश्चान्येविषमाबाह्ययोनयः। पाण्डुरोगाश्चपञ्चस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा १७ त्रिदोषैर्मृत्तिकाभिश्चतथैवकामलास्मृता। स्यात्कुम्भकामलाचैवतथैवचहलीमकम् १८ रक्तपित्तंत्रिधाप्रोक्तमूर्ध्वगंकफसम्भवम्। अधोगंमारुताज्ज्ञेयंतद्द्वयेनद्विमार्गगम् १९ कासाःपञ्चसमुद्दिष्टास्तेत्रयःस्युस्त्रिभिर्मलैः। उरःक्षताच्चतुर्थः स्यात्क्षयाद्धातोश्चपञ्चमः २० क्षयाःपञ्चैव विज्ञेयास्त्रि

देख नहीं परे यह कष्ट उत्पन्न करतेहैं और मकेरुक,लेलिह, मन्नून, सौसुराद व मकेरुक ये पाच भवलतर कृमि मलमें होतेहैं कचे मलमें रहते हैं श्वेत पीत दीर्घ मोटे कभी मुखसे कभी मल केसंग गिरतेहैं अग्निमन्द पीड़नादि उपद्रव होते हैं कफ और रक्तसे उत्पन्न होतेहैं उसे स्नायुक (नाहरू)कहते हैं ॥ १६ ॥ और बहुत विषम व बाह्ययोनि ये व्रणके कृमिहैं(अथ पाण्डु) पाण्डुरोग पांच भांतिका होताहै वातज, पित्तज,कफज,त्रिदोषज,माटी भक्षण से ५ (लक्षण) मुख कान्तिहीन भ्रमर कंप सूजन पेट पजावा आलस्य ये पाडुलक्षणहैं और कमलपाडु कुम्भकपाडु हलीमकपाडु इनके(लक्षण)नीलचमरा, हल्दीसा मूत्रलाल मल उष्ण बलहीन ये कमल पाडुदेह कृष्ण वा पीत कभी हरित सामर्थ्यहानि अग्निमन्द सूक्ष्मज्वर नपुंसकताश्वासी ये कुंभकपाडु के लक्षणहैं ऐसेही लक्षण हलीमकपाडुके हैं॥ १७ ॥ रक्तपित्तके तीन भेद जानो निदान उसका यहहै परिश्रम शोकमार्गगमन व मैथुनइत्यादि अति करनेसे रुधिर उफनाय मुख और दिशासे गिरैउसे रक्तपित्त कहतेहैं जब वह उफना रुधिर निदान उसका यहहै कफ कोपताहै तो मुखसे गिरताहै जो वायु कोपताहै तो मलमार्गसे गिरता है अग्निकोपसे नाकमे गिरताहै और कफवात दोनोंसे मुख और दिशासे गिरताहै॥ १८।१९॥ कास कहे खासी पाच प्रकारकीहै वातसे,पित्तसे, कफसे,कलेजेके छिद्रसे व धातुक्षीणसे ५ पेटकोप हृदय मस्तकपीड़ा सूखी श्वास खांसी ये वातकासके लक्षण हैं॥ ज्वर,मस्तकदाह,उमेह,पीतकफ निकलना ये पित्तकासके लक्षणहैं॥ खुजरी,कफसे देह जकड़ना ये कफकासके लक्षणहैं॥ और वातसे करेजेमें घाव होके सूखी खासीकेपीछे रक्तआना,पसुरीपीडाये क्षतकासके लक्षणहैं॥ धातु क्षयसे कृश सर्वसन्धि पीड़ाकारिके खासी उत्पन्न होतीहै यह धातु क्षयकासलक्षणहै॥ २

भिर्दोषैस्त्रयश्चतेचतुर्थस्सन्निपातेनपञ्चमःस्यादुरःक्षता
त् २१ शोषाःस्युःषट्प्रकारेणस्त्रीप्रसङ्गाच्छुचोव्रणात्। अ
ध्वश्रमाच्चव्यायामाद्वार्द्धक्यादपिजायते २२ श्वासाश्च
पञ्चविज्ञेयाःक्षुद्रस्स्यात्तमकस्तथा। ऊर्ध्वश्वासोमहाश्वा
सश्छिन्नश्वासश्चपञ्चमः २३ कथिताःपञ्चहिक्कास्तुता
सुक्षुद्रान्नजातथा। गम्भीरायमलाचैवमहतीपञ्चमीत
था २४ चत्वारोग्निविकाराःस्युर्विषमोवातसम्भवः।तीक्ष्णः

पांचप्रकारकी क्षयीकहते हैं वातक्षय, पित्तक्षय, कफक्षय, सन्निपातक्षय, उरःक्षय इनका चरकके मतसे निदान कहताहूं भुजा कोखें जलना, हाथ पावें जलना, ज्वर, व्यथा, कंठस्वर विपरीत, हाथ पावें गिराना, खांसी ये वातक्षयके लक्षणहैं दाह होना, ज्वररहना, अतीसार, रक्तसहित मल गिरना यह पित्तक्षय के लक्षण हैं कोष्ठमें पीड़ाहोइ, कफगिरै, ज्वर होइ, खांसी यह कफक्षयके लक्षण हैं ज्वर रहै, खांसीरहै, अन्तर्दाहहोइ यह सन्निपातक्षय के लक्षण हैं कण्ठ घरघराना, ज्वर होना, खांसी आना, अग्निमन्द, दुर्गंधि सहित कफकी गांठिगिरै यह उरःक्षतक्षय के लक्षण हैं ॥ २१ ॥ शुष्करोग छःप्रकारका अतिमैथुनसे, शोचसे, व्रणसे, अति चलने से, अतिपरिश्रम से, अति बुढ़ापे से जब रसादिक सात धातु शरीर को सुखाती हैं ॥ २२ ॥ श्वास कहे (दमा) पांच प्रकारका है क्षयीश्वास, तमक श्वास, ऊर्ध्वश्वास, छिद्रश्वास, महाश्वास वायुकोप से ऊर्ध्वश्वास चढ़ती है देह में मंद पीर ये क्षयीश्वास साध्यलक्षण हैं कंठ घरघराना, पसुरी पीर, अतिदुःख से कफ निकलै, दमचढ़ै ये तमकश्वासके लक्षण हैं बहुत ऊंची श्वासखींचे उसे ऊर्ध्वश्वास कहते हैं घरघराके जोरसे श्वासआवै विकलहो खांसने की शक्ति न रहे उसे महाश्वास कहतेहैं हृदयमें जाड़ा, मूर्च्छा, मलाप (अतिबक) श्वास टूटना यह ऊर्ध्वश्वास असाध्यहै ॥ २३ ॥ हिक्काकहे हिचकी पांच प्रकारकी है क्षुद्रा, अन्नजा, गम्भीरा, यमला, महती जो वारवार वायु मदवेग से ऊर्ध्वगमनकरै उसे क्षुद्रहिक्का कहते हैं विशेष खाने पीनेसे अन्नजा हिक्का होती है भारी शब्दसे हिचकी आवै उसे गंभीरा कहतेहैं रहि रहिके आवै उसे यमला कहते हैं देह कांपिके निरंतर हिचकी आवै तिसको महाहिक्का कहतेहैं ॥ २४ ॥ जठराग्नि के चार प्रकारके विकार हैं वातकोपसे हो उसे विषम कहतेहैं पित्तसेहो उसे तीक्ष्ण कहतेहैं कफसे हो उसे मन्दाग्नि कहते हैं वातपित्तसे हो उसे भस्माग्नि कहते हैं (अथलक्षण)

पित्तात्कफान्मन्दोभस्मकोवातपित्ततः २५पञ्चैवारोचका ज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा।सन्निपातान्मनस्तापाच्छर्दयःस प्तधामताः२६त्रिभिर्दोषैःपृथक्सिस्रःक्रिमिभिःसन्निपाततः। घृणायाश्चतथास्त्रीणांगर्भाधानाच्चजायते २७स्वरभेदाः षडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रयः। मेदसासन्निपातेनक्षयात्पष्ठः प्रकीर्तितः २८ तृष्णाचषड्विधाप्रोक्तावातात्पित्तात्कफाद पि। त्रिदोषैरुपसर्गेणक्षयाद्धातोश्चषष्ठिका २९ मूर्च्छाच तुर्विधाज्ञेयावातपित्तकफैःपृथक्। चतुर्थीसन्निपातेनतथै कश्चभ्रमःस्मृतः। निद्रातन्द्राचसन्न्यासोग्लानिश्चैकैक शःस्मृतः। क्षे०मदास्ससप्तमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः।

जो अन्न कभी पचै कभी न पचै यह विषमाग्नि है व भोजनपर भोजनकरै उसे तीक्ष्णाग्नि कहते है व थोडा भोजन करने से भी न पचै उसे मंदाग्नि कहते हैं जो बारबार भोजनकरै अन्नपचै और देरमें न लगै उसे भस्माग्नि कहते हैं ॥ २५ ॥ अरुचिके पांचभेदहै वातसे,पित्तसे,कफसे,सन्निपातसे,संतापसे (लक्षण) दांतखट्टे, मुँहफीका, हृदयपीडा यह वातरोचक है मुँहकडुवा, स्वादहीन ये पित्त अरुचिहै मुंह फीका व चिकना यह कफ अरुचि है तीनों लक्षणहों तो सन्निपात अरुचि है मन संतापहो तिसमें जो दोष अधिकहो वही लक्षण जानो छर्दिकहे वमन सो सातप्रकारका है ॥ २६ ॥ वा छर्दि कहे वार २ उलांत वातछर्दि, पित्त छर्दि, कफछर्दि, सन्निछर्दि, कृमिछर्दि व घृणाछर्दि तथा स्त्रीके गर्भधारण समय सातवीं छर्दि होतीहै (अथ लक्षण) हृदय मस्तक पीडा मुखसूखै नाभि शूल उबाकी फेनयुक्त उकार देह पीत ये वातछर्दि, उबकाई पीत हरित दाहयुक्त ये पित्तछर्दि, कफ संयुक्त उबकाईहो सो कफछर्दि जो उबकाई खट्टी नीली लाल दाहयुक्तहो तो सन्निछर्दि, जो निरंतर जीमिचलाय विशेष थूंकै तो कृमिछर्दि जो कुवचेर ज्वाले कुछ घाँभिरहै तो घृणाछर्दि कहै अन्य ग्रंथकारका मतहै कि स्त्रीकी जैसी पित्त प्रकृतिहो उतनी छर्दिहो ॥ २७ ॥ स्वरभेद छःप्रकारका है वातस्वर पित्तस्वर कफस्वर गलेमें विशेष भेदसे सन्निसे व धातुक्षयसे ॥ २८ ॥ तृषा छः प्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज आवलगने से, धातुक्षयसे ॥ २९ ॥ मूर्च्छा चार प्रकारकी है वातमूर्च्छा पित्तमूर्च्छा कफमूर्च्छा सन्निपातमूर्च्छा (लक्ष-

त्रिदोषैरसृजोमद्याद्विषादपिचसप्तमः ३० मदात्ययश्च तुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफादपि । त्रिदोषैरपिविज्ञेयएकः परमदस्तथा ३१ पानाजीर्णतथैवैकंतथैकःपानविभ्रमः । पानात्ययस्तथाचैकोदाहास्सप्तमतास्तथा ३२ रक्तपित्ता त्तथारक्तात्तृष्णायाःपित्ततस्तथा । धातुक्षयान्मर्मघाता द्रक्तपूर्णोदरादपि ३३ उन्मादाःषट्समाख्यातास्त्रिभिर्दोषैश्चयश्चते । सन्निपाताद्विषाज्ज्ञेयः षष्ठोदुःखेनचेतसः ३४ भूतोन्मादाविंशतिःस्युस्तेदेवाद्दानवादपि। गन्धर्वा त्किन्नराद्यक्षात्पितृभ्योगुरुशापतः ३५ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृ

क्षणं) संज्ञा कहे चेष्टाकी वहानेवाली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिरहोके अकस्मात् तमोगुणको प्राप्तहो तमोगुण कहे दुःख सुखका तिरस्कार करनेवाला काष्ठवत् भूमिपर गिरादेताहै उसे मूर्च्छा कहतेहैं और भ्रम एक प्रकारका (तिसका लक्षण) संदेह सहित घुमेर आना निद्रा एक प्रकारकी है तन्द्रा एक प्रकारकी है (लक्षण) कुछ जगै कुछ सोवै संन्यास एक प्रकार का (लक्षण) हाथ पाँव चलैं नहीं मृतक समान पड़ारहै उसे संन्यास कहतेहैं संन्यासरोगमें बहुत जल्दी मथन करै तो मनुष्य तुरत मरजाइ इससे हाथ पाँवकी कलाई में सूचीवेद रुधिर निकालै मस्तक में फस्तदे रुधिर निकालै तो जिवै ग्लानि एक प्रकारकी है (से०) मदरोग सात प्रकारका है वातमद, पित्तमद, कफमद, सन्निपातमद, रक्तके कोपसे अधिक मद्य सेवनेसे, विषखानेसे, कची सुपारी खानेसे, कोदन खानेसे, धतूराखाने सेजैसे मद होताहै ऐसाही वातादिक कुपितहो मनको विभ्रम करते हैं उसे मदकहते हैं ॥ ३० ॥ मदात्ययरोग कहते हैं अतिमद से चार विधिके रोगहैं वातसे, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे एक परममद कहतेहैं मनुष्यकी बुद्धिभ्रंशहो अनेक भाँति चिह्न करै माया विकलरहै उसे मदात्यय कहते हैं ॥ ३१ ॥ पानाजीर्ण एक प्रकार एक पानविभ्रम एकप्रकार पानात्यय दाह सातप्रकारका है ॥ ३२ ॥ रक्तपित्तसे, प्याससे, पित्तसे, धातुक्षयसे, मर्मघातसे, मारखानेसे, हृदयमें रुधिर संचित होनेसे ॥ ३३ ॥ उन्माद रोग छः प्रकारका है वातोन्माद, पित्तोन्माद, कफोन्माद, त्रिपसेवन से, शोकसे (लक्षण) जो वातादि दोष बढ़िके कुमार्ग होके नाड़ीमार्गमें जाके चित्त को भ्रमकरैं उसे उन्माद कहतेहैं तब हँसै रोवै नाचै कालाहोजाइ अजीर्ण वस्त्र त्याग बुद्धिस्मृति मांस भोजन में अरुचि ॥ ३४ ॥ भूतोन्मादरोग बीसतरहके हैं

द्धासिद्धाद्भूतात्पिशाचतः। जलाधिदेवतायाश्चनागाद्ब्रह्मराक्षसात्।राक्षसादपिकूष्माण्डात्कृत्यवैतालयोरपि ३६ अपस्मारश्चतुर्धास्यात्समीरात्पित्ततस्तथा। श्लेष्मणोपि तृतीयःस्याच्चतुर्थःसन्निपाततः ३७ चत्वारश्चामवाताः स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थःसन्निपातेनशूलान्यष्टौबुधाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वन्द्वभेदेनत्रिविधान्यपि।

देवसे, दानव से, गंधर्व से, किन्नर से, यक्षसे, पितर से, गुरुशापसे ॥ ३५ ॥प्रेत से, गुह्यक से, वृद्ध और सिद्ध शापसे, भूतसे, पिशाच से, जलदेवता से, सर्पसे, ब्रह्मराक्षस से, राक्षस से, कूष्मांड से, कर्त्तव्य से (लक्षण) संतुष्ट, पवित्रता, सुगंध माला धारण, संस्कृत भाषा ये देवोन्माद-ब्राह्मण, गुरु, देवताकी निंदा, निर्भय ये गंधर्वोन्माद-किन्नर, गंधर्व, आपको जाने, लाल आंखि, मलिन, रक्त वस्त्रप्रिय, दंभ, पितृक्रियारहित, मांस, तिल, गुड़पर विशेष इच्छा करै ये पितृ उन्माद गुरुशाप से गुरुशापोन्माद वृद्ध सिद्ध गुरुवत् भूत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमान से जानो ऊर्ध्व वायु होय बड़बड़ाय अमंगल भाषै दुर्गंधयुक्त रहै सो पिशाचोन्मादी जानो जलधि, देवता, श्मशान देववत् जो ओंठ भोजनमें गाड़ जीभसे चाटै तो सर्पोन्माद है देव, गुरु, वेद, शास्त्र व ब्राह्मण को निंदै तौ ब्रह्मराक्षसोन्माद जानो मद मांस विषयातुर निर्लज्जा यह राक्षसोन्माद है अरु अनुमान से जानना ॥ ३६ ॥ अपस्मार कहे (मृगी)के चार भेदहैं वातज, पित्तज,कफज, त्रिदोषज (लक्षण) तनकंप, दांतकड़कड़ाना,श्वासघरघराना यह वातापस्मार है जो मुखसे फेन पीला उगले तौ पित्तापस्मारहै हाथ पांव थरथराना देह सफेद और ठंढीहो तो कफापस्मार है तीनों दोषलक्षण मिलें तो सन्निपातापस्मारहै असाध्य जानना ॥ ३७ ॥ आमवात चार प्रकार का है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज वातादि दोष कोप करके जठराग्नि को मंदकरै तो भोजन अपक्वरहै सो आंव होजाय तिससे देहमें पीर ज्वर अरुचि गात्र अकड़ै यह सामान्य लक्षण हैं जिस में देह पीड़ा विशेष हो तो वातज है दाहहो तो पित्तसे पित्तज कफसे आमवात है देह अकड़ जाय खुजली हो तो कफ आमवातहै तीनों लक्षणहों तो सन्निपातामवात है शूलके आठ भेदहैं ॥ ३८ ॥ वातसे, पित्तसे, कफसे, वात पित्तसे, पित्तकफसे, कफवात से, आंवसे, सन्निपात से इसका मुख्य कारण वायुहै सो सूखी रूखी द्रव्य सेवनसे कुपितहोय हृदय पसुरी संधिनमें पीडै शूल उपजाती

आमेनसप्तमंप्रोक्तं सन्निपातेनचाष्टमम् ३९ परिणामभवं शूलमष्टधापरिकीर्त्तितम्। मलैर्येःशूलसङ्ख्यास्यात्तैरेवंप रिणामजम्।अन्नद्रवभवंशूलंजरत्पित्तभवंतथा४० एकैकङ्ग णितंसुज्ञैरुदावर्तास्त्रयोदश। एकःक्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृष्णा रोधाद्द्वितीयकः ४१ निद्राघातात्तृतीयःस्याच्चतुर्थःश्वास निग्रहात्। मूत्ररोधात्पञ्चमःस्यात्षष्ठःक्षवथुनिग्रहात् ४२ जृम्भारोधात्सप्तमःस्यादुद्गारग्रहतोष्टमः। नवमःस्यादश्रु रोधाद्दशमःशुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापिरोधा

द्वातविनिग्रहात् ।उदावर्तास्त्रयश्चैतेघोरोपद्रवकारकाः ४४ आनाहोद्विविधोज्ञेयएकःपक्वाशयोद्भवः । आमाशयोद्भवश्चान्यःप्रत्यानाहस्सकथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथाचैको हृद्रोगाःपञ्चकीर्तिताः । वातादयस्त्रयःप्रोक्ताश्चतुर्थःसन्निपाततः ४६ पञ्चमःक्रिमिसञ्जातस्तथाष्टावुदराणिच। वातात्पित्तात्कफात्त्रीणित्रिदोषेभ्योजलादपि। प्लीह्नःक्षता द्बद्धगुदादष्टमंपरिकीर्त्तितम् ४७ गुल्मास्त्वष्टौसमा

निरोध से डकार विशेष मरोर होना पेटफूलना। १२ वायुनिरोध से नानाप्रकार के उदर रोग १३ ॥ ४४ ॥ आनाह रोग दो तरह का होताहै एक जो पक्काशय का होके पेटफुलाताहै उसे आनाह कहते हैं एक आमाशय से होताहै उसे प्रत्यानाह कहते हैं (तस्यलक्षणम्) कटिमें पीडा, मलस्तंभ, आलस्य, पेट फूटना ये आनाहके लक्षण हैं आमाशय में शूल, मुख से लार, डकार यह प्रत्यानाह है ॥ ४५ ॥ उरोग्रह एकप्रकारका है रक्त, मांस, शिरा और पक्का इन सबों के बढ़ने से उरोग्रह होताहै हृद्रोग पांचप्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, कृमिज ५ हृदयमें सुईसी चुभना, दण्डसे कुचना, कुल्हाडी से फारना, आरीसे चीरना ऐसा दर्दहो तो वातज है हृदय में ग्लानि, मूर्च्छा, घुमासी, डकार ये पित्तजहैं देह भारी, खासी, अरुचि ये कफज हैं जो तीनों दोषके लक्षणहों तो हृदय में विशेष पीडाहो तो त्रिदोषजहै ॥ ४६ ॥ उबकाई, शूल, मुखमें लार, थुकथुकी ये कृमिज लक्षणहैं उदररोग आठ भांतिके हैं वातोदर, पित्तोदर, कफोदर, त्रिदोषोदर, जलोदर, प्लीहोदर, क्षतोदर, बद्धगुदोदर (अस्यलक्षणम्) हाथ, पांव, नाभि ॥ कोखमें शोथ संधिपीडा, पेटशूल, पेट गुड़गुड़ाना ये वातोदर हैं ज्वर, मूर्च्छा, दाह, खुजली, अतीसार, शरीर पीत वा ताम्र ये पित्तोदर हैं शरीर ग्लानि, निद्रा, देहगुरु, खासी अरुचि, श्वास यह कफोदरहै विवेकशून्य, दुर्बुद्धि, नख, केश, मूत्र, मल स्त्री लोभके श्यहेतु पुरुषको खिलादेती तिससे त्रयदोष कुपित होताहै मूर्च्छा, मोह, पाडुवर्ण शरीर दुर्बल, तृषातुर यह त्रिदोष है पेट चिकना, फली नसें दीखें, प्यास अधिक, देहकृश यह जलोदर है पेटबडा, कोखें कृश, मंदज्वर, पेट पत्थर सदृश पाडुवर्ण ये प्लीहोदर हैं पेट और नाभिके मध्यमें पीडा, अतिदेहकृश, मल पीलापानीसा मिला गिरै वा खार दिखाजाय यह क्षतोदरहै जो मल सूखाहुआ अतिकष्टसे थोडा थोडा कालकै गिरै यह बद्धगुदोदर लक्षण है ॥ ४७ ॥ गुल्म आठ प्रकारका है वात

ख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः। द्वन्द्वभेदात्त्रयःप्रोक्ताःसप्तमः सन्निपाततः ४८ रक्तादष्टमकःख्यातोमूत्रघातास्त्रयोदश। वातकुण्डलिकापूर्वंवाताष्ठीलाततःपरम् ४९ वातबस्ति स्तृतीयःस्यान्मूत्रातीतश्चतुर्थकः। पञ्चमम्मूत्रजठरंषष्ठो मूत्रक्षयःस्मृतः ५० मूत्रोत्सर्गःसप्तमःस्यान्मूत्रग्रन्थिस्त थाष्टमः। मूत्रशुक्रञ्चनवमंविड्घातोदशमःस्मृतः ५१ मू त्रासादश्चोष्णवातोवस्तिकुण्डलिकातथा। त्रयोप्येतेमू त्रघाताःपृथग्घोराःप्रकीर्तिताः ५२ मूत्रकृच्छ्राणिचाष्टौ स्युर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा ५३ सन्निपाताच्चतुर्थःस्यान्मू

गुल्म, पित्तगुल्म, कफगुल्म, वातपित्तगुल्म, कफवातगुल्म, त्रिदोषगुल्म, रक्तगुल्म, वातादि कोप करि पेट में गाठि सा गुल्म पाच तरहके उत्पन्न करता है दो दोनों पार्श्व में एक नाभिमें एक हृदय में एक पेडूमें होताहै कभी चलकै और ठौर पीड़ा करै कभी कभी कहीं अडकैपीडाकरेमूत्रघात तेरह प्रकार का होता है वातकुंडलिका, वाताष्ठीला ॥४८।४९॥ वातबस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रक्षय ॥ ५० ॥ मूत्रोत्सर्ग, मूत्रग्रन्थि, मूत्रशुक्र, विड्घात ॥ ५१ ॥ मूत्रासाद, उष्णवात, वस्तिकुण्डलिया इस में से तीन मूत्रघात, उष्णवात, वस्तिकुण्डलिका ये प्राणसकट उपद्रव करतेहैं (लक्षणं) विनगांठके थोडा २ मूत्रस्राव हो जो वातकुंडलिका है अति पीड़ाहो मलमूत्र वन्द रहै सो वाताष्ठीला जानो पेडू, कोठमें अधिक पीड़ाहो और मल मूत्र बन्द रहै तौ वातवस्तिहै जो मूत्र रुका बनी रहै उतरै नहीं तौ मूत्रातीत है पेडू फूलै पीडाकरै मूत्र न द्रवै तौ मूत्रजठरहै शूलदाह हो मूत्र न गिरे तो मूत्रक्षय है विनगांठ कांखनेसे रक्तसमें थोडा २ मूत्रस्रावहो तौ मूत्रोत्सर्ग है मूत्राशयके मुँह पर गांठिपर पीडाकरै तौ मूत्रग्रंथिहै जो मूत्रत्यागके आदि वा अन्त मूत्र रातधोवन सा गिरै तो मूत्रशुक्र जानो मूत्रमें मलकी गंधहो तौ विड्घात जानो जो दाहयुक्त गोरोचन शंखचूर्ण के रंग मूत्रहोके सूखनेपर जिस दोषकी रंगत होजाय तौ उसी दोषको मूत्रसाद जानो जो मूत्र पीलाया शुद्ध या रक्त या सारकष्टसे थोडा गिरै तौ उष्ण वात जानो जो मूत्रकी थैली के मुखपर सूजनहो धीरे२ पीला या लालमूत्र गिरै ये वस्तिकुंडलिका के लक्षणहै ॥ ५२ ॥ मूत्रकृच्छ्रके आठभेद है वातमूत्रकृच्छ्र पित्तकृच्छ्र कफकृच्छ्र ॥ ५३ ॥ सन्निकृच्छ्र शुक्रकृच्छ्र विट्कृच्छ्र अश्मरीकृच्छ्र ये आठ

त्रकृच्छ्रञ्चपञ्चमम् । विट्कृच्छ्रंषष्ठमाख्यातंघातकृच्छ्रंच सप्तमम् ५४ अष्टमंचाश्मरीकृच्छ्रंचतुर्धाचाश्मरीमता । वातात्पित्तात्कफाच्छुक्रात्तथामेहाश्चविंशतिः ५५ इक्षुमेहस्सुरामेहः पिष्टमेहश्चसान्द्रकः ५६ शुक्रमेहोदकाख्यौचलालमेहश्चशीतकः । सिकताख्यःशनैर्मेहोदशैते कफसम्भवाः ५७ माञ्जिष्ठाख्योहरिद्राख्योनीलमेहश्चरक्तकः । कृष्णमेहःक्षारमेहःषडेतेपित्तसम्भवाः ॥ हस्तिमेहोवसामेहो मज्जामेहोमधुप्रभः । चत्वारोवातजामेहाइतिमेहाश्चविंशतिः ५८ सोमरोगस्तथाचैकःप्रमेहपिट

है (अथैषांलक्षणम्) पेड़ू नाभि पीडा अधिक कांखर थोड़ा २ मूत्रहो तो वातकृच्छ्र है दाह चिनगहो लाल मूत्र द्रवै तौ पित्तकृच्छ्रहै पेड़ू भारी मूत्रस्वेद चिकना हो तो कफकृच्छ्र है तीनों के लक्षण हों तो सन्निपातकृच्छ्र है सो असाध्य जानो मूत्र धातु मिश्रित क्लेशसे उतरै तो शुक्रकृच्छ्र है जो कांखने से मूत्रद्रवै तो विट्कृच्छ्र है घावकी तरह अंत निश्चय हो और खरकशापके मूत्रद्रावकै मूत्रद्रावहोय तौ घात-कृच्छ्रहै पेड़ू या इंद्रीमें पीड़ा और शूलहो तौ अश्मरी कहिये ॥५४॥ अश्मरी कहे पथरीके चारभेदहैं वाताश्मरी, पित्ताश्मरी, कफाश्मरी शुक्राश्मरी (अथास्यालक्षणम्) वात पित्त कोपकरि मूत्रकी थैली के मुँहपर रसको सुखाय पथरीसी स्थिर करते हैं वही पथरी है पेड़ू और इंद्रीको फाडने लगती है मूत्र नहीं उतरता जब कांखने से पथरी कुछ हटती है तब दश बीस बूंद मूत्र गिरता है तौ वातपथरी है जो उष्णमलसा या गले दाहके कनके से या काली पथरीहो तो पित्ताश्मरी है पेड़ू भारी मूत्र श्वेत ठंढा कष्टसे हो तौ कफाश्मरी जानौ जब धातु सूखके पथरी परती है तब पेड़ूमें पीर अंडकोश में सूजन ये शुक्राश्मरी के लक्षण हैं प्रमेहरोग बीस प्रकारका है ॥ ५५ ॥ इक्षुमेह, सुरामेह, पिष्टमेह, सांद्रमेह ॥ ५६ ॥ वा शुक्रमेह, उदकमेह, लालमेह, सिकतामेह, शनैमेह ये दश भेद कफसंभव हैं ॥ ५७ ॥ मंजिष्ठामेह हरिद्रा० नील० रक्त०कृष्ण० क्षारमेह ये छः पित्तसंभव है हस्तिमेह, वसामेह, मज्जामेह, मधुमेह ये चारि वातसंभवहैं सब मिलि के बीस प्रकार के हैं (अथास्यलक्षणम्) जो मूत्रमार्ग से ऊखरससा शुक्रगिरै तौ इक्षुमेह जानौ जिसमें मद गंध आवै वह सुरामेह जानो पीठीसा गिरे तौ पिष्टमेह जानो जो

कादश। शराविकाकच्छपिका पुत्रिणीविनतालजी ५९
मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका। विद्रधिश्चदशै
ताःस्युःपिटकामेहसम्भवाः ६० मेदोदोषस्तथाचैकः शो
थरोगानवस्मृताः। दोषैःपृथग्द्वैस्सर्वैरभिघाताद्विषाद

पि ६१ वृद्धयस्सप्तगदितावातात्पित्तात्कफेनच। रक्तेन मेदसामूत्रादन्त्रवृद्धिश्चसप्तमः ६२ अण्डवृद्धिस्तथाचैकातथैकागण्डमालिका । गण्डापचीतिचैकास्याद्ग्रंथ

हो ,अरुचि अग्निमन्द रात्रिमें पिराय ये कफशोथ हैं वातपित्त लक्षण होय तो वात पित्त पित्तकफ लक्षण हो तो पित्त कफ, जो कफवातलक्षण हो तो कफवातशोथ जो त्रिदोष लक्षण हो तो सन्निपात शोथ किसीभांति चोटलगे सूजनहो तो अभिघात शोथ जानो विषधर जीवके दांत, डंक, पूंछ, पंजा, नख व दंष्ट्रा से जलदो सूजै तो विषशोथ जानो ॥ ६१ ॥ अंडवृद्धि वृषणफूलना उसे वृद्धकहते हैं तिसके सात भेद हैं वातवृद्ध, पित्तवृद्ध, कफवृद्ध, रक्तवृद्ध, मूत्रवृद्ध, आंतवृद्ध ये सातप्रकार हैं (अस्यलक्षणम्) जब वायु अंडकोशमें भरिके पीड़ा उत्पन्न करतीहै और रुखाई छायलेती है तो वातवृद्धहै जो पके गूलरके रंग दाहयुक्त पके फोड़े की नाईं उष्ण हो तौ पित्तवृद्ध जानो ठरढा भारी चिकना कठोर खुजलाय तुच्छ पीडाहो तो कफ अंडवृद्धि जानो जो कालेरंगकी फुडिया सहित पित्त लक्षण हों तो रक्तांडवृद्ध जानो जो तालफल से नीलगोल हों तो मेदवृद्ध है और एक अन्योक्त अंडवृद्ध को मांसवृद्ध कहते हैं उसका निदान यह है कि मूत्रवेगके रोके से दोनों ओरकी गोली फूलजाती है जब मूत्र रुकजाता है तब धीरे २ दोनों कोईान में ह्लाइ २ पचता फिर वायुकोप से उतरिके पीड़ा करताहै फूलताहै उसे मूत्रवृद्धि कहते हैं जो वायुके कोपसे नस अंडकोश में लटक आती है जब वह नस फिर वायुकोप पाइके फूलती है उसमें आंत उतर आती है उसे अंत्रवृद्धि कहते हैं वह दबानेसे फिर ऊपर चढ़िजाती है ॥ ६२ ॥ अंडवृद्धि कहे गलांड गलेकी सन्धिन में अंडेसी गांठें फूलके वादी होरहैं पीड़ से अंडवृद्ध एक प्रकारके हैं गंडमाला एकही प्रकारकी है गले में माला की नाईं फोड़े होके पकें फूटें उसे गण्डमाला कहते हैं गलगंड एक प्रकार का है जिसे घेघा कहते हैं अपची एक प्रकारकी है गण्डमाला की नाईं गांठें पकें फूटें वहै एक अच्छा होने न पावे दूसरा और हो उसे अपची कहते हैं और चरक में गले के छत्तीस तरह के रोग और कहे हैं ग्रन्थि कहे गांठिकी तरह नवभांति की होती है जिसे बतोरी कहते हैं वातग्रन्थि, पित्तग्रन्थि, रक्तग्रन्थि, शिरग्रंथि, व्रणग्रंथि, अस्थिग्रंथि, मांसग्रंथि ये नव प्रकार के ग्रंथिरोग हैं (अथास्य लक्षणम्) जो गांठि तुम्बा के आकारहो खिलाके खिंचके उठे छूने से कठोर पिराय और मरन हो सरल के आकार हो रक्त बढ़े तो वातग्रंथि जानो जो ग्रंथि दाह

योनवधामताः ६३ त्रिभिर्दोषैस्त्रयोरक्ताच्छिराभिर्मेदसोव्र
णात्। अस्थ्नामांसेननवमःषड्विधंस्यात्तथार्बुदम् ६४ वा
तात्पित्तात्कफाद्रक्तान्मांसाद्वापिचमेदसः । श्लीपदंचत्रि
धाप्रोक्तंवातात्पित्तात्कफादपि ६५ विद्रधिःषड्विधःस्या
त्तोवातपित्तकफैस्त्रयः।रक्तात्क्षतात्त्रिदोषैश्चव्रणाःपञ्चदश

करे फफोलेकीनाईं भलाय और पके नहीं कालान्तर रहै तो पित्तग्रंथिजानो जो गांठि ठंढीहो कुछ पीडाकरे खुजली होय कठोर बहुत होय दिन में बढ़े पके से पीबदेइ तो कफग्रंथिजानो जिसमें पित्तग्रंथि के लक्षणहों रक्तवर्ण विशेषहोय रक्तग्रन्थिजानो बटियासीहो तो शिराजग्रन्थि जानो दबाने से इधर उधर दौरे ऊंचीहो और मर्म स्थान में हो तौ असाध्य मेदग्रंथिजानो जो हाड बढ़के हाडमें सट जाय और ग्रन्थि निकलआवै व पत्थरसी पीडाहो तो हाडग्रंथिजानो सो भी असाध्य है जो गांठ काटै तो अच्छी हो जो मांस से होती है उसे मांसग्रंथि कहते हैं जो घावपरिवै ऊपर मांसबढ़िके गांठि उभरै उसे व्रणग्रन्थि कहते हैं कोई मांसवृद्ध कहते हैं ॥ ६३॥ अर्बुद रोग छःप्रकारकाहै *वातार्बुद, पित्तार्बुद, कफार्बुद, मांसार्बुद, मेदोर्बुद, रक्तार्बुद* जो प्रथमग्रंथि के लक्षण लिखआये हैं वैसेही हैं रक्तार्बुद और मांसार्बुद ये कठिन हैं इन के लक्षण भिन्न २ कहताहूं जो मांस पिंडसाहो लालरंग पत्थरफूटके अति दुःखदेताहै उसे रक्तार्बुद कहते हैं मांस दुष्टहोके मांस पीकुआर रादकी नाईंहो चिकना लाल अतिकठिनता से पकै फूटकै हमेशह बहाकरै जल्दी अच्छा न हो जो मर्मस्थानमें हो तौ असाध्यहै और जगह साध्यहै यह मांसार्बुदहै ॥ ६४ ॥ श्लीपद कहै फीलपाव सो तीनि भांतिके हैं वातसे पित्तसे कफसे (अस्य लक्षणम्) जांघ के जोडकी सन्धिमें प्रथम छोटी गिलटी उभर के पीडा करती है फिर कुछ दिना में सब जोड की नसें तनजाती हैं चलने से समझ पडताहै फिर धीरे धीरे रुधिर सहित पीडा उतरिके पैरसे गांठितक फूलता है उसे फीलपाव कहते हैं और हाथमें तथा अंग में भी होताहै तराई की भूमिमें अधिक होताहै वातजमेंपीडा पित्तज में दाह कफजम चिकनी शोथ मद पीर ॥ ६५ ॥ विद्रधी छःप्रकारकी है वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, क्षतज, त्रिदोषज ये छः विद्रधी हैं (*अथास्य लक्षणम्*) जो लाल वा पीली व नुकीली अतिपिटिका युक्तहो तो वातविद्रधी है जो दाहयुक्त लालहो तौ पित्तविद्रधी जो दीपकसी पाडुवर्ण पककै काली परजाय तौ कफविद्रधी रक्त विद्रधी के पित्तसम लक्षणहैं जो किसी भांति घाव संयोगहो तौ क्षतविद्रधी है

शोदिताः ६६ तेषांचतुर्द्धाभेदस्स्यादागन्तुर्देहजस्तथा। शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्ततसङ्ख्याकथ्यतेपृथक्। वातव्रणः पित्तजश्चकफजोरक्तजोव्रणः ६७वातपित्तभवश्चान्योवातश्लेष्मभवस्तथा। तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्टमः। नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ६८ श्लेश्मरक्तभवश्चान्योवातपित्तासृगुद्भवः। वातश्लेष्मासृगुत्पन्नःपित्तश्लेष्मास्रसम्भवः। सन्निपातासृगुद्भूतइतिपञ्चदशव्रणाः६९सद्योव्रणस्त्वष्टधास्यादवक्लृप्तविलम्बिनौ।छिन्नभिन्नप्रचलिताघृष्टविद्धनिपातिताः७० कोष्ठभेदोद्विधाप्रोक्तश्छिन्नान्त्रोनिःसृतान्त्रिकः।अस्थिभङ्गोष्टधाप्रोक्तोभग्न

जिस में दाह, ज्वर, खुजली और विविध उपद्रवहों तौ त्रिदोषविद्रधी जानौ व्रण कहे पिटका फोडा सो पंद्रह प्रकारके हैं ॥ ६६ ॥ तिनमें भी चारभेद हैं आगंतुक, देहज, शुद्ध, दुष्ट तिसकी संख्या वातज, पित्तज, कफज, रक्तज ॥ ६७ ॥ वातज पित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज, वातरक्तज, रक्तपित्तज ॥ ६८ ॥ कफ रक्तज, वातपित्तरक्तज, वातकफरक्तज, पित्तकफरक्तज, सन्निपातरक्तज (अथास्य लक्षणम्) जो चोट चपेट लगने से पकै फूटै उसे आगंतुक व्रण कहते हैं वाता दिकके कोपसे हो उसे देहज कहते हैं जो जीभ के रंगहो छोटा या बड़ा चिकना पीड़ा न करै न पकै फूटै न कड़ाहो वह शुद्धव्रणहै जो दुर्गंध युक्त हमेशह ऊपर कठोर भीतर पुलपुला उसे दुष्टव्रण कहते हैं ॥ ६९ ॥ सद्योव्रण कहे आगंतुकव्रण सो आठ प्रकारकाहै अवक्लृप्त, विलंबित, छिन्न, भिन्न, प्रचलित, घृष्ट, विद्ध, निपातित (अथास्य सामान्यलक्षणम्) नानाप्रकारके जो अस्त्र हैं तिनकी धारसे कटे या मुद्गरादिकी चोटसे घावहो या उदहल रक्त जमके पकै फूटै उसे आगंतुकव्रण कहते हैं ॥ ७० ॥ कोष्ठभेद कहे उदरक्षत लगना दो भांतिका है एक छिन्नांत्रक दूसरा निःसृतांत्रक पेटमें क्षत लगने से आंत कटिके बाहज निकरै सो छिन्नांत्रक है और जो बाहर निकरि परै वा बिनाटूटे बाहर निकरै तिसे निःसृतांत्रक कहते हैं अस्थिभंग कहे हाड़ टूटना सो आठ भांतिका है भग्नपृष्ठ, विदारित, विवर्तित, विश्लिष्ट, तिर्यक्, अधोगत, ऊर्ध्वगत, संधिभंग (अथास्य लक्षणम्) जो हाड़ से हाड़ रगड़ खाय संधि पर सूजनहो पीड़ा करै तो भग्नपृष्ठ है जो संधि

पृष्ठविदारिते । विवर्तितश्चविश्लिष्टश्चतिर्यक्क्षिप्तस्त्व
धोगतः।ऊर्ध्वगस्सन्धिभङ्गश्चवह्निदग्धश्चतुर्विधः ७१ प्लु
ष्टोतिदग्धोदुर्दग्धःसम्यग्दग्धःप्रकीर्तितः ७२ नाड्यःप
ञ्चसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रिधा। त्रिदोषैरपिशल्येनत
थाष्टौस्युर्भगन्दराः ७३ शतपोनरतुपवनादुष्ट्रग्रीवश्चपि
त्ततः। परिस्रावीकफाज्ज्ञेयऋजुर्वातकफोद्भवः ७४ परि
क्षेपीमरुत्पित्तादर्शोजःकफपित्ततः। आगन्तुजातश्चोन्मा
र्गीशङ्खावर्त्तस्त्रिदोषतः ७५ मेढ्रेपञ्चोपदंशास्स्युर्वातपित्त

चर्म फटिके हाड़ निकरै तो विदारित है जो हाड़ बैठने में यथा स्थान न बैठे ऊपर नीचे होजाय उसे विवर्तित कहते हैं जो हाड़ हटनेसे सन्धि ढीली पै सूजन परिकै पीड़ाकरै तौ विश्लिष्ट जानौ हाड सरकना कहे हाड़की ठौर पलट जाना उसे तिर्यक् कहते हैं जो हाड़ अपने ठौरसे नीचेको सरक जाय तौ अधोगत कहिये जो ऊपर को सरकै तो उर्ध्वगत कहते हैं जो हाड़ टूटजाय उसे संधिभंग कहते है ॥ ७१ ॥ वह्निदग्ध चार प्रकार का है प्लुष्ट, अतिदग्ध, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध ४ (अस्यलक्षणम्) जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे प्लुष्ट कहते हैं जो चर्मजरिकै मास, नस व हाड़ टेसिपरे तो अतिदग्ध है जो देह जरि खाल उलट जाय दाह युक्त पीड़ाकरै तो दुर्दग्ध है जो सब देह जरि लुथाठ समान होजाइ उसे सम्यग्दग्ध कहते हैं ॥ ७२ ॥ नाड़ीव्रण, पांच प्रकारका है वातनाड़ी, पित्तनाड़ी, कफनाड़ी, त्रिदोषनाड़ी, सन्निपातनाड़ी, (अथास्य लक्षणम्) वातसंबन्धी सूजन पकी वा कची को धोवे और शुद्ध न होइ या व्रतके अंततक पाती न जाइ तौ बहुत पीड़ा करै और बिल समान चमड़ेपर दीखै और भीतर नाड़ी कहे पुंगली सा सीधा या टेढ़ा वा लंबा हो और पीर देतारहै उसे नाड़ीव्रण नासूर कहते हैं शल्य एक प्रकार का है शल्य कहे शाल जो कील कांटा कांच चुभिकै रहिजाय तौ मांस पकाय [illegible] उसे शल्य नाड़ीव्रण कहते हैं ॥ ७३ ॥ भगंदर आठ प्रकारका है वायु से शतपोनक पित्तसे उष्ट्रग्रीव कफसे परिस्रावी वातकफ से ऋजु ॥ ७४ ॥ [illegible] से परिक्षेपी कफपित्त से अर्शोज आगंतु से उन्मार्गी त्रिदोषसे शंखावर्त ([illegible] क्षणम्) गुदाके चारोंओर दो अंगुलतक जो फोड़ा [illegible] के भीतर ताई छिद्र पर जाइ उसे भगंदर कहते हैं एक वगह [illegible]

कफेस्त्रिधा । सन्निपातेनरक्ताच्चमेढ्रेशूकामयास्तथा ७६ च
तुर्विंशतिराख्याताल्लिङ्गार्शोग्रथिततंतथा । निवृत्तमवमन्थ
श्चमृदितंशतपोनकः ७६ अष्ठीलिकासर्षपिकात्वक्पाक
श्चावपाटिका । मांसपाकःस्पर्शहानिर्निरुद्धमणिरुद्धतः
७८ मांसार्बुदंपुष्करिकासम्मूढैःपिटकालजी । रक्तार्बुदंवि
द्रधिश्चकुम्भिकातिलकालकः । निरुद्धःप्रकशःप्रोक्तस्तथै
वपरिवर्तिका ७९ कुष्ठान्यष्टदशोक्तानि वातात्कापालिकंभ
वेत् । पित्तेनौदुम्बरंप्रोक्तं कफान्मण्डलचर्चिके ८० मरुतिप

मलभाताहै भगंदर एक भातिहो अनेकभाति पकिफूटिकै रहाकरताहै ॥ ७५ ॥ इन्द्रिय में पंच प्रकार का उपदंश होता है जिसे गरमी कहते हैं वातसे, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्त से (अथास्य लक्षणम्) डंडी में क्षतलगे या चकेहाथ से या रोम टूटने से व रजस्वला प्रसंगसे होता है यह निदानका मतहै बुद्धि से यह समझपड़ता है कि यह रोग दुष्टयोनि के संयोगसे प्रथम डंडीमें घाव परिकै धीरे २ सब शरीर में घाव परजाते हैं ॥ ७६ ॥ इन्द्रियमें शूकजरोग चौबीस भातिका भी होता है यह अतिविषयाकांक्षी पुरुष स्थूलकरने को विषादि तीव्र औषध लगाते हैं तौ बालसमान सूक्ष्म समान सफेद किरानासा होता है उसे शूक कहते हैं इसीके ये चौबीस भेद हैं लिंगार्श १ ग्रथित २ निवृत्त ३ अवमंथ ४ मृदित ५ शतपोनक ६ ॥ ७७ ॥ अष्ठीलिका ७ सर्षपिका ८ त्वक्पाक ९ अव- पाटिका १० मांसपाक ११ स्पर्शहानि १२ निरुद्धमणि १३ ॥ ७८ ॥ मांसार्बुद १४ पुष्करिका १५ संमूढपिटका १६ अलजी १७ रक्तार्बुद १८ विद्रधि १९ कुंभिका २० तिलकालक २१ निरुद्ध २२ प्रकश २३ परिवर्तिक २४ (अथास्यलक्ष- णम्) ये सबरोग इन्द्रिय पर होते हैं सो क्षुद्ररोग गिनेजाते हैं और और नि- दानमें कहते हैं कि ये रोग इन्द्रिय के मुखपर होते हैं मांसबढ़िकै फुंदरूकी तरह हो जाता है उस में फुंसी होती हैं और और भी अनेकप्रकारके उपद्रव संयुक्त होते हैं ॥ ७९ ॥ कुष्ठरोग अठारह प्रकारकाहै प्रथम वातजन्य कापालिक (लक्षणम्) कृष्णरंग या रक्तरंग माटी के खपरेकीनाई रूखा खर्खरा चमड़ा पतला हो तौ का- पालिक कहते हैं दूसरा औदुम्बर गूलरतुल्य दाहपीड़ा खुजलीयुक्तहो वह औदुम्बर कुष्ठ कहाताहै जो कुष्ठ सफेद चिकना चकत्तासाहो वह तीसरा कफजन्य मंडल- कुष्ठहै जो पाडु में काली कालीसी पिटकाहोकै फटफटकै वह खुजली करै वह चौथी

त्वादृक्षजिह्वंश्लेष्मवाताद्विपादिका। तथासिध्मैककुष्ठंचकिटिभंचालसंतथा ८१ कफपित्तात्पुनर्दद्रुःपामाविस्फोटकंतथा। महाकुष्ठंचचर्मदलंपुण्डरीकंशतारुकम् ८२ त्रिदोषैःकाकणंज्ञेयंतथान्यच्छ्वित्रसंज्ञकम्। तच्चवातेनपित्तेनश्लेष्मणाचत्रिधाभवेत् ८३ क्षुद्ररोगाःषष्टिसंख्यास्तेष्वादौशर्करार्बुदम्। इन्द्रवृद्धापनसिकाविवृतान्धालजीतथा ८४

विचर्चिका है ॥ ८० ॥ जो लालहो बीचमें काला पीड़ायुक्त व रीछकीसी जीभ सो वातपित्तजन्य ऋक्षजिह्वकुष्ठ पांचवां है जो गोड़के चन्द्र में पकिके घाव परै या हाथकी हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ठ है जो सफेद ललाई लिये हो चमड़ा पतलाहो और उसमें फूटसा झरै वह सातवां सिध्मकुष्ठ है या छाती में होता है उसे सिहुवां कहते हैं कफ पित्त से उत्पन्नहै जो घाव होके काला परजाय वह कफवात जन्य है आठवां किटिभकुष्ठ है और जो लाल लाल पिटका होकै खुजलाय वह अलसकुष्ठ नववां है ॥ ८१ ॥ जो श्याम चमड़ा होकै चिकना और नन्हीं पिटका संयुक्तहो और खुजलाय वह दशवां दद्रुकुष्ठ है उसे दाद भी कहते हैं जो देह में छोटी बड़ी पिटका पकिकै फूटें सदुआय एक अच्छी न हो और निकलै वह ग्यारहवां पामाकुष्ठ है और खुजली भी कहते हैं टेंटमें हो टेंटी कहते हैं कफ पित्त के जोर से सब देह लाल होके छोटी छोटी पिटका सब देह फोरिकै छालेकी नाई निकलैं उसे विस्फोटक बारहवां कुष्ठ कहते हैं उसीको शीतला भी कहते हैं जो कुष्ठ शरीर की त्वचा को हाथी की खाल समान करदे और पसीना न निकरै वह तेरहवां महाकुष्ठ है उसे चर्मकुष्ठ और गजचर्म भी कहते हैं जो कुष्ठ लाल होकै पिराय सद्दुआय के पिटकासा होजाय उसे चौदहवां कुष्ठ चर्मदल कहते हैं जो कुष्ठ कमलपत्र सम ऊंचा शरीरपर देख परै वह पुण्डरीक पन्द्रहवां कुष्ठ है जो कुष्ठ छोटा फोडा होकै बहुत छेद परजायँ वह शतारुक सोलहवां कुष्ठ है ॥ ८२ ॥ जो पकिके घाव काला होजाय अतिपीड़ा करै उसे काकणकुष्ठ कहते हैं यह सत्रहवां त्रिदोषजनित असाध्य है अठारहवां श्वित्रकुष्ठ जो फुटके न फूटै सो त्रिदोष से तीनिप्रकारका श्वित्रकुष्ठ होता है जिसके हो उसे कोढ़ी कहते हैं वायु से रूखा और लाल चकत्तासा होता है पित्त मे ताम्रवर्ण दाहसहित चिकना होता है कफसे सफेद चकत्ता सघन कठोर होताहै यह श्वेत कुष्ठ है ॥ ८३ ॥ या क्षुद्ररोग साठि प्रकारके हैं शर्करार्बुद १ इन्द्रवृद्धा २ पनसिका ३ विवृता ४

वाराहदंष्ट्रोवल्मीकंकच्छपीतिलकालकः। गर्दभीरकसा चैवयवप्रख्याविदारिका ८५ कन्दरोमसकश्चैवनीलिका जालगर्दभः। इरिवेल्लीजन्तुमणिर्गुदभ्रंशोग्निरोहिणी ८६ सन्निरुद्धगुदःकोठःकुनखोनुशयीतथा। पद्मिनी कण्टकाश्चिप्प्यमलसोमुखदूषिका ८७ कक्षारुपणकच्छूश्च गन्धाःपाषाणगर्दभः। राजिकाचतथाव्यङ्गश्चतुर्धापरि कीर्तितः ८८ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादित्युक्तंव्यङ्गलक्षणम्। विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषुनेष्टधापरिकीर्त्तिताः ८९ पृथग्दोषैस्त्रयोद्वन्द्वैस्त्रिविधस्सप्तमोसृजः। अष्टमःसन्निपातेनक्षुद्ररुक्षुमसूरिका ९० चतुर्दशप्रकारेणत्रिभिर्दोषैस्त्रिधाच सा। द्वन्द्वजात्रिविधाप्रोक्तासन्निपातेनसप्तमी ९१ अष्टमीत्वग्गताज्ञेयानवमीरक्तजामता। दशमीमांसजाख्या

अंधालजी ५ ॥ ८४ ॥ वाराहदष्ट्रा ६ वल्मीक ७ कच्छपी ८ तिलकालक ९ गर्दभी १० रकसा ११ यवप्रख्या १२ विदारिका १३ ॥ ८५ ॥ कन्दर १४ मसक १५ नीलिका १६ जालगर्दभ १७ इरिवेल्ली १८ जंतुमणि १९ गुदभ्रंश २० अग्निरोहिणी २१ ॥ ८६ ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोठ २३ कुनख २४ अनुशयी २५ पद्मिनीकंटक २६ चिप्प २७ अलस २८ मुखदूषिका २९ ॥ ८७ ॥ कक्षा ३० रुपणकच्छु ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग कहे रोगके चारि भेद हैं ॥८८॥ वातज पित्तज कफज रक्तज ३८ विस्फोटक आठप्रकारका है परन्तु क्षुद्र रोगकी गिनती में है वातविस्फोटक, पित्तविस्फोटक, कफविस्फोटक, वातपित्त विस्फोटक, कफपित्तविस्फोटक, वातकफविस्फोटक, रक्तविस्फोटक, सन्निपात विस्फोटक॥ ८९ ॥ मसूरिकारोगभी क्षुद्रसंज्ञक है तिसके चौदहभेद हैं॥९०॥ वातमसूरिका, पित्तमसूरिका, कफमसूरिका, वातपित्तमसूरिका, कफपित्तमसूरिका, वातकफमसूरिका, त्रिदोषमसूरिका ॥ ९१ ॥ त्वचामसूरिका, मांसमसूरिका इस से परे चार अतिकठिन हैं मेदमसूरिका, मज्जामसूरिका, अस्थिमसूरिका, धातुमसूरिका (अथास्य लक्षणम्) जो पिटका पकिके गाढा या पतला पानीसी बहै फिरि सूखि के त्वचा कठोरहो फटिके रुधिर बहै उसे शर्करार्बुद कहते हैं जो एक फुंसी उठै उस

ताश्चतस्रोन्याश्चतुस्तरा।मेदोस्थिमज्जाशुक्रस्थाःक्षुद्ररोगाइतीरिताः ९२ विसर्परोगानवधावातपित्तकफैस्त्रिधा।

के नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हों वह इन्द्रवृद्धहै जो पिटका कान के भीतरहो उसे पनसिका कहते हैं जो गूलरसदृश हो घेरा अधिक बढ़ावै दाह विशेष करै उसे विवृत्ता कहते हैं जिस फोड़ेका मुँह न देख परै अति ऊंचा अधिक देर नाथै वह अंधालजी है जो शरीर में गांठि सी कठिन उभरै बूढ़े दांतके रंगपीरहो ख-जुआय वह वराहदंष्टा है जो पिटका तुम्बासी होके बीच में खाली हो किनारे मुँह करिके बहै वह वल्मीक है जो पिटका बहुत कड़ी कटोरी की पेंदी समानहो उस पिटकाको कच्छपिका कहते हैं जो देह में तिल समान हो देह से ऊंचा न हो पीड़ा न करै उसे तिलकालक कहते हैं जो बटिया सम ऊंचीहो लालरंग उसमें और पिटका निकलै पीड़ा करै वह गर्दभिका है जो फूल के पकै फूटै नहीं खजुरी हो वह रकसाहै जो यव समान हो तौ यवप्रख्या है जो कांख या छाती या अंड-सन्धि में पताल में फोड़ा सी हो वह विदारिका है जो हाथ पाय में कांटा लगिकै उसी ठौर गांठि परिरहिजाय उसे कदर कहते हैं गुल्हरूहै जो देहमें बरद सदृश नि-कलिके रहिजाय पीड़ा न करै उसे मसक कहिये मस्साहै जो देहमें अनायास लाल काली पड़जाय उभरै नहीं और कोई विकार न करै उसे नालिका कहते हैं लह-सुनहै जो देह में सूजन होइके टेढ़ी मेढ़ी लम्बी सर्पाकार फूलिके नसजाल परि जाइ और लालहो अग्नाय उसे जालगर्दभ कहते हैं जो बटियासी होतही अति पीड़ा उत्पन्नकरै उसे वल्मिका कहते हैं जो देहमें देहके रंग ऊंचाहो पीड़ा न करै और जन्मतेहो उसे जन्तुमणि कहते हैं और आचार्य चिह्न कहते हैं जिसके मलत्याग स-मय कांच निकल आवै उसे गुदभ्रंश कहते हैं कांख कहे बगल में मास में नाला समान होके फोड़ा होताहै अन्तर्दाह होके ज्वर आताहै सो दश पांच दिनमें म-नुष्यको मारडालताहै वह अग्निरोहिणी है जिस रोग में मलमार्ग की वाईनस रक्तको कोपकरिके मोटी परिके मलमार्गको संकीर्ण करै तो मल गाढ़ा और मोटा बहुत क्लेश में गिरै वह सन्निरुद्ध गुद है कफ पित्त और रक्त के कोपकरिकै लाल लाल चकत्ता शरीर में पड़ते हैं बहुत खजुरी करते हैं क्षण में होइ क्षण में मिटै इसे रक्तपित्ती कहते हैं नख लगिके देहमें नकोटोजाइ उसे कुनख कहते हैं जो पांय में छोटी पिटका होके पकै फूटै सूजन हो सो अनुशयी है जो पीली बटिया हो खजुआइ उसमें कांटा समान हो वह पद्मिनीकण्टकहै जो अगिवायके झलको परै अथवा न चतपकै फूटै उसके चेपलगे से उत्पन्न हो या आम्रादिक की चेप

त्रिधाचद्वन्द्वभेदेन सन्निपातेनसप्तमः। अष्टमोवह्निदाहेन नवमश्चाभिघातजः ९३ तथैकःश्लेष्मपित्ताभ्यामुदर्दःप रिकीर्त्तितः। वातपित्तेनचैकस्तुशीतपित्तामयःस्मृतः९४ अम्लपित्तंत्रिधाप्रोक्तं वातेनश्लेष्मणातथा। तृतीयंश्ले

लगे पकजाय उसे चिप्प कहते हैं जो पैर या हाथके गावाते पानी या खराव की-चड़ या कोई विप या कोई विपमिश्रित माटी या विपभर कीट जन्तुके स्थानकी माटी या भल्लातादि वृक्षतरेकी माटी सड़िके स्पर्श से सड़िजाय और बहुत खजुरी करै उसे अलस कहते हैं खरवाहें और जो जवानीमें मुखपर काटे काटेसे बहुत होजाते हैं टोवने से खरखराते हैं और गड़ते हैं वह मुखदूपिकाहै लोग उसे मुहासा कहतेहैं जो वगल में छोटी २ फुन्सिया परजाती है उसे कक्षा कहतेह जो गण्डकोशकी जड़पर छोटी २ पिटका हों वह गर्दभ है जो शरीर में राई के समान फुन्सियां परजायँ उसे राजिका कहते हैं फुदेया कहते हैं वायु पित्त कुपितहो मुँह परजाइ चमड़ा कालाकरै और पतलाकरे उसे व्यंगकहे भाई है और आठ विस्फोटक शीतला के भेदमें हैं सो क्षुद्ररोग की गनती में हैं और चौदह मसूरिकाये भी शीतला के भेद हैं क्षुद्रगनी हैं॥ ९२॥ विसर्परोगके नवभेद हैं वातविसर्प, पित्तविसर्प, कफविसर्प, वातपित्तवि०, कफवातवि०, कफपित्तवि०, सन्निपातवि०, अग्निदग्धवि०, ताड़नावि० (अथास्य लक्षणम्) जिसमें वातज्वरके लक्षण कंप विपम वेगादिक होकै सूजनहो और चमकशूल कोचनहो फूटै सो वातविसर्प है जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और सूजन दाहयुक्त लाल रंगहो वह पित्त विसर्प है जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और चिकनीहो खजुआय सो कफविसर्प है और द्वंद्वमें जिन दो दोषोंके लक्षण मिलैं सोई द्वन्द्वजविसर्प जानो जिसमें तीनों दोषके लक्षण हों वह सन्निपातविसर्प है जो विसर्प आगिलै जलनेसे हो उसके पित्तविसर्प के लक्षण होते हैं वह वह्निदाहविसर्प है जो घावलगे से हो वह अभिघात विसर्प है॥ ९३॥ श्लेष्मवायु करिकै उदर्दरोग होताहै और वातपित्त करिकै शीतपित्त रोग होताहै कफवायुके कोपकरिकै शरीरमें लाल २ छोटे बड़े चकत्ते पड़ते हैं और बहुत खजुआतेहैं उसे उदर्द कहतेहैं जो वातपित्तके कोपकरिके होता तो पीड़ा अधिक खाज कम करता है उसे शीतपित्त कहते हैं और ज्वर उवकाई और दाहलक्षणआदि युक्तहोते हैं यह दोनों एकही भेदमें हैं॥९४॥ अम्लपित्तरोगके तीन भेदहैं पित्तम कफज, अम्ल पित्त और कफवातज अम्लपित्त ये विरुद्धभोजन आ।९५

ष्मवाताभ्यांवातरक्तंतथाष्टधा ९५ वाताधिक्येनपित्ताच्च कफाद्दोषत्रयेणचारक्ताधिक्येनदोषाणांद्वन्द्वेनत्रिविधःस्मृतः९६ अशीतिर्वातजारोगाःकथ्यन्तेमुनिभाषिताः।आक्षेपकोहनुस्तम्भऊरुस्तम्भःशिरोग्रहः ९७बाह्यायामोन्तरायामः पार्श्वशूलङ्कटिग्रहः। दण्डापतानकः खल्लीजिह्वास्तम्भस्तथार्दितः ९८ पक्षाघातःक्रोष्टुशीर्षमन्यास्तम्भश्चपङ्गुता।कलायखञ्जतातूनीप्रतितूनीचखञ्जता९९ पादहर्षोगृध्रशीच विश्वाचीचापबाहुकः। अपतानोव्रणायामो वातकण्ठोपतन्त्रकः १०० अङ्गभेदोङ्गशोषश्च मिन्मिनत्वञ्चगद्गदः। प्रत्यष्ठीलाऽष्ठीलिकाचवामनत्वञ्चकुब्जता १ अङ्गपीडाङ्गशूलञ्च सङ्कोचस्तम्भरूक्षताः। अङ्गभङ्गोङ्गविभ्रंशो विड्ग्रहोवद्धविट्कता २ मूकत्वमतिजृम्भास्यादत्युद्गारोन्त्रकूजनम्। वातप्र

अभोजन करने से होते हैं या बासी और जल अन्नके भोजन करनेसे पित्त कुपित होके खट्टीडकार लाता है और आहारका परिपाक अच्छीतरह नहीं होता उसे अम्लपित्त कहते हैं ॥ ९५ ॥ और वात पित्त आठ प्रकारकाहै जिस वात रक्तमें वायु विशेष है वह वातजवातरक्त है जिसमें पित्त अधिकहै वह पित्तज वातरक्तहै और जिसमें कफ अधिक है वह कफज वातरक्तहै जो तीनों दोषके लक्षणहों तौ त्रिदोषज वातरक्त है जिसमें रक्त अधिकहो वह रक्तजवातरक्त है और तीनि द्वंद्व में जो दोष मिश्रितहो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफपित्तज ये आठप्रकारके वातरक्त हैं ॥ ९६ ॥ वातरोग अस्सीप्रकारके ऋषिलोग कहिगये हैं आक्षेपक, हनुस्तंभ, शिरोग्रह ॥ ९७ ॥ बाह्यायाम, अन्तरायाम, पार्श्वशूल, कटिग्रह, दंडापतानक, खल्ली, जिह्वास्तंभ, अर्दित ॥ ९८ ॥ पक्षाघात, क्रोष्टुशिरस, मन्यास्तंभ, पंगुता, कलायखंजता, तूनी, प्रतितूनी, खंजता ॥ ९९ ॥ पादहर्ष, गृध्रसी, विश्वाची, अपबाहुक, अपतान, व्रणायाम, वातकण्ठ, अपतंत्र ॥ १०० ॥ अंगभेद, अंगशोष, मिन्मिन, कृष्णता, प्रत्यष्ठीला, अष्ठीलिका, वामनत्व, कूबड ॥ १ ॥ अंगपीडा, अंगशूल, सकोच, स्तंभ, रूक्षता, अङ्गभङ्ग, अङ्गविभ्रंश, विड्ग्रह, बद्ध-

त्तिःस्फुरणं शिराणाम्पूरणन्तथा ३ कम्पःकार्श्यंश्यावता च प्रलापःक्षिप्रमूत्रता । निद्रानाशः स्वेदनाशो दुर्बलत्वं बलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्य कार्श्यंनाशश्चरेतसः । अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यंविरसास्यता । कषायवक्त्राध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ५ रोमहर्षश्चभीरुत्वं तोदकण्डूरसाज्ञता । शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगन्धाज्ञत्वं दृशःक्षयः ६ ॥ इति वातजरोगगणना ॥ अथ पित्तभवारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः । धूमोद्गारोविदाहःस्यादुष्णाङ्गत्वंमतिभ्रमम् ७ कान्तिहानिःकण्ठशोषोमुख

विड्कता ॥ २ ॥ मूकत्व, अतिजृंभा, अत्युद्गार, अंत्रकूजन, वातप्रवृत्तिस्फुरण, शिरापूरण ॥ ३ ॥ कंप, कार्श्य, श्यावता, प्रलाप, क्षिप्रमूत्र, निद्रानाश, स्वेदनाश, दुर्बलत्व, बलक्षय ॥ ४ ॥ शुक्रातिप्रवृत्ति शुक्रकार्श्य, शुक्रनाश, अनवस्थित, चित्तकाठिन्य, विरसास्यता, कषायवक्त्र, आध्मान, प्रत्याध्मान, शीतता ॥ ५ ॥ रोमहर्ष, भीरुत्व, तोद, कंडू, रसाज्ञता, शब्दाज्ञता, प्रसुप्ति, गंधाज्ञत्व, दृशःक्षय ॥ ६ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिस वायुमें हाथीके सवारकीनाई बारबार भ्रमै वह आक्षेपकहै १ जिसमें ठोढी अकडके मुख खुलारहै वह हनुस्तंभ है २ जिसमें कूलेकी नसैं जकडके निर्बलहों चल न सकै वह ऊरुस्तंभ है ३ जो माथेकी शिराकहे नसैं निस्तेज होके मस्तक में पीडारहै वह शिरोग्रह है असाध्य है ४ पीठ उभरके जो मनुष्य धन्वाकार होजाय वह बाह्यायाम है ५ जो छाती ऊची होके धन्वाकार होजाय वह अन्तरायाम है ६ जो पसुरी में पीडाकरै वह पार्श्वशूल है ७ जो कमर जकड़जाय वह कटिग्रहहै ८ जो देह दंडाकार होजाय वह दंडापतानकहै ९ जिस वायु में पाव या हाथ घुटना नितम्ब से और कमर में अधिक पीडाहो वह खल्ली है १० जो वायु जीभकी नस्ता न ले भोजन मुँह में कठिनता से लियाजावे वह जिह्वास्तंभ है ११ जो वायु आधा मुँहको फेरदे माथा कम्पै जीभ से बोला न जाय दृष्टि तिरछी होजाय वह अर्दित है १२ जो आधाअङ्ग निर्बल होजाय उसे पक्षाघात (अर्धांग) कहते हैं १३ जो गोड की टिहुनी सूजजाय स्यार कैसा मूडहो उसे क्रोष्टुशीर्ष सियारमुंड कहते हैं १४ जिसमें खींच तन जाइ मस्तकइत उत न हुलै वह मन्यास्तम्भ है १५ जो वायुकूलेकी मोटीनसोंको मानिले पाव को

फैलने सिकुड़ने न दे वह पंगु है १६ जो वायु मनुष्य के शरीर की चाल खंजरीट की नाईं करदे चलने में कांपै पांव इधर उधर परें वह कलयाखंज है १७ जो वायु गुद और इन्द्रि में चिलक उत्पन्नकरै वह तूनी है १८ जो गुद लिंग में चिलक उत्पन्न करिके मूत्र मलाशयताईं चुभै सो प्रतितूनी है १६ जिसमें पंगुवायु के लक्षण हों पर एकैपांव लंगड़ा करै वह खंज है २० जो पैर में झुंझनी करै वह पादहर्ष है २१ जिसमें पीठ, कमर, कूला, चूतर, जांघ, पैर इन में उठने बैठने में क्लेशहो तौ गृध्रसी है जो वायु हाथ और कानकी नसें तानके हाथ ऊपर न उठने दे वह विश्वाची है २३ जिस में थांह सनिजाइ वह वाहुक है २४ जो वायु हृदय में प्रवेशकरि ज्ञानको नष्ट करै दृष्टिरोकै कण्ठ शब्द त्रिलक्षणकरै कभी सावधान कभी अचेतर है स्थिरचित्त न रहै वह अपतानकहै २५ जो वायु चोट लागिकै घाव और पीड़ा करै वह व्रणायाम है २६ जिसमें चलने के श्रम से या ऊंचे नीचे पैर परैं या टेढ़ापरने से वायु घुटनों में उतरिकै सूजन और पीड़ा उत्पन्न करै वह वातकंटक है २७ जो वायु ऊर्ध्व गतिहोकै हृदय, मस्तक, कन्धा वा देह में पीड़ा करै और धनुष के आकार करिकै दृष्टिको रोकै कबूतर की नाईं बोलै मोह में पड़े वह अपतन्त्र है २८ जो सब शरीर में पीड़ा करै तो अंगभेद है २६ सबशरीर को शोषै सो अंगशोषहै ३० जो मिनमिनायके बोलै वह मिन्मिनत्व है ३१ जिसमें कण्ठ से स्पष्टशब्द न कढ़ै वह कृष्णता है ३२ जो नाभि के नीचे ऊंचा पत्थरसा करदे और मल मूत्र निरोध करि पेट में गांठि गांठिसी परिकै मंद २ पीड़ा करै वह अष्ठीलिका है ३३ जो अष्ठीलिका की नाईं गांठि टेढ़ी सूधी लंबीहो अधिक पीड़ादे उसे प्रत्यष्ठीलिका जानो जो पेटमें गांठि गांठिसी सरिकै मंद २ पीड़ाकरै यह अष्ठीलिका है ३४ जो वायु गर्भाशय में प्रवेशकरिगर्भ को संकुचित करै तो बालक छोटा उत्पन्नहो वह वामन है ३५ जो वायु दुष्टहो छाती पीठको संकुचित करै वह कुब्ज है ३६ जिसमें सब अंग में पीड़ाहो वह अंगपीड़ा है ३७ जिसमें शरीर विषे सूजासा गड़े वह अंगशूल है ३८ जो सर्वांग को संकुचितकरै वह संकोच है ३६ जो देहको चीणकरै वह स्तम्भ है ४० जो देह में रुखाई करै वह रूक्ष है ४१ जिसे कभी कोई अंग शिथिलहो कभी कोई वह अंगभंग है ४२ जो देह को काष्ठवत् अचेतकरै वह अंगविभ्रंश है ४३ जो मल निरोध करि अच्छी तरह न गिरनेदे वह विड्ग्रह है ४४ जो पक्वाशयमें मलखिंचै और भिन्न भिन्न पिंडिसेकरै वह बद्धविट्कता है ४५ जो वायु शब्द निरोधकरै वह मूक कहे गुंग है ४६ जो अतिजंभुआई लावै वह अतिजृम्भ है ४७ जिसमें अधिक डकारैं आवैं वह अत्युद्गार है ४८ जो वायु आंतमें प्रवेशकरि बोलै वह अंत्रकूजन है ४९ जो अतिउत्सर्गकरै अर्थात् गुदासे अधिक निकरै वह वातप्रवृत्ति है ५० जो शरीर नहां २

शोषोल्पशुक्रता ८ तिक्तास्यताम्लवक्त्रत्वंस्वेदस्रावो ङ्गपाकता। क्लमोहरितवर्णत्वमतृप्तिः पीतकायता ९ रक्तस्रावोङ्गदरणंलोहगन्धास्यतातथा। दौर्गन्ध्यंपीतमूत्रत्वमरतिःपीतविट्कता १० पीतावलोकनंपीतनेत्रता पीतदन्तता। शीतेच्छापीतनखता तेजोद्वेषोल्पनिद्रता ११ कोपश्चगात्रसादश्चभिन्नविट्कत्वमन्धता। उष्णो

फरकै वह स्फुरणहै ५१ जो जहां तहा नसोंको फुलावै वह शिरापूरण है ५२ जो सब देह कँपावै वह कंपवायुहै ५३ जो शरीरको दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४ जो शरीरको कृष्णकरै वह श्यावताहै ५५ जिसे मानुप असंभवबोलै वह प्रलापहै ५६ जो मूत्र बारबार आतुरता से हो सो क्षिप्रमूत्रहै ५७ जिसमें नींद न आवै वह निद्रानाशहै ५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीरको दुबलाकरै वह दुर्बलत्वहै, ६० जो वायु शुक्र में प्रवेशकरि फारिकै, बहावै वह शुक्रातिप्रवृत्ति है ६१ जो बलको घटावै वह बलक्षय है ६२ जो धातुको किंचित्क्षीणकरै वह शुक्रकार्श्य है जो चित्तको स्वस्थ न रक्खै वह अनवस्थितचित्तत्व है ६३ जो धातुको अतिक्षीण करै सो शुक्रनाशहै ६४ जो देहको कठोरकरै वह काठिन्यहै ६५ जिसमें जीभका स्वाद न मिलै वह विरसास्यहै ६६ जो जीभ ऐंठजाय वचन न कहि सकै वह वायुकषाय वक्रताहै ६७ जो वायु पक्वाशयमें जाय पेटफुलाय गुड़गुड़करै वह आध्मान है ६८ जो वायु आशय में जाइ कफ से मिलि पेटफुलाय पीड़ाकरै वह प्रत्याध्मान है ६९ जो शरीर को ठंढाराखै वह शीतताहै ७० जिसमें बारबार रोमांचहो वह रोमहर्षणहै ७१, जो भय उत्पत्ति करै वह भीरुत्वहै ७२ जो देह में सुईसी चुभै वह तोदहै ७३ जो खाज उत्पन्नकरै वह कंडूहै ७४ जिससे मधुरादिक रसका स्वाद न मिलै वह रसाज्ञता है ७५ जिससे कान से सुन न परै वह शब्दाज्ञता है ७६ जिसमें त्वचापर हाथधरे सनुभवकरै सो प्रसुप्ति है ७७ जिसमें गन्धज्ञान न हो वह गन्धाज्ञता है ७८ जिस में दृष्टि से सूझै नहीं वह दृश क्षय है ७९ और पित्तजनित चालीसरोग हैं धूमोद्गार, विदाह, उष्णाङ्ग, मतिभ्रम ॥ ७ ॥ कांतिहानि, कंठशोष, मुखशोष, अल्पशुक्रत्व ॥ ८ ॥ तिक्तास्यता, अम्लवक्त्र, स्वेदस्राव, अंगपाकत्व, क्लम, हरितवर्णत्व, अतृप्ति, पीतकाय ॥ ९ ॥ रक्तस्राव, अंगदरण, लोहगंधास्य, दौर्गंध्य, पीतमूत्रता, अरति, पीतविट्कता ॥ १० ॥ पीतावलोकन, पीतनेत्रता, पीतदंतता, शीतेच्छा, पीतनखता, तेजोद्वेष, अल्पनिद्रता ॥ ११ ॥

च्छ्वासत्त्वमुष्णत्वंमूत्रस्यचमलस्यच ॥ १२ ॥ तमसोदर्शनंपीतमण्डलानांचदर्शनम् । निःसरत्वंञ्चपित्तस्यच त्वारिंशद्रुजःस्मृताः १३ ॥ इति पित्तजरोगगणना ॥ कफस्यविंशतिःप्रोक्ता रोगास्तन्द्रातिनिद्रता । गौरवंमु

कोप, गात्रसाद, भिन्नविट्कता, अंधता, उष्णोच्छ्वासत्व, उष्णमूत्रता, उष्णमलता ॥ १२ ॥ तमोदर्शन, पीतमंडलदर्शन, निःसरत्व ये चालीसरोग पित्तसेभयेहैं ॥ १३ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिसे पित्तकोपसे धुआँसी डकारआवै वह धूमोद्गारहै १ जो अतिदाह करै वह विदाह २ जो देह गरम रहै वह उष्णाग है ३ जो बुद्धि स्थिर न रहै कभी कुछ समझै कभी कुछ न समझै वह मतिभ्रम है ४ जो देह मलिन करै वह कान्तिहानि है ५ जो कण्ठ व मुख सुखावै वह कण्ठशोष व मुखशोष है ६ जो शुक्रक्षीण करै स्त्रीप्रसंग में विना शुक्रगये शिथिल होजाय वह अल्पशुक्र है ७ जो मुख कडुवारहै वह तिक्तास्य है ८ जो मुख खट्टारहै तौ अम्लवक्त्र है ९ जो पसीना अधिक आवै वह स्वेदस्राव है १० जो पित्त से अंग पकाता है वह अंगपाक है ११ जो ग्लानिसे अनेकपदार्थ ग्रहणकरते भभकै वह क्लमहै १२ जिसमें देह हरितहो वह हरितवर्णत्व है १३ देह पीली परजाय वह पीतकायता है १४ जिसे पित्त के कोपसे भोजन करनेसे तृप्ति न होइ वह अतृप्ति है १५ जिसमें मुखादि मार्ग से रक्त गिरै वह रक्तस्राव है १६ जो शरीर में त्वचा चटकजाय वह अंगदरण है १७ जो लोहा घिसने से या लोहा सड़ाय कसीस बने तिसकीसी बास आवै वह लोहगंधास्य है १८ जो देह में दुर्गंधि आवै वह दौर्गंध्य है १९ जिसमें मूत्र पीला आवै सो मूत्रहै २० जिस से सर्व पदार्थ में चित्त न चलै वह अरति है २१ जिसके मल पीला आवै वह पीतविट्कत्वहै २२ जिसमें सब पदार्थ पीले देख पड़ै वह पीतावलोक है २३ जिससे आंखि पीली पड़जाय वह पीतनेत्रहै २४ जो दांत पीले होजायँ वह पीतदन्त है २५ जो ठंढी चीजपर इच्छा चलै वह शीतेच्छा है २६ जो पीले नखहोजायँ तौ पीतनख २७ जो तेजोमय चीज देखि अच्छी न लगै वह तेजोद्वेष है २८ जो निद्रा कम आवै वह अल्पनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिकहो वह कोप है ३० जो देह पीड़ित करै वह गात्रसाद है ३१ जो मल फटकै फुटकीसा हो वह भिन्नविट्क है ३२ जो दृष्टिनाशकरै वह अन्धता है ३३ जो उष्णश्वास आवै सो उष्णोच्छ्वास है ३४ जो मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्णमूत्रत्व है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरै तो उष्णमल-

खमाधुर्य्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत
विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छाति
क्तकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य वाहुल्यंवहुमूत्रता।
आलस्यंमन्दवुद्धित्वंतृप्तिर्घुर्घरवाक्यता । अचैतन्यञ्च
गदिताविंशतिःश्लेष्मजागदाः १६॥ इति कफजरोगगण
ना॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम्। रक्तमण्ड
लतारक्तनेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिट
कानाञ्चदर्शनम् । औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापा
कश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथो
दितः। तेष्वोष्ठरोगागणिता एकादशमिताबुधैः । वात

त्व है ३६ जो उजेरे में अंधेरा जानपरे वह तमोदर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरङ्ग ठौर ठौर देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले धब्बे से-देखपरें वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से गिरै वह निरसरत्व है ४० और बीसरोग कफसंभव हैं तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव, मुखमाधुर्य, मुखलेप, प्रसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगवर्णता, उष्णेच्छा, तिक्तकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता, आलस्य, मंदबुधित्व, तृप्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं (स्वल्पलक्षणम्) जिसमें आंखें झपीरहें निद्रा न परे वहतन्द्रा है जो निद्रा विशेषहो तौ अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद बनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहटहो तौ मुखलेप जो लार गिराकरै तौ प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तौ श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तौ श्वेतविट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तौ श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेतहो तौ श्वेत मांगवर्णत्व है, जो देह ठंढी बनीरहै तौ शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तौ उष्णेच्छा है जो कटुपदार्थपर चित्तचलै तौ आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तौ मदबुद्धिहै सूक्ष्माहार से तृप्तिहो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला घर्घराय तौ घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तौ अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभांति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्रत्व, रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीड़ा, पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके भी

पित्तकफैश्चत्रिदोषैरसृजस्तथा १९ क्षतंमांसार्बुदञ्चै
व खण्डौष्ठश्चगलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाए
कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनःकृमिद
न्तकः। दन्तहर्षःकरालश्चदन्तचालश्चशर्करा २१ अ
धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदःकपालिका । तथात्रयोद
शमितादन्तमूलामयाःस्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्वौतु
दन्तविद्रधिपुप्पुटौ । अधिमांसोविदर्भश्च महासौषिर

चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित कहते हैं वात से, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १९ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जलार्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ गांठि परै पीडाकरै तन फूटै फटै वा खाल उखड़ै तौ वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाहहो पीली परैं पकजायँ सो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कछुक पीडायुक्त पिटका हो ठण्ढे रहें तौ कफज है जो ओठ पिटका पीड़ा सहित हों कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोपज है जो ओष्ठ खजूर फलके रंग हों फुन्सीयुक्त रक्त बहै मासकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओष्ठ में क्षत लगै से खजुआय पकै घाव परै वह क्षत है मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मासपिंडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ फटके बहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा बहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी बहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अथ दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त, दन्तहर्ष,कराल,दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त,दन्तभेद और कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालनहै जो दांत कृमि परनेसे काले होजायँ पीड़ा करैं सो कृमिदन्त है जो ठण्डा पानी दांत में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढे बकुरे होजायँ तो कराल है जो दांत हलैं सो दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करे वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और टूटके बाहर बटिया सी पड़जाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ैं वह कालिका है दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

खमाधुर्य्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत विट्कत्वंश्वेतमूत्रता। श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छाति क्तकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य वाहुल्यंबहुमूत्रता। आलस्यंमन्दबुद्धित्वंतृप्तिर्घुर्घरवाक्यता। अचैतन्यञ्च गदिताविंशतिःश्लेष्मजागदाः १६॥इति कफजरोगगण ना॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम्। रक्तमण्ड लतारक्तनेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिट कानाञ्चदर्शनम्। औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापा कश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथो दिताः। तेष्वोष्ठरोगागणिता एकादशमितावुधैः। वात

स्व है ३६ जो उजेरे में अंधेरा जानपरे वह तमोदर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरङ्ग ठौर ठौर देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले धब्बे से देखपरें वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से गिरे वह निस्सरत्व है ४० और बीसरोग कफसंभव हैं तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव, मुखमाधुर्य, मुखलेप, प्रसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव र्णता, उष्णेच्छा, तिक्तकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता, आलस्य, मंदबुधित्व, तृप्ति, घुर्घरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं (अस्यलक्षणम्) जिसमें आंखें झपीरहैं निद्रा न परै वहतन्द्रा है जो निद्रा विशेषहो तौ अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद बनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहटहो तौ मुखलेप जो लार गिराकरै तौ प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तौ श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरै तौ श्वेत विट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तौ श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेतहो तौ श्वेत मार्गवर्णत्व है जो देह ठंढी बनीरहै तौ शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तौ उष्णेच्छा है जो कटुपदार्थपर चितचलै तौ आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तौ मंदबुद्धिहै सूक्ष्माहार से तृप्तिहो तौ तृप्तिहै जो बोलने में गला घर्घराय तौ घुर्घरवाक्यहै मंद चेतनाहो तौ अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभांति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्रत्व, रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीड़ा, पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके जो

पित्तकफैस्तेथात्रिदोषैरसृजस्तथा १९ क्षतंमांसार्बुदञ्चै व खण्डोष्ठश्चगलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाए कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनःकृमिद न्तकः । दन्तहर्षःकरालश्चदन्तचालश्चशर्करा २१ अ धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदःकपालिका । तथात्रयोद शमितादन्तमूलामयाःस्मृताः २२ शीतादोपकुशौष्ठौतु दन्तविद्रधिपुप्पुटौ । अधिमांसोविदर्भश्च महासौषिर

चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित कहते हैं वात से, पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १९ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जलार्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ गांठि परै पीड़ाकरै तन फूटै फटै या खाल उसड़ै तौ वातज है जो छोटी फुन्सियां परैं पीड़ा दाहहो पीली परैं पकजायँ तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कछुक पीड़ायुक्त पिटका हो ठण्ढे रहें तौ कफज है जो आउ पिटका पीड़ा सहित हों कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ खजूर फलके रंग हों फुन्सीयुक्त रक्त बहै मांसकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह रक्तज ओष्ठ है जब ओष्ठ में क्षत लगे से खजुआय पकै घाव परै वह क्षत है मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मांसपिंडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ फटके बहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा बहै सो जलार्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी बहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अब दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त, दन्तहर्ष,कराल,दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त,दन्तभेद और कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालनहै जो दांत कृमि परनेसे काले होजायँ पीड़ा करैं सो कृमिदन्त है जो ठण्ढा पानीदांत में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढ़े बकुरे होजायँ तो कराल है जो दांत हलैं तो दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करै वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और टटके बाहर बटिया सी पड़जाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ैं वह कपालिका है दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

सौषिरौ २३ तथैवगतयःपञ्च वातात्पित्तात्कफादपि। सन्निपाताद्गतिश्चान्यारक्तनाडीचपञ्चमी २४ तथाजिह्वामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। अलसश्चचतुर्थःस्यादधिजिह्वश्चपञ्चमः। षष्ठश्चैवोपजिह्वःस्यात्तथाष्टौतालुजागदाः २५ अर्बुदन्तालुपिटकाकच्छपीतालुसंहतिः। गलशुण्डीतालुशोषस्तालुपाकश्चपुप्पुटः २६ गल

नाम शीताद, उपकुश, दंतविद्रधि, पुप्पुट, अधिमांस, विदर्भ, महासौपिर, सौपिर ॥ २३ ॥ इसमें वातादि दोषसे दंतनाड़ीरोग पांच प्रकारकाहै वात नाड़ी, पित्तनाड़ी, कफनाड़ी, सन्निपातनाड़ी, रक्तनाड़ी ये तेरह दंतमूल रोगहैं (अथास्यलक्षणम्) जो मसूढ़ा फटि जाय रक्तदे सो शीतादहै जो मसूढ़ा में दाहहोय पके दांत हलैं पीड़ा कमहो रक्त वहै फूलै मुखमें दुर्गंध आवै वह उपकुश है जो मसूढ़ा बाहर वा भीतर सूजै पिराय रुधिर पीवदेइ सो दंतविद्रधि है जो दो तीनदांत का मसूढ़ा विशेष फूलै वह पुप्पुट है जो चौहड़के मसूढ़ा में पीड़ा अधिकहो वह अधिमांस है जो मसूढ़ा दांत गिराने के लिये दांत रगड़ाकरै वा व्रण उत्पन्नकरै वा सूजन विशेष उत्पन्न करै दांत हिलावै वह विदर्भहै जिस मसूढ़ा में दांत हिलैं और तालू फटिजाय और मसूढ़ा गलिजाय वह महासौपिर है जो मसूढ़ा पिराय के सूजै लार बहावै वह सौपिर है जो मसूढ़ा में फोड़ाहोके पके फूटै और पोलापर दुर्गन्ध आवै लांबी नाड़ीसी दाबने में समुझपरै वह नाड़ीहै इस नाड़ीमें जिसदोषका अधिकार जानिपड़े वह वही नाड़ी जानिये ॥ २४ ॥ अब जिह्वारोग कहते हैं जीभ में छःप्रकारके रोगहैं वातजन्य, पित्तज, कफज, अलस, अधिजिह्व, उपजिह्व ये छःनाम हैं (अथास्य लक्षणम्) जो जीभ फटिके मधुरादि षट्रस का स्वादु परिज्ञान न होय जैसे मारवाड़देश में जिह्वा वृक्ष खरखराय तौ वातजहै जो जीभ लाल वा पीली परजाय दाहकरै कांटेपरै सो पित्तजहै जो जीभ में कारे२कांटेसे उठें और मोटेहों और श्वेतजीभहो तौ कफजहै जो जीभ अपनीजड़ की ओरखिंचिजाइ और सूजनअधिकहो और जड़पकिजाइतौ अलसहै जो जीभकी नाकसम सूजन जीभ होइ पकिकै बहै तौ अधिजिह्व असाध्यहै जो जीभकी नोकसी सूजन नरहो और लालहो खजुआय उसे उपजिह्व जानो ॥ २५ ॥ (अथाष्टप्रकार तालुरोग) अर्बुद, तालुपिटका, कच्छपी, तालुसंहति, गलशुंडी, तालुशोष, तालुपाक, पुप्पुट (अस्यलक्षणम्) तालुके मध्यमें कमलांकुरसमान उत्पन्नहो और

रोगास्तथाख्याताअष्टादशमिताबुधैः । वातरोहिणिका पूर्वेद्वितीयापित्तरोहिणी २७ कफरोहिणिकाप्रोक्तात्रिदोषैरपिरोहिणी। मेदोरोहिणिकावृन्दोगलौघोगलविद्रधिः। स्वरहातुण्डिकेरीचशतघ्नीतालुकोर्वुदम् २८ गिलायुर्वलयश्चापि वाताद्गण्डःकफात्तथा । मेदोगण्डस्तथैवस्यादित्यष्टादशकण्ठजाः २९ मुखान्तःसम्भवारोगाह्यष्टौख्यातामहर्षिभिः।मुखपाकोभवेद्वातात्पित्तात्तद्वत्कफादपि३० रक्ताच्चसन्निपाताच्चपूत्यास्योर्ध्वगुदावपि। अर्बुदंचेतिमुखजाश्चतुस्सप्ततिरामयाः ३१ कर्णरोगास्समाख्याताअष्टा

क्तार्बुदके लक्षण मिलैं सो तालुअर्बुदहैजो तनिके मूजै रक्तविकार सम पीडादाह हो सो पिटकाहै जो कछुवा कैसी पीठ सूजआवै पीडा थोड़ीहो सो कच्छपिका है जो तालूके बीचमें लंबी सूजनहो पीडाकरै सो तालुसंहतिहै जो तालूकी जड लम्बी मोटी सूजजाय वह गलशुंडी है जो तालू फूटै फटै सो तालु शोष है जो पकिजाइ सो तालुपाकहै जो झरबेरी के समान अंगे परिजाइ और मेदकेआश्रित हो सो पुप्पुटहै ॥ २६ ॥ (अथाष्टप्रकार कण्ठरोग) वातरोहिणी, पित्तरोहिणी ॥ २७ ॥ कफरोहिणी, त्रिदोषरोहिणी, वृंद, गलौघ, गलविद्रधी, स्वरहा, तुण्डिकेरी, शतघ्नी, तालुक, अर्बुद ॥ २८ ॥ गिलायु वलय, वातगण्ड, कफगण्ड और मेदोगण्ड ये अठारह प्रकारके कण्ठज रोगहैं (अथास्य लक्षणम्) जीभ की जड़के पास चनेके सम छोटीहो गलेके मार्गको रोधकरै इसमें त्रिदोष वा मेद जिसका विशेष लक्षण मिलै वही रोहिणी जानौ पांच रोहिणी तेरह औरहैं सो बहुतभांति गलेके भीतर क्षत गाढि सूजन होकै कंठरोध करि पीडा करतेहैं और तीनि गण्ड ऊपर होतेहैं जिसे घेघा कहते हैं सो तीनों दोष से होतेहैं जिनका लक्षण मिलै वही प्रधान जानौ ग्रंथगौरव होनेके कारण इस ग्रंथमें नहीं लिखा ॥ २९ ॥ मुखके अन्त में आठ प्रकारके रोगहैं ये सब मिलिकै मुखके भीतर चौहत्तर भांतिके रोगहैं वातमुखपाक, पित्तमुखपाक, कफमुखपाक, ॥ ३० ॥ रक्तमुखपाक, सन्निपातमुखपाक, दुर्गन्ध, ऊर्ध्वगुद और अर्बुद ये आठ मुखके रोगहैं ॥ (अथास्य लक्षणम्) मुखके भीतर चारों ओर फुन्सी होयँ पीडाकरैं उन में जिस दोषके लक्षण पाये जावैं वही मुखपाक जानौ मुखमें फोडा होके दुर्गंध आवै सो दुर्गंधास्यहै मुखके भीतर फोडा होके स्थिर जाय सो ऊर्ध्वगुदहै मांस

दशमितावुधैः । वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपाताच्चवि द्रधिः । शोथोर्बुदंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका ३२ वाधिर्य्यंतन्त्रिकाकण्डूःशष्कुलीकृमिकर्णकः । कर्णनादःप्रतीनाहइत्यष्टादशकर्णजाः ३३ कर्णपालीसमुद्भूतारोगाःस सप्तद्दोदिताः । उत्पातःपालिशोषश्चविदारीदुःखवर्द्धनः॥

की गांठि उत्पन्न होके पीड़ाकरै वह अर्बुद है॥ ३१ ॥ या कर्णरोग अठारह प्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, विद्रधि ॥ ३२॥ कर्णशोथ, अर्बुद, पूतिकर्ण, कर्णार्श, कर्णहल्लिका, बाधिर्य्य, तंत्रिका, कण्डू, शष्कुली, कृमिकर्णक, कर्णनाद, प्रतीत है ये अठारह नाम कानरोग के हैं (अथास्य लक्षणम्) कान में शब्द उठै पीड़ाहो और मल सूखिकै पानी बहै सो वातहै जो लाल सूजनहोके फटै दुर्गन्ध आवै और बहै वह पित्तजकर्णरोग है जो सूजनहो खुजाय और मद चिकनासा बहै कमसुनै पीड़ाकरै सो कफज कर्णरोगहै जिसमें कुछ पित्तके लक्षण मिलें वह रक्तज कर्णरोग है जो तीनों दोषके लक्षण पाये जाय वह सन्निपात कर्णरोगहै कानमें घाव या विद्रधि होकै वा फोड़ा होकै पीव या रक्त बहै सो कर्णविद्रधि है जो कानमें सूजनहो वो कर्णशोथ है जो कानमें गिलटी सी होके पिराय तो कर्णार्बुद है जो दुर्गन्धित पीव बहै तौ पूतिकर्ण है जो चनेकी घेंटी सीहो खजुआइ दाह पीड़ाकरै तौ कर्णार्श है जो कानमें कोई जंतु प्रवेशकरै उसके चलने से विकल होती है स्थिर रहनेसे स्वस्थ रहती है इसे कर्णहल्लिका कहते हैं जो सुनि न परै तौ बाधिर्य है जो कानमें बीन शब्दसा भनभनाहटहो तौ तन्त्रिक जो कान खजुआइ और कर्णमल सूखजाइ सो गुत्थी है पिटकाहो बहै सो शष्कुली है ग्रंथान्तर में कर्णस्राव कहते हैं जो कानमें कीड़ा परजाइ सोकृमिकर्ण है जो भेरि मृदंगादि कासा शब्द पूरित रहै तौ कर्णनाद है जो कर्णमल गलिकै बहै तौ प्रतिनाद है इसे आधाशीशी भी कहते हैं॥ ३३ ॥ कर्णपाली रोग सातप्रकार का है उत्पातपाली, शोषपाली, विदारी, दुःखवर्द्धन, परिपोट, लेही, पिप्पली (अथास्य लक्षणम्) कर्णरंध्रके ऊपर जो शूर्पाकार परदा है उसे पाली कहते हैं उसे भारी आभूषण पहिरने से वा खजुआने से वा दबजाने से कालपर पकै दाह पीड़ाकरै फिर सूजकै लाल होजाइ सो उत्पातहै जो पाली सूखिकै छोटी परिजाइ तौ शोषपाली है जो पाली फटिकै खजुआइ सो विदारी है जो कान की नस छिदजाइ वा विपरीत छेद हो तौ फिर बदनमें सूजै जलन हो पकै सो दुःखवर्द्धन है जो गहना पहिरने उतारने से सूजै कालापरै पकै

परिपोटश्चलेहीचपिप्पलीचेतिसंस्मृताः ३४ कर्णमूला मयाःपञ्चवातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्चतथा नासाभवागदाः ३५ अष्टादशैवसङ्ख्याताःप्रतिश्याया स्तुतेष्वपिवातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेनपञ्चमः।आ पीनसःपूतिनासोनासार्शोभ्रंशथुःक्षवः। नासानाहःपूतिर क्तमर्बुदंदुष्टपीनसम्। नासाशोषोघ्राणपाकःपुटस्रावश्च दीप्तकः ३६ तथादशशिरोरोगावातेनार्द्धावभेदकः॥ शिर

सो परिपोट है जो पाली में नन्हीं २ फुंसी हो खजुआय जलन हो सो लेही है जो पाली में वेदनारहित सूजनहो स्तब्धहो सो पिप्पली है ग्रंथांतर में उन्मथ नाम है ॥ ३४ ॥ कर्णमूल पंचप्रकार के हैं वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज, रक्तज (अथास्य लक्षणम्) कानकी जड़के नीचे सूजनको कर्णमूल कहते हैं वातसेपीड़ा पित्तसेदाह कफसे खाज त्रिदोष से तीनों लक्षण रक्तसे लालदाह संयुक्त ॥ ३५ ॥ नाकमें अठारह प्रकार के रोग हैं उनमें पांच प्रतिश्याय हैं वातप्रतिश्याय, पित्तप्रतिश्याय, कफप्रतिश्याय, रक्तप्रतिश्याय, सन्निपातप्रतिश्याय, पीनस, पूतिनास, नासार्श, भ्रंशथु क्षव नासानाह, पूतिरक्त, अर्बुद, दुष्ट पीनस, नासाशोष, घ्राणपाक, पुटस्राव, दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं (अथास्य लक्षणम्) प्रतिश्याय कहे नाक बहना नाकबन्द होके फिर कुछ पानी बहै कण्ठ तालु ओठ सूखजाइ कनपटी में पीड़ाहो सो वातप्रतिश्याय है जो काला पीला पानी बहै सो पित्तप्रतिश्यायहै जो कफसा श्वेतपानी बहै माथा जकड़ारहै सो कफ प्रतिश्याय है जो रक्त बहै नेत्रलाल हो तौ वायुपद्धती रक्तप्रतिश्यायहै जो तीनों दोष मिलैं तौ सन्निपातप्रतिश्यायहै जो नाक सूखिकै चैली उखड़ै सुगंध दुर्गंधज्ञान परै श्वासभूरिसी आवै तौ पीनसहै जो नाक वा मुखसे दुर्गंध आवै तौ पूतिनास है जो मांसकी फुटकी उठआवै तौ नासार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफ सूर्यास्त से अनायास गिरै तौ भ्रंशथु है जो छींक अधिक आवै तौ क्षव है जो श्वासावरोध हो तौ नासानाह है जो अभिघात से रक्त वा पीब बहै तौ पूतिरक्त है जो नाकके भीतर खुटियासी परिजाय तौ अर्बुदहै जो पीनस से अधिक कष्ट देइ तौ दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कष्ट करि सींचने से श्वासआवै जाय तौ नासाश्वास है जो नाक फुटिकै ऊपर से पीब बहै तौ घ्राणपाक है जो नाक से पीब वा कफकी बहै सो पुटस्रावहै जो नाक में दाहहोकै देह संतप्तकरै

स्तापश्चवातेनपित्तात्पीडातृतीयका ३७ चतुर्थीकफजा पीडारक्तजासन्निपातजा। सूर्यावर्ताच्छिरःपाकात्क्रिमिभिः शङ्खकेनच ३८ तथाकपालरोगाःस्युर्नवतेषूपशीर्षकम्। अरूंषिकाविद्रधिश्चदारुणंपिटकार्बुदम् । इन्द्रलुप्तञ्च खालित्यंपलितंचेतितेनव ३९ तथानेत्रभवाः ख्याता

तौ दीप्तकहै ॥ ३६ ॥ माथेके दश प्रकारके रोगहैं अर्द्धावभेद, वातजशिरोभिताप, पित्तजशिरोभिताप ॥ ३७ ॥ कफजशिरोभिताप, रक्तजशिरोभिताप, सन्निजशिरोभिताप, सूर्यावर्तशिरोभिताप, शिरःपाक, कृमिजशिरोभिताप, शङ्खक ये दश रोग हैं जो वायु निज कोप वा कफकी सहायतासे अर्द्धमस्तकमें निरोधकरै व चिलक फुदारके महार सम उत्पन्न होतीहो व उसी कनपटीमें कान नेत्र ललाटमें अधिक पीडा करती है व आंख भी लाल होती है सो अर्द्धावभेदक है उसे आधाशीशी भी कहते हैं जो रात्रिको व्यथा बढ़ै वह वातजशिरोभिताप है जो मस्तक आरासा चिरै नाकसे श्वास धुआंसीकढ़ै रात्रिको ठंढकरहै सो पित्तजहै जो माथा भारी हो रुंध जाय मुँहपर भरभराहट हो सो कफजहै जो पित्तलक्षणयुक्त माथा अति उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तजशिरोभिताप है जो तीनों दोष पाये जायँ जो सन्निपात शिरोभिताप है जो सूर्योदय से भौंह और आंखि में पीडा बढ़ती जाय और दुपहर से दिन उतरते उतरतीजाय सो सूर्यावर्त है जो माथे का रुधिर वा चरबी क्षय होजाय व छींक बहुत आवै पीडाकरै सो शिरपाक है जो मस्तक में कृमिपरै व भालासा कोंचै व माथेकी मज्जा चरलेवै व कनपटी में अति पीडा व सूजन हो तौ पित्तवायु रक्तकोप से शङ्खक होताहै सो विषसदृश माथा गलानिरोधकरि तीनदिनमें प्राण हरलेताहै इसमें वैद्य तीन दिन बीतजाने पर चिकित्सा करते हैं ॥ ३८ ॥ (अथ कपालरोग) नवप्रकारहै उपशीर्षक, अरूंषिका, विद्रधी, दारुण, पिटका, अर्बुद, इन्द्रलुप्त, खालित्य, पलित ये नवरोग हैं (अथास्यलक्षणम्) वातादि दोष कोपकरि कपालमें सूजन उत्पन्नकरै जो दोष अधिकहो वही उपशीर्षकहै जो कृमि करिकै बहुत छिद्रहो बहै सो अरूंषिकाहै जो मस्तक में ग्रन्थि परिकै पिराय सो विद्रधिहै जो माथा रूखाहो भूसी जमै और खजुआय सो दारुणहै इसे रूसी भी कहते हैं जो माथे में बटिया सदृश ऊंचीहोय वह पिटकाहै जो पीडा संयुक्तहो व मस्तक में गांठिसी होकै पीडा करै तौ अर्बुदहै कफ रक्त कोपकरि रोमें छेदोंको रुंधिकै गिराय देते हैं सोई इंद्रलुप्तहै और वह भी होनाहै

श्चतुर्नवतिरामयाः । तेषुवर्त्मगदाःप्रोक्ताश्चतुर्विंशति सङ्ख्यकाः ४० कृच्छ्रोन्मीलःपक्ष्मशातःकफोत्क्लिष्टश्च लोहितः । अरुग्निमेषःकथितो रक्तोत्क्लिष्टः कुकूणकम् ४१ पक्ष्मार्शःपक्ष्मरोधश्च पित्तोत्क्लिष्टश्चपोथकी । श्लिष्टवर्त्माचबहलः पक्ष्मोत्सङ्गस्तदार्बुदम् ४२ कुम्भिकासिकतावर्त्मा लगणोञ्जननामिका । कर्दमःश्याववर्त्माच विषवर्त्मातथालजी ४३ उत्क्लिष्टवर्त्मेतिगदाः प्रोक्ता वर्त्मसमुद्भवाः । नेत्रसन्धिसमुद्भूतानवरोगाः प्रकीर्तिताः ४४ जलस्रावः कफस्रावो रक्तस्रावश्चपर्वणी । पूयस्रावः कृमिग्रन्थिरुपनाहस्तथालजी ४५ पूयालसइति प्रोक्ता रोगानयनसन्धिजाः । तथाशुक्लगतारोगाबुधैः प्रोक्तास्त्रयोदश ४६ शिरोत्पातःशिराहर्षःशिराजालश्च शुक्तिका । शुक्लार्मचाधिमांसार्म प्रस्तार्यर्मचपिष्टकः ४७ शिराजापिटकाचैव कफग्रथितकोर्जुनः । स्नाय्वर्मचाधिमांसः स्यादितिशुक्लगतागदाः । तथाकृष्णसमुद्भूताःपञ्चरोगाः प्रकीर्तिताः ४८ शुद्धशुक्रंशिराशुक्रंक्षत

उसे बादखोरा भी कहते हैं जो माथेके बार गिरकै चिकना होजाय सो खालित्य कहे चंदुवाहै जो काल वा अकालमें केश श्वेत होजाइं सो पलितहै ॥ ३९॥ नेत्र मण्डल में ९४ रोगहैं उनमें वर्त्मगद २४ हैं॥४०॥ कृच्छ्रोन्मील,पक्ष्मशात,कफोत्क्लिष्ट, लोहित, अरुग्निमेष, रक्तोत्क्लिष्ट, कुकूणक ॥ ४१ ॥ पक्ष्मार्श, पक्ष्मरोध, पित्तोत्क्लिष्ट, पोथकी, श्लिष्टवर्त्मा, बहल, पक्ष्मोत्संग, अर्बुद ॥ ४२ ॥ कुंभिका, सिकतावर्त्म,लगण,अञ्जननामिका, कर्दम,श्याववर्त्मा,विषवर्त्म,अलजी ॥ ४३ ॥ उत्क्लिष्टवर्त्मा यह रोग वर्त्मसमुद्भूतहैं नेत्रकी संधिमें ९ रोगहैं॥ ४४ ॥ जलस्राव, कफस्राव, रक्तस्राव, पर्वणी, पूयस्राव, कृमिग्रंथि, उपनाह, अलजी॥ ४५ ॥पूयालस ये नयनसंधिजरोगहैं तथा नेत्रके सफेद भागमें तेरहरोगहैं ॥ ४६ ॥ शिरोत्पात,शिराहर्ष,शिराजाल,शुक्तिक,शुक्लार्म,अधिमांसार्म, प्रस्तार्यर्म,पिष्टक ॥ ४७ ॥ शिराजापिटका, कफग्रथितक, अर्जुन, स्नाय्वर्म, अधिमांस ये शुक्लगतरोगहैं नेत्रकी

शुक्रं तथाजकः । शिरासङ्गश्चसर्वेपिप्रोक्ताःकृष्णगता गदाः ४९ काचश्चतुष्षड्विधंज्ञेयं वातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्चषष्ठंसंसर्गसम्भवम् ५० तिमिराणिषडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । संसर्गेणचरक्तेन षष्ठंस्यात्सन्निपाततः ५१ लिङ्गनाशः सप्तधास्याद्वातात्पित्तात्कफेनच । त्रिदोषैरुपसर्गेणरक्तात्संसर्गजस्तथा ५२ अष्टधादृष्टिरोगाः स्युस्तेषुपित्तविदग्धकम्। अम्लपित्तं विदग्धञ्च तथैवोष्णविदग्धकम् ५३ नकुलान्ध्यंधूसरान्ध्यं रात्र्यान्ध्यंह्रस्वदृष्टिकः । गम्भीरदृष्टिरित्येते रोगादृष्टिगता स्मृताः ५४ चत्वारश्चाधिमन्थाःस्युर्वातपित्तकफास्रतः । अभिष्यन्दाश्चचत्वारो रक्ताद्दोषैस्त्रिभिस्तथा ५५ सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः । अम्लशोफोन्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृतः ५६ शुष्काक्षिपाकश्च तथा शोफोध्युषितएवच । हताधिमन्थइत्येतेरोगाः सर्वाक्षिसम्भवाः ५७ पुंस्त्वदोषास्तुपञ्चैव प्रोक्तास्तत्रेर्ष्यकःस्मृतः। आसेक्यश्चैवकुम्भीकस्सुगन्धिःषण्ढसञ्ज्ञकः५८शुक्रदोषास्तथाष्टौस्युर्वातपित्तकफेनच।कुणपंश्ले

काली जगह में ७ रोग हैं ॥ ४८ ॥ शुद्धशुक्र, शिराशुक्र, क्षतशुक्र, अजक, शिरासंग ये काली पुतलीके रोगहैं ॥ ४९ ॥ कांच ६ तरहकाहै वात, पित्त, कफ, संसर्ग,रक्त, सन्निपात ॥ ५० ॥ तिमिर छः प्रकारकाहै वात, पित्त, कफ, संसर्ग, रक्त व सन्निपात से ॥ ५१ ॥ लिंगनाश ७ प्रकारकाहै वात,पित्त कफ, त्रिदोष, उपसर्ग रक्त, संसर्ग से ॥ ५२ ॥ नेत्ररोग ८ प्रकारके हैं उसमें पित्त-विदग्धक, अम्लपित्त, विदग्ध, उष्णविदग्धक ॥ ५३ ॥ नकुलांध्य, धूसरांध्य, रात्र्यान्ध्य, ह्रस्वदृष्टिक, गम्भीरदृष्टि ये दृष्टिगतरोगहैं ॥ ५४ ॥ चार अधिमन्थ हैं वात,पित्त,कफ,अस्रज,अभिष्यन्द ४ रक्तसे दोष से ३ ॥ ५५ ॥ सब नेत्ररोग८ हैं उसमें वातविपर्यय,अम्लशोफ वात, पाकात्यय॥ ५६ ॥ शुष्काक्षिपाक, शोफ, अम्लोषित ये अधिमन्थरोग नेत्र में उत्पन्नहोते हैं ॥ ५७ ॥ पुंस्त्वदोष पांचही

ष्मवाताभ्यां पूयाभंश्लेष्मपित्ततः ५९ क्षीणञ्चवात पित्ताभ्यां ग्रन्थिलंश्लेष्मरक्ततः। मलानांसन्निपाताच्च शुक्रदोषाइतीरिताः ६० अथस्त्रीरोगनामानि प्रोच्यन्तेपूर्व शास्त्रतः। अष्टावार्त्तवदोषास्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा। पूया भंकुणपंग्रन्थिक्षीणंमलसमन्तथा ६१ तथाचरक्तप्रदरं चतुर्विधमुदाहृतम्। वातपित्तकफैस्त्रेधाचतुर्थंसन्निपात तः ६२ विंशतिर्योनिरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि। स न्निपाताच्चरक्ताच्चलोहितक्षयतस्तथा ६३ शुष्काचवामि नीचैवषण्ढीचान्तर्मुखीतथा। सूचीमुखीविप्लुताचजात घ्नीचपरिप्लुता ६४ उपप्लुताप्राक्चरणामहायोनिश्चकर्णि का। स्यान्नन्दाचातिचरणायोनिरोगाइतीरिताः ६५ चतु र्विधंयोनिकन्दं वातपित्तकफैस्त्रिधा। चतुर्थंसन्निपातेन तथाष्टौगर्भजागदाः ६६ उपविष्टकगर्भःस्यात्तथानागो दरःस्मृतः। मक्कल्लोमूढगर्भश्च विष्टम्भोमूढगर्भजः। जरायुदोषोगर्भस्य पातश्चाष्टमकःस्मृतः ६७पञ्चैवस्त

हैं ईर्ष्यक, आसेक्य, कुम्भीक, सुगन्धि, षण्ढ ॥ ५८ ॥ और शुक्रदोष ८ हैं वात पित्त कफसे कुणप श्लेष्म और वातसे पूयाभ, श्लेष्म और पित्तसे॥५९॥ क्षीणवात पित्तसे ग्रंथिल, श्लेष्म और रक्तसे मलों के सन्निपात से ये शुक्रदोष कहे ॥ ६० ॥ अब स्त्रियों के रोग कहते हैं ८ ऋतु से वात, पित्त, कफ से ३ प्रकारके पूयाभ, कुणप, ग्रन्थि, क्षीण तथा मलसम ॥ ६१ ॥ रक्तप्रदर४प्रकार का है वात, पित्त, कफ से तीन प्रकार का चौथा सन्निपात से ॥ ६२ ॥ बीस योनिरोग हैं वात, पित्त, कफ, सन्निपात, लोहित क्षय से ॥ ६३ ॥ शुष्का, वामिनी, षण्ढी, अंतर्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातघ्नी, परिप्लुता ॥ ६४ ॥ उपप्लुता, प्राक्चरणा, महायोनि, कर्णिका, नन्दा और अतिचरणा ये बीस योनि रोगहैं ॥ ६५ ॥ चार प्रकार का योनिकन्द है वात पित्त कफ से ३ प्रकारका चौथा सन्निपात से ८ आठ रोग गर्भज हैं ॥ ६६ ॥ उपविष्टक, नागोदर, मक्कल्ल, मूढगर्भ, विष्टम्भ, मूढगर्भज, जरायुदोष, पात ये आठहैं ॥ ६७ ॥ अथपाच

नरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपातात्क्षताच्चैव तथास्तन्योद्भवागदाः ६८बालरोगेषुकथिताःस्त्रीदोषाश्च त्रयःस्मृताः । अदक्षपुरुषोत्पन्नःसपत्नीविहितस्तथा ६९ दैवाज्जातस्तृतीयस्तु तथायेसूतिकागदाः । ज्वरादयश्चिकित्स्यास्तेयथादोषंयथाबलम् ७० द्वाविंशतिर्बालरोगास्तेषुक्षीरभवास्त्रयः । वातात्पित्तात्कफाच्चैवदन्तोद्भेदश्चतुर्थकः । दन्तघातोदन्तशब्दोकालदन्तोहिपूतनम् ७१ मुखपाकोमुखस्रावोगुदपाकोपशीर्षकः । पार्श्वारुणस्तालुकण्ठोविच्छिन्नंपारिगर्भिकः ७२ दौर्बल्यंगात्रशो

प्रकार स्तनरोग, वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षतज जैसे ये पांच स्तन रोगहैं ऐसेही वातादि पांच रोग दूध उतरने में स्तनरोग बालरोग में कहे हैं दूध वाली वा विना दूधवाली स्त्रीके स्तनमें वातादि दोष कोपकरि मांस जो रक्त दूषित करै तो पांच प्रकार के रोग हों वे रक्तज विद्रधि के सब लक्षण युक्त होते हैं वातजमें वायुके ऐसे दोष मति जानना ॥ ६८ ॥ स्त्रीके दोष उत्पन्न करनेवाले तीन दोषहैं अदक्षपुरुष कहे स्त्रीके व्यवहारमें चतुरत होय उसके संताप करिके जो रोग उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवति की ईर्षा संताप कारण करके रोग होय वह पत्नी विहितहै जो निजस्त्रीसे पुरुष प्रसन्नतासे मत न देय औरही स्त्रीसे स्नेह रखता होय इस चिन्तासे कृशहोवै शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताहै वह दैहिक है ॥६९॥ अथ बालांत रोग जो बालक होने के अन्तमें रोग उत्पन्नहोय वह बालांतहै उसीको प्रसूति भी कहतेहैं इसमें ज्वरादिक दोष देखिके औररोग का बलाबल विचारिके चिकित्सा करना जिसमें देह पोड़े ज्वर, प्यास, सूजन, शूल, अतीसारहो सो असाध्य है जो केवल खाने पीनेसे हुआहै वह ज्वरादिक विशेष भयङ्करहै जो मक्कलरोग करिके शूल उत्पन्न करै और रक्त अवरोधनकरि सर्वदेहमें शूल उत्पन्न करै वह बहुत दुःखदायीहै वह शूलनामसे मक्कलहै॥७०॥ अथ बाईस प्रकारके बालरोगहैं तिनमें तीन रोग माताके स्तनसम्बन्धी हैं वातज, पित्तज, कफज ये दूधसम्बन्धी हैं चार रोग दांतन के हैं दंतोद्भेद, दंतघात, दंतशब्द, अकालदंत ये ४ दंतरोग हैं एक पूतना ॥ ७१ ॥ मुखपाक,मुखस्राव, गुदपाक, उपशीर्षक, पार्श्वारुण, तालुकण्ठ, विच्छिन्न, पारिगर्भिक ॥ ७२ ॥

विंशतिःस्मृताः ७३ तथाबालग्रहाःख्याताद्वादशैवमुनी श्वरैः। स्कन्दग्रहोविशाखःस्यात्खग्रहश्चपितृग्रहः ७४ नै गमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिःशीतपूतनामुखमण्डितिकातद्वत्पू

पारिगर्भिकके लक्षण है जो शरीर बहुत कृश होजाय सो गात्रशोष और मुख शोषी कहते हैं इसमें उबकाई और अतीसार भी होताहै जो बालक अज्ञानहोके राति व दिनको बिछौना में मूते सो शय्यामूत्र है दुग्धदोषसे बालक की आंख की पलकपर खाजहोके आंखिसे पानी बहताहै और बालक आंखि नाक म स्तक घसताहै उजारेमें आंखि नहीं खोले तो उसे कुकूणक कहतेहैं जो बालक विशेषरोवै उसका क्रम यह रोवना देखिके अनुमान करिके रोग जानना यह रोदनहै कफ कोपसे बालक के शरीर में मूंगासी पिड़की है शरीरके रंगमें मिल रहती है पीड़ा नहीं करती एकसे एक मिलके रहती है वह अजगल्ली है सो बा लकके विशेषके होताहै जवानके कम होताहै॥ ७३॥ और बारह प्रकारके बाल ग्रह रोगहैं स्कन्दग्रह, विशाखग्रह, खग्रह, पितृग्रह॥ ७४॥ नैगमेय, शकुनि, शीत- पूतना, मुखमंडितिका, पूतना, अंधपूतना, रेवती और शुष्करेवती ये बारह प्रकारहैं (ग्रहसामान्यलक्षणम्) स्कंदादि द्वादशग्रहग्रस्त बालक अनायास चौं कता है उठि२ बैठता है ओठ दांत चबाता है मुखसे फेन गिरता है सोता नहीं हाथ पांव सूज जातेहैं मल पतला अच्छीतरह बोलता नहीं देहमें मछलीके रक्त कीसी गंध आतीहै दूध नहीं पीता सब ग्रहोंके सामान्य लक्षण जो बालक कुछ कांपै आंखि देहसे पानी बहै वा एक अंग कांपै ऊपरको देखै दांत चबाय मुंह टेढ़ा बनावै दूध न पिये कुछ रोवै वह स्कन्दग्रह है जिस ग्रहमें बालकको ज्वर और ऊर्ध्वदृष्टिहो वह विशाखग्रह है इसके विशेष लक्षण बालतंत्र में हैं जिस ग्रहमें बालक बेहोश होजाय मुहसे फेनगिरै ज्वरादिक उपद्रवहों रोवै अधिक देहमें रक्त पीबकी गंध आवै उसे खग्रह कहते हैं ग्रंथांतर में स्कन्दापस्मार कहतेहैं अग्निष्वा- त्तादि पितरों करि पीड़ित बालकको ज्वरादिक उपद्रव होते हैं यह पितृग्रहहै नैग- मेयग्रह पीड़ित बालक तिसे उबकाई, कुक्षकंप, कंठमुखशोष, मूर्च्छा, देहमें दुर्गंध, ऊ- र्ध्वदृष्टि, दांत चबाना यह नैगमेयहै जो बालक अंगगलितहो व भयङ्कररूप लक्षण उबकताहो देहमें पक्षीकीसी गंधआवै ओर शिराय उबकाई व अतीसार देहमें दुर्गंध यह शीतपूतना है जिस बालक का मुख मसतहो शरीरकी नसें देखिपरें अधिक खाय देहमें और मूत्रमें दुर्गन्ध आवै वह मुखमंडितिका है जिस बालकको ज्वर अ तीसार, पियास, ऊर्ध्वदृष्टि, रोना, निद्राहीन, विह्वलता यह पूतनाहै जो बालक खांसे

तनाचान्धपूतना ॥७५॥ रेवती चैवसङ्ख्याता तथास्याच्छुष्करेवती। तथाचरणभेदास्तुवातरक्तादिकाश्चये ॥ द्विचत्वारिंशदुक्तास्ते रोगेष्वेवमुनीश्वरैः ॥७६॥ द्विषष्टिर्दोषभेदास्स्युस्सन्निपातादिकाश्चये । तेपिरोगेषुगणिताः पृथक्प्रोक्तान्तेकचित् ॥७७॥ हीनमिथ्यातियोगानां भेदैःपञ्चदशोदिताः । पञ्चकर्मभवारोगास्तेषुरोगेषुसञ्ज्ञिताः ॥७८॥ स्नेहस्वेदौतथाधूमोगण्डूषोञ्जनतर्पणे। अष्टादशैतज्जाःपीडास्ताश्चरोगेषुलक्षिताः ॥७९॥ शीतोपद्रवएकःस्या

ज्वर पियास देहमें मेदगन्धरुदन विशेष दूध न पिये मल अधिकगिरे वह अंधपूतना जो बालक की देहमें पिड़की घाव घावसे रुधिर बहे देहमें दुर्गंध मलें पतला ज्वर वह रेवती है जो बालक को ज्वर शूल अजीर्ण माथेमें पीड़ा मुखशोष सो शुष्करेवती है ॥ ७५ ॥ वातरक्त करिके पांवके रोग सुप्तिपाद, स्तंभपाद, स्फुटन इत्यादिक पांवरोग मुनिलोग बयालीस कहिगयें हैं सो ये रोग श्लीपदादिक रोगन में प्रथम कहिगये हैं सो जानना ॥ ७६ ॥ सन्निपातादिक दोष करिके बासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो वातादिक दोष में भिन्न भिन्न रोग कहिचुके हैं परन्तु इन्हें भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना ॥ ७७ ॥ पंचकर्म वमन, विरेचन, निरूहणवस्ती, अनुवासनवस्ती, नस्य ये पांचों कर्म उत्तरखण्डमें कहेंगे और हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन तीनोंप्रकारके भेद हैं सो भी उत्तर में कहेंगे वमन कहे ओषधि देकै उबकावना विरेचन कहे ओषधि करके मल गिराना निरूहणवस्ती अनुवासनवस्ती ओषधि की पिचकारी गुदामार्ग से देनी नस्य कहे नाकमें ओषधि देनेका यत्न इस भांति पांचों कर्म जानना हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग इन से नाना भांति के दुःख उत्पन्न होते हैं ॥७८॥ स्नेहादि संग्रह भी उत्तरखण्ड में है स्नेहपान, स्वेदन, धूमपान, गंडूष, अंजन, तर्पण इन छहों में हीनयोग, मिथ्यायोग, अतियोग ये तीनों भेद करिकै अठारह भेद हैं उससे उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोगमें संग्रह करि आये हैं ऐसे जानना स्नेहपान, स्वेद, धूमपान, गंडूषता, अञ्जन यह प्रथम परिभाषा में लिखगये हैं औषधादिक करिके धातुको वृद्ध करनेका प्रयोग उसे तर्पण कहते हैं अथवा नेत्रतृप्तकरने के प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं ॥७९॥ शीतादि चार उपद्रव बहुत ठंढा योग करसे मनुष्यको ठंढा उपद्रव उत्पन्न होताहै बहुत उष्ण

देकश्चोष्णोपतापकः । शल्योपद्रवएकश्चक्षीरश्चैकः स्मृतस्तथा ८० स्थावरंजङ्गमंचैव कृत्रिमं च त्रिधाविषम् । तेषां च कालकूटाद्यैर्नवधास्थावरंविषम् । जङ्गमंबहुधाप्रोक्तंतत्रलूताभुजङ्गमाः ८१ वृश्चिकाखूपकाःकीटाः प्रत्येकंतेचतुर्विधाः । दंष्ट्राविषंनखविषंवालश्शृङ्गास्थिभिस्तथा ८२ मूत्रात्पुरीषाच्छुक्राच्चदृष्टेर्निश्वासतस्तथा । लालायाःस्पर्शतस्तद्वत्तथाशङ्काविषंमतम् ८३ कृत्रिमंद्विविधंप्रोक्तंगरदूषीविभेदतः । सप्तधातुविषंज्ञेयंतथासप्तोपधा

उपद्रव उत्पन्न होताहै शल्य कहे नख, केश, कांटा, हाड़, सींग, ढांडा इनके लगने से वा इनमें से कोई वस्तु पेटमें जाय उससे जो रोगहोय वह शल्योपद्रव है मूढ़वैद्य जो संभलसार बनातेहैं परन्तु कच्चा रहिजाताहै वह खिलाने से जो रोग उत्पन्न हो तो विष, अग्नि, शस्त्र वा वज्र इन्होंकी तरहसे मारताहै, ऐसे चार भेदहैं ॥ ८० ॥ (अथ विषरोग) स्थावर, जंगम, कृत्रिमये तीनप्रकारके विषहैं तिसमें स्थावर विषके नव भेदहैं और जंगम विष बहुत प्रकारकाहै तिसमें लूता, सांप ॥ ८१ ॥ बिच्छू, मूषा, कीट इसमें वात पित्त कफ सन्निपात करिकै एक एकके चारचार भेद होजाते हैं किसीके दांत में विषहै किसीके नखमें किसीके धारमें किसीके सींगमें किसी क हाड़में ॥ ८२ मूत्रमें, मलमें धातुमें दृष्टिमें श्वास में लारमें स्पर्शमें ऐसे भिन्न भिन्न जाति प्रति विषहै मन में विषकी शङ्का आने से वायु कुपितहो, ज्वरादि उपद्रव शरीर में प्रकट करे सो शङ्काविषहै ॥ ८३ ॥ कृत्रिम विषके दो भेदहैं एक बच्छनागादि एक दूषी संवत संपत्तिके निमित्त शत्रुता करिकै वा स्त्रीलोग नाना प्रकारकी चीज पसीना रज चिनाई मल मूत्रइत्यादि अन्न के संग खिला देती है तौ पांडुदर ज्वरादि उपद्रव होता है या प्रमुक्तयुक्त भयेते विरहोय है नींबू कपूर मिश्रित भयेते विष होय यह कृत्रिम विषहै और बच्छनागादि कृत्रिम विष एकही बार देहको जीर्णकरि प्राणलेताहै जिसमें कम पराक्रम है सो प्राण नहीं नाश करसक्ता परन्तु ज्वरादि उपद्रव करिकै देशकाल अन्न वा दिवादि निद्रा, करिकै पीड़ित करता है और सतरसादि धातुनको दूषित करता है इसी कारण दूषित विष कहते हैं ये दो प्रकारके कृत्रिम विष हैं विषको भेद सुवर्णादिक अशुद्ध सप्तधातुकी भस्म खाने से वा हरतालादि सप्तउ-

तुजम् ८४ तथैवोपविषेभ्यश्चजातंसप्तविधंविषम् । दुष्टनीरंविषंचैकंतथैकंदिग्धजंविषम् ८५ कपिकच्छुभ चाकण्डूर्दुष्टनीरभवातथा । तथासूरणकण्डूश्चशोथोभल्ला तजस्तथा ८६ मदश्चतुर्विधश्चान्यःपूगभङ्गाक्षकोद्र वैः । चतुर्विधोन्योद्रव्याणांफलत्वङ्मूलपत्रजम् ८७ इ तिप्रसिद्धागणिता येकिलोपद्रवाभुवि । असङ्ख्याश्चाप रेधातुमूलजीवादिसम्भवाः ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसंहि तायांरोगगणनायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

धातुकी भस्म खाने से सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खानेसे विषसमान पीडाहो- ती है उसकी विषसंज्ञाहै (अथ दुष्टनीर) जिस पानी में कीचड़ सेवाल पत्ता- दिक जन्तु वा मेंडकके मल मूत्रसे पानी बिगड़ जाताहै उसे दुष्टनीर कहते हैं उसके नहाने से पीने से विषसमान पीड़ित होताहै शस्त्रादिक में विष के पानी को चढ़ाते हैं उस शस्त्रके घातका घाव नहीं अच्छाहोवा और विष सदृश उपद्रव होता है सो दिग्धविष है ॥ ८४ । ८५ ॥ अथ चारिप्रकार आगंतुक उपद्रव कनकिमाच दुष्ट पानी सूरन अङ्गके छूनेसे देह खजुयाय भिलावांसे देह सूजआवे इसप्रकार से चारिभेद हैं और भी चारि प्रकार हैं सुपारी भांग बहेड़ा की मींगी कोदव धान्य इन चारों के खाने से चारि प्रकारके मद होते हैं इसीप्रकार और भी जानना ८६ । ८७ ॥ ओषधि वनस्पति फूल डार पात मूल इनके खाने से चारप्रकार के मद होते हैं इसप्रकार जो पृथ्वी में प्रसिद्ध रोगोपद्रव हैं तिनकी संख्या निश्चय करिगये हैं इससे वा सुवर्णादि धातु हरतालादि उपधातु नानाप्रकारकी वनस्पति वा ओषधि वा जीवादिक करिके अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य हैं अनुमान से जानना ॥ ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यायांनिर्मितशार्ङ्गधरसुधाकर नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

श्रीगणाधिपतये नमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता ॥

मध्यखण्डवार्त्तिकतिलकसहिता ॥

अथातः स्वरसः १ कल्कः २ क्काथश्च ३ हिम ४ फाण्ट ५ कौ । ज्ञेयाःकषायाःपञ्चैते लघवःस्युर्यथोत्तरम् १ आहतात्तत्क्षणोत्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवः। वस्त्रनिष्पीडतोयःस्यात्स्वरसोरसउच्यते २ कुडवंचूर्णितंद्रव्यं क्षिप्तंचद्विगुणेजले । अहोरात्रास्थितंतस्माद्भवेद्वा रसउत्तमः ३ आदायशुष्कद्रव्यञ्चस्वरसानामसम्भवे। जलेष्टगुणितेसाध्यंपादशेषञ्चगृह्यते ४ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धंप्रयोजयेत्। निश्शोषितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिबेत्५ मधुश्वेतागुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा। घृतंतैलंचचूर्णादीन्कोलमात्रान्सेक्षिपेत् ६ अमृतायारसःक्षौद्रयुक्तःस

अथ मध्यखण्डःप्रारभ्यते ॥ अथ क्वाथ जिसे काढा कहते हैं सो पांच प्रकारकाहै स्वरसकहे अङ्गरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हिम ४ फाट ५ एकसे एक गुणमें न्यून है यथा स्वरससे लघु कल्क ॥ १ ॥ उत्तम भूमिसे तुरतकी उखारी ओषधि जल बिना कूटिकै वस्त्रमें डारि निचोरि लेय उस रसको स्वरस कहते हैं ॥ २ ॥ कोई द्रव्य कुडव कहे सोलह तोले कूटिकै दुगुने पानी में दिनराति भिगोइराखै उसके रसको भी स्वरस कहते हैं ॥ ३ ॥ जो द्रव्यहरा न मिलै तौ सूखोद्रव्य अठगुणे पानी में औटै जब चौथाई रहै तब लैलेइ ॥ ४ ॥ ओदी द्रव्यका रस गरुआहै इसकारण कार्य में आधापल लेना और सूखो द्रव्य रातको भीजीका रस हलकाहै इससे पल भर लेना ॥ ५ ॥ स्वरस व काढा व यन्त्रका निकाला रस इनमें शहद, शकर, गुड, खार, जीरा, लोन, घृत, तेल और चूर्ण ये सब आठमाशे युक्त करना ॥ ६ ॥

र्वेणमेहजित् ।हरिद्राचूर्णयुक्तोवारसोधात्र्याःसमाक्षिकः७
वासकस्वरसःपेयोमधुनारक्तपित्तजित् । ज्वरकासक्षयह
रःकामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलायारसःक्षौद्रयुक्तोदा
र्वीरसोथवा । निम्बस्यवागुडूच्यावापीतोजयतिकामलाम्
९ पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसो
प्येवंनिहन्तिविषमज्वरान् १० जम्ब्वाम्रामलकीनांच
पल्लवोत्थोरसोजयेत् । मध्वाज्यक्षीरसंयुक्तोरक्तातीसारमु
ल्वणम् ११ स्थूलबब्बूलिकापत्ररसःपानाद्व्यपोहति ।
सर्वातिसारान्श्योनाककुटजस्वरसोथवा १२ आर्द्रकस्व
रसःक्षौद्रयुक्तोवृषणवाततुत् । श्वासकासारुचीर्हन्तिप्रति
श्यायंव्यपोहति १३ बीजपूररसःपानान्मधुक्षारयुतोज

गुर्च का रस शहद युक्त खाने से, सब प्रमेह नाश होय हैं आंवरे का रस हल्दी का चूर्ण शहद मिश्रित करि खिलाने से भी प्रमेह नाश होता है ॥ ७ ॥ (अथ वासास्वरस रक्तपित्तादि पर) रूसेका स्वरस शहद मिलायके पियेसे रक्तपित्त नाशहोय और ज्वर, खांसी, क्षयी, कमल, कफ और पित्त इनरोगों को भी नाश करै ॥ ८ ॥ (अथ त्रिफलादिस्वरस कमलपर) त्रिफले का रस शहद वा बड़ी हल्दी का रस शहद व नींबका रस शहद वा गुर्च का रस शहद युक्त पियें तौ कमल रोगको नाश करै ॥ ९ ॥ (अथ तुलसी आदि रस विषम ज्वर पर) तुलसी का रस मरिचका चूर्ण वा गूमाका रस मरिच साथ पिये तौ विषमज्वर नाशहोय ॥ १० ॥ (अथ जम्ब्वादिरस रक्तातीसार पर) जामुन, आंब, आंवरा इन तीनों की पत्ती का रस शहद घृत व दूध सहित पिये तौ दिनी रक्तातीसार दूरहोय ॥ ११ ॥ (अथ बब्बूरादिस्वरस अतीसार पर) बबूरकी छालका रस शहदयुक्त मिलावै तौ सात भांतिका अतीसार जाय वा कुरैया का रस वा करीलका रस शहद संग पिये तौ अतीसार जाय ॥ १२ ॥ (अथार्द्रकस्वरस अण्डकोश और श्वासपर) अदरक का रस शहद संग पिये तौ वातांडवृद्धि पचै श्वास, खांसी, अरुचि, नाक बहना ये सबरोग मुक्त होयं ॥ १३ ॥ अथ बीजपूररस पार्श्वादि शूलपर) बिजौरा नींबू का रस शहद और जवाखार सहित पिये तौ पसुरी की शूल, हृदयकी शूल, पेड़ू

येत् । पार्श्वहृद्बस्तिशूलानि कोष्ठवायुञ्चदारुणम् १४
शतावर्याश्चमधुना पित्तशूलहरोरसः । निशाचूर्णयुतः
कन्यारसःप्लीहाऽपचीहरः १५ अलम्बुषायाःस्वरसःपीतो
द्विपलमात्रया। अपचीगण्डमालानां कामलायाश्चनाश
नः १६ रसोमुण्ड्याःसकोष्णोवा मरिचैरवधूलितः। जये
त्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्द्धभेदकौ १७ ब्राह्मीकूष्माण्ड
षड्ग्रन्थाशङ्खिनीस्वरसःपृथक् । मधुकुष्ठयुतःपीतःसर्वो
न्मादापहारकः १८ कूष्माण्डकस्यस्वरसोगुडेनसहयोजि
तः। दुष्टकोद्रवसञ्जातं मदंपानाद्व्यपोहति १९ खड्गा
दिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालपूरितोव्रणः । गाङ्गेरुकीमूलरसै
र्जायतेगतवेदनः २० पुटपाकस्यकल्कस्य स्वरसोगृह्य
तेयतः । अतस्तुपुटपाकानां युक्तिरत्रोच्यतेमया २१ पु
टपाकस्यमात्रेयं लेपस्याङ्गारवर्णता । लेपञ्चद्व्यङ्गुलं

शूल व कोष्ठबद्ध इन सब रोगनसे निर्मुक्तहोय ॥ १४ ॥ (अथ शतावरीरस पित्तशूलपर) शतावरि रस शहद पिये तौ पित्तशूल हरै (अथ घीकुवार रस प्लीहा पर) घीकुवाररस हल्दी चूर्ण पिये तौ पित्त, अपची, पेटकी गाठि दूरहोय ॥ १५ ॥ (अथ मुण्डीरस गण्डमाला अपचीपर) मुंडीरस आठ तोले पिये तौ गंडमाला, अपची, कावररोग मिटै ॥ १६ ॥ (अथ मुंडीरस सूर्यावर्तादि पर) मुंडीस्वरस उष्णकारे मरिच चूर्णयुत सात दिन पिये तौ सूर्यावर्त्त आधाशीशी अच्छीहोय ॥ १७ ॥ (अथ ब्राह्मयादिस्वरस उन्मादपर) ब्राह्मी, श्वेत कुम्हड़ा, कचूर व बच कौड़ियाला इनका स्वरस भिन्न भिन्न शहद और कूटके सङ्ग पिये तौ सब उन्मादजायें ॥ १८ ॥ (श्वेतकुम्हड़ाका रस उन्माद पर) सफेद कुम्हड़े का रस पुराने गुडसंयुत पिये तौ दुष्ट कोदवका उन्माद नाशहोय ॥ १९ ॥ (अथ वरियारारस घाव पर) शस्त्रके लगेके घाव में तुरन्त वरियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥ २० ॥ (अथ पुटपाक के रसकी विधि) पुटपाक का रस लेते हैं इससे उसका यत्न कहते हैं ॥ २१ ॥ कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसिकै गोली बाधै तिस पर रेंड वा

स्थूलंकुर्याद्द्वाङ्गुष्ठमात्रकम्। काश्मरीवटजम्ब्वादिपत्रैर्वे
ष्ठनमुत्तमम्। पलमात्ररसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत्।क
ल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःस्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालाकृष्ट
कुटजत्वचंतण्डुलवारिणा। पिष्टांचतुष्पलमितां जम्बूप
ल्लववेष्टिताम्२३सूत्रेणबद्धाङ्गाधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम्।
लिप्तांचघनपङ्केन गोमयैर्वन्हिनादहेत् २४ अङ्गारवर्णां
चमृदं दृष्ट्वावन्हेःसमुद्धरेत्। ततोरसंगृहीत्वा च शीतं
क्षौद्रयुतं पिबेत् २५ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचि
रोत्थितान्। कण्डितंतण्डुलपलं जलेष्टगुणितेक्षिपेत्। भा
वयित्वाजलंग्राह्यं देयंसर्वत्रकर्मसु २६ अरलुत्वकृतश्चै
वपुटपाकोग्निदीपनः। मधुमोचरसाभ्यांचयुक्तस्सर्वाति
सारजित् २७ न्यग्रोधादेश्चकल्केनपूरयेद्गौरतित्तिरेः।
निरन्त्रमुदरंसम्यक्पुटपाकेनतत्पचेत्। तत्कल्कस्स्वरसः

बरगद वा जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दो अंगुल मोटी माटी लेसै तब अग्नि में धरै जब लालहो तब निकारिकै उसका रस निचोरि ले उसे पुटपाकरस कहते हैं तब चार रुपया भर रस रुपयाभर शहद संयुक्त पिये और जो कल्क चूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनीहो तौ पुटरसको यथायोग्य देना ॥ २२ ॥ (अथ कुरैयापुटपाक सर्वातीसारपर) चार तोले कुरैयाकी छाल ताजी चावल के धोवन में पीसिकै गोला बांध जामुन के पत्ते लपेटै ॥ २३ ॥ फिर सूत से बांधि मोढ के आटा सों लेपकरि माटी लगावै तब गौरा के गोठामें फूंकि कै अंगार होजाय तब आगिसे निकाल निचोरि ठण्ढाकरि शहद डारि पियै तौ बहुत दिनका कठिन अतीसार जाय २४।२५ ॥ (चावल धोवनकी क्रिया) चार रुपयाभर शुद्धचावल अठगुने पानी में धोवै वही धोवन सर्वत्र देय ॥ २६ ॥

क्षौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेन विपचेत्सुपक्वं दाडिमीफलम्। तद्रसो मधुसंयुक्तः सर्वातीसारनाशनः २९ बीजपूरस्य जम्बूनां पल्लवा निजटाः पृथक्। विपचेत्पुटपाकेन क्षौद्रयुक्तश्च तद्रसः। छर्दिं निवारयेद्घोरां सर्वदोषसमुद्भवाम् ३० पिष्टानां वृषपत्राणां पुटपाकरसो हिमः। मधुयुक्तो जयेद्रक्तपित्तकासज्वरक्षयान् ३१ पचेत्क्षुद्रां सपञ्चाङ्गां पुटपाकेन तद्रसः। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः कासश्वासकफापहः ३२ विभीतकफलं किञ्चिद्घृतेनाभ्यज्य लेपयेत्। गोधूमपिष्टेनाङ्गारे विपचेत्पुटपाकवत् ३३ ततः पक्वं समुद्धृत्य त्वचं तस्य मुखे क्षिपेत्। कासश्वासप्रतिश्यायस्वरभङ्गाञ्जयेत्ततः ३४ चूर्णं किञ्चिद्घृताभ्यक्तं शुण्ठ्या एरण्डजैर्दलैः वेष्टितं पुटपाकेन विपचेन्मन्दवह्निना ३५ तत उद्धृत्य तच्चूर्णं ग्राह्यं प्रातः सितान्वितम्। तेन यान्ति शमं पीडा आमातीसारसंभवाः ३६ शुण्ठीकल्कं विनिक्षिप्य रसैरेरण्डमूलजैः।

गोला निकाल रस निचोरले सो रस शहद संयुक्त देय तौ सब अती सारजायँ ॥२८॥ पुनः चार पके अनारका पुटपाक बनाइ तिसका रस शहद मिलाय कै देय तौ सब अतीसार नाश होय ॥ २९ ॥ (अथ बिजौरा पुटपाक उलाकी पर) बिजौरा नींबू जामुन की पाती वा जड़के पुटपाक का रस शहदयुत देइ तौ सब दोष की छर्दि जाय ॥ ३० ॥ (अथ बासापुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर) रूसे क पुटपाक का रस अरु शहद पिये से रक्तपित्त कास छर्दि व ज्वरजाय ॥ ३१ ॥ (अथ भटकटैया का पुटपाक कासश्वास पर) भटकटैया के पंचाग का पुटपाक रस पीपरिका चूर्ण डारि कै दे तो कासश्वास कफ जाय ॥ ३२ ॥ (अथ विभीतकपुटपाक कास श्वासपर) बहेरे परघी लगाइ पिसान से लेप अंगार पर पुटपाक करै ॥ ३३ ॥ उसका छिलका मुखमें राखने से कास, श्वास, प्रतिश्याय, स्वरभंग ये रोग जाय ॥ ३४ (अथ सोंठि पुटपाक आमातीसार पर) सोंठ चूर्ण घी चुपरि से बटी बनाय एरंडपत्र में लपेट मन्दाग्नि में पुटपाक करै ॥ ३५ ॥ उस चूर्णको सबेरे शक्कर संग खाय तो

विपचेत्पुटपाकेनतद्रसःक्षौद्रसंयुतः। आमवातसमुद्भूतां पीडांजयतिदुस्तराम् ३७सौरणंकन्दमादायपुटपाकेनपा चयेत्। सतैललवणस्तस्यरसश्चार्शोविकारनुत् ३८ शरावसम्पुटेदग्धंशृङ्गंहरिणजंपिवेत्। गव्येनसर्पिषापिष्टंहृच्छूलंनश्यतिध्रुवम् ३९॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डे चिकित्सास्थाने स्वरसादिकल्पनाऽध्यायः॥ १॥

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत्। मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् १ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम्। शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते२आहाररसपाकेचसञ्जातेद्विपलोन्मितम्।वृद्धवैद्योपदेशेनपिवेत्क्वाथंसुपाचितम् ३ क्वाथेक्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः।वातपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम्४ जीरकंगुग्गुलुक्षारंलवणंचशिलाजतुम्।हिङ्गुत्रिकटुकंचैवक्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ५ क्षीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्य

आमातीसारकी पीडा मिटै॥ ३६॥ पुनः सोंठ चूर्ण एरंडकी जड के रस में सानि पुटपाक करि रस निकारि शहद संग खाइ तौ आमवात की पीडा जाय॥ ३७॥ (अथ सूरन पुराना बवासीर पर) पुटपाक करि पका जमीकंद, लोन, तेल साथ खाइ तौ अर्शनाश होय॥ ३८॥ (हरिण शृंग पुराना हृदयशूल पर) हरिणसींग शराव संपुट में जराइ गौ के घीमें डारि पिये तौ हृदय की शूल जाय॥ ३९॥ इति शार्ङ्गधरेप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

(अथ क्वाथ) चार रुपया भर द्रव्य चौंसठ रुपया भर पानी माटीके पात्रमें भरि मंदाग्निमें औटै जब आठ रुपये भरिरहै तब उतारि लेय॥ १॥ कुछ उष्ण रहै तब पिये क्वाथके चार नाम हैं शृत, क्वाथ, कषाय, निर्यूह॥ २॥ आहार का रस पचे पर वृद्ध वैद्य के उपदेश से दोपल क्वाढा पिये॥ ३॥ क्वाथमें मधु मिश्री डारनेका प्रमाण प्रधान हो तो मिश्री थोडी देना पित्तमें अष्टमांश कफमें षोडशांश शहद वायुमें षोडशांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथा अंश देना॥ ४॥ जीरकादि अनेक वस्तु डालनेका प्रमाण जीरा, गूगल, खार, सैंधव, शिलाजीत, हींग व त्रिकटु क्वाढे में चारमासे के प्रमाण डालिये॥ ५॥ दूध, घी, गुड, तेल, गोमूत्र,

द्द्रवंतथा। कल्कंचूर्णादिकंक्वाथेनिक्षिपेत्कर्षसम्मितम् ६ गुडूचीधान्यकारिष्टपद्मकंरक्तचन्दनम्। गुडूच्यादिगणक्वाथः सर्व्वज्वरहरः परः। दीपनोदाहहल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्जयेत् ७ गुडूचीपिप्पलीमूलं नागरैःपाचनंस्मृतम्। दद्याद्वातज्वरेपूर्णेलिङ्गेसप्तमवासरे ८ शालपर्णीबलारास्नागुडूचीशारिवातथा। आसांक्वाथंपिवेत्कोष्णं तीव्रवातज्वरच्छिदम् ९ काश्मरीशारिवारास्नात्रायमाणामृताभवः। कषायःसगुडःपीतो वातज्वरविनाशनः १० कट्फलेन्द्रयवाम्बष्ठातिक्तामुस्तैःशृतंजलम्। पाचनंदशमेऽह्नि स्यात्तीव्रपित्तज्वरेनृणाम् ११ पर्पटोवासकस्तिक्ता किरातोधन्वयासकः। प्रियङ्गुश्चकृतःक्वाथएषांशर्करयायुतः। पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंजयेत् १२ द्राक्षाहरीतकीमुस्तकटुकाकृतमालकः। पर्पटश्चकृतःक्वाथएषांपित्त

और रास्नादि लुगदी चूर्णादि ये सब दश मासे वल समय देखिकै देना ॥ ६ ॥ (गुर्चादिकाढ़ा सब ज्वरपर) गुर्च, धनिया, नींबकी छाल, पद्माख, रक्तचन्दन इस गुर्चादि क्वाथसे सब ज्वर नाश होय है यह दीपनहै दाह, तृष्णा, लार, उबकाई ये रोग दूर होयँ ॥ ७ ॥ (गुर्चादि पाचन वातज्वरपर) गुर्च, पीपरामूल व सोंठ इनका काढ़ा वातज्वर में सतयें दिन देय यह पाचन है ॥ ८ ॥ (वातज्वर पर) शालपर्णी कहे धनउर्दी, खरिधारा, रासन, गुर्च, सरिवन इनका काढ़ा पिये से तीव्र वातज्वर जाय ॥ ९ ॥ (दूसरा काढ़ा वातज्वर पर) खंभारी सरिवन, रासन, त्रायमाण, गुर्च इनका काढ़ा गुड़ डारिकै पिये तौ वातज्वर जाय ॥ १० ॥ (कटफलादि पाचनपित्तज्वरपर) कायफर, इन्द्रयव, पाढ़ा, कुटकी और नागरमोथा इन पाचोंका काढ़ा तीव्र पित्तज्वरमें मनुष्यों को दशवें दिन देइ ॥ ११ ॥ (पित्तपापरादि क्वाथ पित्तज्वरपर) पित्तपापरा, रूसा कुटकी, चिरायता, जवासा, प्रियंगुदाना पीतसरसों सा होताहै यह काढ़ा चीनी के संग पिये तौ तृषा दाह व रक्तपित्तज्वर ये मुक्त होयँ ॥ १२ ॥ (दूसरा) दाख, हड़, मोथा, कुटकी, अमलतास और पित्तपापड़ा इनका क्वाथ पित्तज्वर नाश करै है और तृष्णा, मूर्च्छा, दाह व रक्तपित्त इन्हे शमन और

ज्वरापहः। तृण्मूर्च्छादाहपित्तासृक्छमनोभेदनःस्मृतः १३ बीजपूरशिवापथ्यानागरग्रन्थिकैः शृतम्। सक्षारंपाचनं श्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे १४ भूनिम्बनिम्बपिप्पल्यःशटी शुण्ठीशतावरी। गुडूचीबृहतीचेति क्वाथोहन्यात्कफज्वरम् १५ पटोलत्रिफलातिक्ताशटीवासामृताभवः। क्वाथोमधुयुतःपीतोहन्यात्कफकृतंज्वरम् १६ पर्पटाब्दामृताविश्वकिरातैःसाधितंजलम्।पञ्चभद्रमिदंज्ञेयं वातपित्तज्वरापहम् १७ क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्यच। कफवाताधिकेपयोज्वरेवापित्रिदोषजे।कासश्वासारुचिकरेपार्श्वशूलविधायिनि १८ आरग्वधकणामूलंमुस्तातिक्ताभयाकृतः। क्वाथःशमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम्। आमशूलप्रशमनोभेदीदीपनपाचनः १९ अमृतारिष्टकटुकामुस्तेन्द्रयवनागरैः। पटोलचन्दनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्छृतम्। अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम्। छर्दि

भेदन करै॥ १३ ॥ (बिजौरा पाचक कफ ज्वर पर) बिजौरा की जड़, हड़, सोंठ, पिपरामूल, जवाखार डारिकै कफ ज्वर के बारहें दिन काढ़ा पिये तौ जल्दी पाचन करै ॥ १४ ॥ (पुनःक्वाथ) चिरायता नीमकी छाल, पीपरि, कचूर, सोंठ, शतावरि, गुर्च व भटकटैया यह काढ़ा कफज्वरको विनाशताहै ॥ १५ ॥ (पुनःक्वाथ) पटोलपत्र, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रूसा व गुर्च इनका काढ़ा मधुयुक्त पीने से कफज्वर का नाश होता है ॥ १६ ॥ (पित्तपापरा क्वाथ वातज्वर पर) पित्तपापरा, नागरमोथा, गुर्च, सोंठ व चिरायता इसपञ्चभद्र काढ़े से वातपित्तज्वर जाता है॥ १७ ॥ (छोटी भटकटैया क्वाथ कफ वात ज्वर पर) भटकटैया, सोंठ, गुर्च, पुष्करमूल यह काढ़ा कफ वातज्वर नाश करै और संनिपात ज्वर में पिये तौ कास, श्वास, अरुचि और पसुड़ी की पीड़ा हरै॥ १८ ॥ (अमलतासादि क्वाथ वातकफज्वर पर) अमलतास का गूदा, पिपरामूल, मोथा, कुटकी और बड़ीहड़ इन का काढ़ा वातकफज्वर वेगही नाश करै आमशूल शमन करै और गोटा गिरावै व अग्निदीपन पाचन करै॥ १९ ॥

रोचकहृल्लासदाहतृष्णानिवारणम् २० कण्टकारीद्वयंशु
ण्ठीधान्यकंसुरदारुच। एभिःशृतंपाचनंस्यात्सर्वज्वरविना
शनम् २१ शालपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः। बिल्वा
ग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः २२ दशमूलमिति
ख्यातंकथितंतज्जलंपिबेत्। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्ले
ष्मज्वरापहम् २३ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोषनाशनम्
शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत्। हृत्करूपग्रहपा
र्श्वार्तितन्द्रामस्तकशूलनुत् २४ अभयामुस्तधान्याकरक्त
चन्दनपद्मकैः। वासकेन्द्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः २५
पाठानागरतिक्ताभिःपिप्पलीचूर्णयुक्छृतम्। पिबेत्त्रि
दोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् २६ प्रलापश्वासतन्द्रा
घ्नंदीपनंपाचनंपरम्। विषमूत्रानिलविष्टम्भवमीशोषारु
चिज्जयेत् २७किराततिक्तकीमुस्ताधान्येन्द्रयवनागरैः।दश

(अथ अमृताष्टक काथ) गुर्चे, नीमकी छाल, कुटकी मोथा, इन्द्रयव, सोंठ, पटोल और रक्तचन्दन इनका काथ पीपरिका चूर्णडारिके पीने से पित्तकफज्वर नाशहोय तथा उबकाई, अरुचि, हल्लास, दाह और तृषा इनको निवारै ॥ २० ॥ (भटकटैयादि काथ सबज्वरन पर) दोनों भटकटैया, सोंठ, धनियां, देव-दारु यह पाचनकाथ सब ज्वर हरै ॥ २१ ॥ (दशमूलकाथ वातकफ पर) धनउर्दी वनमूंग, दोनों भटकटैया, गुखुरू, बेलकी छाल, अग्निमंथ, सोहनजना, खंभारी, पाढा ॥ २२ ॥ इन दशोंकी जडका काढा पीपरि के चूर्ण के संग पिये तौ वातकफज्वर नाशहोय ॥ २३ ॥ सन्निपातज्वर, सूतिकादोष, मुख सूखना, शीतल अङ्ग, भ्रम, पसीना खास, श्वास नाश करै हृदयशूल, पार्श्वपीडा, तंद्रा, मस्तकशूल ये सबयुक्त होवें ॥ २४ ॥ (हरीतकीकाथ सन्निपात ज्वर पर) बडीहड, नागरमोथा, धनियां, रक्तचन्दन पद्माख, रूसा, इन्द्रयव, खस, गुर्चे, अमलतास ॥ २५ ॥ पाढे की जड, सोंठ, कुटकी, पीपरिका चूर्ण समेत काढा पिये तौ सन्निपातज्वर, तृष्णा, दाह, कास हरै ॥ २६ ॥ भ्रम, श्वास, तन्द्राहरै दीपन पाचन करै वायु से मलमूत्रारोध, वमन, कंठशोष, अरुचि इन उपद्रवों को नाश

मूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः २८ कृतःकषायःपाऽर्वा तिसन्निपातज्वरंजयेत् । कासश्वासवमीहिक्कातन्द्राहृद्ग्रह नाशनः २९ कट्फलाम्बुदभार्गीभिर्धान्यरोहिषपर्पटैः । वचाहरीतकीशृङ्गीदेवदारुमहौषधैः ३० काथःकासंज्वरंह न्तिश्वासश्लेष्मगलग्रहान् ।काथोजीर्णज्वरहरंगुडूच्याःपि प्पलीयुतः । तथापर्पटजःक्काथः पित्तज्वरहरः परः ३१ निदिग्धिकामृताशुण्ठीकषायंपाययेद्भिषक् । पिप्पलीचूर्ण संयुक्तंश्वासकासार्दितापहम् । पीनसारुचिवैस्वर्यशूलाजी र्णज्वरापहम् ३२ क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्म कैः ।रक्तचन्दनभूनिम्बपटोलवृषपौष्करैः ३३ कटुकेन्द्रयवा रिष्टाभार्गीपर्पटकैःसमैः । काथंप्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वर च्छिदम् ३४मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीक्काथःसमाक्षिकः। पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ३५ पटोलत्रिफला

करै ॥२७॥ (पुनरष्टांगदशमूलक्काथ) चिरायता,कुटकी, नागरमोथा,धनियां, इन्द्रयव,सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपरि समेत क्वाथपिये तो पसुरीपीड़ा, सन्नि- पातज्वर, कास, श्वास, वमन, हिचकी, तन्द्रा, हृदय रोग ये नाशहोयँ ॥ २८ । २९ ॥ (कायफर कासज्वर पर) कायफर,नागरमोथा, भारंगी,धनियां, खस, पित्त- पापड़ा, बच, हड़, काकड़ासींगी, देवदारु, सोंठ इस काढे से कासज्वर नाशहोय श्वास कफ कंठरोग मिटैं गुर्चेका काढ़ा पीपरि युक्त पीनेसे जीर्णज्वर छूटै पित्तपा- पड़ेका काथ पीपरियुक्त पीनेसे पित्तज्वर जाइ ॥ ३० । ३१ ॥ पुनःभटकटैया में गिलोय, सोंठ व पीपरि डारि पिये तो श्वास, कास, अर्दितवायु, पीनस, अरुचि, गला बैठब, शूल, जीर्णज्वर ये रोग दूरहोयँ ॥ ३२ ॥ (सर्व शीतज्वर पर भटकटैया क्वाथ) भटकटैया, धनियां, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा, पद्माख, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोल, रूसा, मोचरस, कटुकी, इन्द्रयव, नींब, भारंगी और पित्तपापड़ा इनका काथ प्रातःकाल पिये तौ सब शीतज्वर नाशहोयँ ॥३३॥ ३४ ॥(विषमज्वर पर मोथाकाथ) नागरमोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठ, आंवला इनका काढा शहद पीपरियुक्त पिये तौ विषमज्वर मुक्तहोय ॥ ३५ ॥

निम्बद्राक्षाशम्याकवासकैः।काथःसितामधुयुतोजयेदेका हिकंज्वरम् ३६ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चन्दनोशीरनाग रैः।कृतंकाथंपिबेत्क्षौद्रंसितायुक्तंज्वरातुरः ३७तृतीयज्वर नाशायतृष्णादाहनिवारणम् । देवदारुशिवावासाशाल पर्णीसहौषधैः ३८ धात्रीयुक्तंशृतंशीतंदद्यान्मधुसितायुत म्। चातुर्थिकज्वरेश्वासेकासेमन्दानलेतथा ३९ गुडूची धान्यकोशीरशुण्ठीवालकपर्पटैः।बिल्वप्रतिविषापाठारक्त चन्दनवत्सकैः ४० किरातमुस्तेन्द्रयवैःक्वथितंशिशिरंपिबे त्।सक्षौद्रंरक्तपित्तघ्नंज्वरातीसारनाशनम् ४१ नागरंकूट जोमुस्तममृतातिविषातथा । एभिःकृतंपिबेत्काथंज्वरा तीसारनाशनम् ४२ धान्यनागरबिल्वाब्दबालकैःसाधि तंजलम्। आमशूलहरंग्राह्यंदीपनंपाचनंपरम् ४३ धान्य नागरजःकाथःपाचनोदीपनस्तथा। एरण्डमूलयुक्तश्चज

(नित्य आते ज्वरपर पटोलकाथ) पटोल, त्रिफला, नींबकीछाल, दाख, अमलतास और रूसा इनका क्वाथ शहद व खांड युक्त पिये तो एकाहिकज्वर छूटै ॥ ३६ ॥ (तृतीयक ज्वरपर गुडूच्यादिकाथ) गुर्चे, धनियां, नागरमोथा, रक्तचन्दन, खस और सोंठ इनका काढा शकर शहद युक्त पिये तौ तृतीयक ज्वर, प्यास, दाह ये उपद्रव निर्मुक्तहोयँ ॥ ३७ ॥ (चातुर्थिकज्वरपर देवदारु क्वाथ) देवदारु, बडी हड, रूसा, शालपर्णी सोंठ और आवला इनका काढा शहद व मिश्री युक्त पिये तौ चातुर्थिक ज्वर जाय और श्वास, कास, मंदाग्नि ये सब दूरहोय ॥ ३८ । ३९ ॥ (ज्वरातीसार पर गुडूच्यादिक्वाथ) गुर्चे, धनिया, खस, सोंठ, सुगंधवाला, पित्तपापडा, बेल, अतीस, पाढा, रक्त चन्दन, कुरैया, चिरायता, मोथा, इन्द्रयव यह काढा ठंढाकरि शहद मिश्रितकर पिये तौ ज्वरातीसार व रक्तपित्तका नाशहोय ॥ ४० । ४१ ॥ (पुनः) सोंठ, कुरैया, मोथा, गुर्चे, अतीस इस काढेसे ज्वरातीसार जाय ॥ ४२ ॥ (आम- शूलपर धान्यपञ्चककाथ) धनियां, सोंठ, बेल, मोथा, नेत्रवाला इनके क्वाथ से आमशूलजाय व ग्राही, दीपन, पाचनहै ॥ ४३ ॥ सहित धनियां सोंठ

येदामानिलव्यथाम् ४४ वत्सकातिविषाबिल्वमुस्तबाल
कमाशृतम् । अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ४५
कुटजातिविषापाठाधातकीलोध्रमुस्तकैः । ह्रीवेरदाडिम
युतैःकृतःक्वाथःसमाक्षिकः ४६ पेयामोचरसेनैवकुटजाष्ट
कसञ्ज्ञकाः।अतीसाराञ्जयेद्वातरक्तशूलामदुस्तरान् ४७
ह्रीवेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः । धान्यातति
विषामुस्तागुडूचीबिल्वनागरैः ४८ कृतःकषायःशमयेद
तीसारंचिरोत्थितम् । अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नःपाचनः
स्मृतः४९ धातकीबिल्वलोध्राणिवालकंगजपिप्पली । ए
भिःकृतंशृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतम्। प्रदद्याद्बलेहवा
सर्वातीसारशान्तये ५० शालपर्णीबलाबिल्वधान्यशुण्ठी
कृतंशृतम् । आध्मानशूलसहितांवातजांग्रहणींजयेत् ५१
गुडूच्यतिविषाशुण्ठीमुस्तैःक्वाथःकृतोजयेत्।आमानुषक्तां

ग्रहणींग्राहीपाचनदीपनः ५२ यवधान्यपटोलानांक्वाथः सक्षौद्रशर्करः । योज्यस्सर्वातिसारेषुबिल्वाम्रास्थिभवस्त था ५३ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूषककर्णिका । शिग्रु रेतैःकृतःक्वाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विडङ्गचूर्णयुक्तश्च कृमिघ्नःकृमिरोगहा ५४ फलत्रिकामृतातिक्तानिम्बकैरात वासकैः । जयेन्मधुयुतःक्वाथः कामलांपाण्डुतांतथा ५५ पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः। गुडूचीनागरयुतैः क्वाथोगोमूत्रसंयुतः ।पाण्डुकासोदरश्वासशूलसर्वाङ्गशो थहा५६वासाद्राक्षाभयक्वाथःपीतः सक्षौद्रशर्करः । निह न्तिरक्तपित्तार्तिश्वासकासान्सुदारुणान् ५७ रक्तपित्तक्षयं कासं श्लेष्मपित्तज्वरंतथा । केवलोवासकक्वाथःपीतःक्षौद्रे णनाशयेत् ५८ वासाक्षुद्रामृताक्वाथःक्षौद्रेणज्वरकासहा ।

ग्रहणी दूर करै व ग्राहीहो दीपन पाचन करै ॥ ५२ ॥ (सर्वातीसार पर) इन्द्रयव, धनिया और पटोल इनका काढा खाइ शहद संग खाइ तो छर्दि, अतीसार जाय व आमकी गुठली बेलका काढा शहद मिश्रीयुक्त पिये से सब अतीसार जायँ ॥ ५३ ॥ (कृमिपर त्रिफलाक्वाथ) त्रिफला, देवदारु, मोथा, मूसाकरणी, सहिंजनेकीछाल, पीपरि, विडंगयुक्त पियेसे कृमि और कृमिज उपद्रव सब जायँ ॥ ५४ ॥ (कामलापर त्रिफलादि क्वाथ) त्रिफला, गुर्च, कटुकी नींब, चिरायता और रूसा इनमें क्वाथको शहद समेत पिये तो कामला व पाण्डु रोग नाशहोय ॥ ५५ ॥ (पांडुपर गदापुरैनाक्वाथ, शोथादिक कासपर) गदापुरैना, हड, नींबकी छाल,दारुहलदी, कटुकी, पटोल, गुर्च और सोंठ इनका काढा पिये तो पांडु, कास, उदररोग, श्वास, उदरशूल और सर्वांग सूजन अच्छी हो ॥ ५६ ॥ (रक्तपित्तपर रूसाक्वाथ) रूसा,दाख,हड इसका काढा शहद वा मिश्री युक्त पिये तो रक्तपित्त पीडा दारुण कास श्वास जाय ॥ ५७ ॥ (पुनः) रूसे का काढ़ा शहद संग पियेसे रक्तपित्त, क्षयी, कास,कफ पित्तज्वर नाश होवैं ॥ ५८ ॥ (कासज्वर पर वासाक्वाथ) रूसा, भटकटैया और गुर्च इनका क्वाथ शहदयुक्त पीनेसे ज्वर कास मिटै जो भटकटैया का काढा पीपल

कासघ्नःपिप्पलीचूर्णयुक्तःक्षुद्राशृतस्तथा ५९ क्षुद्राकुलि
त्थावासाभिर्नागरेणचसाधितः । क्वाथःपौष्करचूर्णाढ्यः
श्वासकासौनिवारयेत् ६० रेणुकापिप्पलीक्वाथोहिङ्गुक
ल्केनसंयुतः। पानादेवहिपञ्चापि हिक्कानाशयतिक्षणात्
६१ बिल्वत्वचोगुडूच्यावाक्वाथःक्षौद्रेणसंयुतः। जयेत्रिदो
षजांछर्दिंपर्पटःपित्तजांतथा ६२ हिङ्गुपौष्करचूर्णाढ्यं
दशमूलशृतंजयेत् । गृध्रसींकेवलःक्वाथश्शेफालीपत्रज
स्तथा ६३ रास्नामृतामहादारुनागरैरण्डजंशृतम् । सप्त
धातुगतेवाते सामेसर्वाङ्गगेपिबेत् ६४ रास्नागोक्षुरकै
रण्डदेवदारुपुनर्नवाः।गुडूच्यारग्वधौचैवक्वाथएषांविपाच
येत् ६५शुण्ठीचूर्णेनसंयुक्तंपिबेज्जङ्घाकटीग्रहे।पार्श्वपृष्ठो
रुपीडायामामवातेसुदुस्तरे ६६ रास्नाद्विगुणभागास्यादे
कभागास्तथापरे।धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः६७

चूर्ण संयुक्त दे तो खांसी मिटै ॥ ५९ ॥ (कासश्वासपर क्षुद्रादि काढ़ा) भटकटैया, कुलथी, रूसा व सोंठ इनका काढा पुष्करमूल का चूर्णयुक्त पिये से कास, श्वास जाय ॥ ६० ॥ (हिचकीपर मेवड़ीकाढ़ा) मेवड़ीकाबीज, पीपरि, हींगभुनी युक्त पिये से पाचों प्रकारकी हिचकी जायँ ॥ ६१ ॥ (उपकाई पर बिल्वादि काढ़ा) बेलकी छालवा गुर्चे का काढ़ा शहदयुक्त पिये तो त्रिदोषजन्य छर्दि मिटै जो पित्तपापड़ा शहदयुक्त पियेसे पित्तछर्दि जाय ॥ ६२ ॥ (गृध्रसी वायुपर दशमूलक्वाथ) हींग, पुष्करमूल का चूर्ण प्रथम करे दशमूल क्वाथ में युक्तकरिपिये तौ गृध्रसी वायुजाय जो मेवड़ीक्वाथमें हींग व रेंडमूल चूर्णयुक्त पिये तौ तुरंत गृध्रसीवायुमिटै॥ ६३ ॥ (वायुपर रासनपंचककाढ़ा) रासन, गुर्चे, देवदारु, सोंठ, रेंडमूल यह काढ़ापिये से सप्तधातुगत वात सब अंगवायु दूरहो ॥ ६४ ॥ (वायुपर रास्ना सप्त) रासन, गुखुरु, रेंड, देवदारु, गदापुरैना, गुर्चे और अमलतास इनका काढा सोंठ चूर्ण डारिकै पिये से जांघ, कटि, पसुरी, पीठ, जाँघ और भारी आमवात मिटै ॥ ६५।६६ ॥ (सम्पूर्ण वायुपर महारास्नादि काढ़ा) दो भाग रासन और सब एक

वासकोनागरंपथ्याचव्यामुस्तापुनर्नवा । गुडूचीवृद्धदारु
श्चशतपुष्पाचगोक्षुरः ६८ अश्वगन्धाप्रतिविषाकृतमाल
श्शतावरी । कृष्णासहचरश्चैवधान्यकंबृहतीद्वयम् ६९ ए
भिःकृतंपिबेत्क्वाथंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम्। कृष्णाचूर्णेनवायो
गराजगुग्गुलुनाथवा ७० अजमोदादिनावापितैलेनैरण्ड
जेनवा।।सर्वाङ्गकम्पेकुब्जत्वेपक्षाघातेपबाहुके ७१ गृध्रस्या
मामवातेचश्लीपदेचापतानके। अण्डवृद्धौतथाध्मानेजङ्घा
जानुगतेर्दिते ७२ शुक्रामयेमेदरोगेवन्ध्यायोन्याश्रयेषुच।
महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ७३ एरण्डोबी
जपूरश्चगोक्षुरोबृहतीद्वयम्।अश्मभेदस्तथाबिल्वएतन्मू
लैःकृतःशृतः७४एरण्डतैलहिङ्ग्वाढ्योयवक्षारःससैंधवः
स्तनस्कन्धकटीमेढ्रहृदयोरथव्यथांजयेत् ७५ नागरैरण्ड
योःक्वाथःक्वाथइन्द्रयवस्यवा।हिङ्गुसौवर्चलोपेतोवालशू
लनिवारणः ७६ त्रिफलारग्वधक्वाथःशर्कराक्षौद्रसंयुतः ।

भागमें जवासा, वरियारा, रेंड, देवदार, कचूर, वच, रूसा, सोंठ, हड़, चाव, मोथा गदापुरैना, गुर्च, विधारा, सौंफ, गुखुरू, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरि पीपरि, इन्द्रयव, धनिया और दोनों भटकटैया इनका काढा सोंठि चूर्ण डारि पाक वा पीपरिका चूर्ण वा योगराजगुग्गुलुतथ अजमोदादि चूर्णकेसंग वा रेंड़ी के तेलके संग तो सर्वांग कंप, कूबड़, पक्षाघात, अपबाहुक गृध्रसी, आमवात, पीलपाँव, अपतान, अन्त्रवृद्धि, पेट फूलना, जंघापीडा, धातुरोग, बंध्याकी योनि दुष्टता यह महारास्नादि काढा ब्रह्माने कहाहै इसमें बहुत मनुष्य एक ओषधिका दूना रासन लेते हैं सो अनुचितहै ।।६७। ७३ ।। (छाती की वायुपर अरण्ड का सप्तक) रेंड, बिजौरा की जड़, गुखुरू, दोनों भटकटैया, पाषाणभेद और बेलगिरी इन सब जड़नका काढा रेंड़ीका तेल, हींग, पँवार, सेंधव युक्त पिये तो स्तनपीड़ा, कण्ठ मेढ्र व हृदय की सब पीडामिटैं।।७४। ७५ ।। (वातशूल पर शुंठीकाढा) सोंठ, रेंडमूल व इन्द्रयव का काढा, भुनीहींग, कालानोन युक्त पिये से वातशूलजाय ।। ७६ ।। (पित्तशूल पर त्रिफलाकाढा)

रक्तपित्तहरोदाहपित्तशूलनिवारणः ७७ एरण्डमूलंद्विपलं जलेऽष्टगुणितेपचेत्। तत्काथोयावशूकाढ्यःपार्श्वहृत्कफशूलहा ७८ दशमूलकृतःकाथोयवक्षारःससैन्धवः। हृद्रोगगुल्मशूलार्त्तिकासंश्वासंचनाशयेत् ७९ हरीतकीदुरालम्भाकृतमालकगोक्षुरैः। पाषाणभेदसहितैःकाथोमाक्षिकसंयुतः।विबन्धेमूत्रकृच्छ्रेचसदाहेसरुजेहितः ८० वीरतरुर्वृक्षवंदाकाशसहचरत्रयम्। कुशद्वयंनलोगुन्द्रावकपुष्पोग्निमन्थकः ८१ मूर्वापाषाणभेदश्चश्योनाकोगोक्षुरस्तथा। अपामार्गश्चकमलंब्राह्मीचेतिगणोवरः ८२ वीरतर्वादिरित्युक्तःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा। मूत्राघातंवायुरोगान्नाशयेन्निखिलानपि ८३ एलामधूकगोकण्टरेणुकैरण्डवासकाः। कृष्णाश्मभेदसहिताःकाथएषांसुसाधितः। शिलाजतुयुतःश्रेयःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ८४ समूलगोक्षुरकाथःसितामाक्षिक

त्रिफला, अमलतास इस काढे में शक्कर शहद युक्त करि पिये से रक्तपित्त दाह पित्त शूलजाय ॥ ७७ ॥ (कफ शूलपर रेंडमूल काढा) रेंडकी जड दोपल सोलह पल पानी में काढा करि जवाखार डारि पियेसे कफजन्य पार्श्वपीड़ा हृदयपीड़ाका नाश होय ॥ ७८ ॥ (हृदयरोगपर दशमूलकाढ़ा) दशमूल का काढ़ा जवाखार सेंधव युक्त पिये से हृद्रोग, वायुगोला, कास और श्वासका नाशहोय ॥७९॥ (मूत्रकृच्छ्रपर हरीतकी काढ़ा) हड, जवासा, अमलतास, पाषाणभेद और गुखुरू इनका काढा शहदसंयुक्त पिये से मलमूत्ररोध दाहसहित सब रोग अच्छेहोयँ (मूत्रकृच्छ्रपर अर्जुनकाथ) आकाशवरि काशमूल तीनों कटसरैया मूल दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदी, शिर्वलिसी, अरणीकीजड़, मूर्वा, पाषाणभेद वा करील, गुखुरू, चिर्चिरा, कमलपत्र यह वीरतरु श्रेष्ठ गण है इस काढाके पियेसे शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और सम्पूर्ण वायुरोग नाशहोयँ ॥ ८० । ८३ ॥ (अश्मरीशर्करादिपर एलाकाढ़ा) इलायची, मुलहठी, गुखुरू, मेरडीबीज, रेंड, रूसा, पीपरि और पाषाणभेद इनका काढा शिलाजीत संयुक्त पिये से शर्करा, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र ये रोग नाश होयँ ॥ ८४ ॥ (मूत्र

संयुतः।नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथाचोष्णसमीरणम् ८५
वरादार्व्यब्ददारूणां क्वाथःक्षौद्रेणमेहहा। वत्सकस्त्रिफला
दार्वी मुस्तकोबीजकस्तथा ८६ फलत्रिकाब्ददार्वीणा वि
शालायाःशृतंपिबेत्। निशाकल्कयुतंसर्वप्रमेहंविनिवर्त्त
येत् ८७ दार्वीरसाञ्जनंमुस्तं भल्लातः श्रीफलंवृषः। कैरा
तश्चपिबेदेषां क्वाथंशीतंसमाक्षिकम् ८८ जयेत्सशूलंप्रद
रं पीतश्वेतासितारुणम्। न्यग्रोधप्लक्षकोशाम्रवेतसौबद
रीतुणिः ८९ मधुयष्टिःप्रियालुश्चलोध्रद्वयमुदुम्बरः। पि
प्पल्यश्चमधूकश्च तथापालाशपिप्पलः ९० सल्लकीति
न्दुकीजम्बूद्वयमाम्रतरुःशिवा।कदम्बककुभौचैव भल्लात
कफलानिच ९१ न्यग्रोधादिगणक्वाथं यथालाभंचकार
येत्। अयंक्वाथोमहाग्राही व्रणभग्नंचसाधयेत्। योनि

कृच्छ्र पर गोखुरूकाढ़ा) गोखुरू के पंचांगका काढा, मिश्री, शहद संयुक्त पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र, उष्णवायु अच्छीहोय॥ ८५ ॥ (मूत्रकृच्छ्रपर त्रिफला काढा) त्रिफला, दारुहल्दी, नागरमोथा और देवदारु इनका काढा शहद संयुक्त पिये तो प्रमेह नाशहोय(पुनः)तैसेही कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी,नागरमोथा और ककही इनका काढा शहद सहित पिये तो प्रमेह नाशहोय ॥ ८६ ॥ (प्रमेहपर त्रिफलाकाढा) त्रिफला, नागरमोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की जड़ इनका काढा हल्दी चूर्णयुक्त पिये तो सकल प्रमेह नाशहोय ॥ ८७ ॥ (प्रदरपर दारुहल्दीकाढ़ा) दारुहल्दी, रसोत, नागरमोथा, भिलावां, बेलगिरी, रूसा और चिरायता इनका काढा ठण्ढा करि शहद संयुक्त पिये तो पीत श्वेत कृष्ण लाल सहित शूल स्त्री का प्रदररोग अच्छा होय ॥ ८८ ॥ (क्षतव्रणादि पर वटादिकाढ़ा) बड़, पाकर, अम्बाड़,वेतस,बेर और तूतवृक्षकी छाल,मधुमेठी, चिरौंजी, लोध, गूलरी, पीपरि, महूक, जगन्नाथीपीपरि, पलाश, तिन्दुक, दोनों जामुन, आम, छोटी हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिलावेंका फल जो द्रव्य इनमें न मिले उसे त्यागि दे यह न्यग्रोधादिगण काढा बहुतग्राही है जो घाव खराब होगयाहो सो अच्छाहो योनिदोष,दाह,भेद, प्रमेह, विष ये सब नाश

दोषहरोदाहमेदोमेहाविषापहम् ९२ बिल्वोग्निमन्थश्यो नाकःकाश्मरीपाटलातथा। क्वाथमेषांजयेन्मेदोदोषंक्षौद्रे णसंयुतः ९३ क्षौद्रेणत्रिफलाक्वाथःपीतोमेदोहरःस्मृतः। शीतीभूतंतथोष्णाम्बुमेदोहृत्क्षौद्रसंयुतः ९४ चव्यचित्र कविश्वानां साधितोदेवदारुणा। क्वाथस्त्रिवृच्चूर्णयुतो गोमूत्रेणोदराञ्जयेत् ९५ पुनर्नवामृतादारुपथ्यानागर साधितः। गोमूत्रगुग्गुलुयुतःक्वाथःशोथोदरापहः ९६ प थ्यारोहितकक्वाथंयवक्षारकणायुतम्। पिबेत्प्रातर्यकृत्प्ली हगुल्मोदरनिवृत्तये ९७ पुनर्नवादारुनिशानिशाशुण्ठी हरीतकी। गुडूचीचित्रकोभार्गीदेवदारुकृतःशृतः ९८ पाणिपादोदरमुरःप्राप्तशोफंनिवारयेत्। फलत्रिकोद्भवंक्वा थंगोमूत्रेणैवपाययेत् ९९ वातश्लेष्मकृतंहन्तिशोथंवृषण

होयँ वेतसको कहीं जगन्नाथी पीपरि कहते हैं ॥ ८६। ९२ ॥ (मेदरोगपर बेलकाढ़ा) बेल, अरणी, सोहनपात, खंभारी और पाडल इनका काढा शहद संग पिये तो मेददोष मिटै ॥ ९३ ॥ (पुनः त्रिफलादिक्वाथ) त्रिफले का काढा शहद संग पिये तो मेददोष जाय उष्ण जल ठण्ढाकरि शहदसंयुक्तपिये तो मेददोष जाय ॥ ९४ ॥ (उदररोगपर चावकाढ़ा) चाव, चीता, सोंठ और देवदारु इनका काढा निशोतचूर्ण गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर होय ॥ ९५ ॥ (पेटफूलने पर गदापुरैनाकाढ़ा) गदापुरैना, गुर्चे, देवदारु और सोंठ इनका काढा गोमूत्र गूगलयुक्त पिये से पेटकी सूजन मिटै ॥ ९६ ॥ (पिलही पर हरीतकीकाढ़ा) जंगीहड, अगियासर इनका काढा जवा- खार व पीपरियुक्त प्रातःकाल पिये से प्लीहा, वायुगोला, यकृत् अच्छी हो रोहित नाम करिके खर लेना ॥ ९७ ॥ (शोथपर गदापूर्णकाढ़ा) गदा- पुरैना, दारुहल्दी, सोंठ, बड़ीहड, गुर्चे, चीता, भारंगी, देवदारु इनके काढा से हाथ पांव उदर छाती गुलकी सूजन जाय ॥ ९८ ॥ (अंडवृद्धि सूजनपर त्रिफलाकाढ़ा) त्रिफला के काढेमें गोमूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य

१ पुर्वेदेविषणभागरथरनामख्यातमासलयरः ॥

ठाखदिरचन्दनैः।त्रिवृद्वरुणकैरातवाकुचीकृतमालकैः १६ शाखोटकमहानिम्बकरञ्जातिविषाजलैः। इन्द्रवारुणिकानन्ताशारिवापर्पटैःसमैः १७ एभिः कृतंपिवेत्क्वाथंकणागुग्गुलुसंयुतम्। अष्टादशेषुकुष्ठेषुवातरक्तार्दितेतथा १८ उपदंशश्लीपदेचप्रसुप्तेपक्षघातके। मेदोदोषेनेत्ररोगेमञ्जिष्ठादिःप्रशस्यते १९ पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायुतैः। क्वाथःकृतःषडङ्गोयंसगुडःशीर्षशूलहा २० भ्रूशङ्खकर्णशूलानितथाचार्द्धशिरोरुजम्। सूर्यावर्तंशङ्खकञ्चदन्तपातंचदन्तरुजम्। नक्तान्ध्यंपटलंशुक्रं चक्षुःपीडांव्यपोहति २१ वासाविश्वामृतादार्वीरक्तचन्दनचित्रकैः। भूनिम्बनिम्बकटुकापटोलत्रिफलाम्बुदैः२२ यवकालिङ्गकुटजैःक्वाथः सर्वाक्षिरोगहा।वैस्वर्यंपीनसंश्वासंनाशयेदुरसःक्षतम् २३ अमृतात्रिफलाक्वाथः पिप्पलिचूर्णसंयुतः। सक्षौद्रःशीत

अमलतास का गूदा, सहोरा, बकायन, करंज, अतीस, नेत्रवाला, इंद्रायनकी जड़, जवासा, शारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेके काढ़ा करि पीपरि व गुग्गुलु मिश्रित करि पिये से अठारहों कोढ़ और वातरक्तपीड़ा, उपदंश, फीलपाव, प्रसुप्त कहे शून्यवायु, पक्षाघात, मेदोदोष और नेत्ररोग इन रोगन के दूर करने को यह वृद्धमंजिष्ठादि काढ़ा हितहै (शिरश्शूल नेत्रपर हरीतकीकाढ़ा) हड़, बहेड़ा, आंवरा, चिरायता, हल्दी, नींबकीछाल और गुर्च इन सात औषधों के षडङ्ग काढ़े में गुड़मिश्रित करि पिये से शिरशूल, भौंह व कानकीशूल, आधाशीशी, सूर्यावर्त्त, शंखशूल, दंतपात, दंतरोग, रतौंधी, पटल, फूली, नेत्ररोग और नेत्रपीड़ा ये सब दूर होवें ॥ १५ । २१ ॥ (नेत्ररोग पर वासादिकाढ़ा) रूसा, सोंठ,गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन,चीता, ,चिरायता, नींब, कुटकी, परवल, त्रिफला, मोथा, यव, इन्द्रयव और कुरैया इस काढ़ेसे सब नेत्ररोग नाशहोवें स्वरभङ्गसे कण्ठ खुलजाय पीनस श्वास कलेजे का घाव जाताहै ॥ २२ । २३ ॥ (दूसरा काढ़ा पूर्व यथा) गुर्च,त्रिफले का काढ़ा, शहद पीपरि संयुक्त ठण्ढाकरि सदैव पीने से सर्व नेत्ररोग विनाश

लोनित्यंसर्वत्रान्यथांजयेत् २४ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवट वेतसजं शृतम् २५ व्रणःशोथोपदंशानांनाशनःक्षालना स्स्मृतम्। प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यक्षुण्णात्कल्कीकृताच्छृतात्। तोयेष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् २६ मुस्तकेन्द्रय वैःसिद्धा प्रमथ्याद्विपलोन्मिता। सुशीतामधुसंयुक्तारक्ता तीसारनाशिनी २७ साध्यंचतुष्पलंद्रव्यं चतुष्षष्टिपले म्बुनि।तत्क्वाथेनार्द्धशिष्टेनयवागूंसाधयेद्बुधः २८ आम्रा म्रातकजम्बूत्वक्कषायेविपचेद्बुधः। यवागूंशालिभिर्युक्तां तांभुक्त्वाग्रहणींजयेत् २९ कल्कद्रव्यंपलंशुण्ठीपिप्पली चार्द्धकार्षिकी। वारिप्रस्थेनविपचेत्सद्रव्योयूषउच्यते ३० कुलित्थयवकोलैश्चमुद्गैर्मूलकशुष्ककैः। शुण्ठीधान्यकयुक्तै श्चयूषःश्लेष्मानिलापहः ३१ सप्तमुष्टिकइत्येपसन्निपात

होवे ॥ २४ ॥ (क्षतपर पिप्पल्यादिकाढ़ा) पीपरि, गूलर, पकरिया, बड़ और वेतस इनकी छालका काढ़ाकरि घाव धोवै तौ उपदंशकहे गर्मी और घाव सूजन ये सब अच्छे होयँ ॥ २५ ॥ (काढ़े की दूसरी विधि) औषधी पीसके गोली बनावै तब अठगुणा पानी में डारि काढ़ा करै जब चौथाई पानी रहै तब उतारिले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानकी मात्रा दोपल है ॥ २६ ॥ (रक्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या) नागरमोथा और इंद्रयवकी प्रमथ्या दोपल ठंढाकरि शहद मिश्रीयुक्त पिये से रक्तातीसार नाशहोय ॥२७॥ (यवागूविधान) षोडश तोले द्रव्य में उसका सोलहगुणा पानी २५६ तोले भरदेय आधा जरिजाय तब द्रव्य छानिकै फेंकदेइ जो पानी रहजाय उसे यवागू कहते हैं व आम, अंबाडा और जामुन इन तीनों वृक्षों की चारपल छाल को कूटकर चौंसठगुने पानी में डाल के औटावे जब आधा पानी रहजावे तब उतारके इस जलको छानले उसमें चारपल चावल डाल औटाके उतारे इसे आम्रादि यवागू कहते हैं इसको खाकर संग्रहणीको जीतताहै ॥ २८।२९ ॥ (यूपविधान) सोंठका कल्क औषध एकपल तिस में पीपरि पाव भरि प्र-स्थभर पानी में पचाइ तिसमें अन्न खूब गलाइके देइ उसे यूप कहते हैं ॥ ३० ॥ (सन्निपात पर सप्तमुष्टियूप) कुलथी, यव, बेर, मूग, मूरीको पेंदी जो

ज्वरक्षयेत्। आमवातहरः कण्ठहृद्वक्त्राणां विशोधनः ३२ क्षुण्णंद्रव्यंपलंसाध्यंचतुष्षष्टिपलेजले। अर्द्धशिष्टंचतद्देयंपानेभक्तादिसंविधौ ३३ उशीरपर्पटोदीच्यमुस्तनागरचंदनैः। जलंशृतंहिमंदेयंपिपासाज्वरनाशनम् ३४ अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धकेनवा। अथवाक्वथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंवदेत् ३५ श्लेष्मामवातमेदोघ्नंवस्तिशोधनदीपनम्। कासश्वासज्वरंहन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ३६ क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम्। क्षीरावशेषंतत्पीतं शूलमामोद्भवंजयेत् ३७ अथान्नप्रक्रियाचैव प्रोच्यतेनातिविस्तरात्। यवागूःषड्गुणजलेसिद्धास्यात्कृसराघना ३८ तण्डुलैर्मुद्गमाषैश्चतिलैर्वासाधिताहिता। यवागूर्ग्राहिणीबल्यातर्प्प

पत्ताके पास होतीहै ये सब सूखी द्रव्य इन सबका यूप सोंठ, धनियायुक्त प्यावै तो कफवात नाशहोय इस सप्तमुष्टिक यूप से सन्निपात ज्वर जाय आमवात जाय कण्ठ हृदय व मुख शुद्धरहै ॥ ३१। ३२ ॥ (पानादि कल्पना) कुटी द्रव्य पलभर ले चौंसठि पल पानी में औटै जब आधा रहिजाय उस पानी को भक्त कहते हैं इसे भोजन समय थोड़ा थोड़ा करिदेना, चाहिये ॥ ३३ ॥ (ज्वर तृषापर उशीरादिपान) खस, पित्तपापड़ा, सुगन्धबाला, नागरमोथा, सोंठ और रक्तचन्दन इन्हें पकाय पानी ठण्ढा करदेय तौ पियास व ज्वर नाशहोय ॥ ३४ ॥ (उष्णोदक) त्रिक आठवां अंश व चौथा अंश अर्द्ध शेष अथवा अतितप्तकरे उसे उष्णोदक कहते हैं " अथ सुश्रुतोक्तश्लोक सार्द्धद्वयम्" तत्पादहीनंवातघ्नमर्द्धहीनन्तु पित्तजित् । कफघ्नंपादशेषञ्चपानीयंदीपनंस्मृतम् ॥ शारदचार्द्धपादघ्नं पादहीनंतुहेमनम् । शिशिरेचवसन्तेचग्रीष्मेचार्द्धावशेषितम् ॥ विपरीतश्रुत दृष्टा दोषकृन्नाग्निकृन्मृतमिति ॥ ३५ ॥ कफ, आमवात, मेदा, वस्तिशोधन, दीपन, श्वास, कास, ज्वर ये रोग रातिको उष्णोदक पीने से जाते हैं ॥ ३६ ॥ (क्षीरपाकविधि) द्रव्यका आठगुणा दूध दूधका चौगुणा पानी एकत्रकर औटै जब पानी जरजाय तब दूध पिये तौ आमशूल दूर होय ॥ ३७ ॥ (अन्नप्रकार) अब संक्षेप से अन्नविधि कहते हैं अन्न,यवागूः से छ गुना जल देकै पकावै इसे कृसरा और घना कहते हैं ॥ ३८ ॥ चावल, मूंग,

णीग्राहिणीबल्यातर्पणीहृद्यामधुरापित्तनाशिनी ३९ विलेपीचघनासिक्थासिद्धानीरेचतु
र्गुणे।बृंहणीतर्पणीहृद्यामधुरापित्तनाशिनी ४० द्रवाधिका
स्वल्पसिक्थाचतुर्दशगुणेजले।सिद्धोपयाबुधैर्ज्ञेयायूषःकि
ञ्चिद्घनःस्मृतः।पेयालघुतराज्ञेयाग्राहिणीधातुपुष्टिदा।
यूषोबलकरःकण्ठ्योलघुपाकःकफापहः।जलेचतुर्दशगुणे
तण्डुलानांचतुष्पलम्‌४१ विपचेत्स्राव्येन्मण्डंसभक्तोमधु
रोलघुः। नीरेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिक्थकः ४२ शु
ण्ठीसैन्धवसंयुक्तःपाचनोदीपनःस्मृतः४३ धान्यत्रिकटुसि
न्धूत्थमुद्गतण्डुलयोजितः।भृष्टश्चहिङ्गुतैलाभ्यांसमण्डो
ष्टगुणःस्मृतः।दीपनःप्राणदोबस्तिशोधनोरक्तवर्द्धनः ४४
ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमण्डोष्टगुणउच्यते।सुकण्डितैस्तथाभृ
ष्टैर्वाट्यमण्डोयवैर्भवेत्‌ ४५ कफपित्तहरः कण्ठ्योरक्तपित्त

भाप और तिल इनकी यवागूकरै यह ग्रहणीको बल देती है तृप्तिको करतीहुई पित्तको नाशती है॥ ३९ ॥ (विलेपीप्रकार) अन्नमें चौगुना जलदे पकावै सो विलेपी है सो धातुओं को पोषै तृप्तकरै मन प्रसन्न करे प्रिय व मधुर होकर पित्तनाशक है ॥ ४० ॥ (अथ पेया) अन्नको चौदह गुने पानी में सिद्धकरै पतला माडा न हो जो पियाजाय उसे पेया कहते हैं उससे कुछही गाढ़ेको यूष कहते हैं यह पेया अतीव हलकी होकर मलादिकों को स्तम्भन करती व धातु पुष्ट करती है और यूष हलका है ग्रहणी को शुद्धकरताहै धातुपुष्ट करै बल करै कण्ठ शुद्धकरै लघुपाक है कफहारक है (भातविधि) चावलसे चौदहगुणा पानी लेके रान्धे उसका मांड निचोरै सो मीठाहै हलकाहै उसे भक्त मण्ड कहतेहैं (शुद्धमण्ड) उसी मांडमें सोंठ व सैंधव डारिके पिये तो दीपन पाचन करै॥ ४१ । ४३॥ (अष्टगुण मण्ड) धनियां, त्रिकुटा, सैंधव, मूंग, चावल, हींग तेलकी भूनी पथ्ययुक्त मांडका अष्टगुणा मांड दीपनहै प्राणदाताहै बस्तिशोधन रक्तवर्द्धन ज्वरघ्न सबदोषहरणहै ॥ ४४ ॥ (यवमण्ड पित्तादि पर) यव कूटि भूनिकै रान्धै सो वाट्यमण्डहै कफ पित्त हरै कंठ शुद्धकरै रक्त पित्तहरै॥ ४५ ॥ (लाजमंड) धानका लावा कुटी द्रव्य वा भूने धानका बनावै सो लाजमंडहै यह कफपित्तहारी व ग्राही होकर तृष्णा व ज्वर को

प्रसादनः। लाजैर्वातण्डुलैर्भ्रष्टैर्लाजमण्डः प्रकीर्त्तितः।श्ले
ष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजित्स्मृतः १४६ इति श्री
शार्ङ्गधरेमध्यखण्डेक्वाथकल्पनाद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यग्जलमुष्णंविनिक्षिपेत् । मृत्पात्रे
कुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् १ तस्यचूर्णद्रवःफाण्ट
स्तन्मानंद्विपलोन्मितम्। सितामधुगुडादींस्तुक्वाथवत्तत्र
निक्षिपेत् २ मधूकपुष्पंमधुकंचन्दनंसपरूषकम्। मृणालं
कमलंलोध्रंगम्भारीनागकेशरम् ३ त्रिफलांशारिवांद्राक्षां
लाजांकोष्णेजलेक्षिपेत्।सितामधुयुतेपेयःफाण्टोवासौहि
मोथवा ४ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णामूर्च्छारतिभ्रमान् ।
रक्तपित्तंमदंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा ५ आम्रजम्बूकि
सलयैर्वटशुङ्गप्ररोहकैः। उशीरेणकृतःफाण्टःसक्षौद्रोज्वर
नाशनः६पिपासाछर्द्यतीसारान्मूर्च्छांजयतिदुर्जयाम्। म

विनाशताहै ॥ १४६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेमध्यखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फांट करक वा कुटीद्रव्य पलभर एक कुडव पानी माटीके पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कुटीहुई द्रव्यको उष्णोदक में डारि ढकदे जब ठंढाहो तब छानिलेय इसे फांट कहते हैं आठ रुपये भर फांटकी मात्राहै मिश्री शहद पुराना गुड़ जिसभांति क्वाढे में डारना कहाहै उसी भांति फांट में पड़ताहै ॥ १ । २ ॥ (पित्तज्वर पै मधूकफांट) महुआके फूल, मुलहठी, लालचंदन, फालसा, कमल, लोध, खंभारी, नागकेशर, त्रिफला, सरिवन, दाख और लावा के तप्तवारि में डारि मिश्री शहद संयुक्त पिलावै इस फांट वा हिमसे वात, पित्त, ज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, मतिभ्रम, रक्तपित्त और मद ये सब दूरहोयँ इस में कुछ विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३ । ५ ॥ (पिपासपर आम्रादि फांट) आम व जामुन की कोंपल बड़की कली भीतरी पत्ते और जटा खस इनका फांट करि पिये तो ज्वर, प्यास, छर्दि, अतीसार और मूर्च्छा ये सब दूरहोंय ॥ ६ ॥ (पित्ततृष्णापर मधूकफांट) महुआके फूल, खंभारी, चन्दन, खस, धनियां, नेत्रबाला वा दाख इनका फांट शकरयुक्त पिये तो तृष्णा, पित्त, दाह,

धुयष्टीचकाकोदुम्बरपल्लवैः। नीलोत्पलंहिमस्तेषांतृष्णा छर्दिनिवारणः ३ नीलोत्पलंबलाद्राक्षामधूकंमधुकंतथा। उशीरंपद्मकंचैवकाश्मरीचपरूषकम् ४ एतच्छीतकषाय श्चवातपित्तज्वरंजयेत्। सप्रलापभ्रमच्छर्दिमोहतृष्णानि वारणः ५ अमृतायोहिमःपेयोजीर्णज्वरहरस्स्मृतः। वासा याश्चहिमःकासरक्तपित्तज्वराञ्जयेत् ६ प्रातःसशर्करः पे योहिमोधान्याकसम्भवः। अन्तर्दाहंतथातृष्णांजयेत्स्रोतो विशोधनः ७ धान्याकधात्रिवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः। रक्तपित्तज्वरंदाहंतृष्णाशोषञ्चनाशयेत् ८ ॥ इति श्रीशा र्ङ्गधरेमध्यखण्डेहिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत्। प्रक्षेपाएव कल्कास्तेतन्मानंकर्षसम्मितम् १ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्वि गुणमात्रया। सितागुडौसमौदद्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणाः २

हिम) मरिच, मुलहठी, कठगूलरकी कोंपल नील कमल के हिमसे तृष्णा व छर्दि का नाशहोय ॥ ३ ॥ (पित्तज्वर पर नील कमलादि हिम) नील कमल, खरियारा, दाख, महुआ, मुलहठी, नेत्रबाला, पद्माख, खंभारी और फा लसा इनका शीतकषाय वातपित्तज्वर, प्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तृष्णा को हरता है ॥ ४ । ५ ॥ (जीर्णज्वर पर गुडूच्यादि हिम) गुर्च के हिमसे जीर्णज्वर जाताहै वासा कहे रूसाके हिमसे कास और रक्तपित्तज्वर जाताहै ॥ ६ ॥ धनियाका हिम शक्कर डारि प्रातःकाल पियेसे अन्तर्दाह, तृष्णा, और स्रोतशोधन सब रोग नाशहोतेहैं ॥७॥ (रक्तपित्तपर) धनिया, आवरा, रूसा, दाख और पित्तपापड़ा इनका हिम रक्त पित्तज्वर, दाह, तृषा और कंठशोषको विनाशताहै ॥ ८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेहिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अथ कल्कविधि:) गीली औषधको शिलापै बारीक चटनी के स मान पीसे यदि सूखीहोय तो उसमें जलडालके पीसे तिसे कल्क और प्रक्षेप कहते हैं इसकी मात्रा टकाभर कही है ॥ १ ॥ कल्क में मधु, घृत, तेलमात्रा से दूना देना मिश्री गुड़ समान मात्रा व अति थोरी पतली चौगुनी देना

त्रिवृद्धयापञ्चवृद्धयावासप्तवृद्धयाथवाकणाः । पिबेत्पि
ष्ट्वादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत् ३ एवंविंशद्दिनैः सिद्धंपि
प्पलीवर्द्धमानकम् । अनेनपाण्डुवातास्रकासश्वासारुचि
ज्वराः । उदरार्शःक्षयश्लेष्मवातानश्यन्त्युरोग्रहाः ४ लेपा
न्निम्बदलैःकल्कोव्रणशोधनरोपणः । भक्षणाच्छर्दिकुष्ठानि
पित्तश्लेष्मकृमीञ्जयेत् ५ महानिम्बजटाकल्कोगृध्रसीना
शनःस्मृतः । शुद्धकल्कोरसोनस्य तिलतैलेनमिश्रितः । वात
रोगाञ्जयेत्तीव्रान्विषमज्वरनाशनः ६ पक्वकन्दरसोनस्य
गुटिकानिस्तुषीकृताः । पाटयित्वाचतन्मध्यं दूरीकुर्य्यात्त
दङ्कुरम् ७ तदुग्रगन्धनाशायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् । अपनी
यचतन्मध्याच्छिन्नायांपेषयेत्ततः । तन्मध्येपञ्चमांशेनचू
र्णमेषांविनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलंयवानीचभर्जितंहिङ्गुसैन्धव

चाहिये ॥ २ ॥ (पांडुपर वर्द्धमान पीपरि) पीपरि तीन व पांच व सात बढ़ावै और जैं पीपरि से आरम्भकरै तै प्रतिदिन बढावै दशदिन तांई फिर उतनी प्रतिदिन घटावै बीसवेंदिन प्रथम दिनकी मात्रा पूरी करै यों वर्द्धमानपीपरि सिद्ध करनेसे पांडुरोग, वातरक्त, कास, स्वास, अरुचि, ज्वर, उदरविकार, क्षयी, कफ, वात, छाती जकड़ना ये सब दूरहों और जो पानी व दूध संग पिया चाहै तो तीन दिनतक दो व तीन तोले दूधले फिर कल्क से चौगुनाले ॥ ३ । ४ ॥ (घावपर निम्बकल्क) नींबपत्र की लुगदी घावपर

पहः। नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्तार्शसांस्मृतः २५ नवनीतंसितानागकेसरैश्चापितद्विधः। पीतोमसूरयूषेण कल्कःशुण्ठीशलाटुजः।जयेत्सङ्ग्रहणींतद्वत्तक्रेणबृहतीभवः २६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेपञ्चमोऽध्यायः॥५॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम्। तत्स्याच्चूर्णंरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसम्मिता १ चूर्णेगुडस्समोदेयः शर्कराद्विगुणाभवेत्।चूर्णेषुभर्जितंहिङ्गुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवेत्२ लिह्यच्चूर्णंद्रवैः सर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः। पिबेच्चतुर्गुणैरेवंचूर्णमालोडितंद्रवैः ३ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम्। वातपित्तकफातंकेत्रिद्व्येकपलमाहरेत् ४ यथातैलंजलंप्राप्यक्षणेनैवप्रसर्पति। अनुपानबलादङ्गेतथासर्पतिभेषजम् ५ द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतंभवेत्। भावनायाःप्रमाणन्तुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः ६ आमलंचित्रकःपथ्यापिप्पलीसैन्धवस्तथा। चूर्णितोयंगणोज्ञे

पीनेसे ग्रहणी नाशहोय भटकटैया के फलका कल्क मट्ठाके साथ पीनेसे संग्रहणी रोगको जीतताहै ॥ २५ । २६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

(अथ चूर्णविधि) अतीव सूखीद्रव्य कूटिकै कपड़े में छानिले उसे चूर्ण रज और क्षोद कहते हैं इसके खाने की मात्रा कर्षभर कही है ॥ १ ॥ चूर्ण में गुड़ समान लेना खाड़ भूनी हींग भूनी हुई देना ॥ २ ॥ घृत शहद आदि तथा द्रववस्तु दूनी दे चाटै और पीनेको द्रव चूर्ण के साथ चौगुनी देना ॥ ३ ॥ चूर्ण, अवलेह, गुटिका और कल्क इनका अनुपान वात में तीन पल पित्त में दो पल कफमें एक पल देवै ॥ ४ ॥ अनुपान देनेका कारण यहहै कि जैसे तेल पानी में डाले से फैल जाताहै वैसेही अनुपान के बल से औषध प्रवेश करती है ॥ ५ ॥ औषध में किसीकी पुट देनाहो तो जितने में चूर्ण डूबजाय मुवाफिकहो तितना देना भावना देनाहो तो चूर्णस्थान में भावप्रकाश में देख लेना ॥ ६ ॥ (सर्वज्वरपर आमलकादि चूर्ण) आंवरा, चीता, हड़, पीपरि, सेंधव इन पाचोंका चूर्ण सर्वज्वर नाशकरै व रेचक,रोचक,कफहर्ता होकर दीपन पाचनहै ॥

यः सर्वज्वरविनाशनः ७ भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीप नपाचनः। मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहम् ८ हिक्काश्वासहरंकण्ठ्यंप्लीहघ्नंबालकोचितम् । एकाहरीतकीयोज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ ९ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्तिता । त्रिफलामेहशोथघ्नीनाशयेद्विषमज्वरान् १० दीपनीश्लेष्मपित्तघ्नीकुष्ठहन्त्रीरसायनी।सर्पिर्मधुभ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयाञ्जयेत् ११ पिप्पलीमरिचंशुण्ठीत्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते। दीपनंश्लेष्मदोषघ्नंकुष्ठपीनसनाशनम् १२ जयेदरोचकंसाममेहगुल्मगलामयान्। पिप्पलीचविकाविश्वापिप्पलीमूलचित्रकैः १३ पञ्चकोलमितिख्यातंरुच्यंपाचनदीपनम् । आनाहप्लीहगुल्मघ्नंशूलश्लेष्मोदरापहम् १४ त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेसरम् । त्रिगन्धंसचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तकृत् १५ व

(ज्वरपर पीपरिचूर्ण) पीपरि, शहद युक्त चाटै तो ज्वर, कास, हिचकी, श्वास, कण्ठरुज, पिलही ये सकल रोग नाश होयँ तथा बालकों के लिये योग्यहै (प्रमेहपै त्रिफलाचूर्ण) हड़ एकभाग बहेड़ा दो भाग आंवरा चारभाग इसप्रकार त्रिफला है सो त्रिफला प्रमेह शोथ और विषमज्वर को नाशकरती है और दीपन कफ पित्त नाशन व कुष्ठहरण होकर रसायन है वही त्रिफला शहद व घृतयुक्त खाने से नेत्ररोग दूरकरै है ॥ ७ ।- ११ ॥ पीपरि, मरिच और सोंठ इसे त्र्यूषण और त्रिकुटा कहते हैं यह दीपन होकर कफ, कुष्ठ व पीनस को नाशकरताहै तथा आंव, अरुचि, मेह, गुल्म, कण्ठरोग ये सब दूरहोयँ (कफादिपर पञ्चकोलचूर्ण) पीपरि, चाव, सोंठ, पीपरामूल और चीता इसे पञ्चकोल कहते हैं यह रोचन, पाचन और दीपन होकर, आनाह, पिलही, गुल्म, शूल, कफ, उदररोग इनसबों को नाशताहै ॥ (त्रिगन्ध चूर्ण) इलायची, दालचीनी और तज ये त्रिगन्धहैं (चातुर्जात) इलायची, दालचीनी, पत्रज और केसर ये चातुर्जात हैं ये दोनों रूखे हैं उष्ण हैं कुछ पित्तकारक हैं कांति रुचि कर्त्ता तीक्ष्णहैं और विष व कफको नाशते हैं ॥ (जीवनीयगण)

पथ्यंरुचिकरंतीक्ष्णंविषश्लेष्मामयाञ्जयेत् । काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौतथा १६ मेदाचान्यामहामेदाजीवन्तीमधुकन्तथा । मुद्गपर्णीमाषपर्णीजीवनीयोगणस्त्वयम् १७जीवनीयोगणःस्वादुर्गर्भसन्धानकृद्गुरुः।स्तन्यकृद्बृंहणोवृष्यःस्निग्धश्शीतस्तृषापहः । रक्तपित्तंक्षयंशोषंज्वरदाहानिलाञ्जयेत् १८ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौजीवकर्षभकौतथा । ऋद्धिर्वृद्धीचतैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः । अष्टवर्गोबुधैःप्रोक्तोजीवनीयसमोगुणैः १९ सिन्धुसौवर्चलंचैवविडंसामुद्रिकंगडम्।एकद्वित्रिचतुष्पञ्चलवणानिक्रमाद्विदुः २० तेषुमुख्यंसैन्धवंस्यादनुक्तेतत्प्रयोजयेत् । सैन्धवाद्यंरोमकान्तंज्ञेयंलवणपञ्चकम् २१ मधुरंसृष्टविण्मूत्रंस्निग्धंसूक्ष्मंबलापहम् । वीर्योष्णंदीपनंतीक्ष्णंकफपित्तविवर्द्धनम् २२ स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम् । ज्ञे

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, जीवन्ती " दूधिया लताकी छीमीकी छीमीकीसी तरकारी होतीहै" मुलहटी, मूंगफली और उर्दफली इनकी जीवनीयगण संज्ञाहै सो स्वादिष्ट, गर्भस्थितिकारक, भारी, दुग्धवर्द्धिनी, धातुपोषक, धातुशोषक, स्निग्ध व ठण्डी होकर तृष्णा, रक्तपित्त, क्षयी, शोष, ज्वर, दाह और वायुकी हरताहै ॥ १२ । १८ ॥ मेदा, दोनों काकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि यह अष्टवर्ग है परन्तु आठमें कोई मिलती है अष्टवर्ग को वैद्यलोग जीवनीयगणके तुल्य कहते हैं ॥ १९ ॥ (विषमूत्र पर लवण पंचकचूर्ण) सेंधा, सोंचर, विड्नोन, खारी और सांभर इन पांचों में पहिला एक लवण, पहिले व दूसरे को द्विलवण, पहिले, दूसरे व तीसरेको त्रिलवण, पहिले, दूसरे, तीसरे व चौथे को चतुर्लवण और पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे व पांचवें को पञ्चलवण कहते हैं ॥ २० ॥ इनमें सेंधा मुख्य है जहां नाम न लिखें तहां सेंधा लेना सेंधे से सांभरि तक पांच लोन जानो ॥ २१ ॥ पाक मधुर है मल मूत्र पकायके गिराता है चिकना प्रवेश करता बलहरता धातु को गरम करताहुआ दीपन व तीक्ष्णहो कफ व पित्तको बढ़ाता है ॥ २२ ॥ (गुल्मा-

योवल्लिसमौक्षारौस्वर्जिकाथावशूकजौ २३ क्षारास्त्वग्निप्रदाः गुल्मार्शोग्रहणीरुक्छिदःस्मराः । पाचनाःकृमिपुंस्त्वघ्नाः शर्कराश्मरिनाशनाः २४ त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगेशटी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीधन्वयासकाः २५ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाचबालकं । निम्बःपुष्करमूलंच मधुयष्टीचवत्सकम् २६ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिग्रुबीजंसुराष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरंचन्दनातिविषाबलाः २७ शालपर्णीपृश्नपर्णीविडङ्गंतगरंतथा । चित्रकोदेवकाष्ठञ्च चव्यंपत्रंपटोलजम् २८ जीवकर्षभकौचैवलवङ्गंवंशलोचनम् । पुण्डरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकम् २९ तालीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत् । सर्वचूर्णस्यसार्द्धं शंकैरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ३० एतत्सुदर्शनंनामचूर्णदोषत्रयापहम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यात्रकार्याविचारणा ३१

दिपर खार) सज्जीखार और जवाखार ये दो खार कहे हैं सो दोनों अग्नि समान देदीप्यमान हैं ॥ २३ ॥ और चार सहिंजनखार व गदापूर्णखार भी गुल्म, अर्श, ग्रहणी इन रोगों को नाश करता है तथा पाचन कृमिनाशक पुंस्त्वहन्ताहो शर्करा व पथरी को हरता है ॥ २४ ॥ (सर्वज्वरपर सुदर्शन चूर्ण) त्रिफला, दोनों हल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, त्रिकुटा, पीपरामूर मूर्वा, गुर्च, धमासा ॥ २५ ॥ कटुकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, त्रायमाणा नेत्रबाला, नीमकी छाल, पुष्करमूल, मुलहठी, कुरैया ॥ २६ ॥ अजवाइन, इन्द्रयव, भारंगी, सहिंजन के बिया, भुनी फटकरी, वच, तज, पद्माख, खस, श्वेत चन्दन, अतीस, खरियारा ॥ २७ ॥ वनउर्दी, वनमूंग, वायविडंग, तगर, चीता, देवदारु, चाव, पटोल ॥ २८ ॥ "जीवक, ऋषभक इन दोनोंके अभावमें बिदारीकन्द लेना" लौंग, वंशलोचन कमलपत्र, काकोली के अभाव में मुलहठी लेना दुद में दूना तेजपात, जावित्री ॥ २९ ॥ तालीसपत्र ये सब समानले चूर्णकरे सब चूर्णका आधा चिरायता डारे ॥ ३० ॥ यह सुदर्शन चूर्ण त्रिदोषनाशक हो निश्चय सर्वज्वर को हरता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३१ ॥

पृथग्द्वन्द्वागन्तुजांश्चधातुस्थान्विषमज्वरान् । सन्निपा
तोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ३२ शीतज्वरैका
हिकादीन्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । श्वासंकासंचपाण्डुत्वंहृ
द्रोगंहन्तिकामलाम् ३३ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनि
वारणम् । शीताम्बुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ३४ सु
दर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम् । तद्वज्ज्वराणांसर्वे
षामेतच्चूर्णंनिवारणम् ३५ कासश्वासज्वरहरात्रिफला
पिप्पलीयुता । चूर्णितामधुनालीढाभेदिनीचाग्निबोधिनी
३६ कट्फलंमुस्तकंतिक्ताशुण्ठीशृङ्गीचपौष्करम् । चूर्णमेषां
चमधुनाशृङ्गवेररसेनच ३७ लिहेज्ज्वरहरंकण्ठ्यंकासश्वा
सारुचीर्जयेत् । वातंशूलंतथाछर्दिंक्षयंचैवव्यपोहति ३८
शृङ्गीप्रतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् । शिशोःका
सज्वरच्छर्दिशान्त्यैवाकेवलाविषाम् ३९ शुण्ठीप्रतिविषा

थ एकाहिक, द्वन्द्वज, सन्निपातज और मानस ऐसे सब ज्वरों को विनाशताहै ॥ ३२ ॥ शीतज्वर, जूड़ी, अंतरिया, तृतीयक, चातुर्थिक, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, कास, पाडु और हृदयरोग को हरै ॥ ३३ ॥ रीढ़, पीठ, करिहावँ, जाघ, पसुरी इन अंगों की पीड़ा नाश होइ जो शीत जल के संग पिये तौ सर्वज्वर हरैं। ३४॥ जैसे सुदर्शनचक्र सब दानवों को नाशताहै वैसेही सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर) त्रिफला पीपरिचूर्ण शहद संग चाटै तो कास, श्वास, ज्वर हरै तथा भेदी हो अग्निको प्रबल करताहै ॥ ३६ ॥ (कफज्वरपर कायफलादिचूर्ण) कायफल, नागरमोथा, कुटकी, सोंठ, काकड़ासिंगी और पुष्करमूल इन द्रव्यन का चूर्ण शहद अदरख रससंग चाटै तो ज्वरहरै कंठशुद्ध होय कास, श्वास, अरुचि, वातशूल, छर्दि और क्षयी ये सब जाय ॥ ३७ । ३८ ॥ (बालककी खांसी ज्वरपर काकड़ासिंगी आदि चूर्ण) काकड़ासिंगी, अतीस और पीपरि का चूर्ण मधुयुक्त चटावै तौ बालककी खासी, ज्वर, छर्दि ये दूरहोयँ वैसेही केवल अतीस से भी उक्तरोग जायँ ॥ ३९ ॥ (आमातीसार पर शुंठ्यादि-

हिङ्गुमुस्ताकुटजचित्रकैः ।चूर्णमुष्णाम्बुनापीतंवातातीसारनाशनम् ४० हरीतकीप्रतिविषासिन्धुसौवर्चलंवचा। हिङ्गुचेतिकृतंचूर्णंपिबेदुष्णेनवारिणा ४१ आमातीसारशमनंग्राहिचाग्निप्रबोधनम्।मुस्तमिन्द्रयवंबिल्वंलोध्रंमोचरसंतथा ४२ धातकींचूर्णयेत्तक्रगुडाभ्यांपाययेत्सुधीः। सर्वातीसारशमनंनिरुणद्धिप्रवाहिकाम् ४३ लघुगङ्गाधरं नामचूर्णसङ्ग्राहकंपरम्।मुस्तारलूकशुण्ठीभिर्धातकीलोध्रवालकैः ४४बिल्वमोचरसाभ्यांचपाठेन्द्रयववत्सकैः।आम्रबीजंप्रतिविषालज्जालुरितिचूर्णितम् ४५ क्षौद्रतण्डुलपानीयपीतैर्यातिप्रवाहिका ।सर्वातीसारग्रहणीप्रशमंयातिवेगतः।वृद्धगङ्गाधरंनामसरिद्वेगविबन्धकम् ४६ तक्रेण यःपिबेन्नित्यंचूर्णंमरिचसम्भवम् । चित्रसौवर्चलोपेतंग्रहणींतस्यनश्यति। उदरप्लीहमन्दाग्निगुल्मार्शोनाशनम्भवे

चूर्ण) सोंठ, अतीस,हींग,नागरमोथा, कुरैया और चीता इनका चूर्ण उष्णपानी के साथ पियेसे आम व अतीसार दूरहोयें ॥ ४० ॥ (आमवात पर हरीतक्यादि चूर्ण) बड़ी हड, अतीस, सेंधालोन, कालालोन, वच और भुनी हींग इनका चूर्ण उष्णोदक सों पिये तो आमवातातीसार जाय तथा ग्राही हो अग्निको जगाता है (सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा, इन्द्रयव,

तु ४७ अष्टौभागाः कपित्थस्य षड्भागा शर्करामता। दाडिमं तिन्तिडीकं च श्रीफलं धातकी तथा ४८ अजमोदा च पिप्पल्यः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागिकाः। मरिचं जीरकं धान्यं ग्रन्थिकं वालकं तथा ४९ सौवर्चलं यवानी च धातुजातं सचित्रकम्। नागरं चैकभागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मचूर्णितम् ५० कपित्थाष्टकसञ्ज्ञं स्याच्चूर्णमेतद्गलामयान्। अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं चव्यपोहति ५१ दाडिमाद्द्विपलाग्राह्या खण्डाचाष्टपलानि च। त्रिगन्धस्य पलं चैकं त्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ५२ एतदेकीकृतं सर्वं चूर्णं स्याद्दाडिमाष्टकम्। रुचिकृद्दीपनं कण्ठ्यं ग्राहिकासज्वरापहम् ५३ दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकं। पिप्पली पिप्पलीमूलं यवानी मरिचं तथा ५४ धान्यकं जीरकं शुण्ठी प्रत्येकं पलसंमितम्। कर्षमात्रा तुगाक्षीरी त्वक्पत्रैला इभकेसरम् ५५ प्रत्येकं कोलमात्राः स्युरेतच्चूर्णं दाडिमाष्टकं अतीसारं क्षयं गुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहम्। मन्दाग्निपीनसं

सर्वे ये सब अच्छे होवैं॥ ४७॥ (संग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण) आठ भाग पक्का कैथा छः भाग खांड, अनार, अमली, बेलगिरी, धवफूल, अजमोद और पीपरि ये सब तीन तीन भाग मरिच, जीरा, श्वेत धनिया, पीपरामूल, सुगन्धवाला, अजवाइन, तज, चीता और सोंठ ये सब एक एक भाग इन सबको महीन चूर्ण करै यह कपित्थाष्टक नाम चूर्ण गले के रोग, अतीसार, क्षयी, गुल्म, ग्रहणी इन सबों को अच्छा करता है। ४८॥ ५१॥ (ग्रहणीपर दाड़िमाष्टक) अनारदाना आठ रुपयाभर, शक्कर चौसभर तज, पत्रज, इला यची तीनों मिला के चार भर त्रिकुटा बारह भर इन्हें एककरि चूर्ण करै यह दाड़िमाष्टक नाम चूर्ण रोचक, दीपन व ग्राही होकर कंठ शुद्ध करता हुआ व ज्वर को नाशता है॥ ५२॥ ५३॥ (अतीसार पर वृद्ध दाड़िमाष्टक) अनारदाना आठपल, पीपरि पीपरामूल, अजवाइन, मिर्चे धनियां श्वेत जीरा, सोंठ ये सब पल पलभर वंशलोचन दशमाशे तेज, मर्मज, एला, नागकेसर ये पांच पांचमासे यह दूसरा दाड़िमाष्टक चूर्ण, अतीसार, गुल्म, ग्रहणी, गलग्रह,

कासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ५६ लवङ्गंशुद्धकर्पूरमेलांत्वङ्नागकेसरम्। जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ५७कृष्णागुरुस्तुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा।चन्दनंतगरंवालंकक्कोलंचेतिचूर्णयेत् ५८ समभागानिसर्वाणिसर्वार्द्धाचसिताभवेत्। लवङ्गाद्यमिदंचूर्णंराजार्हंवह्निदीपनम् ५९ रोचनंतर्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नंबलप्रदम्। हृद्रोगंकण्ठरोगंचकासंहिकांचपीनसम् ६० यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरःक्षतम्। प्रमेहारुचिगुल्मादीन्ग्रहणीमपिनाशयेत् ६१ जातीफललवङ्गैलापत्रैस्त्वङ्नागकेसरैः। कर्पूरचन्दनतिलैस्त्वक्षीरीतगरामलैः ६२ तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रकस्थूलजीरकैः।शुंठीविडङ्गमरिचान्समभागान्विचूर्णयेत्। ६३यावन्त्येतानिसर्वाणिकुर्याद्भङ्गांचतावतीम्। सर्वचूर्णसमादेयाशर्कराचभिषग्वरैः ६४ कर्षमात्रंतथाखादेन्मधुनाप्लावितंसुधीः। अस्यप्रभावाद्ग्रहणीकासश्वासारुचिक्षयाः। वातश्लेष्मप्रतिश्यायाःप्रशमंयान्तिवेगतः ६५ मरिचंना

मंदाग्नि, पीनस और कास इन रोगों को नाश करै॥५४।५६॥ (क्षयी पर लवंगादि चूर्ण) लवंग, शुद्ध कपूर, इलायची दालचीनी, नागकेसर जायफल, खस सोंठ, कृष्णजीरा, कृष्णअगर, बंशलोचन जटामांसी, नीलकमल पीपरि, चन्दन तगर, सुगंधवाला और कंकोल इनका चूर्ण करि चूर्णकी आधी मिश्री मिलावै यह लवंगादिचूर्णराज, दीपन, रोचक, तृप्तिकारक होकर धातुपुष्ट करै त्रिदोषहरै बलप्रद, कंठ हृदयरोग, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास अतीसार, उरःक्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी इन सबोंको दूरकरै॥ ५७।६१॥ (जातीफलादि चूर्ण।) जायफल, लोंग, इलायची, तज पत्रज, नागकेसर, कपूर, चंदन, तिल, वंशलोचन, तगर, आंवरा, तालीसपत्र पीपरि, हड़, चीता, काला जीरा, सोंठ, वायविडंग और मरिच इन सबके समान भाग लेना तिसका चूर्ण करि चूर्ण के बराबर खांड़ दे कर्ष भर शहद मिलायके खाय इसके प्रभाव से ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ और नाक टपकना ये रोग वेगही

गपुष्पाणितालीसंलवणानिच। प्रत्येकमेकभागाःस्युःपिप्पलीमूलचित्रकैः ६६ त्वक्कणातिन्तिडीकंचजीरकंचद्विभागिकाः। धान्याम्लवेतसौविश्वंभद्रेलांवदराणिच ६७ अजमोदाजलधरःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः। सर्वौषधचतुर्थांशंदाडिमस्यफलंभवेत् ६८ द्रव्येभ्योनिखिलेभ्यश्चसितादेयार्द्धमात्रया। महाखाण्डवसञ्ज्ञंस्याच्चूर्णमेतत्सुरोचनम् ६९ अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकासातीसारनाशनम्। हृद्रोगकंठजठरमुखरोगप्रणाशनम् ७० विसूचिकांतथाऽऽनाहमर्शो गुल्मकृमीनपि। छर्दिपञ्चविधांश्वासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ७१ चित्रकस्त्रिफलाव्योषंजीरकंहवुषावचा। यवानीपिप्पलीमूलंशतपुष्पाजगन्धिका ७२ अजमोदाशटीधान्यंविडङ्गंस्थूलजीरकम्। हेमाह्वापौष्करंमूलंक्षारौलवणपञ्चकम् ७३ कुष्ठंचेतिसमांशानिविशालास्याद्विभागिका। तद्वत्त्रिभागाविज्ञेयादन्त्याभागत्रयंभवेत् ७४ चतुर्भागाशातलास्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत्। पाचनंस्नेहनाद्यैश्च

दूरहोयँ ॥ ६२।६४॥ (अरुचि पर महाखांडवचूर्ण) मरिच, नागकेसर, तालीसपत्र, पांचों लोन ये सब समान भाग लेना पीपरामूल, चित्रक, तज, पीपरि, अमलीकीछाल और जीरा ये सब दो २ भाग लेना धनियां, अम्लवेतस, सोंठ बड़ी इलायची, बेर, अजमोद और मोथा ये तीन तीन भाग सब द्रव्यकी चौथाई अनार सबकी आधी मिश्रीदे यह महाखांडव संज्ञक चूर्ण रोचक दीपन हो हृदय को बलदायकहै तथा अतीसार हृदयरोग, कंठ जलना, मुखरोग, हैजा, पेट फूलना ववासीर, गुल्म, कृमिरोग, पंचविधछर्दि और श्वास इन्हाको नाशकरै ॥ ६६ ॥ ७१ ॥ (उदररोगपर नारायण चूर्ण) चीता, त्रिफला, सोंठ, पीपरि, मरिच, जीरा, हाऊबेर, वच, अजवाइन, पीपरामूल, सौंफ, अजमोद, कचूर, धनिया, वायविडंग, कालीजीरी, चोक, पुष्करमूल, दोनोंखार, पाँचौंलोन और कूट ये सब समान ले इन्द्रायणकीजड़ दो भाग, निशोथ तीन भाग, जमालगोटा तीन भाग, पीतपुष्पी, सेहुण्डमूल चारि भाग इन सबोंको एकत्रकरि चूर्णकरै कठिन

स्निग्धकोष्ठस्यरोगिणः ७५ दद्याच्चूर्णविरेकायसर्वरोगप्र
णाशनम्। हृद्रोगेपाण्डुरोगेचकासेश्वासेभगन्दरे७६मन्दे
ग्नौचज्वरेकुष्ठेग्रहण्यांचगलग्रहे। दद्याद्युक्तानुपानेनतथा
ध्मानेसुरादिभिः ७७ गुल्मेबदरनीरेणविड्भेदेदधिमस्तु
ना। उष्णाम्बुभिरजीर्णेच वृक्षाम्लैःपरिकर्तिषु७८ उष्ट्रीदु
ग्धेनोदरेषुतथातक्रेणवागवाम्। प्रसन्नयावातरोगेदाडिमै
रर्शसांतथा ७९ द्विविधेचविषेदद्यादूघृतेनविषनाशनम्।
चूर्णनारायणंनामदुष्टरोगगणापहम् ८० हवुषात्रिफलाचै
वत्रायमाणाचपिप्पली । हेमक्षीरस्त्वचैव शातलाक
टुकावचा ८१ नीलनीसैन्धवंकृष्णालवणंचेतिचूर्णयेत्।
उष्णोदकेनमूत्रेणदाडिमात्रिफलारसैः ८२ तथामांसर
सेनापियथायोग्यंपिबेन्नरः। अजीर्णेप्लीहगुल्मेषुशोफा
र्शोविषमाग्निषु ८३ हलीमकामलापाण्डुकुष्ठाध्मानो
दरेष्वपि । शुण्ठीहरीतकीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलंतथा।

कम् । शुण्ठीहरीतकीचेतिक्रमवृद्ध्याविचूर्णयेत् । वडवा नलनामैतच्चूर्णंस्यादग्निदीपनम् १ अजमोदाविडङ्गा निसैन्धवंदेवदारुच । चित्रकःपिप्पलीमूलंशतपुष्पाचपि प्पली २ मरिचंचेतिकर्षांशंप्रत्येकंकारयेद्बुधः । कर्पा स्तुपञ्चपथ्यायाःदशस्युर्वृद्धदारुकात् ३ नागराच्चदशैव स्युःसर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पिबेत्कोष्णजलेनैवचूर्णंचगुड सम्मितम् ४ भक्षयेदथवासम्यक्परश्वयथुनाशनम् । आ मवातरुजंहन्ति सन्धिपीडांचगृध्रसीम् ५ कटिपृष्ठगुदा स्थनाऽचजङ्घयोश्चरुजंजयेत् । तूणींप्रतूणींविश्वाचींक फवातामयाञ्जयेत् ६ हिङ्गुपाठाभयाधान्यंदाडिमंचित्रकः शटी । अजमोदात्रिकटुकंहवुषाचाम्लवेतसम् ७ अजग न्धातिन्तिडीकंजीरकंपौष्करंवचा । चव्यंक्षारद्वयंपञ्चलव णानिविचूर्णयेत् ८ प्राग्भोजनस्यमध्येवाचूर्णमेतत्प्रयो

अग्नि दीप्त व रुचिको उपजाताहुआ कफको नाशताहै ॥ २०० ॥ (मन्दाग्नि पर वडवानलचूर्ण) सेंधा पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता, सोंठ और बड़ी हड़ क्रमसे बढाय चूर्ण करै जैसे सेंधा १ माशा तौ पीपरामूल २ माशा पीपरि ३ माशाभर लेना यह वड़वानल नाम अग्नि को जगाताहै ॥ १ ॥ (वातादि पर अजमोदादिचूर्ण) अजमोद, वायविडंग, सैंधव, देवदारु, चीता, पीपरामूल, सौंफ, पीपरि ॥ २ ॥ और मिर्च ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर हड़ पांच कर्ष विधारा दशकर्ष ॥ ३ ॥ सोंठ दशकर्ष इन सबोंको चूर्ण कर गुड़मिश्रित करि उष्णोदक से पिये ॥ ४ ॥ अच्छीतरह खाय तौ सूजन दूरहोय और आमवात, गाढे पीड़ा, गृध्रसी वायु ॥ ५ ॥ कटिपीड़ा, पीठ, गुदा, जांघपीड़, तूनीवायु, प्रतूनी व गु, विश्वाची, कफरोग और वायुके रोग ये सब नाशहोयँ ॥ ६ ॥ (शूलादिपर हिंग्वादिचूर्ण) भुनी हींग, पाढा, बड़ी हड़, धनियां, अनारदाना, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाऊबेर अम्लवेतस ॥ ७ ॥ वनतुलसी, इमली की छाल, जीरा, पुष्करमूल, वच, चाव, दोनोंखार और पांचोंलोन इन सबोंको चूर्णकरै ॥ ८ ॥ भोजनादिक के प्रथम अथवा पुराने मद्यके संग या गरम

जयेत्। पिबेद्वाजीर्णमद्येनतक्रेणोष्णोदकेनवा ९ गुल्मे वातकफोद्भूतेविड्ग्रहेऽष्ठीलिकासुच। हृद्बस्तिपार्श्वशूलेषु शूलेचगुदयोनिजे १० मूत्रकृच्छ्रेतथानाहेपाण्डुरोगेऽरुचौ तथा। हिक्कायांयकृतिप्लीह्निश्वासेकासेगलग्रहे ११ ग्रह ण्यर्शोविकारेषुचूर्णमेतत्प्रशस्यते। भावितंमातुलुङ्गस्यब हुशःस्वरसेनवा। कुर्याच्चगुटिकाःपथ्यावातश्लेष्मामया पहाः १२ यवानीदाडिमंशुण्ठी तिन्तिडीकाम्लवेतसौ। बदराम्लंचकुर्वीतचतुःशाणमितानिच १३ सार्द्धद्विशा णमरिचं पिप्पली दशशाणिका। त्वक्सौवर्चलधान्याकं जीरकंद्विद्विशाणिकम् १४ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करा मत्रयोजयेत्। चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम्। १५ नाशयेत्पाण्डुरोगंचहृद्रोगंग्रहणीज्वरम्। छर्दिशोषा तिसारांश्चप्लीहानाहविबन्धता। अरुचिंशूलमन्दाग्नीचा र्शोजिह्वागलामयान् १६ तालीसंमरिचंशुण्ठीपिप्पलीवं शलोचना। एकद्वित्रिचतुष्पञ्चकर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत् १७

जल के साथ खाय ॥ ९ ॥ वात कफ का गुल्म, कोष्ठबन्ध, अष्ठीलिका, हृदय, पेडू, पसुरी, गुदा और योनिके सब शूल ॥ १० ॥ मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पाण्डु, अरुचि, हिचकी, यकृत्, प्लीहा, श्वास, कास, गलरोग ॥ ११ ॥ ग्रहणी और अर्श इनपर यह चूर्ण है बिजौरा के रस में सात भावना दे गोली बांध ले इस से वात कफ रोग नाशहोयँ ॥ १२ ॥ (अरुचिपर यवानीखाण्डव चूर्ण) अजवाइन, अनारदाना, सोंठ, इमली की दाल, अम्लवेतस और झरबेर ये सब चार चार शाण ॥ १३ ॥ मरिच ढाई शाण, पीपरि दशशाण, तज, कालानोन, धनियां, जीरा ये दो दो शाण ॥ १४ ॥ शर्करा चौंसठि शाण "शाण चारिमाशे का होताहै" इन सबों का चूर्ण करे इसे यवानी-खांडव कहते हैं ॥ १५ ॥ यह पांडु, हृद्रोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अतीसार, प्लीहा, पेट फूलना, कोष्ठबद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्श, जीभरोग और गलारोग इन सबोंको विनाशत है ॥ १६ ॥ (अरुचिपर तालीसादिचूर्ण)

इभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्रकौ । भल्लातकविडङ्गानि शर्करामलकंनिशा ३४ पिप्पलीमरिचंशुण्ठीवाकुचीकृत मालकः । गोक्षुरश्चपलोन्मानमेकैकंकारयेद्बुधः ३५ सर्व मेकीकृतंचूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् । अष्टभागावशिष्टेनखदि रासनवारिणा ३६ भावयित्वाचसंशुष्कंकर्षमात्रंततःपिबे त् । खदिरासनतोयेनसर्पिषापयसाथवा ३७ मासेनसर्वकु ष्ठानिविनिहन्तिरसायनम् पञ्चनिम्बमिदंचूर्णंसर्वरोगप्र णाशनम् ३८ शतावरीगोक्षुरकंबीजंचकपिकच्छुजम् । गाङ्गेरुकीचातिबलाबीजमिक्षुरकोद्भवम् ३९ चूर्णितंसर्व मेकत्रगोदुग्धेनपिबेन्निशि । नतृप्तियातिनारीभिर्नरश्चूर्ण प्रभावतः ४० अश्वगन्धादशपलास्तन्मात्रोवृद्धदारुकः । चूर्णीकृत्योभयंविद्वान् घृतभाण्डेनिधापयेत् ४१ कर्षंकंप यसापीत्वानारीभिर्नैवतृप्यति । अगत्वाप्रमदांभूयोबली पलितवर्जितः ४२ चित्रकंत्रिफलामुस्ताविडङ्गंत्र्यूषणा नि च । समभागानिकार्याणिनवभागाहृतायसः ४३ एतदे कीकृतंचूर्णंमधुसर्पिर्युतंलिहेत् । गोमूत्रमथवातक्रमनुपा नंप्रशस्यते ४४ पाण्डुरोगंजयत्युग्रंहृद्रोगंचभगन्दरम् ।

निम्ब चूर्ण कहते हैं क्योंकि सब रोगों को नाश करता है ॥ ३३ । ३८ ॥ (शतावरिचूर्ण पुष्टिपर) शतावरि, गुखुरू, कौंचके बीज, गुलसकरी खरियारा, तालमखाना ॥ ३९ ॥ इनका चूर्ण गोदुग्ध में पिये इस के प्रभाव से स्त्री से तृप्त न होय और जो स्त्रीप्रसंग न करै तो बली होय बार स्वेत न होवैं ॥ ४० ॥ (पुष्टि पर अश्वगंधादि चूर्ण) नागौरी असगंध चालीस तोले भर, विधारा चालीसभर इन दोनों को महीन चूर्ण कर घृतके भाजनमें धरे ॥ ४१ ॥ दशमाशे दूध में पिये तो स्त्रीसे तृप्त न होय (धातुवृद्धिपर नवायसादि चूर्ण) चीता, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडङ्ग और त्रिकुटा ये सब समान नव अंश फौलाद भस्म ॥ ४२ । ४३ ॥ इनका चूर्ण शहद और घृतके संगचाटै या गोमूत्र व मट्ठा

शोथकुष्ठोदरार्शांसिमन्दाग्निमरुचिंकृमीन् ४५ अकार
करभःशुण्ठीकङ्कोलंकुङ्कुमंकणा । जातीफलंलवङ्गंचचन्द
नंचेतिकार्षिकान् ४६ चूर्णानीमांस्ततःकुर्यादहिफेनंपलो
न्मितम् । सर्वमेकीकृतंचूर्णंसूक्ष्मंवस्त्रगालितम् ४७ सि
तासर्वसमादेयामाषैकंमधुनालिहेत् । शुक्रस्तम्भकरंचूर्णं
पुंसामानन्दकारकम् । नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामु
कः ४८ बकुलत्वग्भवंचूर्णंघर्षयेद्दन्तपंक्तिषु । वज्रादपिदृढी
भूतादन्तास्स्युश्चपलाध्रुवम् ४९ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्य
खण्डेचूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वटिकाश्चाथकथ्यन्तेतन्नामगुटिकावटी । मोदकोवटि
कापिण्डीगुण्डीवर्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडो
वाशर्करायथा । गुग्गुलुंवाक्षिपेत्तत्रचूर्णंतन्निर्मितावटी २
कुर्य्याद्वह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी । द्रव्येणमधुना
वापिगुटिकांकारयेत्सुधीः ३ सिताचतुर्गुणादेयावटीषु
द्विगुणोगुडः । चूर्णाच्चूर्णसमःकार्य्योगुग्गुलुंमधुतत्सम

के साथ ॥ ४४ ॥ तो पांडु, हृद्रोग, भगंदर, सूजन, कोढ़, उदररोग अर्श मन्दाग्नि, अरुचि और कृमि नाशहोवैं ॥ ४५ (स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण) अकरकरहा, सोंठ, कंकोल, केसर पीपरि, जायफल, लौंग और श्वेतचन्दन इन्हें कर्षकर्ष भरले ॥ ४६ ॥ चूर्ण करि पलभर अफीमदे पीसि कपड़छानले ॥ ४७ ॥ और सब के समान खांड देय माशाभर शहदमें चाटै यह चूर्ण वीर्यस्तंभन कर स्त्री पुरुषों को सुख देता है इसलिये कामी पुरुष इसे रातिको सेवन करै ॥ ४८ ॥ (मंजन) मौलसिरीकी छालके चूर्ण को दांतों में घिसाकरै तो हिलते हुये भी दांत वज्र समान होजाते हैं ॥ ४९ ॥ इति श्रीश इन्द्रसुधाकरेचूर्णकल्पनाषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

(अथ वटी कल्पना) वटिका गुटिका वटी मोदक पिंडी गुण्डी और वर्त्ति ये गोली के नाम हैं ॥ १ ॥ गुड़ और खांड दे आगि में पकावै जैसे अवलेह तब गुग्गुलु व चूर्ण उसी पाक में डारि गोली बाधै ॥ २ ॥ बिना आगि के योगगुग्गुलु से भी गोली बँधती है और गीली वस्तु तथा शहद से भी बँधती है ॥ ३ ॥ मिश्री

सू०४ द्रवंचद्विगुणंदेयंमोदकेपुंभिपत्वरैः। कर्षप्रमाणंत न्मानेंबलंदृष्ट्वाप्रयुज्यताम्.५ इन्द्रवारुणिकामुस्ताशुण्ठीद न्तीहरीतकी। त्रच्छटीविडङ्गानिगोक्षुरश्चित्रकस्तथा ६ तेजोह्वाचद्विकर्षाणिपृथग्द्रव्याणिकारयेत्। शूरणस्यपला न्यष्टौवृद्धदारुचतुष्पलम्.७ चतुष्पलंस्याद्भल्लातःक्वाथये त्सर्वमेकतः। जलद्रोणेचतुर्थांशंगृह्णीयात्क्वाथमुत्तमम्. ८ क्वाथ्यद्रव्यात्त्रिगुणितंगुडंक्षिप्त्वापुनःपचेत्। सम्यक्पक्वं वज्ञात्वाबेचूर्णमेतत्प्रदापयेत्. ९ चित्रकस्त्रिवृतादन्तीते जोह्वापलिकाःपृथक्। पृथक्त्रिपलिकाभागाव्योपेलाम रिचत्वचम्. १०. निक्षिपेन्मधुशीतेचतस्मिन्प्रस्थप्रमाण कम्। एवंसिद्धोभवेच्छ्रीमान् बाहुशालगुडाभिधः ११ जये दर्शांसिसर्वाणिगुल्मंवातोदरंतथा। आमवातंप्रतिश्यायं ग्रहणीक्षयपीनसान्। हलीमकंपांडुरोगंप्रमेहंच विनाश येत् १२ मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसम्मिता। अर्द्ध

चौगुनी गुड़ दूना चूर्ण लिखे प्रमाणदेना गुग्गुलु शहद बराबर देना ॥ ४॥ द्र वस्तु दूनी देना सद्वैद्य यही रीति करें, कर्षभर गोली खाने का प्रमाण है व देह बल दोष देखि खिलावै ॥ ५ ॥ (इन्द्रारुकी गुटिका अर्शोपर) इन्द्रायण की जड़, नागरमोथा, सोंठ, जमालगोटा के जड़की छाल, हड़, निशोथ, कचूर, वायविडंग, गुखुरू, चीता ॥ ६ ॥ और बच ये सब दो दो कर्ष, जमीकन्द आठ पल, विधारा चारपल ॥ ७ ॥ भिलावां चारपल द्रोण भर, पानीमें औटै, जब चौथाईरहै तब उतारलेय ॥ ८ ॥ छान के उसका तिगुना, गुड़दे पाककरे जब प- कनिवार उठै तब यह चूर्णडालै ॥ ९ ॥ चीता, निशोथ, जमालगोटाकी जड़ और बच ये पल पल भर त्रिकुटा, इलायची, मरिच और तज तीन तीनपल इनको पीस छानके प्रस्थभर शहद में पूर्वोक्त यह चूर्णयुक्त चँधने मुवाफिकहो मिलावै तब बाहु- शाल गुड़ सिद्धहोता है ॥ १० ॥ ११ ॥ यह सब अर्श, गुल्म, वातोदर, आमवात, नाकटपकना, संग्रहणी, क्षयी, पीनस, हलीमक, पांडु और प्रमेह इन सबोंको जीतता है ॥ १२ ॥ (कासपर मरिचादि गुटिका) मरिच, पीपरि, कर्ष कर्ष भर

कर्षोयवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमम्‌ १३ एतच्चूर्णीकृतंयु
ञ्ज्यादष्टकर्षगुडेनहि।शाणप्रमाणांवटिकांकृत्वावक्त्रेविधा
रयेत्। अस्याःप्रभावात्सर्वेपिकासायान्त्येवसंक्षयम्‌ १४गु
डशुण्ठीशिवामुस्तैर्धारयेद्गुटिकांमुखे। श्वासकासेषुसर्वे
षुकेवलंवाविभीतकम्‌ १५ आमलंकमलंकुष्ठंलाजाश्चवट
रोहकम्‌। एतच्चूर्णस्यमधुना गुटिकांधारयेन्मुखे। तृष्णां
वृद्धांहरत्येषामुखशोषंचदारुणम्‌ १६ विडङ्गंनागरंकृ
ष्णापथ्यामलविभीतकौ। वचागुडूचीभल्लातंसविषंचा
त्रयोजयेत्‌ १७ एतानिसमभागानिगोमूत्रेणैवपेषयेत्‌।
गुञ्जाभागुटिकाकार्या दद्यादार्द्रकजैरसैः १८ एकामजीर्णे
गुल्मेषुद्वेविसूच्यांप्रदापयेत्‌। तिस्त्रस्तुसर्पदष्टेतु चतस्त्र
स्सन्निपातके। वटीसञ्जीवनीनाम्ना संजीवयतिमानवम्‌
१९ व्योषाम्लवेतसंचव्यं तालीसंचित्रकंतथा। जीरकं
तिन्तिडीकंचप्रत्येकंकर्षभागिकम्‌ २० त्रिसुगन्धंत्रिशाणं

जवाखार ५ माशे, अनारदाना दो कर्ष ॥ १३ ॥ गुड़ आठकर्ष में चारि चारि माशे
की गोली बांधे सो मुख में धरे राखै इस के प्रभावसे सब खांसी जायँ ॥ १४ ॥
(श्वासपर गुड़ादि गुटिका) गुड़, सोंठ, हड़ नागरमोथा इन की गोली
जितने गुड़ से बँधे माशे भरकी मुहँमें राखै वो सब श्वास, कास हरै वैसे केवल ब-
हेरा रखने से ॥ १५ ॥ (श्वासपर आंवरादिवटी) आंवला, कमल, कूट,
लाजा, बटजटा इन्हें पीसि शहद में गोली बांधि मुखमें राखै तो महातृषा व मुख
सूखना दूरहो ॥ १६ ॥ (सन्निपातपर संजीवनीगुटिका) वायबिडंग,
सोंठ, पीपरि, हड़, आंवरा, बहेरा, बच, गुर्च, भिलावां शुद्धकियाहुआ बच्छनाग ॥
१७ ॥ इन सबोंको समान ले गोमूत्र में खरल करै घुंघची समान गोली बांधै व
अदरखके रसमें खिलावै ॥ १८ ॥ अजीर्ण में गोली एक, विसूचिका (हैज़ा) में
दो सांप के डसे को तीन सन्निपात में चार इसका संजीवनी वटी नामहै मनुष्य को
जिलाती है ॥ १९ ॥ (पीनसादि पर त्रिकुटादिवटी) त्रिकुटा, अम्ल-

रयांदूगुडःस्यात्कर्षविंशतिः । व्योषादिगुटिकासामपी नसश्वासकासजित् । रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्र णाशिनी २१ आमेपुसगुडांशुण्ठीमजीर्णेगुडपिप्पलीम्॥ कृच्छ्रेजीरगुडंदद्यादर्शस्सु सगुडाभयाम् २२ वृद्धदारुक भल्लातंशुण्ठीचूर्णेनयोजितः । मोदकःसगुडोहन्यात्प ड्विधार्शःकृतांरुजम् २३ शुष्कशूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रि शदाहरेत्। भागान्षोडशचित्रस्यशुण्ठ्याभागचतुष्टयम् २४ द्वौभागौमरिचस्यापिसर्वमेकत्रचूर्णयेत् । गुडेनपि ण्डिकांकुर्यादर्शसांनाशिनींपराम् २५ शूरणोवृद्धदारुश्च भागैःषोडशभिःपृथक्।मुसलीचित्रकौज्ञेयावष्टभागमितौ पृथक् २६ शिवाविभीतकोधात्रीविडङ्गंनागरंकणा। भ ल्लातःपिप्पलीमूलं तालीसंचपृथक्पृथक् २७ चतुर्भाग प्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा । द्विभागमात्राणिपृथक्स र्वांस्त्वेकत्रचूर्णयेत् २८ द्विगुणेनगुडेनाथवटिकांकारये

चेतस, चाप,तालीसदल,चीता, जीरा और इमली की छाल ये सब कर्ष कर्षभर॥ २०॥और तज,पत्रज व इलायची चारि चारि माशे गुड बीस कर्ष यह व्योषादिनाम गुटिका पीनस, श्वास व कासको नाशकरै रुचिकरै कंठस्वर शुद्धकरै व नाकका टपकना बंद करती है ॥ २१ ॥ आंवदोषमें गुड़ सोंठकी गोली देना, अजीर्ण में गुड़ पीपरि, कृच्छ्र में गुड़ जीरा, बवासीर में गुड़ हड़की गोली देना ॥ २२ ॥ (अर्शपर वृद्धदारुमोदक) विधारा, भिलावां और सोंठ पीसि गुड़में गोली बांधिदेइ तौ छहों भांतिके अर्श दूरकरै ॥ २३ ॥ (अर्शपर सूरनवटिका) सूखे सूरनका चूर्ण बत्तीसभाग, चीता सोलहभाग, सोंठ चारभाग ॥ २४ ॥ मरिच दोभाग सब चूर्णकरि गुड़में गोली बांधिखिलावै तौ सब अर्श नाशहोवैं॥ २५ ॥ (पुनः)सूरन विधारा सोलह सोलह भाग लेय मुसली आठभाग और चीता भी आठभाग लेय ॥ २६ ॥ त्रिफला, विडंग, सोंठ,पीपरि, भिलावां,पिपरा-मूल और तालीस भिन्न भिन्न॥२७॥चार चार भाग, तज,इलायची व मरिच दो२

दूबुधः। प्रबलाग्निंत्रकुरुतेतथार्शोनाशनापरा २९ ग्रह
णींवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयम्। प्लीहानंश्लीपदंशो
थंप्रमेहंचभगन्दरम्। निहन्तिपलितंवृष्यातथामेध्या
रसायनी ३० त्रिफलात्र्यूषणंचव्यंपिप्पलीमूलचित्रक
म्। दारुमाक्षिकधातुश्चदार्वीमुस्तंविडङ्गकम् ३१ प्र
त्येकंकर्षमात्राणिसर्वद्विगुणितंतथा। मण्डूरंचूर्णयेच्छुद्धं
गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत् ३२ पक्काचवटकान्कृत्वादद्यात्त
क्रानुपानतः। कामलापाण्डुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान्।
ऊरुस्तम्भमजीर्णंचप्लीहानंनाशयेदपि ३३ चन्द्रप्रभाव
चामुस्तंभूनिम्बामरदारुच। हरिद्रातिविषादार्वीपिप्पली
मूलचित्रकान् ३४ धान्यकंत्रिफलाचव्यंविडङ्गंगजपिप्प
ली। व्योषंमाक्षिकधातुश्चद्वौक्षारौलवणत्रयम् ३५ ए
तानिशाणमात्राणिप्रत्येकंकारयेद्बुधः। त्वक्दन्तीपत्र
कंचत्वगेलावंशरोचना ३६ प्रत्येकंकर्षमात्राणिकुर्यादेता

भाग इनसबोंका चूर्णकरि ॥ २८ ॥ इने गुडमें गोलीबांधि खिलावै तौ अग्निप्रबल होय और अर्श जाय ॥२९॥ तथा वातकफजन्य ग्रहणी, श्वास, कास, क्षयी, प्लीहा, फीलपाव, शोथ, प्रमेह, भगंदर, बार श्वेत होना ये सबमिटैं धातुष्टादि प्रबलकरै यह रसायनीहै ॥ ३० ॥ (कामलादि पर मंडूरवटक) त्रिफला, त्रिकुटा, चाब, पिपरामूल, चीता, देवदारु, सोनामाखी, हल्दी, नागरमोथा, विडंग ॥ ३१ ॥ ये कर्ष कर्ष भर मंडूर शोधकै सबसे दूनाले फिर अठगुने गोमूत्रमें ॥ ३२ ॥ पकाय गोलीबांधि मट्ठेके साथ खाय तौ कामला, पांडु, प्रमेह, अर्श, शोथ, कुष्ठ, कफरोग, गठिया, अजीर्ण और प्लीहा इनको नाशकरै ॥ ३३ ॥ कपूर, बच, नागरमोथा, चिरायता, देवदारु, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पिपलामूल, चीता ॥ ३४ ॥ धनियां, त्रिफला, चाब, वायविडंग, गजपीपरि, त्रिकुटा, सोनामाखी की भस्म, सज्जीखार, जवाखार तीनोंलोन सेंधा, काला, पांगा ॥ ३५ ॥ ये सबद्रव्य चारचार मासे निशोथ, जमालगोटा, पत्रज, तज, इलायची और वंशलोचन ॥ ३६ ॥ इनको कर्ष कर्षभर बुद्धिमान्

निर्बुद्धिमान् । द्विकर्षहतलोहस्यचतुष्कर्षासिताभवेत् ३७ शिलाजत्वष्टकर्षाःस्युरष्टौकर्षाश्चगुग्गुलोः । एभिरेकत्र संक्षुण्णैःकर्त्तव्यागुटिकाशुभा ३८ चन्द्रप्रभेतिविख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी । प्रमेहान्विंशतिंकृच्छ्रम्मूत्राघातंतथाश्मरीम् ३९ विबन्धानाहशूलानिमेहनंग्रन्थिमर्बुदम् । अण्डवृद्धिंकटीशूलंश्वासंकासंविचर्चिकाम् ४० अन्त्रवृद्धिंतथापाण्डुकामलांचहलीमकम् । कुष्ठान्यर्शांसिकण्डूंच प्लीहोदरभगन्दरम् ४१ दन्तरोगंनेत्ररोगंस्त्रीणामार्त्तवजांरुजम् । पुंसांशुक्रगतान्रोगान्मन्दाग्निमरुचिंतथा ४२ वातपित्तकफंहन्याद्बल्यावृष्यारसायनी । चन्द्रप्रभायाः कर्षस्तुचतुःशाणोविधीयते ४३ यवानीजीरकंधान्यंमरिचंगिरिकर्णिका । अजमोदोपकुञ्चीचचतुःशाणाःपृथक्पृथक् ४४ हिङ्गुषट्शाणिकंकार्यंक्षारौलवणपञ्चकम् । त्रिवृच्चाष्टमितैःशाणैःप्रत्येकङ्कल्पयेत्सुधीः ४५ दन्तीशटीपौष्करंचविडङ्गंदाडिमंशिवा । चित्राम्लवेतसःशुण्ठीशाणैः

लेय लोहभस्म दो कर्ष इन सबका चूर्णकरि मिश्री चारकर्ष ॥ ३७ ॥ शुद्धशिलाजीत आठकर्ष गूगुल आठकर्ष ये सब एकत्रकरि कूटिकै गुटिका सुंदर बनावै ॥ ३८ ॥ यह चंद्रप्रभा गुटिका सर्वरोग नाशकरै नाम प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी ॥ ३९ ॥ विबंध, पेटफूलना, शूल, इंद्रिय फूलना, ग्रंथि, अर्बुद, अंडवृद्धि, कटिशूल, श्वास, कास, कुष्ठभेद ॥ ४० ॥ अंत्रवृद्धि, पांडु, कामला, हलीमक, सब कुष्ठ, सब अर्श, खजुरी, प्लीहा, उदररोग, भगंदर ॥ ४१ ॥ दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री का ऋतुरोग, पुरुषका धातुरोग, मन्दाग्नि, अरुचि ॥ ४२ ॥ वात पित्त कफ सब नाशकरै बलकरै धातुबढावै यह रसायन है दशमाशे वा सोलहमाशे वा दोषबल विचारिकै खाय ॥ ४३ ॥ (गुल्मपर अजवायनगुटिका) अजवायन, जीरा, धनियां, मिर्च, विष्णुक्रांता, अजमोद, मगरेला भिन्नभिन्न चारशाण ॥ ४४ ॥ भूनीहींग छह शाण, दूनों खार, पांचों लोन और निशोथ ये आठ आठ शाण ॥ ४५ ॥ जमालगोटा, कचूर

षोडशभिःपृथक्॥४६॥बीजपूररसेनैव गुटिकांकारयेद्बुधः। घृतेनपयसामद्यैरम्लैरुष्णोदकेनवा ४७ पिबेत्काङ्कायन प्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम् । मद्येनवातकेगुल्मेगोक्षीरेणचपैत्तिके ४८ मूत्रेणकफगुल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम्। उष्ट्रीदुग्धेननारीणांरक्तगुल्मंविनाशयेत् ४९ हृद्रोगंग्रहणीशूलंकृमीनर्शांसिनाशयेत् । नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्पलीमूलचित्रकौ । भृष्टहिङ्ग्वजमोदाचसर्षपाजीरकद्वयम् ५० रेणुकेन्द्रयवापाठाविडङ्गगजपिप्पली । कटुकातिविषाभार्गीवचामूर्वेतिभागतः ५१ प्रत्येकंशाणिकानिस्युर्द्रव्याणीमानिविंशतिः । द्रव्येभ्यस्सकलेभ्यश्चत्रिफला द्विगुणाभवेत् । एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समोदेयश्चगुग्गुलुः ५२ वङ्गरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकम् । मण्डूरं रससिन्दूरंप्रत्येकंपलसंमितम् ५३ गुडपाकसमंकृत्वाचेमं दद्याद्यथोचितम् । एकपिण्डंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाज

पुष्करमूल, वायविडंग, अनारदाना, पडीरह, चीता, अम्लवेतस और सोंठ इन सबोंको सोलह शाणले चूर्णकरै ॥ ४६ ॥ फिर बिजौराके रसमें वटी बांधे घृत, दूध मद्य, नींबूरस और उष्णोदक ॥ ४७ ॥ इनके संग काकायनकी कहीहुई गोली वैद्य खिलावै यह गोली गुल्मको व वातगुल्मको नाशकरै तथा मद्यमें पित्तगुल्मको गोदुग्ध के संग ॥ ४८ ॥ कफ गुल्मको गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्मको दशमूलके क्वाथसाथ स्त्री के रक्तगुल्मको उष्ट्रीदुग्ध संगदेय तो ॥ ४९ ॥ हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, कृमिरोग और बवासीरों को नाशकरै (वातादिरोगपर योगराजगुग्गुलु) सोंठ, पीपरि, चाव, पिपलामूल, चीता, भुनीहींग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे ॥ ५० ॥ मेवडीबीज, इंद्रयव, पाढा, वायविडंग, गजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, वच, मूर्वा और गुलुरु ॥ ५१ ॥ ये सब शाणशाणभर सबका दूना त्रिफलेका चूर्ण सब चूर्ण के समान शुद्ध गूगुल ॥ ५२ ॥ वंग, रूपरस, नागेश्वर, लोह, अभ्रक, मंडूर और रससिंदूर इनको पल पल भरदे ॥ ५३ ॥ गुडपाक करि रस और सब

मजीर्णंच व्यवायं श्रममातपम्। मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गु णार्थीपुरसेवकः ७३ त्रिपलंत्रिफलाचूर्णंकृष्णाचूर्णंपलो न्मितम्। गुग्गुलुःपञ्चपलिकः चोदयेत्सर्वमेकतः ७४ ततस्तुवटिकांकृत्वा प्रयुञ्ज्याद्वह्न्यपेक्षया। भगन्दरंगुल्म शोथावर्शांसि च विनाशयेत् ७५ अष्टाविंशतिसङ्ख्या त्रिपलान्यानीयगोक्षुरात्। विपचेत्षड्गुणेनीरे क्वाथोग्रा ह्योऽर्द्धशेषतः ७६ ततःपुनःप्रवेत्तत्रपुरं सप्तपलंक्षिपे त्। गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वातत्रविनिक्षिपेत् ७७ त्रिक टुत्रिफलांमुस्तं चूर्णितंपलसप्तकम्। ततःपिण्डीकृतस्या स्यगुटिकामुपयोजयेत् ७८ हन्यात्प्रमेहंकृच्छ्रंचप्रद रंमूत्रघातकम्। वातासृंवातरोगांश्च शुक्रदोषंतथाश्म रीम् ७९ त्रिफलात्रिपलाकार्याभल्लातानांचतुष्पलम्। बा कुचीपञ्चपलिकाविडङ्गानांचतुष्पलम् ८० हतलोहंतद् द्वैवगुग्गुलुश्चशिलाजतु। एकैकंपलमात्रंस्यात्पलार्द्धं

क्वाथसंग गुल्म दूरकरै ॥७२॥ व खदिरादिकाथ संग व्रण व कुष्ठ दूरकरै व खट्टी, तीक्ष्ण, मैथुन, श्रम, घाम, मद्य और क्रोध इनसबोंको त्यागकर जो गुण चाहै तो संयम से रहै ॥७३॥ (भगंदर पर त्रिफलागुग्गुलु) त्रिफलाचूर्ण तीन पल, पिप्पली चूर्ण पलभर और शुद्धगुगुल पांचपल इनको पीसिके एकत्रकरै ॥७४॥ गोली बांधि रोगीकी अग्नि विचारिके देय तो भगंदर, गुल्म, शोथ और ववासीर दूरहोयँ॥७५॥ (प्रमेह गोक्षुरादिगुग्गुल) गोखुरू अट्ठाईसपल छःगुणे पानी में काढाकरि अर्द्ध शेषले॥७६॥ फिरि सातपल गुगुलडे पकावै जब गुड़ पाकसाहो तबजो द्रव्य कहताहूं सोपीसके डारै ॥७७॥ त्रिकुटा, त्रिफला और नागरमोथा ये सातों पलपलभरमिलायपिंडीकरि गोलीबांधे तो ॥७८॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ, प्रदर, मू- त्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्रदोष और पथरी येसबनाशहोयँ॥७९॥ (कुष्ठ पर त्रिफलामोदक) त्रिफला तीनपल, भिलावांचार, बकुची पांच, विडंग चार ॥८०॥ लोहभस्म, गिलोय, गुगुल और शिलाजीत इनसबों को एक एकपल,

पौष्करंभवेत् ८१ चित्रकस्यपलार्द्धस्यात्रिशाणंमारिचंभवेत् । नागरंपिप्पलीमुस्तात्वगेलापत्रकुङ्कुमम् ८२ शाणोन्मितंस्यादेकैकंचूर्णयेत्सर्वमेकतः । ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णंस्पक्कखण्डेचतत्समे ८३ मोदकान्पलिकान्कृत्वाप्रयुञ्जीतयथोचितान् । हन्युःसर्वाणिकुष्ठानित्रिदोषप्रभवामयान् ८४ भगन्दरंप्लीहगुल्मांज्जिह्वातालुगलामयान् । शिरोक्षिभ्रूगतान्रोगानन्यान्पृष्ठगतानपि ८५ प्राग्भोजनस्यदेयंस्यादधःकायस्थितेगदे । भेषजंभुक्तमध्येचरोगेजठरसंस्थिते । भोजनस्योपरिग्राह्यमूर्ध्वजत्रुगदेषुच ८६ काञ्चनारत्वचोग्राह्यंपलानांदशकंबुधैः । त्रिफलापट्पलाग्राह्यात्रिकटुःस्यात्पलत्रयम् ८७ पलैकंवरुणंकुर्यादेलात्वक्पत्रमंतथा । एकैकं कर्षमात्रंस्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ८८ यावच्चूर्णमिदंसर्वंतावन्मात्रस्तुगुग्गुलुः । सङ्कुट्यसर्वमेकत्रपिण्डंकृत्वाचधारयेत् ८९ गुटिकाःशाणमात्रेणप्रातर्ग्राह्यायथोचिताः । गण्डमालांजयत्युग्राम

पुष्करमूल अर्द्धपल ॥ ८१ ॥ चीता अर्द्धपल, मिर्च दो शाण, सोंठि, पीपरि, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केशर ॥ ८२ ॥ इनसबों को शाण शाण भर ले चूर्णकरि सबचूर्ण समान खांडले पाककरि चूर्णडारि गोली बनावै ॥ ८३ ॥ पलपलमित मोदकननाय रोग बलदेखि रोगीको खिलावै तो सबकुष्ठ नाशहोयँ व त्रिदोष जन्य रोग ॥ ८४ ॥ भगंदर, प्लीहा, गुल्म, जिह्वा, तालुरोग, ग्रीव, शिर, नेत्र, भौंह और पीठ इन सबोंके रोग नाशहोयँ ॥ ८५ ॥ शरीरके नीचेके रोगनमें भोजनादि ओषधि देना मंदाग्निजनित में भोजन के मध्यदेय शिरःसंबन्धी रोगन में भोजनांत समयमें देना ॥ ८६ ॥ (गंडमालापर कचनार गुग्गुल) कचनारछाल दशपल त्रिफला छःपल, त्रिकुटा तीनपल ॥ ८७ ॥ वरुण एकपल, इलायची तज, पत्रज, कर्ष कर्षभर इनसबों को एकत्रकरि चूर्णकरै ॥ ८८ ॥ सर्व चूर्णके समान गुग्गुल पीसि चूर्णमें मिलाय पिंड बनावै ॥ ८९ ॥ चारिमाशेकी गोली बनाय

पचीमर्बुदानिच। ग्रंथीन्व्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानिचभ
गन्दरम् ९० प्रदेयश्चानुपानार्थंक्वाथोमुण्डितिकाभवः।
क्वाथःखदिरसारस्यपथ्याक्वाथोदकोष्णकम् ९१ निस्तुषं
माषचूर्णंस्यात्तथागोधूमसम्भवम्। निस्तुषंयवचूर्णंचशा
लितण्डुलजंतथा ९२ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णंपलकान्युपक
ल्पयेत्। एतदेकीकृतंसर्वंभर्जयेद्गोघृतेनच ९३ अर्द्धमात्रे
णसर्वेभ्यस्ततःखण्डसमांक्षिपेत्। जलंचद्विगुणंदत्त्वापाच
येत्तंशनैःशनैः ९४ ततःपक्वंसमुद्धृत्यमोदकंचपलोन्मित
म्। कुर्यात्सायंचतंभुक्त्वापिबेत्क्षीरंचतुर्गुणम् ९५ वर्जनी
योविशेषेणक्षाराम्लौद्वौरसावपि। कृत्वैवंरमयेन्नारीवक्षीनं
चीयतेनरः ९६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेवटककल्पना
सप्तमोऽध्यायः ७॥

काथादीनांपुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया। सोवलेह
श्चलेहःस्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता १ सिताचतुर्गुणा

रोगपत् व ओषधिवत् देखि रोगीको मातस्तमय देय तो गंडमाला, अपची, अर्बुद, ग्रंथि, घाव, कुष्ठ, भगंदर ये नाशहोयँ ॥ ९० ॥ (अस्यानुपानं) मुण्डीका क्वाथ वा खैरसारका क्वाथ वा हड़का क्वाथ उष्णोदक में देय ॥ ९१ ॥ (धातु पुष्टिपर माषादि मोदक) मांष कहे उरददालि धोय चूर्णकरिलेय गेहूंचूर्ण, यवकी गूदीकाचूर्ण, साठी चांवरका चूर्ण ॥ ९२ ॥ और पीपरि चूर्ण इनसबों को पलपल भरले सब चूर्णों का आधा गोघृत दे भूंजै ॥ ९३ ॥ चूर्णोके समान खांड ले तब सबका दूना जलडारि मन्द मन्द आंचदे घोटै ॥ ९४ ॥ जब सिद्धहोजाय तब पलपलभरके लड्डू बांधि सांझको खाय उसपर चारिपल दूधपिये ॥ ९५ ॥ फिर क्षार और खटाई दो रस न खाय स्त्री प्रसंग करै तो वीर्य न द्रवै देह पुष्टरहै ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(अथावलेहकल्पना) द्रव्यको क्वाथसदृश औटावै फिर विशेष आंच देय जब गाढ़ाहोय तब अवलेह कहै लेहभी कहते हैं मात्रा चारिमुद्रा भर ॥ १ ॥ चूर्ण से

कार्याच्चूर्णाच्चद्विगुणोगुडः । द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्र निश्चयः २ सुपक्केतंतुमत्त्वंस्यादवलेहोप्सुमज्जति । खरत्वंपीडितेमुद्रागन्धवर्णरसोद्भवम् ३ दुग्धमिक्षुरसंयूषं पञ्चमूलकषायजम् । वासाक्काथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ४ कण्टकारींतुलांनीरंद्रोणपक्त्वाकषायकम् । पादशेषंगृहीत्वाचतस्मिश्चूर्णानिदापयेत् ५ पृथक्पलानिचैतानि गुडूचीचव्यचित्रकाः । मुस्ताकर्कटशृङ्गीचत्र्यूषणं धन्वयासकः ६ भार्गीरास्नाशटीचैवशर्करापलविंशतिः । प्रत्येकंचपलान्यष्टौ प्रदद्याद्घृततैलयोः ७ पक्त्वालेहत्वमानीयशीतेमधुपलाष्टकम् । चतुष्पलंतुगाक्षीर्याःपिप्पलीनांचतुष्पलम् ८ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृन्मयेभाजनेशुभे । लेहोयंहन्तिहिक्कार्तिश्वासकासानशेषतः ९ पाटलारणिकाश्मर्यबिल्वारलुकगोक्षुराः । पाण्यौबृहत्यौपिप्पल्यः शृङ्गीद्राक्षामृताभयाः १० बलाभूम्यामलीवासा ऋद्धि

मिश्री चौगुनीदेना गुड़ दूना द्रव्यादि चौगुने यह सर्वत्र रीतिहै ॥ २ ॥ जब आंचदेने पर तारबंधे आ पानीमें पाककी बूँद न बूड़े न घुले तब सिद्ध जानें और अंगुरी के दबाने स कुछदबै तब सुगंध रसादि डारै ॥ ३ ॥ और दूध में ऊखले उत्पत्ति दस्तु यूषत पंचमूल क्वाथसे ऐसा क्वाथसे इन अनोपानसे देना अथवा और जो रोगोचित अनोपानदे सो देना ॥ ४ ॥ (हिचकी और कास श्वासपर भटकटैया-घरलेह) भटकटैया चारिसेरले द्रोणभरजलमें औटै जब चौथाईरहै तब उसमें चूर्ण डारै ॥ ५ ॥ गुर्च, चाब, चीता, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, जवासा ॥ ६ ॥ भारंगी रास्ना और कचूर ये सब पलपल भरले चूर्णकरै शकर बीसपल घृत आठपल तेल आठपल ॥ ७ ॥ ये सब काढे में औटै अवलेह सिद्धहो ठंढाकरि आठपल शहद, वंशलोचन चारिपल, पिप्पली चूर्ण चारिपल मिलाय ॥ ८ ॥ उत्तम पात्रमें राखै इसे अवलेह से हिचकी, श्वास, व कास, को अशेषतासे नाशकरै ॥ ९ ॥ (क्षयादि पर च्यवन प्राशावलेह) सिरस, अग्निमंथ, खमारी, पाटल, बेल, स्यो-

ष्योवृंहणोबलकृन्मतः २८ युक्त्याकूष्माण्डखण्डञ्चशूर
णंविपचेत्सुधीः । अर्शसांमूढवातानांमन्दाग्नीनांचयुज्यते
२९ हरीतकीशतंभद्रंयवानामाढकंतथा । पलानिदशमू
लस्यविंशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलमपामार्गःशटीतथा । कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभार्ङ्गीचगजपिप्पली ३१ बलापुष्करमूलंचपृथग्द्विपलमात्रया । पचे
त्पञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ३२ तच्चाभयाशतंद
द्यात्क्वाथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गु
डतुलांतथा३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक्
क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णंदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयं
खादेत्तेनलेहेननित्यशः । क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशोंरु
चिपीनसान् ३५ ग्रहणींनाशयेदेपवलीपलितनाशनः ।
बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः । विहितोगस्त्यमुनि
नासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अवलेह बाल वृद्धको देना छाती पुष्टकरै वीर्य बढावे व बलको करे ॥ २८ ॥ (अर्शपर खंड कूष्माण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई सूरन की भी है पेठा और ज़मींकन्दकी छोटी कचैं करि दोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे अवलेह बनाय खिलावे तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छे होयँ ॥ २९ ॥ (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहड़ सौ, अन्नयापन एक आढ़क, दशमूल बीसपल ॥ ३० ॥ चीता, पीपरामूल, चिरचिरा, कचूर, कैंवाच, कौड़ाला, भारंगी, गजपीपरि ॥ ३१ ॥ परियारा और पुष्करमूल सब दो दो पल पांच आढक जलमें पचाय गलाय उतारि छानलेय ॥ ३२ ॥ तिसमें सौ हड़, तेल, घी, आठ पल, गुड़ तुलाभर देकर ॥ ३३ ॥ पकावै ठंढाकरि शहद व पीपरिका चूर्ण ये सब एकएक कुडव डारे ॥ ३४ ॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित्यखावे तो क्षयी का रोग, कास, ज्वर, श्वास, हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयँ बलवन्त हो श्वेतबालकृष्णहों रूपवानहो पुरुषको यह अवलेह रसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी कही हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अथार्शपर कुरैया अवलेह)

पचेत्सुधीः । कषायंपादशेषंचगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ३७ त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः । सान्द्रत्वमागतंदृष्ट्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ३८ रसाञ्जनंमोचरसंत्रिकटुत्रिफलांतथा । लज्जालुञ्चित्रकंपाठांबिल्वमिन्द्रयवंवचाम् ३९ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचवालकम् । प्रत्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ४० सिद्धशीतेततोदद्यान्मधुनःकुडवंतथा । जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसिवेगतः ४१ दुर्नामप्रभावान्रोगानतीसारमरोचकम् । ग्रहणींपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथंकासंचैवप्रवाहिकाम् ४२ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंपयोदधि । घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः ४३ कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशृतंनीत्वाचूर्णान्येतानिदापयेत् ४४ लज्जालुर्धातकीबिल्वंपाठामोचरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ४५ ततस्तुविपचेद्गव्यांवदार्वीप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

कुरैयाकी छाल तुलाभर एकद्रोण पानीमें पचावै जब चौथाई शेष रहै तब उतारि वस्त्रसे छानलेय ॥ ३७ ॥ फिर तीसपल गुडदे अवलेह गाढाभये यह चूर्ण डारे ॥ ३८ ॥ रसौत, मोचरस, त्रिकुटा, त्रिफला, लजालु, चीता, पाढा, बेल, इन्द्रजव, बच ॥ ३९ ॥ भिलावां, अतीस, विडङ्ग, और सुगन्धवाला ये पलपल भर घी कुडवभर ॥ ४० ॥ ठंडापरे कुडवभर शहद दे यह अवलेह सर्वार्शको वेगही दूर करताहै ॥ ४१ ॥ दुर्नामरोग, अतीसार, अरुचि, ग्रहणी, पाडु, रक्तपित्त, कामला, अम्लपित्त, शोथ, खांसी और प्रवाहिका ये सब दूरहोवें ॥ ४२ ॥ (तस्यानुपानम्) बकरीका दूध वा मट्ठा दही घी वसीका या पानी भोजन के पचन समय ओपधिलाय ॥ ४३ ॥ (सर्वातीसारपर कुरैयाष्टक) गीली एक तुला कुरैया की छाल द्रोण भर पानीमें पकावै जब चौथाई शेष रहै तब यह चूर्ण डारे ॥ ४४ ॥ लजालु, धवफूल, बेल, पाढा, मोचरस, नागरमोथा और अतीस ये पलपल भर

पयोबृंहणोबलकृन्मतः २८ युक्त्याकूष्माण्डखण्डञ्चशूर णंविपचेत्सुधीः। अर्शसांमूढवातानांमन्दाग्नीनांचयुज्यते २९ हरीतकीशतंभद्रंयवानीमाढकंतथा। पलानिदशमूलस्यविंशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलमपामार्गःशटीतथा। कपिकच्छूःशङ्खपुष्पीभार्ङ्गीचगजपिप्पली ३१ बलापुष्करमूलंचपृथग्द्विपलमात्रया। पचेत्पञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ३२ तच्चाभयाशतंदद्यात्क्वाथेनास्मिन्विचक्षणः। सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गुडतुलांतथा३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक् क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णंदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयंखादेत्तेनलेहेननित्यशः। क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशोंरुचिपीनसान् ३५ ग्रहणींनाशयेदेषवलीपलितनाशनः। बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः। विहितोगस्त्यमुनिनासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अवलेह बाल वृद्धको देना छाती पुष्टकरै वीर्य बढ़ावै व बलको करै ॥ २८ ॥ (अर्शपर खंड कूष्माण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई सूरन की भी है पेठा थार जमींकन्दकी छोटी कचै करि दोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे अवलेह बनाय खिलावै तो अर्श,मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयँ ॥२९॥ (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहर्डे सौ, अजवायन एक आढक, दशमूल बीसपल ॥३०॥ चीता,पीपरामूल,चिरचिरा,कचूर,केवांचाकीडाला, भारङ्गी, गजपीपरि ॥३१॥ खरियारा और पुष्करमूल सब दोदो पल पांच आढक जलमें पचाय गलाय उतारि छानलेय ॥३२॥ तिसमें सौ हड़, तेल,घी, आठ पल,गुड़तुलाभर देकर ॥३३॥ पकावै ठंढाकरि शहद व पीपरिका चूर्ण ये सब एकएक कुडवडारै ॥ ३४॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित्यखावै तो क्षयी का रोग,कास,ज्वर,श्वास, हिचकी, अर्श, अरुचि,पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयँ बलवन्त होवै वेतनाल रूपवानहो पुरुषको यह अवलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी कहीं हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अथार्शपर कुरैया अवलेह)

पचेत्सुधीः। कषायंपादशेषंचगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम्॥३७
त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः॥सान्द्रत्वमाग
तेदद्याच्चूर्णानीमानिदापयेत्॥३८॥ रसाञ्जनंमोचरसंत्रि
कटुत्रिफलांतथा। लज्जालुश्चित्रकंपाठांबिल्वमिन्द्रयवंव
चाम्॥३९॥ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचवालकम्। प्र
त्येकंपलसमानंघृतस्यकुडवंतथा॥४०॥ सिद्धशीतेततोद
द्यान्मधुनःकुडवंतथा॥ जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसि
वेगतः॥४१॥ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम्। ग्रह
णींपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम्॥अम्लपित्तंतथाशोथं
कासंचैवप्रवाहिकाम्॥४२॥ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंप
योदधि। घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः॥४३॥ कुट
जत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत्॥ पादशेषंशृतंनीत्वा
चूर्णान्येतानिदापयेत्॥४४॥ लज्जालुर्धातकीबिल्वंपाठामो
चरसस्तथा॥मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम्॥४५॥
ततस्तुविपचेद्गनीयावद्दार्वीप्रलेपनम्। जलेनच्छागदु

धेनपीतोमण्डेनवाजयेत् ४६ घोरान्सर्वानतीसारान्नानावर्णान्सवेदनान्। असृग्दरंसमस्तंचसर्वार्शांसिप्रवाहिकाम् ४७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेऽवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच। चतुर्गुणेद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता १ निक्षिप्यक्वाथयेत्तोयंक्वाथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम्। पादशिष्टंगृहीत्वाचस्नेहस्तेनैवसाधयेत् २ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकाठिन्येऽष्टगुणंजलम्। अत्यन्तकठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् ३ तथा च मध्यमेद्रव्येदद्यादष्टगुणंपयः। कर्षादितःपलंयावद्दद्यात्षोडशिकंजलं ४ ततस्तुकुडवंयावत्तोयंचाष्टगुणंभवेत्। प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरंखारींयावच्चतुर्गुणम् ५ अम्बुक्वाथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम्। कल्कस्यांशंतत्रदद्याच्चतुर्थंषष्ठमं

ले ॥ ४५ ॥ फिर उसीवादे को औटै जबलग करछी में लिपटने लगे तब सिद्ध जानो सो टकरी पय वा पानी वा माठके संगपिये ॥४६॥ तो सर्व अतीसारकी घोर वेदना निवृत्तहो व सबभाति रक्तस्राव, सर्वार्श और प्रवाहिकाको दूरकरताहै ४७॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंग्रहभाषाटीकायामवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

(अथ घृत तेल साधना) कल्कसों चौगुना घृत वा तेल और क्वाथादि द्रवभी चौगुनी देना तिसकीमात्रा एकपलभरहै॥१॥जिस द्रव्यका क्वाथदेनाहो तो चौगुने जल में औटै जब चौथाईरहै तब उतारिछानिले उसमें घी तेल सिद्धकरै॥ २॥ कोमलद्रव्य में चतुर्गुण जल कठोर में आठगुणा और अत्यन्त कठोर में सोलहगुणा जल दे॥ ३॥ मध्यमें अठगुणा जलदेवै (पुनर्विधि) रुपयाभरे से चाररुपया भरताई में सोलहगुणापानीदे क्वाथकरे पलसे कुडवताई अठगुनी प्रस्थ से खारीपर्यंत चौगुनादे ॥४।५॥ और जो केवल कल्क पानी घी व तेलमें सिद्धकरै तो चतुर्थांश कल्कदे सेरभर तेल पावसेर कल्क और जो कल्क क्वाथके संग घी तेल पकावै तो घृत तेलका षष्ठांश कल्क देना तीनपाव में आधपाव और जब कल्कस्वरसके संग घी वा तेल में पकावै तो तेलका अष्टमांश कल्क देना

ष्टमम् ६ दुग्धेदध्निरसेतक्रे कल्केदेयोष्टमांशकः । क
ल्कस्यसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र
स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथा
पूर्वंचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ।
तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ क्वाथेन
केवलेनैवपाकोयत्रेरितःक्वचित् । क्वाथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि
तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहीनस्तुयः स्नेहःससाध्यःके
वलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने
हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्त्तिवत्स्ने
हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः
क्षिप्तःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा
न्तिश्चसर्पिषि । गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत्
१३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरस

सेर में आधपाव घृत तेलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहां कल्क घी तेल क्वाथ पाय पांचों होयँ तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें पकानी होय तौ जल में द्रव्य पीसि गला या कल्ककरि चौगुने पानी में पचावैं ॥ ९ ॥ जो केवल काढ़े में कहाहो तहा उसी क्वाथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत या तेलयुक्त वह काढा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहां कल्क रहित है सो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध करेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध करेंगे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अंगुरीमें लेके मलसे गोलो बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिंचिराहट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्तरचिकरै तब घृत वा तेल सिद्धभया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तीन प्रकारकाहै-मृदु मध्य और

कल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् १४ मध्यपाकश्चसिद्धिश्च कल्केनीरसकोमले । ईपत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवे त्खरः १५ तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्यादाहकृन्निष्प्रयोजनम् । आमपाकश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्यकरोगुरुः १६ नस्यार्थस्या न्मृदुःपाकोमध्यमःसर्वकर्मसु । अभ्यङ्गार्थेखरःप्रोक्तोयु ञ्ज्यादेवंयथोचितम् १७ घृततैलगुडादींश्चसाधयेन्नैकवा सरे । प्रकुर्वन्त्युषिताह्येतेविशेषाद्गुणसञ्चयम् १८ पिप्प लीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः । ससैन्धवैश्चपलिकैर्घृ तप्रस्थंविपाचयेत् १९ क्षीरंचतुर्गुणंदत्त्वातत्सिद्धंप्लीहनाश नम् । विषमज्वरमन्दाग्निहरंरुचिकरंपरम् २० पिप्पलीपि प्पलीमूलंचित्रकोहस्तिपिप्पली । श्वदंष्ट्रानागरंधान्यंपाठा बिल्वंयवानिकी २१ द्रव्यैश्चपलिकैरेतैश्चतुःषष्टिपलं घृतम् । घृताच्चतुर्गुणंदेयंचाङ्गेरीरससंयुतम् २२ तथाच तुर्गुणंदत्त्वादधिसर्पिर्विपाचयेत् । शनैःशनैर्विपक्तव्यंचा ङ्गेरीघृतमुत्तमम् २३ तद्घृतंकफवातघ्नंग्रहण्यर्शोविकार

नर जो कल्क मोमवत् रहे तौ मृदु जानिये ॥ १४ ॥ जो कल्क निरसहो कुछ को मल रहै तौ मध्य जानिये जो कल्क निरस और कठोर होजाय तौ खरा जानिये ॥ १५ ॥ जो इस प्रमाण से अधिक सो रेतो जानो स्नेह बिगड गया अकार्थ गया जो कचा रहै ता सेवनकरने से मन्दाग्निकरै और भारीहो ॥ १६ ॥ नास लेने को नरम हितहै मध्यम सर्व कार्यसाधक है खरा मर्दनको है जहां जैसा चाहै रहा तैसा बनावै ॥ १७ ॥ घृत, तेल और गुड एकदिन न खावै दिनान्तरदे करे तौ अधिक गुणकरे ॥ १८ ॥ (पिलईपर क्षीर षट्पल) पीपरि, पीपरामूल, चाव, चीता, सोंठि और सेंधौ ये सब पल पलभरले प्रस्थभर घी में पचावै ॥ १९ ॥ दूध चौगुना जब सिद्धहो तौ यह घी प्लीहाको नाशकरताहुआ विषमज्वर व मन्दाग्निको दूरकर रुचिकोकर (संग्रहणी अतीसारपर चाङ्गेरीघृत) ॥ २० ॥ पीपरि, पीपरामूल, चीता, गजपीपरि, गुखुरू सोंठि, धनिया, पाढा बेल और अजवायन ॥ २१ ॥ ये पलपलभर और घी चौसठिपल छोटी लुनियाका रस २५६ पलदे ॥ २२ ॥ औ २५६

नुत् । हन्त्यानाहंगुदभ्रंशंमूत्रकृच्छ्रंप्रवाहिकाम् २४ मसू
राणांपलशतंनीरद्रोणेविपाचयेत् । पादशेषंशृतंनीत्वा
दत्त्वाबिल्वंपलाष्टकम् २५ घृतप्रस्थंपचेत्तेनसर्वातीसार
नाशनम् । ग्रहणींभिन्नविट्कांचनाशयेच्चप्रवाहिकाम् २६
अश्वगन्धापलशतंतदर्द्धंगोक्षुरंमतम् । शतावरीविदारी
चशालिपर्णीबलामृता २७ अश्वत्थस्यचशुङ्गानिपद्मबी
जंपुनर्नवा । काश्मर्य्याश्चफलंचैवमाषबीजंतथैवच २८
पृथग्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेम्भसःपचेत् । द्रोणशेषेरसे
तस्मिन्पचेच्चैवघृताढकम् २९ मृद्वीकापद्मकंकुष्ठंपिप्पली
रक्तचन्दनम् । पत्रकंनागपुष्पंचआत्मगुप्ताफलंतथा ३०
नीलोत्पलंसारिवेद्वेजीवनीयगणस्तथा । पृथक्कर्षसमाभा
गाःशर्करायाःपलद्वयम् ३१ रसस्यपौण्ड्रेक्षूणामाढकैकं
समाहरेत् । रक्तपित्तंक्षतंक्षीणंकामलांवातशोणितम् ३२

पल दहीके दे मंद मंद आंच से पचावे इसका नाम चांगेरी घृत है ॥ २३ ॥ इस से वात, कफ, ग्रहणी, अर्श दूरहो पेट फूलना, कांचनिस्सरण, मूत्रकृच्छ्र और प्रवाहिका ये सब नाशहोवें ॥ २४ ॥ (अतीसारपर मसूरघृत) सौपल मसूरीको द्रोणभर जलमें क्वाथकरै चौथाई रहै तब उस काढे में आठपल बेलकी गुद्दीदे ॥ २५ ॥ और प्रस्थभर घृतदे पचावे उससे सब अतीसार ग्रहणी और बिथरा मल गिरनो तथा प्रवाहिका ये सब दूरहों ॥ २६ ॥ (रक्तपित्तपर कामदेव घृत) असगंध सौपल गखुरू पचासपल शतावरि बिलाईकंद वनउर्दी खरियारा गुर्चे ॥ २७ ॥ पीपरका टिगुसा, रक्तकमलगट्टा, गदापुरना, खंभारी पुष्प, काले उर्द ॥ २८ ॥ ये दशदश पल चार द्रोण पानी में पचाय चतुर्थांश शेष रहै तब आढकभर घी देकर पचावे ॥ २९ ॥ फिर दाख, पद्माख, पीपर, रक्त चन्दन, पत्रज, नागकेशरि, किवांचके बीजकी मींगी ॥ ३० ॥ नीलकमल का फूल, दिनों कमलगट्टा, सरिवन, पिठवन, जीवनीयगण पूर्वोक्त जो न मिले तो केवल खरियारा देना ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष भरले शक्कर दो पल युक्त करना ॥ ३१ ॥ आढकभर पौंडाका रस सब इकट्ठा उसमें पचावै जब घी शेषरहै कपड़ा

हलीमकंपाण्डुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयम्। मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यंवद्धन्तःपुर चारिणाम्। स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम् ३४ श्रेष्ठंबलकरंवर्ण्यंहृद्यंपुष्टिरसायनम्। ओजस्तेजस्क रंहृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषं दुर्बलेन्द्रियम्। सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयसिसक्तोयथाद्रुमः। कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तंमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनि शेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका। शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदा र्व्येलवालुकम् ३७ नतंविशालादन्तीचदाडिमंनागकेशर म्। नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गंपद्मकुष्ठंकम्३८जातीपु ष्पंचन्दनंचतालीसंबृहतीतथा। एतैःकर्षसमैःकल्केजलं दत्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्ष ये। उन्मादेवातरक्तेचकासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तब छानिले रक्तपित्त, क्षतक्षीण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडु हरै वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीड़ाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह घृत बहु रमणीयको देय, बांझ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो ॥ ३४ ॥ श्रेष्ठहै बल करताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको प्रिय व पुष्टता करताहुआ रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढ़ाता है दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहों सब रोगनाशहों जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होजाता वैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥ (कल्याण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिठवन, मकरा, वनउर्दी, वनमूंग, देवदारु, एलवालु न मिले तो सुगन्धवाला देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रायण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलकमल, इलायची, मँजीठ, बिडंग, पद्माख, कूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र और बड़ी भटकटैया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रस्थभर और वह कल्क देके पकाय वैद्यदेवे इस घी से मिरगी, ज्वर, क्षयी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके॥मूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा
ण्डामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते॥व
न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम्॥४२॥ अमृताक्वाथ
कल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्घृतम्॥वातरक्तंजयत्याशुकुष्ठं
जयति दुस्तरम्॥४३॥ सप्तच्छदःप्रतिविषाशम्याकःकटु
रोहिणी॥ पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापर्पटस्तथा॥४४
पटोलनिम्बमञ्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी॥ चन्दनंधन्वयां
सश्चविशालाद्वेनिशेतथा॥४५॥ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावा
साशतावरी॥त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बाश्चाक्षभागिकाः
४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलकीरसः॥ द्विगुणंसर्पि
षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिन्दंपाययेत्सर्पिर्वातर
क्तेषुसर्वसु॥कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्तार्शांसिचपाण्डुताम् ४८
हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम्॥क्षुद्ररोगंज्वरं
चैवमहातिक्तमिदंजयेत्॥४९ कासीसंद्वेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकदपकना, कटिपीडा, तिजारी, चातुर्थिक मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका, खजुली पाण्डु॥ ४१॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब अच्छेहों, बांझ पुत्र जनै और भूत व राक्षसों की बाधा ये सब दूरहोयँ इसका नाम कल्याणघृतहै॥४२॥ (वातरक्तपर अमृतादिघृत गुर्वेका कल्क गुर्वेका क्वाथ दूधके संग घृत पचावै इससे वातरक्त और कोढ दूरहोताहै॥ ४३॥ (वातकुष्ठादिपर महातिक्तादि घृत , छितौनी, अमलतास, अतीस, कुटकी पाढा, नागरमोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापडा॥ ४४॥ पटोल, नीम, मँजीठ, पिपरी, पद्माख, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्द्रायन, दोनों हल्दी॥ ४५॥ गुर्च, सरिवन, पिठवन, मुर्वा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण भी इन्द्र है इन्द्रयव, मुलेठी और चिरायता ये सब कर्ष कर्ष भरले॥ ४६॥ घी चौगुना दे व घी का दूना आँवरेका रस देकर अठगुणा जलदे॥ ४७॥ यह सिद्ध घी सब वातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में व रक्तपित्त में व रक्तार्श पाण्डु में देइ॥ ४८॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै इसका महातिक्त नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकंगन्धकंचविडङ्गंगुग्गुलुंतथा ५० सिक्थकंमरिचंशुण्ठींतुत्थकंगौरसर्षपम् । रसाञ्जनंचसिन्दूरंश्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जंसारिवां वचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रपद्मकम् ५२ हरीतकींप्रपुन्नागंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालोड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्तदिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिका: ५४ शूकदोषाविसर्पाश्चविस्फोटावातरक्तजा: । शिरःस्फोटोपदंशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैवलूता:शाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनंरोपणंचैवसुवर्णकरणंघृतम् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठामधुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवा: ५७ तुत्थंचविपचेत्सम्यक्कल्कैरेभिर्घृतंबुधः । अस्यलेपात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा अपि । मर्माश्रिता:क्लेदिनश्चगम्भीरा:सरुजोव्रणा: ५८ चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्त्रिवृतायुगम् । वृद्धदारुश्च

सब अच्छे होयँ ॥ ४९ ॥ (कुष्ठ, दाह, खाजपर कसीसादि घृत) कसीस दोनों हल्दी, नागरमोथा, हरताल, मैनशिल, कबीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥ ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंठि, तूतिया, पीत सरसों, रसौंत, सिन्दूर, राल, लाल चन्दन ॥ ५१ ॥ खैर, नींबकापत्ता, करंज, सरिवन, वच, मंजीठ, महुआकीछाल, जटामासी, सिरस, लोध, पद्माख ॥ ५२ ॥ हड़, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्णकरै तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घी के लगाने से कुष्ठ, दाद खाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित शीतला, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (मकड़ी) ये दूरहों घाव अतिशुद्धहो पुरावै घाव चिह्न न रहै ॥ ५६ ॥ (घावपर जात्यादि घृत) चमेली, नींब, परवल, तीनों पत्ती, दोनों हल्दी, कटुकी, मंजीठ मुलेठी मोम, करंज, खस, सरिवन ॥ ५७ ॥ और तूतिया इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें पकावै इस घीके लगानें से घाव, नासूर, मर्मस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीड़ा

शम्याकोदन्तीचत्रिफलातथा ५९ कोशातकीदेवदालीनीलनीगिरिकर्णिका। शातलापिप्पलीमूलंविडङ्गंकटुकीतथा ६० हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेभिः पिचून्मितैः। घृतप्रस्थंस्नुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्तस्सिद्धंगुल्मकुष्ठनुत्। हन्तिशूलमुदावर्तशोथाध्मानंभगन्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंबिन्दुसङ्ख्यया। गोदुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापीत्वाबिन्दुवैर्गैर्विरिच्यते। एतद्बिन्दुघृतंनामनाभिलेपाद्विरेचयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंवासारसोद्भवम्। भृङ्गराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयस्तथा ६५ दत्वातत्रघृतंप्रस्थंकल्कैःकर्षमितैःपृथक्। त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाचन्दनसैन्धवंबला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचनागरम्। शर्करापुण्डरीकञ्चकमलंचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मंचमधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत्। नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डू

ये सब दूरहोयँ॥ ५८॥ (उदररोगपर बिन्दु घृत) चीते की छाल, शंखाहूली, हड़, कबीला, दोनों निशोथ, विधारा, अमलतासका गूदा, जमालगोटा, त्रिफला॥ ५९॥ कड़ुवीतोरई, देवदाली कहे (बंदाल) नीलकी पत्ती, कोयल, सेंहुड़की छीमी, पीपरामूल, विडंग, कुटुकी॥ ६०॥ और चूक ये सब कर्ष कर्षभरले कल्क करि प्रस्थभर घीमें पचावै छः पल सेंहुड़का दूधडारे॥ ६१॥ और दो पल मदारका दूधडारै वह सिद्ध घी देवै तो गुल्म, कुष्ठ अच्छाहो शूल, उदावर्त, शोथ, पेटफूलना, भगंदर॥ ६२॥ और आठो उदररोग ये दूरहों आठबूंद पानी से वा दूधसे वा ऊंटके दूधसे कुलथी काथसे॥ ६३॥ गरम पानीसे जो बूंद पियेसे दस्तहों यह बिन्दुघृत नाभिमें लेप करनेसे दस्तआतेहैं॥ ६४॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रूसेका एक प्रस्थ, भँगरेका एक प्रस्थ, बकरीका दूध एकप्रस्थ॥ ६५॥ एकप्रस्थ घी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरि, दाख, चन्दन, सेंधव, बरियारा॥ ६६॥ दोनों काकोली, बिना असगन्ध, मेदा, बिना मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खांड़, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरना॥ ६७॥ दोनों

पिल्लंतथैवच ६८ नेत्रस्रावंचपटलंतिमिरंवाजकंजयेत् ।
अन्येपिप्रशमंयान्तिनेत्ररोगाःसुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत
द्धिपानेनस्यादिसंश्रितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवा
चंदनद्वयम् । मधुपर्णीचमधुकंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्प
लोशीरमेदाभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैःकर्षमितैरेतै
र्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटव्रणकुष्ठवि
षापहम् । गौर्यादिकमितिख्यातंसर्वव्रणहरंस्मृतम् ७२
बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलैरे
भिर्द्रोणनीरेणपाचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य
वर्जितम् । पादशेषंशृतंनीरंक्षीरंदत्वाचतत्समम् ७४ घृ
तंप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैःपिचून्मितैः । तत्सिद्धंशिर
सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वा
गलरुजोजयेत् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेषुयुज्यते । हे
मन्तकालेशिशिरेवसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी, इनका कल्ककरि घी में पकावै तो नक्तान्ध्य, नकुलान्ध्य, काच, पिल्लरोग ॥ ६८ ॥ नेत्रस्राव, पटल, तिमिर और नीलबिन्दु ये सब अच्छेहोयँ इस त्रिफलादिघृतको खाय वा नास लेकर यथोचित अनोपान करै॥६९॥ (घावपर गौर्यादि घृत), दोनों हल्दी, शालिपर्णी, मुरा सरिवन चन्दन, दोनों मुलेठी, कमल केसर, कमल॥७०॥ नीलकमल, खस, मेदा, त्रिना मुलेठी त्रिफला, आम्र, बड़, पीपर, पाकर और गूलर इनकी छाल सब कर्ष कर्ष ले कल्ककरि प्रस्थभर घी में पचावै॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, मकड़ीआसन, शीतला घाव, कुष्ठ और विष इन सबोंको अच्छेकरे ॥ ७२ ॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) खरियारा, मुलेठी, रासन, दशमूल और त्रिफला ये दो दो पल दे द्रोणभर जलमें पकावै॥७३॥ मयूरमास बिना आंत ओझरी पित्ता पाय पानीमें गलावै चौथाई रहै उतारि ले यह सूप शिरनाशे तिवना दूधदे ॥७४॥ प्रस्थभर घीमें कर्ष कर्षभर जीवनीयगण और काढा सब पचावे शिरोग, मन्याव्यथा, पृष्ठग्रह ॥७५॥ लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला, इनके रोगनाशै खाय सूंघै मलै कानमें डारै हेमन्त शिशिर वसन्त

ष्टमम् ६ दुग्धेदधिरसेतक्रे कल्केदेयोऽष्टमांशकः । क ल्कस्यसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथा पूर्वंचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि । तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ क्वाथेन केवलेनैवपाकोयत्रेरितःक्वचित् । क्वाथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहीनस्तुयः स्नेहःससाध्यःके वलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्तिवत्स्ने हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः क्षिप्तःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा न्तिश्चसर्पिषि । गन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत् १३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरस

सेर में आधपाव घृत तेलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मट्ठा इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहां कल्क घी तेल क्वाथ पांच पाचों होवें तहां स्नेहादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें पकानो होय तो जल में द्रव्य पीसि गला ना कल्ककरि चौगुने पानी में पचावे ॥ ९ ॥ जो केवल काढ़े में कहाहो तहा उसी काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा तैलयुक्त वह काढ़ा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहा कल्क रहित हैं तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध करेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध करेंगे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अंगुरीमें लेके मलसे गोली बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिरचिराहट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्पत्तिकरै तब घृत वा तेल सिद्धभया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तीन प्रकारकाहै-मृदु मध्य और

हलीमकंपाण्डुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयम्। मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यंवल्लन्तःपुर चारिणाम्। स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम् ३४ श्रेष्ठंबलकरंवर्ण्यंहृद्यंपुष्टिरसायनम्। ओजस्तेजस्करं हृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषं दुर्बलेन्द्रियम्। सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयस्सिक्तोयथाद्रुमः। कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तंमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनिशेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका। शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदार्व्येलवालुकम् ३७ नतंविशालादन्तीचदाडिमंनागकेशरम्। नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गंपद्मकुष्ठकम् ३८ जातीपुष्पंचन्दनंचतालीसंबृहतीतथा। एतैःकर्षसमैःकल्कैर्जलं दत्त्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्षये। उन्मादेवातरक्तेचकासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तव ध्यानेंले रक्तपित्त, क्षतक्षीण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडुहरे वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीडाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह घृत बहु रमणीयको देय बाझ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो ॥ ३४ ॥ श्रेष्ठहै बल करताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको प्रिय व पुष्टता करताहुआ रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढाता है दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहों जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होजाता तैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत बड़ा गुणदायी कहाताहै ॥३६ ॥ (कल्याण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनों हल्दी, रेणुका, सरिवन, पिठवन, मकरा, वनउर्दी, वनमूंग, देवदारु, एलवालू न मिले तो सुगन्धवाला देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रायण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलकमल, इलायची, मँजीठ, विडंग, पद्माख, कूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन, तालीसपत्र और दृद्ध भटकटैया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौगुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में मस्थभर और वह कल्क देके पकाय वैद्यदेने इस घी से मिरगी, ज्वर, क्षयी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके । मूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा ण्ड्वामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते। व न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम् ४२ अमृताक्काथ कल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्घृतम्। वातरक्तंजयत्याशुकुष्ठं जयति दुस्तरम् ४३ सप्तच्छदःप्रतिविषांशम्याकःकटु रोहिणी । पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापर्पटस्तथा ४४ पटोलनिम्बमञ्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी । चन्दनंधन्वया सश्चविशालाद्वेनिशेतथा ४५ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावा साशतावरी।त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बाश्चाक्षभागिकाः ४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलकीरसः । द्विगुणंमपि षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तत्सिद्धंपाययेत्सर्पिर्वातर क्तेषुसर्वसु। कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्ताशांसिचपाण्डुताम् ४८ हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम्।क्षुद्ररोगंज्वरं चैवमहातिक्तमिदंजयेत् ४९ कासीसंद्वेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकटपकना, कटिपीड़ा तिजारी, चातुर्थिक मूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका खडुली पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब अच्छेहों, बांझ पुत्र जनै और भूत व राक्षसों की बाधा ये सब दूरहोयँ इसका नाम कल्याणघृतहै ॥ ४२ ॥ (वातरक्तपर अमृतादिघृत गुर्चेका कल्क गुर्चेका क्वाथ दूधके साथ घृत पचावै इससे वातरक्त और कोढ दूरहोताहै ॥ ४३ ॥ (वातकुष्ठादिपर महा तिक्तादि घृत छितौनी, अमलतासे, अतीस, कटुकी पाढ़ा, नागरमोथा, खस, त्रिफला, पित्तपापड़ा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मजीठ, पिपरी, पद्माख, कचूर, चन्दन, जवासा, इन्द्रायन, दोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्च, सरिवनें, पिठवन, मुर्रा, रूसा, शतावरि, त्रायमाण प्रसिद्ध हैं इन्द्रयव, मुलेठी और चिरायता ये सब कर्ष कर्ष भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनादे व घीका दूना आंवरेका रसदेकर अठगुणा जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध घी सब वातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में व रक्तपित्त में व रक्तार्शपाण्डु में देइ ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, भदर, गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै इसका महातिक्त नामहै पहिले कहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकंगन्धकंचविडङ्गंगुग्गुलुंतथा ५०
सिक्थकंमरिचंशुण्ठींतुत्थकंगौरसर्षपम् । रसाञ्जनंचसिन्दू
रंश्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जंसारिवां
वचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रपद्मकम् ५२ हरी
तकींप्रपुन्नागंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो
ड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्त
दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४
शूकदोषाविसर्पाश्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटा
पदंशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैवलू
ताःशाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनंरोपणंचैवसुवर्णकरणंघृत
म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठाम
धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुत्थंचाविपचेत्सम्यक्
कल्कैरेभिर्घृतंबुधः । अस्यलेपात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा
अपि । मर्माश्रिताःक्लेदिनश्चगम्भीराःसरुजाव्रणाः ५८
चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्तद्वतायुगम् । वृद्धदारुश्च

सब अच्छे होयँ ॥ ४९ ॥ (कुष्ठ, दाह, खाजपर कसीसादि घृत) कसीस दोनों हल्दी, नागरमोथा, हरताल, मैनशिल, कबीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥ ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंठि, तूतिया, पीत सरसों, रसौत, सिन्दूर, राल, लाल चन्दन ॥ ५१ ॥ खैर, नींबकापत्ता, करंज, सरिवन, बच, मंजीठ, महुआकीछाल, जटामांसी, सिरस, लोध, पद्माख ॥ ५२ ॥ हड, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्णकरै तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घी के लगाने से कुष्ठ, दाद, खाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित शीतला, मस्तकघाव, गर्मी, नासूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (मकड़ी) ये दूरहों घाव अतिशुद्धहो पुरावै घाव चिह्न न रहै ॥ ५६ ॥ (घावपर जात्यादिघृत) चमेली, नींब, परवल, दोनों पत्ती, दोनों हल्दी, कटुकी, मजीठ मुलेठी मोम, करंज, खस, सरिवन ॥ ५७ ॥ और तूतिया इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें पकावै इस घीके लगाने से घाव, नासूर, मर्मस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीडा

शम्याकोदन्तींचत्रिफलातथा ५९ कोशातकींदेवदालीनी
लनीगिरिकर्णिका । शातलापिप्पलीमूलंविडङ्गकटुकीत
था ६० हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेभिः पिचून्मितैः। घृतप्र
स्थंस्नुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्त
त्सिद्धंगुल्मकुष्ठनुत्। हन्तिशूलमुदावर्तंशोथाध्मानंभग
न्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंबिन्दुसङ्ख्यया। गो
दुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी
त्वाबिन्दुवेगैर्विरिच्यते। एतद्बिन्दुघृतंनामनाभिलेपाद्विरे
चयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंवासारसोद्भवम्।
भृङ्गराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयस्तथा ६५ दत्त्वातत्रघृतं
प्रस्थंकल्कैःकर्षमितेपृथक्। त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच
न्दनंसैन्धवंबला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचना
गरम्। शर्करापुण्डरीकञ्चकमलंचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं
चमधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत्। नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डूं

ये सब दूरहोवें॥ ५८॥ (उदररोगपर बिन्दु घृत) चीतेकी छाल, शंखाहूली, हड, कबीला, दोना निशोथ, निधारा अमलतासका गूदा जमालगोटा त्रिफला॥ ५९॥ कडुवीतोरई देवदाली दहे (बदाल) नीलकी पत्ती, कोयल सेंहुडकी छीमी, पीपरामूल, विडंग, कुटकी॥६०॥ और चूक ये सब कर्ष कर्षभरले कल्क करि प्रस्थभर घीमें पचावे छः पल सेंहुडका दूधडारे॥ ६१॥ और दो पल मदारका दूधडारै वह सिद्ध घी देवे तो गुल्म, कुष्ठ अच्छाहो शूल, उदावर्त, शोथ, पेटफूलना, भगंदर॥ ६२॥ चार आठ उदररोग ये दूरहों आठबूंद पानी से गौ दूधसे या ऊंटके दूधसे कुलथी क्वाथसे॥ ६३॥ गरम पानीमे जो बूंद पियेसे दस्तहों यह बिन्दुघृत नाभिमें लेप करनेसे दस्तआतेहैं ६४॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रूसेका एक प्रस्थ भँगरेका एक प्रस्थ, बकरीका दूध एक प्रस्थ॥६५॥ एक प्रस्थ घी कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरि, दाख चन्दन, सेंधव, खरेटी॥ ६६॥ दोनों काकोली, बिना असगन्ध, मेदा, बिना मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खांड, श्वेतकमल, रक्तकमल, गदापुरना॥ ६७॥ दोनों

पिल्लंतथैवच ६८ नेत्रस्रावंचपटलंतिमिरंचार्जकंजयेत् ।
अन्येपिप्रशमंयान्तिनेत्ररोगाःसुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत
द्धिपानेनस्यादिसूचितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वासारिवा
चंदनद्वयम् । मधुपर्णीचमधुकंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्प
लोशीरमेदाभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैःकर्षमितैरेतै
र्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटव्रणकुष्ठवि
षापहम् । गौर्यादिकमितिख्यातंसर्वव्रणहरंस्मृतम् ७२
बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलैरे
भिर्द्रोणनीरेणपाचयेत ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य
वर्जितम् । पादशेषंशृतंनीत्वाक्षीरंदत्त्वाचतत्समम् ७४ घृ
तंप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैःपिचून्मितैः । तत्सिद्धंशिर
सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वा
गलरुजोजयेत् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपूरेप्रयुज्यते । हे
मन्तकालेशिशिरे वसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी इनका कल्ककरि घी में पकावै तौ नक्तान्ध्य, नकुलान्ध्य, काच, पिल्लरोग ॥ ६८ ॥ नेत्रस्राव, पटल, तिमिर और नीलबिन्दु ये सब अच्छेहोवें इस त्रिफलादि घृतको खाय वा नास लेकर यथोचित अनोपान करे ॥६९॥ (घावपर गौर्यादि घृत) दोनों हल्दी, शालिपर्णी, मुरा सरिवन चन्दन, दोनों मुलेठी, कमल केसर, कमल ॥७०॥ नीलकमल, खस, मेदा, बिना मुलेठी त्रिफला, आम्र, वट, पीपर, पाकर और गूलर इनकी छाल सब कर्ष कर्षले कल्ककरि प्रस्थभर घी में पचावै ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, अग्निरासन, शीतला घाव, कुष्ठ और विष इन सबोंको अच्छेकरै ॥७२॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) खरियारा, मुलेठी, रासन, दशमूल और त्रिफला ये दो दो पल दे द्रोणभर जलमें पकावै ॥७३॥ मयूरमांस विना आंत ओझरी पित्ता पाव पानीमें गलावै चौथाई रहै उतारि ले यह यूष जितनाहो तितना दूधदे ॥७४॥ प्रस्थभर घीमें कर्ष कर्षभर जीवनीयगण और काढा रस पचावै शिररोग, मन्याव्यथा, पृष्ठग्रह ॥७५॥ लकवा, कर्ण, नाक, नेत्र, जीभ, गला, सबके रोगनाशै खाय सूंघै मलै कानमें डारै हेमन्त शिशिर वसन्त

कुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी ॥ विडङ्गंपिप्पलीमुस्तंविशालाकट्फलंवचा ७७ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौसारिवेद्वेप्रियङ्गुका । शतपुष्पाहिङ्गुरास्नाचन्दनंरक्तचन्दनम् ७८ जातीपुष्पंतुगाक्षीरीकमलंशर्करातथा ॥ अजमोदाचदन्तीचकल्कैरेतैश्चकार्षिकैः ७९ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतंप्रस्थंचगोःक्षिपेत् । चतुर्गुणेनपयसापचेदारण्यगोमयैः ८० सुतिथौपुष्यनक्षत्रेमृद्भाण्डेताम्रजेलथा । ततःपिबेच्छुभदिनेनारीवापुरुषोथवा ८१ एतत्सर्पिर्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यंवृषायते । पुत्रान्सञ्जनयेद्धीमान्वन्ध्यापिलभतेसुतम् ८२ अनायुषंवाजनयेद्यावसूतापुनःस्थिता । पुत्रमाप्नोतिसानारीबुद्धिमन्तंशतायुषम् ८३ एतत्फलघृतंनामभारद्वाजेनभाषितम् । अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपन्त्यत्रचिकित्सकाः ८४ त्रिफलांद्वेसहेपरेगुडूचींसपुनर्नवाम् । शुकनासांहरिद्रेद्वेरास्नांमेदांशतावरीम् ८५ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ।

में सेवन करना अच्छा कहाहै ॥७६॥ (वंध्याको फलघृत) त्रिफला, मुलेठी, कूठ, दोनों हल्दी, कुटकी, विडंग, पीपरि, नागरमोथा, इंद्रायण, कायफर। ७७ ॥ मेदा, महामेदा, बिना मुलेठी, दोनों काकोली, बिना असगंध, सरिवन, पिठवन, मकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनोंचन्दन ॥ ७८ ॥ चमेलीपुष्प, वंशलोचन, कमल, शकर, अजमोद और जमालगोटा ये कर्ष कर्ष भरले कल्ककरि ॥ ७९ ॥ एकरंगका गाय और बछराहो तिसका भी घी प्रस्थभर देकर चौगुना दूधदे बितुवा कण्डामें मन्दमन्द आँचदेकर पचावे ॥८०॥ सुन्दर तिथि, पुष्य नक्षत्र में मट्टी वा ताँबेके पात्रमें शुभदिन पिये स्त्री वा पुरुष ॥८१॥ पुरुष जो पिये सो वृषभतुल्य कामी रहै कैसाभी असमर्थ हो परन्तु पुरुषत्वको उत्पन्नकरै और वांझिनके पुत्रहोय ॥ ८२ ॥ व्यहि स्त्रीके पुत्र मरजाताहो उसके घृतसेवनसे पुत्रहोकर सौवर्षजिये ॥ ८३ ॥ यह फलघृत भारद्वाज भाषितहै बिनाकहे वैद्य इस घृत के संग लक्ष्मणा बूटी की जड़ देते हैं ॥ ८४ ॥ (योनिदोष पर त्रिफलादि घृत) त्रिफला, दोनों कटसरैया, गुर्च, गदापुरैना, सिरस, दोनों हल्दी, रासन, मेदा और शतावरि ॥ ८५ ॥

तत्सिद्धंपाययेन्नारींयोनिरोगनिपीडिताम् ८६ पीडिताच लिताचापिनिःसृताविद्रुताचया । पित्तयोनिश्चविभ्रान्ता षण्ढयोनिश्चयास्मृता ८७ प्रपद्यन्तेहिताःस्थानंगर्भंगृह्ण न्तिचासकृत् । एतत्फलघृतंनामयोनिदोषहरंस्मृतम् ८८ वृषनिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानांशृतेनच । कल्केनपक्वंसर्पि स्तुनिहन्याद्विषमज्वरान् । पाण्डुकुष्ठविसर्पघ्नकृमीनर्शांसि नाशयेत् ८९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेघृतकल्पनाध्यायोनवमः ॥ ९ ॥

लाक्षाढकंक्काथयित्वाजलेश्चचतुराढकैः । चतुर्थांशं शृतंनीत्वातैलंप्रस्थमितंक्षिपेत् १ मस्त्वाढकंचगोदध्नः संर्वंतैलेविनिक्षिपेत् । शतपुष्पामश्वगन्धांहरिद्रांदेवदारुच २ कटुकांरेणुकांमूर्वांकुष्ठंचमधुयष्टिकाम् । चन्दनं मुस्तकंरास्नांपृथक्कर्षप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्रनिक्षिप्य

इनका क्काथ प्रस्थभर घृत व चारिप्रस्थ दूधमें पकावे जब घी सिद्धहो तब स्त्री पिवै तौ सब योनिदोष दूरहों ॥ ८६ ॥ पीड़ित, चलित, निःसृत, विकृत, पित्तयोनि, विभ्रांत, षण्ढयोनि ॥ ८७ ॥ ये सब योनिरोग मिटैं और गर्भाटकै यह फलघृतनाम घृत योनिदोष पर बहुत अच्छा कहा है ॥ ८८ ॥ (विषमज्वर पर पंचतिक्तघृत) रूसा, नींव, गुर्च, भटकटैया और पटोल (परवर) इन्हीं के काढा और कल्क में घी पकाय खाय तौ विषमज्वर जाय पांडु कुष्ठ विसर्प कृमि और अर्श ये भी दूरहोयँ ॥ ८९ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथघृततैलसाधनप्रकारः ॥ (लाक्षादितैल) लाही एक आढक ॥ आढक तीन सेर छः रुपये भर होता है" चारि आढक पानी में काढा करि चौथाई रहे उतारि ले प्रस्थभर तेलदे (" प्रस्थ ६४ रुपया भर कहाता है") ॥१॥ दहीकाजल एक आढकभरदे सौंफ,असगंध,हल्दी, देवदारु ॥ २ ॥ कुटकी, मेवड़ी बीज, मुरामूर्वा, कुठ, मुलेठी, चन्दन, नागरमोथा, रासन ये कर्ष भरले ॥ ३ ॥ चूर्ण करि तेलमें मध्यम आंचसे सिद्धकरै इस तेलके लगाने से

साधयेन्मृदुवह्निना ।। अस्याभ्यङ्गात्प्रशाम्यन्तिसर्वेपिविषमज्वराः ४ कासश्वासंप्रतिश्यायञ्चिकपृष्ठग्रहस्तथा ।। वातपित्तमपस्मारमुन्मादंयक्षराक्षसान् ५ कण्डूंशूलंचदौर्गन्ध्यंगात्राणांस्फुटनंजयेत् । पुष्टगर्भाभवेदस्यागर्भिण्यभ्यङ्गतोभृशम् ६ अश्वगन्धाबलाबिल्वंपाटलाबृहतीद्वयम् । श्वदंष्ट्रातिबलेनिम्बश्योनाकंचपुनर्नवाम् ७ प्रसारणीमग्निमन्थंकुर्याद्दशपलंपृथक् । चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशेषंभृतंनयेत् ८ तैलाढकेरसंयोज्यंशतावर्यारसाढकम् । क्षिपेत्तत्रचगोक्षीरंतैलात्तस्माच्चतुर्गुणम् ९ शनैर्विपाचयेद्देभिःकल्कैर्द्विपलिकैःपृथक् । कुष्ठैलाचन्दनंबालामांसीशैलेयसैन्धवैः १० अश्वगन्धाबलारास्नाशतपुष्पेन्द्रदारुभिः ।। पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणैवसाधयेत् ११ तत्तैलंनावनेभ्यङ्गेपानेबस्तौचयोजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भंमन्यास्तम्भंगलग्रहम् १२ कुब्जत्वंबधिरत्वंचगतिभङ्गंकटिग्रहम् । गा

विषमज्वर शमनहोताहै ॥ ४ ॥ कास, श्वास, नारूवहना, निकफड़े रीढ़पीड़ा, पीठजकड़ना, वातपित्तज मिरगी, यक्षव राक्षसी उन्माद ॥ ५ ॥ खाज, पेटपीर, दुर्गंध और देहफूटन ये मिटैं व गर्भिणी मलै तो गर्भपुष्टिहोय ॥ ६ ॥ (वासुपर नारायण तेल) असगन्ध, वरियारा, वेल, पादर, भटकटैया, दोनों गुखुरु, ककई, नींव, सोहनपत्ती, गदापुरना ॥ ७ ॥ गंधप्रसारिणी और अरणी ये दश दश पल सब द्रव्यले चारद्रोण पानी में पकावै जब एक द्रोण शेषरहै, " द्रोण, एकसेर एक छटाक का होताहै" ॥ ८ ॥ तब एक आढक तेलमें शतावरि का रस एक आढक देय जो गीली होय तो रस निचोरिकै देय सूखीहो तो काढाकरिकै देय तेलका चौगुना दूध गऊका दे ॥ ९ ॥ तिसमें कल्क डारि धीरे धीरे, पचावै कूठ, इलायची, चंदन, सुगन्धबाला, जटामासी, छरीला, सेंधालोन ॥ १० ॥ असगंध, वरियारा, रासन, सौंफ, देवदारु, शालपर्णी पृष्ठपर्णी, मुगवन, मषवन और तगर ये सब दो २ पललेकर कल्ककरे और तेलमें सानिलेय ॥ ११ ॥ उस तेल का नासदेय और शरीर पै मलै पिचकारी आदि कर्ममें देय पक्षाघात, ठोढी

येद्वीमान्पादशेषंरसंनयेत् ३० तैलप्रस्थेततःसर्वांकाथा
नेतान्विनिक्षिपेत् । कल्कैरेभिश्चविपचेदमृताकुष्ठनागरैः
३१ रास्नापुनर्नवैरण्डैःपिप्पल्याशतपुष्पया। बलाप्रसारि
णीभ्यांचमांस्याकटुकयातथा ३२ पृथगर्द्धपलैरेभिस्साध
येन्मृदुवह्निना । हन्यात्तैलमिदंशीघ्रंग्रीवास्तम्भापबाहु
कौ ३३ अर्धाङ्गशोषमाक्षेपमूरुस्तम्भापतानकौ । शाखा
कम्पंशिरःकम्पंविश्वाचीमर्दितंतथा । माषादिकमिदंतैलं
सर्ववातविकारनुत् ३४ शतावरीबलायुग्मपर्ण्यौगन्धर्व
हस्तकः । अश्वगन्धाश्वदंष्ट्राचबिल्वःकासःकुरण्टकः ३५
एषांसार्द्धपलान्भागान्कल्कयेच्चविपाचयेत् । चतुर्गुणेन
नीरेणपादशेषंश्रृतंनयेत् ३६ विपाच्यप्रस्थतैलेनक्षीरप्र
स्थंविनिक्षिपेत् । शतावरीरसप्रस्थंजलप्रस्थंचयोजयेत्
३७ शतावरीदेवदारुमांसीतगरचन्दनम् । शतपुष्पाब
लाकुष्ठमेलाशैलेयमुत्पलम् ३८ ऋद्धिर्मेदाचमधुकंका
कोलीजीवकस्तथा । एषांकर्षसमैःकल्कैस्तैलंगोमय्व

उतारि ले ॥ २९ ॥ प्रस्थ भर उडद और चौंसठपल जलमें पकाय उतारि छानि ले ॥ ३० ॥ तब प्रस्थ भर तेलमें सब काथ और मास यूप देकर पकावे और यह कल्क भी पकावे गुर्चे, कूट, सांठि ॥३१॥ रासन, गदापूर्ण, रेंड, पीपरि, सौंफ, खरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामासी और कुटकी ॥ ३२ ॥ ये सब आधा आधा पल धीमी आंचदे उस तेलमें पकावे इस तेलसे ग्रीवा जकडना, बाहुव्यथा ॥ ३३ ॥ अर्द्धांग सूखना आक्षेप, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, सर्वांगकंप और शिरःकम्प ये रोग इस माषादितेल से दूरहोंय सब वातविकार न रहैं ॥ ३४ ॥ (शतावरि तेल) शतावरि दोनों खरियारा, दोनोंपर्णी, रेंड, असगंध, गुखुरू, बेल, कास और कुरैया ॥ ३५ ॥ सब डेढ डेढ पल कल्ककरि चौगुने जलमें पकाय जब चौथाई शेषरहै तब उतारिले ॥ ३६ ॥ फिरि प्रस्थभर तेल प्रस्थभर दूधमें पकावै एक प्रस्थभरि शतावरिरस प्रस्थभर पानीमें पकावै ॥ ३७ ॥ फिरि शतावरि, देवदारु, जटामासी, तगर, चन्दन, सौंफ, खरियारा, कूट, इलायची, छरीला, कमल ॥ ३८ ॥ ऋद्धि सिद्धि

ह्निना ३९ पचेत्तैनैवतैलेननरःस्त्रीषुवृषायते । नारीच लभतेपुत्रंयोनिशूलंचनश्यति ४० अङ्गशूलंशिरःशूलं कामलांपाण्डुतांतथा । गृध्रसींप्लीहशोषांश्चमेहान्दण्डाप तानकम् ४१ सदाहंवातरक्तंचवातपित्तमदार्दितम् । असृ ग्दरंतथाध्मानंरक्तपित्तंनियच्छति ४२ शतावरीतैलमि दंकृष्णात्रेयेनभाषितम् (ॐनारायणायस्वाहा उत्तराभि मुखोभूत्वाखनेत्खदिरशङ्कुना । ॐसर्वव्याधिनाशनीये स्वाहा इत्युत्पाटनमन्त्रः।ॐकुमारजीवनीयेस्वाहा इतिपा चकमन्त्रः) ४३ काशीशंलाङ्गलीकुष्ठंशुण्ठीकृष्णाचसैन्ध वम् । मनःशिलाश्चमारश्चविडङ्गंचित्रकौवृषः ४४ दन्ती कोशातकीबीजंहेमाह्वाहरितालकः । कल्कैःकर्षमितैस्तैलं ततःप्रस्थंविपाचयेत् ४५ स्नुह्यर्कपयसादद्यात्पृथग्द्विप लसम्मितम् । चतुर्गुणगवांमूत्रंदत्त्वासम्यक्प्रसाधयेत्४६ कथितंखरनादेनतैलमर्शोविनाशनम् । क्षारवत्पातयत्ये

विना वराही कंद, मेदा, विना मुरेठी दुइनार कही है इससे दूनी लेना काकोली विना असगंध और जीवक विना वाराहीकंद ये सब कर्षभरले कल्ककरि गोंइठा की आंच में पचावे ॥ ३९ इसे माथमें लगानेसे पुरुष स्त्रियोंमें वृषभ तुल्य होकर रमता है व स्त्री पुत्रजनती है व योनिविकार नाशहोताहै ॥ ४० ॥ और अङ्गशूल, शिरःशूल, कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, शोष प्रमेह, दण्डापतानक वायु ॥ ४१ ॥ दाहसहित वातरक्त, वातपित्त, मदपीडित, रुधिर आध्मान रक्त पित्त ये सब दूरहोयँ ॥ ४२ ॥ यह शतावरि तेल कृष्णात्रेयने कहा है प्रथम मन्त्र निमंत्रण, दूसरा उत्पाटन, तीसरा पाचक मंत्र ये तीनों मंत्र मूलसे जानना चाहिये ॥ ४३ ॥ (अर्शपर कासीस तेल) कसीस, कलिहारी, कूट, सोंठि, पीपरि, सेंधव, मैनशिल, कनेर, वायविडंग, चीता, अडूसा ॥ ४४ ॥ जमालगोटा, वनतोरई बीज, चूक और ह-रताल ये सब कर्ष कर्ष भरले कल्ककरि, प्रस्थ भर तेलमें पकाय ॥ ४५ ॥ दोपल सेंहुड दूध, दोपल मदारदूध व तेलका चौगुना गोमूत्र देकर भली भांति पकावै ॥ ४६ ॥ यह, खरनाद आचार्यने कहा है इसके लगाने से बवासीर का मस्सा

तदर्शांस्यभ्यङ्गतोभृशम् ४७ वलीर्नदूषयंत्येतत्क्षारकर्म करंस्मृतम् ४८ मञ्जिष्ठासारिवासर्जयष्टीसिक्थैःपलोन्मितैः। पिण्डाख्यंसाधयेत्तैलमभ्यङ्गाद्वातरक्तनुत् ४९ अर्कपत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् । साधयेत्सार्षपंतैलंपामांकच्छूंविचर्चिनुत् ५० मरिचंहरितालंचत्वृत्तंरक्तचन्दनम्। मुस्तामनःशिलामांसीद्वेनिशेदेवदारुच ५१ विशालाकरवीरंचकुष्ठमर्कपयस्तथा । तथैवगोमयरसंकुर्यात्कर्षमितंपृथक् ५२ विषंचार्द्धपलंदेयंप्रस्थंचकटुतैलक‌म्। गोमूत्रंद्विगुणंदद्याज्जलञ्चद्विगुणम्भवेत् ५३ मरिचाख्यमिदंतैलंसिद्धंकुष्ठव्रणापहम्। जयेच्चित्राणिसर्वाणिपुण्डरीकंविचर्चिकाम्। पामांसिध्मंनिरक्सांदद्रूंकच्छूंविनाशयेत् ५४ त्रिफलारिष्टभूनिम्बद्वेनिशेरक्तचन्दनम्। एतैःसिद्धंमनुष्याणांतैलमभ्यञ्जनेहितम् ५५ भावयेन्निम्बबीजानिभृङ्गराजरसेनहि। तथासनस्यतोयेनतत्तैलंहन्ति

गिरपड़ता है और क्षारकर्म सा कष्ट नहीं होताहै "क्षारकर्म सन्धिये करते हैं", तौ मलमार्ग के चक्र में जोखिम जाती है इसमें नहीं आती ॥४७।४८॥ (वातरक्त पर पिंडतेल) मजीठ, सारिवा, राल, मुलेठी और मोम ये पलपल भरले तेल में पकावे इस पिंडतेलके लगाने से वातरक्त दूरहोताहै ॥ ४९ ॥ (कडूपर मदार तेल) अकौआके पत्रका रस हल्दीका कल्क सरसों के तेलमें पकावै तौ खजुरी, दाद, बिचर्चीं दूरहों ॥ ५० ॥ (कुष्ठपर मरिच तेल) काली हरताल निशोथ, रक्तचन्दन, मोथा, मैनशिल, जटामासी, दोनों हल्दी, देवदारु ॥ ५१ ॥ इंद्रायन, कनेर, कूट, मदारका दूध और गोबरका रस कर्ष कर्ष भरले ॥ ५२ ॥ आधापल सिंगिया प्रस्थभर कडुआ तेल दूना गोमूत्र व जल दूना दे ॥ ५३ ॥ इस मरिचादि तेलसे कुष्ठके घाव अच्छे हों श्वेत, रक्त व कालेदाग मिटैं पसरा, सेंहुआ, फटीलादाद और भैंसहादाद ये सब दूर हों ॥ ५४ ॥ (वातपर त्रिफलातेल)त्रिफला,नींब,चिरायता, दोनों हल्दी और रक्तचन्दन इसका पका तेल लगाने से मनुष्योंको बहुत गुण देताहै ॥ ५५ ॥ (पलितपर निंबतेल)

नस्यतः। अकालपलितंसद्यःपुंसांदुग्धान्नभोजिनाम्५६
यष्टीमधुकक्षीराभ्यांनवधात्रीफलैःशृतम् । तैलंनस्येकृतं
कुर्यात्केशश्मश्रूणिसर्वश: ५७ करञ्जचित्रकौजातीकरवी
रश्चपाचितम्। तैलमेभिर्हुतंहन्यादभ्यङ्गादिन्द्रलुप्तकम्
५८ नीलिकाकेतकीकन्दंभृङ्गराजःकुरंटकः। तथार्जुनस्य
पुष्पाणिवीजकःसुमनोपिच ५९ कृष्णास्तिलाश्चतगरं
समूलंकमलंतथा। अयोरजःप्रियङ्गुश्चदाडिमत्वग्गुडू
चिका ६० त्रिफलापद्मपङ्कश्चकल्कैरेतैःपृथक्पृथक् ।
कर्षमात्रंपचेत्तैलं त्रिफलाक्काथसंयुतम् ६१ भृङ्गराजर
सेनैव सिद्धकेशस्थिरीकृतम् । अकालपलितंहन्तिदा
रुणंचोपजिह्वकम् ६२ भृङ्गराजरसेनैव लोहकिट्टफल
त्रिकम् । सारिवाञ्चपचेत्कल्कैस्तैलंदारुणनाशनम् ।
अकालपलितंकण्डूमिन्द्रलुप्तञ्चनाशयेत् ६३ इरिमेदत्व
चंक्षुण्णां पचेत्पलशतोन्मिताम् । जलद्रोणेततःकाथंग्र

नीमबीजकी मींगी भँगरा रस में भावना देकर आसन रसमें दे उसका तेल नि
कारि नास ले तो अकालके पके बाल कालेहों दूर भात पथ दे ॥ ५६ ॥
(पुनस्तैलम्) मुलेठी कचे आवरेका कल्क, चौगुना तेल दे पकावै फिर
चौगुना पानीदे पकावै केवल तेलरहै तब उतारिले इसके नाससे केश सघन
होवैं ॥ ५७ ॥ (इंद्रलुप्तपर करञ्जतैल) कंजा, चीता, चमेली व कनेर में
तैलपकाय लगावैतो बादखोरा दूरहोय ॥५८॥ (पलितपर नीलकादितैल)
नील, केतकीमूल, भँगरा, कटसरैया, अर्जुन फूलनकाहार, चमेली ॥ ५९ ॥
काले तिल,तगर,कमलका सर्वांग,लोहचून,मालकंगनी, अनारकी छाल, गुर्च ॥
६० ॥ त्रिफला और कमलकी जड़की माटी कर्ष कर्षभर सब द्रव्यलेवै उसमें
तेल पचावै त्रिफले का क्काथसमेत॥६१ ॥ भांगरेकारस भी डारे सिद्धकरि तेल
लगावै,बाल स्थिर होयं अकालपलित अच्छाहो दारुण उपजिह्क शिररोग ये
सब अच्छेहों ॥ ६२ ॥ (पलितपर भृंगराजतैल) भँगरे के रसमें लोह
चून वा कीट त्रिफलासारिवा इनके कल्कमें तेलपचावै दारुणनाशहो अकालप-

ह्णीयात्पादशेषितम् ६४ तैलस्यार्द्धाढकंदत्वा कल्कैः कर्षमितैःपचेत् । इरिमेदलवङ्गाभ्यां गैरिकागुरुपद्मकैः ६५ मञ्जिष्ठालोध्रमधुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः । त्वग्जातीफलकर्पूरकंकोलखदिरैस्तथा ६६ पतङ्गधातकीपुष्प सूक्ष्मैलानागकेशरैः । कट्फलेनचसंसिद्धंतैलंमुखरुजंजयेत् ६७ प्रदुष्टमांसंचलितंशोणंदन्तंचशौपिरम् ॥ शीतादंदन्तहर्षंचविद्रधिंकृमिदन्तकम् । दन्तस्फुटनदौर्गन्ध्येजिह्वातालव्योष्ठजारुजंम् ६८ हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिः कटुतैलंविपाचयेत् । तस्यपूरणमात्रेणकर्णशूलंप्रणश्यति ६९ बालबिल्वानिगोमूत्रेपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् । साजक्षीरं सनीरंचबाधिर्यंहन्तिपूरणात् ७० बालमूलककंशुंठीनांक्षारः क्षारयुगंतथा । लवणानिचपंचैवहिंगुशिग्रुमहौषधम् ७१ देवदारुवचाकुष्ठंशतपुष्पारसाञ्जनम् । ग्रन्थिकंभद्रमुस्तंच

लित, खाज व इन्द्रलुप्त मिटै ॥६३॥ (मुखदन्तरोगपर इरिमेदादितैल) खैरछाल एकसौ अस्सी टंक कूटकर द्रोणभर जलमें पचावै जब चौथाई शेष रहै तब उतारिले ॥ ६४ ॥ आधाआढक तैलदे खैर, लौंग, गेरू, अगर, पद्माख ॥ ६५ ॥ मजीठ, लोध, मुलेठी, लाही, वटकी जड़, मोथा, तज, जायफल, कपूर, कंकोल, खदिरसार ॥६६॥ पतंग, धवपुष्प, इलायची और नागकेशर ये सब कर्ष कर्ष भरले इस में तैल पचाय लगावै तो मुखरोग दूर होय ॥ ६७ ॥ मुखमांस बहना, दांत हलना, दांत फूटना मुख कानि का विकार, दांत ठंढा होना, दांत छिद्र छिद्राना, मुखके निनाम, दंतकृमि, दंतफूटना, दुर्गन्ध, जीभरोग, तालुरोग और ओठरोग ये सब मिटै॥६८॥(कर्णशूलपर हिंगुतैल) हींग, धनियां और सोंठ इनतीनको कडुवेतेल में पचावै इसे कानमें डालनेसे पीड़ा दूर होय ॥ ६९ ॥ (बधिरत्वपर बेल का तेल) छोटे बेल गोमूत्र में कल्क करि तेल बकरी का दूध पानी सहित पकाय कान में डालने से बधिरत्वको दूर करताहै ॥७०॥ (कर्ण बहनेपर क्षार तेल) लघुमूलीका क्षार, सज्जी जवाखार, पांचों लोन, हींग, सहिंजना, सोंठ ॥ ७१ ॥ देवदारु, बच, कूठ, सोंफ, रसौत, पीपलामूल और नागरमोथा

कल्कैःकर्षमितैःपृथक् ७२ तैलप्रस्थंचविपचेत्कदलीबी
जपूरयोः। रसाभ्यांमधुसूक्तेनचातुर्गुण्यमितेनच ७३ पूय
स्रावंकर्णनादंशूलंबाधिरतांक्रमीन् । अन्यांश्चकर्णजान्रो
गान्मुखरोगांश्चनाशयेत् ७४ जम्भीराणांफलरसंप्रस्थैकं
कुडवोन्मितम् । माक्षिकंतत्रदातव्यंपलैकापिप्पलीस्मृता
७५ एतदेकीकृतंसर्वंमृद्भाण्डेचनिधापयेत् । वचाम्भोम
धुसंयुक्तंशृङ्गवेरगुडान्वितम् । धान्यराशौत्रिरात्रस्थंमधुसू
क्तमुदाहृतम् ७६ पाठाद्वेनिशेमूर्वापिप्पलीजातिपल्ल
वैः । दन्त्याचतैलंसंसिद्धंनस्यंस्याद्दुष्टपीनसे ७७ व्या
घ्रीदन्तीवचाशिग्रुतुलसीव्योषसैन्धवैः । कल्कैश्चपाचितं
तैलंपूतिनासागदापहम् ७८ कुष्ठंबिल्वकणाशुण्ठीद्राक्षाक
ल्ककषायवत् । साधिततैलमाज्यंवानस्यात्क्षवथुनाशनम्
७९ गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः । सिद्धंशिखरिबी

ये कर्ष कर्ष भरिले कल्क करि ॥ ७२ ॥ प्रस्थभर तेल में केलेका रस बिजौरा रस सहित पकावै चौगुना मधुसूक्त दे ॥ ७३ ॥ तो पीव कानसे गिरना शब्द होना, पीड़ा, बहिरापन, कानकीड़े और कानके सब रोग और मुखरोग दूरहोयँ ॥ ७४ ॥ जँभीरी नींबू का रस प्रस्थभर कुडवभर शहद पीपरि पलभर ॥ ७५ ॥ सब इकट्ठे करि माटी के पात्र में बचका काढ़ा अदरखका रस शहद और गुड़ ये भी मिश्रित करि पूर्वोक्त पात्रका मुख मूंदि अनाज में गाड़दे । तेहि ऊपर मूंदे तीन दिन धान्य समाधीः । ताहि कहैं मधुसूक्त चतुर्बुध वैद्य महाधी ॥ तीसरे दिन काढे तो मधुसूक्त है ॥ ७६ ॥ (पीनस पर पाठादितैल) पाढ़, दोनों हल्दी, मूर्वा, पीपरि, चमेलीपत्र और जमालगोटा इनके तेलसे दुष्ट पीनस अच्छा होय ॥ ७७ ॥ (नाकरोगपर भटकटैयातैल) भटकटैया, जमालगोटा, बच, सहिंजन, तुलसी, सोंठ, मिरच, पीपरि और सेंधव इनके तेलसे नाक से पीव गिरना और नाकरोग दूरहोयँ ॥ ७८ ॥ (छिक्कापर कूटतैल) कूट, बेल, पीपरि, सोंठ और दाख इनका काढ़ा और कल्क करि तेल या घीमें पकाय नास लेय तो छींकरोग दूरहोय ॥ ७९ ॥ (नासार्श पर गृहधूमादितैल) घरोटे के धुआन

जेश्चतैलंनासार्शसांहितम्८० वज्रीक्षीररविक्षीरंद्रवंधत्तूर चित्रकम्। महिषीविड्भवंद्रावंसर्वांशंतिलतैलकम् ८१ पचेत्तैलावशेषंतद्गोमूत्रेथचतुर्गुणे। तैलावशेषंपक्त्वाच तत्तैलंप्रस्थमात्रकम् ८२ गन्धकाग्निशिलातालंविडङ्गाति विषाविषम्। तिक्तकोशातकीकुष्ठवचामांसीकटुत्रयम् ८३ पीतदारुचयष्ट्याह्वसर्जिकाक्षीरजीरकम्। देवदारुचक र्षांशंचूर्णंतैलेविमिश्रयेत्। वज्रतैलमिदंस्यातमभ्यङ्गात्स र्वकुष्ठनुत् ८४ करवीरंशिफादन्तीतिक्तकोशातकीफल म्। रम्भाक्षारोदकेतैलंप्रशस्तंलोमशातनम्. ८५ द्र वेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्सन्धितंभवेत्। आसवारिष्टभे दैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम्. ८६ यदपक्वौषधाम्बुभ्यांसि द्धंमद्यंसआसवः। अरिष्टःक्वाथसिद्धःस्यात्तयोर्मानंपलो न्मितम् ८७ अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवद्रोणेतुलांगुडम्। चौद्रं

का करहैंया,पीपरि,देवदारु, जवाखार, करञ्ज,सैंधव और चिंचड़ावीज इनका तेल नाकरोग हरनेमें हितहै ॥८०॥ (सब कोढ़ पर) थूहरका दूध सेंहुड़ का दूध मंदार दूध धतूरे और चीतेकारस भैंसके गोबरका रस तिल तेलमें ॥८१॥ ये सब पचाय तेल रहे तब चौगुना गोमूत्र दे फिर पचाय तेल रहे तबप्रस्थभर तेलमें ॥८२॥ गन्धक, भिलावां,चीता,मैनशिल, हरताल, विडंग, दोनों अतीस, कडुवीतोरई, कूठ, वच, जटामांसी, त्रिकुटा ॥ ८३ ॥ दारुहल्दी, मुलेठी, सज्जी, जीरा और देवदारु ये सब कर्षकर्ष भर पीस तेल सिद्धकरै इस वज्रतेलके लगानेसे सबकुष्ठनाशहोंय ॥८४॥ (कनेरका तेल रोमशातन पर) कनेरफूल, जमालगोटा, निशोथ, कडुवी तोरई, केला,खार और केलेके पानी में तेल सिद्धकरि लगावै तो बाल गिरिपरैं ॥ ८५ ॥ (अथासव कल्पना) उदकादि द्रव वस्तुमें औषध देके पात्र में भरि मुँहमूँदि मासभरि रखने से औषध उत्तम होतीहै उसे आसव या अरिष्ट कहते हैं आसव अरिष्टमें दो भेदहैं ॥ ८६ ॥ उदकादि पदार्थमें जो औषध पूर्वोक्त रीतिसे सिद्धकरै उसे आसव कहिये जो कोई द्रव्यके क्वाथ में उसी रीतिसे सिद्धकरै उसे अरिष्ट कहिये इसके खानेकी मात्रा चार रुपये भरहै ॥ ८७ ॥ जहां अरिष्टमें द्रव्य

क्षिपेद्गुडाद्र्द्धप्रत्येकं दशमांशकम् ॥ ८८ ॥ ज्ञेयः शीतरसः शीधुरपक्वमधुरद्रवैः । सिद्धः पक्वरसः शीधुः सम्पक्वैर्मधुरद्रवैः ॥ ८९ ॥ परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नां सुरां जगुः । सुरामण्डः प्रसन्नास्यात्ततः कादम्बरी घना ॥ ९० ॥ तदधो जगलो ज्ञेयो मेदको जगलाघनः । पुक्कसो हृतसारः स्यात्सुराबीजं च किण्वकम् ॥ ९१ ॥ यत्तालखर्जूररसैः सन्धिता सा हि वारुणी । कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ॥ ९२ ॥ यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तत्सूक्तमभिधीयते । विनष्टमम्लतां यातं मद्यं वा मधुरद्रवैः ॥ ९३ ॥ विनष्टः सन्धितो यस्तु तच्चुक्रमभिधीयते । गुडाम्बुना सतैलेन कन्दशाकफलैस्तथा ॥ ९४ ॥ सन्धितं चाम्लतां यातं गुडसूक्तं प्रचक्षते । एवमेवेक्षुसूक्तं स्यान्मृद्वीकासम्भवं तथा ॥ ९५ ॥ तुषाम्बु सन्धितं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः । यवैस्तु निस्तुषैः पक्वैः

की तौल न होय वो जलादि पदार्थ द्रोणभरदे गुड तुलाभर शहद अर्द्धतुला और द्रव्यका चूर्ण गुडका दशांशदे अग्निपर करै ॥ ८८ ॥ (शीधु मद्यभेद कहते हैं) जो कच्चे ऊख रसादि मधुर पदार्थ में सिद्धकरै उसे शीतरस शीधु कहिये जो पक्वा-यकैरसमें सिद्धकरै उसे पक्वरसशीधु कहिये ॥ ८९ ॥ सुरांमसन्धादि भेद करि अग्नि यंत्र यन्त्र से उतारे उसे सुरा कहिये सुराके फेनको मंमस्रा कहिये फेनरहित जो नीचे रहै उसे कादंबरी व घनभी कहिये ॥ ९० ॥ सुराके नीचे रहै उसे जगल कहिये जगल के नीचे भाग को मेदक कहिये मेदक पकानेसे जो सार निकरै उसे सुराबीज और किराव कहते हैं ॥ ९१ ॥ ताड वा खजूरका रस अग्नियन्त्र योगकरि वा कच्चा लेप सिद्धकरै सो वारुणी है कन्द, मूल, फल, घृत, तैलादि स्नेह, लवण ॥ ९२ ॥ येसब द्रवपदार्थमें अग्नि व यन्त्रयोगसे मथनकरै उसे सूक्त कहिये ॥ ९३ ॥ जो विनष्टकडे सन्धितरस लोके खमीर सो खमीर उठी मद्य वा तुरंत मधुरद्रव में द्रव्य चूर्णकरि संधितकरी मासभरकी उसे शुक्र कहिये वा गुड़ पानी तेल कंदमूल फल ॥ ९४ ॥ इन्हें पूर्वोक्त रीतिसे संधितकर मासभर में सिद्ध करै उसे गुडसूक्त कहिये इसी प्रकार ऊखरसका और दाखका सूक्त होताहै ॥ ९५ ॥ यवपानी युक्त एकदिन संधितकरे उसे तुषांबु कहिये और यवगूरी पानीमें भिजाय एकदिन संधि-

म्भसःपंक्त्वा क्वाथेद्रोणावशेषिते । धातक्याविंशतिपलं गुडस्यचतुलांक्षिपेत् १३ मासमात्रंस्थितोभाण्डेकुटजारिष्टसंज्ञकः। ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णंधनञ्जयम् १४ विडङ्गंग्रन्थिकंरास्नांकुटजत्वक्फलानिच । पाठैला वालुकंधात्रीभागान्पञ्चपलान्पृथक् १५ अष्टद्रोणेम्भसः पक्त्वाकुर्याद्द्रोणावशेषितम्। पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रंप लशतत्रयम् ।१६। धातकींविंशतिपलांत्रिजातंद्विपलंत था। प्रियङ्गुकाञ्चनाराणांसलोध्राणापलंपलम् १७ व्योषं स्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत्। घृतभाण्डेविनिःक्षिप्यमासमेकंनिधापयेत् १८ ततःपिबेद्यथाग्निचजयेद्विद्रधि मूर्च्छितम्। ऊरुस्तम्भाश्मरीमेहान्प्रत्यष्ठीलाभगन्दरान्॥ गण्डमालांहनुस्तम्भंविडङ्गारिष्टसंज्ञितः १९ तुलार्द्धंदेव दारुःस्याद्वासाचपलविंशतिः। मञ्जिष्ठेन्द्रयवांदन्तीतगरं रजनीद्वयम् २० रास्नाक्रिमिघ्नमुस्तंचशिरीषंखदिरार्जु

दश दश पल ॥ १२ ॥ चारिद्रोण पानी में पचाय जब द्रोणभरि शेषरहै तबउतारि लें बीसपल धवफूल व तुलाभर गुडडारि ॥ १३ ॥ माटी के पात्र में मास भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वरों को दूरिकरि अग्निको तीक्ष्ण करताहै ॥१४॥ (विद्रधीपर विडंगारिष्ट) विडंग, पिपरामूल, रासन, कुरैयाछाल एक एक पल पाढ़ा, एला,वालछड़,आंवरा ये पांच पांच पल ॥ १५ ॥ आठद्रोण जल में औटाय द्रोण भररहै उतारिलें ठंढाभये तीनसै पल शहद ॥ १६ ॥ बीसपल धवफूल, तज पत्रज,इलायची,दोपल गोंदी,कचनार लोध पल पल भर ॥ १७ ॥ त्रिकुटा आठपल चूर्ण करिकै डारै घृत भाजन में एक मास भर राखै ॥ १८ ॥ जैसा अग्निबल देखे तैसा पिलावै तौ विद्रधी दूरहो ऊरुस्तंभ,पथरी,प्रमेह,प्रत्यष्ठीला,भगंदर,गंडमाला और हनुस्तंभ ये रोग इस विडंगारिष्टसे अच्छे होतेहैं॥ १९ ॥(प्रमेहपर देवदारु अरिष्ट)अर्द्धतुला देवदारु, रूसा बीसपल, मँजी , इन्द्रयव, जमालगोटा, तगर,दोनों हल्दी ॥ २० ॥ रासन, विडंग, नागर

नौ। भागान्दशपलान्दद्याद्यवान्यात्रसकस्यच२१ चन्दन
स्यगुडूच्याश्चरोहिण्याश्चित्रकस्यच । भागानष्टपलाने
तानष्टद्रोणेम्भसःपचेत् २२ द्रोणशेषेकषायेचशीतीभूतेप्र
दापयेत् । धातक्याःषोडशपलं माक्षिकस्यतुलात्रयम्
२३ व्योषस्यद्विपलंदद्यात्त्रिजातस्यचतुष्पलम्। चतुष्प
लंप्रियङ्गुश्चद्विपलंनागकेशरम् २४ सर्वाण्येतानिसञ्चू
र्ण्यघृतभाण्डेनिधापयेत् । मासादूर्ध्वंपिबेदेनंप्रमेहंहन्तिदु
र्जयम् २५ वातरोगान्ग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् ।
देवदार्व्यादिकोरिष्टदद्रुकुष्ठनिवारणः २६ खदिरस्यतुला
र्द्धन्तु देवदारुचतत्समम् । वाकुचीद्वादशपलंदार्व्यास्या
त्पलविंशतिः २७ त्रिफलाविंशतिपलान्यष्टद्रोणेम्भसःप
चेत् । कषायेद्रोणशेषेचपूतेशीतेविनिक्षिपेत् २८ तुला
द्वयंमाक्षिकस्यतुलैकाशर्करामता । धातक्याविंशतिपलं
कङ्कोलंनागकेशरम् २९ जातीफललवङ्गैलात्वक्पत्राणि
पृथक्पृथक् । पलोन्मितानिचूर्णानियादद्यात्पलचतुष्टय
म् ३० घृतभाण्डेविनिक्षिप्यमासादूर्ध्वंपिबेन्नरः । महा

मोथा, सिरस, खैर और, अर्जुन ये दश दश पल तथा अजवायन, तुरैया ॥ २१ ॥ चंदन, गुर्चे, कटुकी, चीता, आठ आठ पल पानी आठ द्रोण में पचावै ॥ २२ ॥ जब द्रोणभर शेष रहै तौ ये औषध डारै धायफूल सोलहपल तीनतुला, शहद ॥ २३ ॥ त्रिकुटा दोपल, तज, पत्रज, इलायची ४ पल, प्रियंगु, ४ पल और नागकेशर दोपल ॥ २४ ॥ इनसबका चूर्ण घीके वर्तनमें मासभर राखै फिर पिये तौ दुर्जय प्रमेहको हरताहै॥२५॥ तथा वातरोग, ग्रहणी, अर्श व मूत्रकृच्छ्को नाशै इस देवदारु अरिष्टमे दाद व कुष्ठ अच्छा होताहै ॥ २६ ॥ (कुष्ठपरखदिरारिष्ट) खैर अर्द्धतुला, देवदारु अर्द्धतुला, बकुची १२ पल, हल्दी २० पल ॥ २७ ॥ त्रिफला २० पल इनको आठद्रोण जलमें पचावै द्रोणभर रहै ठण्ढाकरि औषध डारै ॥ २८ ॥ शहद २ तुला, खांड १ तुला, धायफूल २० पल, कंकोल, नागकेशर ॥ २९ ॥ जायफल, लौंग, इलायची, तज और पत्रज ये सब पल२भर, पीपरि ४ पल ॥ ३० ॥

ऋद्धिवृद्धिके ,४९ कुर्यात्पृथग्द्विपलिकान्पचेदष्टगुणेज
ले। चतुर्थांशंशृतंनीत्वामृद्भाण्डेसंनिधापयेत्५० चतुःषष्टि
पलांद्राक्षांपचेन्नीरेचतुर्गुणे। त्रिपादशेषंशीतंचपूर्वक्वाथेशृ
तंक्षिपेत् ,५१ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रंदद्याद्गुडंचतुःशतम् ।
त्रिंशत्पलानिधातक्याःकङ्कोलंजलचन्दनम् ५२ जातीफ
लंलवङ्गंचत्वगेलापत्रकेशरम् । पिप्पलीचेतिसञ्चूर्ण्यभा
गैर्द्विपलिकैःपृथक् ५३ शाणमात्रांचकस्तूरींसर्वमेकत्रनि
क्षिपेत् । भूमौनिखातयेद्भाण्डेततोजातरसंपिबेत् ५४ कत
कस्यफलंक्षिप्त्वारसंनिर्मलतांनयेत् । ग्रहणीमरुचिंशूलं
श्वासकासंभगन्दरम् ५५ वातव्याधिंक्षयंछर्दिंपाण्डुरोगं
चकामलाम् । कुष्ठान्यर्शांसिमेहांश्चमन्दाग्निमुदराणिच
५६ शर्करामश्मरींमूत्रकृच्छ्रन्धातुक्षयंजयेत् । कृशानांपु
ष्टिजननोवन्ध्यानांपुत्रदःपरः । अरिष्टोदशमूलाख्यस्ते
जःशुक्रबलप्रदः ॥१५७॥ इतिश्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसन्धा-
नकल्पनायांदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

ऋद्धि वृद्धि ॥ ४९ ॥ ये सब दो२ पल सब औषधियोंका अठगुना जल औटावै जब चौथ्याई शेष रहिजाय तब उतारि माटी के पात्रमें धरै ॥ ५० ॥ दाख साठ पल चौगुना जलदै औटै चौथ्याई जरै तीन चरणरहै तब ठंढाकरि पहिले क्वाथ साथ मिलावै ॥ ५१ ॥ शहद पल ३२ गुड पल ४०० धवपुष्प पल ३० शीतलचीनी, खस वा चंदन ॥५२ ॥ जायफल,लौंग,तज, इलायची, पत्रज, केशर और पीपरि इन सबों का चूर्ण दो दो पल ॥ ५३ ॥ कस्तूरी चारिमाशे सब इकट्ठेकरि उसी में डारि धरती खोदि गाडै उसमें का रस पिये ॥ ५४ ॥ निर्मली रगडके डाले तौ रस निर्मल होजाय इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वासकास, भगंदर ॥ ५५ ॥ वातव्याधि,क्षयी,छर्दि, पांडु, कामला, कुष्ठ अर्श, प्रमेह, मंदाग्नि, उदररोग ॥ ५६ ॥ सिकताप्रमेह,पथरी, मूत्र कृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायँ दुर्बल मोटाहोय बांझिनि पुत्रजनै यह दशमूलारिष्ट तेज धातु औरबलको देताहै ॥१५७॥
इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

स्वर्णतारंताम्रमारंनागवङ्गौचतीक्ष्णकम्। धातवः स प्तविज्ञेयास्ततस्तान्शोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारताम्राणां पत्राण्यग्नौप्रतापयेत्। निषिञ्चेत्तत्ततप्तानितैलेतक्रेचकाञ्जिके २ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा। एवंस्वर्णादिलोहानांविशुद्धिःसम्प्रजायते ३ नागवङ्गौप्रतप्तौचा गलितौतौनिषेचयेत्। त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेन चत्रिधा ४ स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत्। तद्गोलकेसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ५ गोलकंचततोरुध्याच्छरावदृढसम्पुटे। त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवंचतुर्दश ६ निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः। काञ्चनेगलितेनागंषोडशांशेननिक्षिपेत् ७ चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृत्वाचगोलकम्। गोलकेनसमंगन्धंदत्त्वाचैवाधरोत्तरम् ८ शरावसम्पुटेधृत्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः। एवंसप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते ९ काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः।

(स्वर्णादिधातुशोधन) सोना, चांदी, तांबा, पीतर, सीसा, रांगा और लोहा इन सातों धातुओंके शोधने की रीति कहते हैं ॥ १ ॥ सोना, चांदी, पीतर और तांबा इनके सूक्ष्म पत्र बना आगिमें लाल तपाय तेल मट्ठे कांजीमें बुझाय ॥ २ ॥ गोमूत्र में कुलथी क्वाथ में इन सबमें तीन तीनबार बुझावै इसीभांति स्वर्णादि धातु शुद्ध होतीहैं ॥ ३ ॥ सीसा रांगा ये गलाकर पूर्वोक्त पदार्थोंमें तीनबार बुझावै फिर तीन२ बार मदारदुग्धमें बुझावै ॥ ४ ॥ (सोना मारनेकी विधि) शुद्धसोना तिससे दूना शुद्ध पारा नींबूके रसमें घोटि गोली करि गोली समान गंधक पीसि तरे ऊपरधरे ॥ ५ ॥ मट्टीके दो सरवाले एकनीचे में गोलाधरि दूसरा ऊपरढकै उसपर कपरौटीकरि तिसआकंडा की आंचदेय इसे शरावसंपुट कहते हैं इसी प्रकार आगिले निकार संपुटकरि चौदहबार आंचदेवै ॥ ६ ॥ यों प्रतिआंचदे गंधकदेनेसे स्वर्णभस्म निर्मल होती है (पुनर्विधि सोनेकी) १६ मासे सोना गलाय मासाभरि सीसाडारि उतारि ठण्डाकरि ॥ ७ ॥ चूर्णकरै नींबूके रस में गोलाबा२ नीचे ऊपर गंधकधरि ॥ ८ ॥ गोलेके समान शरावसंपुटकरि ३० गो-

कज्जलीहेमपत्राणिलेपयेत्सममात्रया १० काञ्चनारत्व
चःकल्कमूषायुग्मंप्रकल्पयेत्। धृत्वातत्सम्पुटेगोलंमृन्मूषा
सम्पुटेचतत् ११ निधायसन्धिरोधंच कृत्वासंशोष्यकोकि
लैः। वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदद्यात्पुटत्रयम् १२ निरुत्थंजा
यतेभस्मसर्वकार्येषुयोजयेत्। काञ्चनारप्रकारेणलांगली
हन्तिकाञ्चनम् १३ ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहन्तिमनः
शिला। शिलासिन्दूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धकैः १४ सप्तै
वभावनादद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः। ततस्तुगलितेहेम्नि
कल्कोयंदीयतेसमः १५ पुनर्धमेदतितरां यथाकल्कोवि
लीयते। एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कोहेममृतिर्भवेत् १६
पारावतमलैर्लिम्पेदथवाकुक्कुटोद्भवैः। हेमपत्राणितेषांच
प्रदद्यादधरोत्तरम् १७ गन्धचूर्णसमंकृत्वा शरावयुगसम्पु
टे। प्रदद्यात्कुक्कुटपुटं पञ्चभिर्गोमयोपलैः १८ एवंनवपु

इटाकी आंचदे तब सोना निरुत्थ भस्म होजाताहै ॥ ९ ॥ (तीसरा) कचनारके
रस में पारा, गंधक समान मिलाय खरलकरै कर कजलीहो तब सोने के पत्रपर
लगावै ॥ १० ॥ फिर कचनार की छाल पीसिकै उस गोलेपर बहुतसी लपेटै
फिर दोनरिया मिट्टीकी बना एकमें धरि दूसरी ऊपर ढकि ॥ ११ ॥ कोसिकै क-
परौटी करि सुखाय बड़ी आंचदे इसीतरह प्रथम कही रीतिसे तीन आंचदे ॥ १२ ॥
जब मिलाने से न जिये तौ उत्तमहै भस्म जैसे कचनार, विधान से मरताहै तैसेही
कलि या रीति से भी मरता है ॥ १३ ॥ ऐसे ज्वालामुखी कहे अरणी से भी भस्म
होताहै तैसे मैनशिल से मैनशिल सेंदुर सम ले मदारदूध में घोटि ॥ १४ ॥ सात
बार घोटि घोटि सुखाय सुखाय ले तब दशमाशे सोना गलाइ चरक खाने लगै तब
दशमाशे यह मैनशिल सिंदूर का सिद्धचूर्ण सोनेमें छोड़ै ॥ १५ ॥ बुकनी देके तीन
आंचदे जबतक यह बुकनी न जरिजाय तबतक आंचदे इसीभांति बुकनी देदे तीन
आंचदेय तौ सोना भस्म होय ॥ १६ ॥ पांचवां कबूतर की वा कुकुटकी बीट दोनों
सोने के पत्रकरि ऊपरनीचे लपेटै ॥ १७ ॥ उसी के समान गन्धकचूर्ण भी दोनों

१ गोमयैरितिपाठान्तरम् ॥

टंदद्याद्दशमंचमहापुटम् । त्रिंशद्वनोपलैरेवं जायतेहेम
भस्मतास् १९ भागेकंतालकंमर्द्य याममम्लेनकेनचित् ।
तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् २० धृत्वामूषापटे
रुध्वा पुटेत्रिंशद्वनोपलैः । समुद्धृत्यपुनस्तालं दत्त्वाव
ध्वापुटैःपचेत् । एवंचतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते २१
स्नुहीक्षीरेणसम्पिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत् । तालकस्यप्रका
रेण,तारपत्राणिबुद्धिमान् । पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्र
जायते २२ अर्कक्षीरेणसम्पिष्टोगन्धकस्तेनलेपयेत्।समे
नारस्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ततोमूषापुटेधृ
त्वापुटेद्गजपुटेनतु। एवंपुटद्वयेनैवभस्मारंभवतिध्रुवम् २४
आरवत्कांस्यमप्येवंभस्मताम्यन्तुनिश्चितम् । अर्कक्षीर
चंदाजंस्यात्क्षीरंनिर्गाण्डिकातथा । ताम्रीतिघ्नविंषेस

मंगन्धकयोगतः २५ सूक्ष्माणिताम्रपत्राणि कृत्वासंशोधयेद्बुधः । वासरत्रयमम्लेनततःखल्वेविनिक्षिपेत् २६ पादांशंसूतकंदत्वा याममम्लेनमर्दयेत् । ततउद्धृत्यपत्राणि लेपयेद्द्विगुणेनच २७ गन्धकेनाम्लघृष्टेन तस्य कुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षी चाङ्गेरीचपुनर्नवा २८ तत्कल्केनबहिर्गोलं लेपयेद्द्व्यङ्गुलोन्मितम् । घृत्वातद्गोलकंभाण्डे शरावेणचरोधयेत् २९ वालुकाभिः प्रपूर्याथ विभूतिलवणाम्बुभिः । दत्वाभाण्डेमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत् ३० क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यग्यावद्यामचतुष्टयम् । स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यमर्दयेत्सूरणद्रवैः ३१ दिनैकंगोलकं कुर्याद्र्धगन्धेन लेपयेत् । सघृतेनततो मूषापुटेगजपुटेपचेत् ३२ स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्य मृतं ताम्रंशुभंभवेत् । वान्तिभ्रान्तिक्लमरेकं न करोतिकदाच

पय व मिनडी रस में गन्धक पीसि तावे वा कासे वा पीतरपत्र पर लगाय पूर्वोक्त रीतिसे फूंकै तौ तीनोंमरै ॥ २५ ॥ (ताम्रभस्म) उमली पत्रकी सुटाई, समपत्र करि ताम्रपत्र पर खटाईका पानीदे तीन दोलायन्त्रकी आचदेकर सरलकरै ॥ २६ ॥ तावे की चौथाई पारादे पहरभर नींबू में घोटै फिर तावेकी दूनी गन्धक नींबूके रसमें घोट पत्र पननेप गोला बांधि मकोय वा अमलोनिया वा गदापुरैना ॥ २७।२८ ॥ इनकी पीठी दो अंगुल मोटी गोलापर लपेट एक वासनमें धरि मुखमूंदिदे ॥ २९ ॥ तब एक बड़े वासनकी पेंदीमें छेदकरि उसपर अभ्रकधरि थोड़ा वालू भरै तिसपर लोनका पानी छिड़क पहिला वासनधरै फिर वालूभरि लोनका पानीदे दबाईदे जिसमें यह वासन तुपजाइ तब बड़े वासन का मुहमूंदि कपरौटी करि चूल्हेपै धरि लकड़ी की आचदेय ॥ ३० ॥ मद आचदे फिरि क्रमसे तेज करता चार पहर आचदे ठंढाकरि सूरनके रसमें ॥ ३१ ॥ एकदिन उसी तावेका आधा गन्धक आधा घीले खरलकरि उसे तावेपर लेपकरि, मूसायन्त्रमें धरि फिर गजपुट आचदे ॥ ३२ ॥ जब उसी में स्वाभाविक शीत होजाय तब निकारिले तौ उवाकी संभ्रम चित्त

१ मत्नाक्षी (मछला) एक थ पुनर्नवा को कहते हैं और किसीके मतमें कुम्भी महाती है ॥

नः ३३ ताम्बूलीरससम्पिष्टं शिलालेपात्पुनः पुनः। द्वा
त्रिंशद्भिः पुटैर्नागो निरुत्थोयातिभस्मताम् ३४ अश्व
त्थचिञ्चात्वक्चूर्णं चतुर्थांशेननिक्षिपेत्। मृत्पात्रेद्राविते
नागेलोहदर्व्याप्रचालयेत् ३५ यामैकेनभवेद्भस्मतत्तुल्यां
चमनःशिलाम्। काञ्जिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद्गजपुटेनच ३६
स्वाङ्गशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलयाकाञ्जिकेनच। पुनःपुटेच्छरा
व्याभ्यासेवं षष्टिपुटैर्मृतिः ३७ मृत्पात्रेद्रावितेवङ्गे चि
ञ्चाश्वत्थत्वचोरजः। क्षिप्त्वावङ्गचतुर्थांशमयोदर्व्याप्र
चालयेत् ३८ ततोद्वियाममात्रेणवङ्गभस्मप्रजायते। अ
थभस्मसमंतालं क्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत् ३९ ततोगजपु
टेपक्त्वा रसेनपुनरम्लयेत्। तालेनदशमांशेन यामैकं
ततःपुटेत् ४० एवंदशपुटैःपक्वोवङ्गस्तुम्रियतेध्रुवम्। शु
द्धंलोहभवंचूर्णं पातालगरुडीरसैः। मर्दयित्वापुटेद्वाद

त्रिकलाई और दस्त आना दूरहो तब जानिये तांबा शुद्धभया ॥ ३३ ॥ (सीसा भस्मर्म) पानके रसमें मैनशिलको पीसि सीसे के पत्रपर लगावै बत्तिस बेर इसी ऐसे आंचदे ऐसेही बत्तिस आंचदे ॥ ३४ ॥ (पुनर्विधान) पीपरि अमली की छाल का चूर्ण चौथाई सीसादे माटी के बासनमें धरि नीचे आंचदे तब सीसा गलै तब वही दोनों छालका चूर्ण डारि डारि लोहेकी कांडीसे चलावता रहे ॥ ३५ ॥ ऐसे पहर भर आंचदेय तब सीसेकी भस्मके बराबर मैनशिलदे कांजीमें घोटि सुखाय गजपुट आंचदेय ॥ ३६ ॥ ठंढाभये फिरि मैनशिल कांजीदे घोटि गजपुटदेय ऐसे साठि आंचदेय तब सीसाभस्म होय तो साठिसे कमदेय तो नीलका है ॥ ३७ ॥ बंगभस्म रांगा माटी के बासन में लगाय चौथाई पीपरि अमली की छालका चूर्ण देकर लोहे की कल्छी से घोटै ॥ ३८ ॥ दोपहर घोटै तो रांगा भस्महोय रांगा की भस्म के तुल्य हरताल डारि निम्बू के रस में घोटै ॥ ३९ ॥ गजपुटकी आंचदे फिर निकार नींबूका रस और दशांश हरतालदे पहरभर घोटै॥ ४० ॥ फिर उसे फूंकदे इसभांति दश आंच दे तब बंग तैयार होय शुद्ध लोहा ति- सका चूर्ण पातालमूली और पातालमूली विना अरहंटा के रसमें घोटै आंच

द्यादेवं पुटत्रयम् ॥ ४१ ॥ पुटत्रयं कुमार्य्याश्च कुठारच्छिन्नकारसैः । पुटषट्कं ततो दद्यादेवं तीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥ ४२ ॥ क्षिपेद्द्वादशभागेन दरदं तीक्ष्णलोहतः । मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मं ततः पुटेत् । एवं सप्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ ४३ ॥ रसैः कुठारच्छिन्नायाः पार्तालगरुडीरसैः । स्तन्येन चार्कदुग्धेन तीक्ष्णस्यैवं मृतिर्भवेत् ॥ ४४ ॥ सूतकाद्द्विगुणं गन्धं दत्त्वा कुर्याच्च कज्जलीम् । द्वयोः समं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ ४५ ॥ यामयुग्मं ततः पिण्डं कृत्वा ताम्रस्य पात्रके । घर्मे धृत्वोरुबूकस्य पत्रैराच्छादयेद्बुधः ॥ ४६ ॥ यामार्द्धेनोष्मता भूयाद्धान्यराशौ न्यसेत्ततः । दत्त्वोपरि शरावं च त्रिदिनान्ते समुद्धरेत् ॥ ४७ ॥ पिष्ट्वा च गालयेद्वस्त्रादेवं वारितरं भवेत् । एवं सर्वाणि लोहानि स्वर्णादीन्यपि मारयेत् ॥ ४८ ॥ शिलागन्धार्कदुग्धाक्ताः स्वर्णाद्यास्सप्तधातवः । म्रियन्ते द्वादशपुटैः सत्यं गुरुवचो यथा ॥ ४९ ॥ माक्षिकं तुत्थकं स्रोतोनीलाञ्जन

दे, ऐसे तीनि आच दे ॥ ४१ ॥ फिर घीकुवार के रसमें घोटै तीन आचदे फिर कुरैया छाल के क्वाथ में घोटि छ आच दे तो लोह भस्म होताहै ॥ ४२ ॥ (पुनः) जितना लोहाहो तिसका बारहवा अंश सिंगरफ दे घीकुवारके रसमें दोपहर घोटै आच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४३ ॥ (पुनः) कुरैया रस वा छरहटा रस में वा स्त्री के दूध में वा मदार रस में सिंगरफ युक्त किसी में घोटि सात आँच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४४ ॥ (पुनः) पारे की दूनी गन्धक मिलाय कजली करि कजली के समान लोह चूर्ण ले, घीकुवारके रसमें दोनों घोटै ॥ ४५ ॥ दोपहर घोटि पिण्डी बनाय तांबे के पत्र में धरि रेंडपात से ढँकि ॥ ४६ ॥ चारि घरी घूप में राखि गर्माया उतारि फेंकिदेय दूसरे पात्रमें डाकि अनाज की राशि में तीनदिन गाडिकै निकार लेय ॥ ४७ ॥ सब पीसिकै कपडे में छानि पानी पर डारे से लोह तिरैगा ऐसेही स्वर्णादि सब धातु मारिये ॥ ४८ ॥ (सीसरीविधि) शिल, व गन्धक मदार के दूध में खरल कारये इसी प्रकार सात धातु में चाहे जिस धातुको बारह आचदे इससे धातु भस्म होजातीहै यह रीति सि-

शिलाजतुः । रसकश्चैवविज्ञेयाएतेसप्तोपधातवः ५० माक्षिकस्यत्रयोभागा भागैकंसैन्धवस्यच । मातुलुङ्गद्रवैर्वाथजम्बीरोत्थद्रवैःपचेत् ५१ चालयेल्लोहपात्रेणयावत्पात्रंसुलोहितम् । भवेत्ततस्तुसंशुद्धंस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ५२ (अन्यच्च) कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत् तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ५३ कर्कोटीमेषशृङ्गयुत्थैर्द्रवैर्जम्बीरजैरसैः । भावयेदातपेतीव्रेविमलाशुध्यतिध्रुवम् ५४ विमलाया समं गन्धं मार्जारकपोतयोः दशांशं टङ्कणंदत्त्वापचेन्मृदुपुटैस्ततः । पुटंदद्यात्पुटंदद्याद्द्रवैस्तुल्यविशुद्धये ५५ कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततः क्षीरेविनिःक्षिपेत् । भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातन्दुलीयाम्लयोर्द्रवैः ५६ भावयेदष्टयामन्तदेवंशुध्यतिचाभ्रकम् । वस्त्राधान्ययुतावस्त्रेमर्दयेत्काञ्जिकैस्सह ५७ कृत्वाधान्याभ्रकंतत्तुशोषयित्वाथम

र्दयेत्। अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यंचक्राकारन्तुकारयेत् ५८ वेष्टये
दर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत्। पुनर्मर्द्यंपुनःपाच्यंसप्त
वारंप्रयत्नतः ५९ ततोवटजटाक्वाथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम्।
म्रियतेनात्रसन्देहःसर्वरोगेषुयोजयेत् ६० शुद्धंधान्याभ्र
कंमुस्तंशुण्ठीषड्भागयोजितम्।मर्दयेत्कांजिकेनैवंदिनंचि
त्रकजैरसैः ६१ ततोगजपुटंदद्यात्तस्मादुद्धृत्यमर्दयेत्।
त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेद्देयंपुटैस्त्रिभिः ६२ बलागोमूत्रमु
शलीतुलसीशूरणद्रवैः। मर्दितंपुटितंवह्नौत्रिस्त्रिवेलंम्र
जेन्मृतिम् ६३ धान्याभ्रकस्यभागैकंद्वौभागौटङ्कणस्यच
पिष्ट्वातदंधमूषायां रुद्ध्वातीव्राग्निनापचेत्। स्वभावशी
तलंचूर्णंसर्वरोगेषुयोजयेत् ६४ नीलाञ्जनंचूर्णयित्वाजं
म्बीरद्रवभावितम्। दिनैकमातपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत्
६५ एवंगैरिककासीशटङ्कणानिवराटिका। तुवरीशंखकंकु
ष्ठशुद्धिमायातिनिश्चितम् ६६ पचेत्त्र्यहमजामूत्रैर्दोलायं

बासनमें धरि जब थिरावै कांजी त्याग अभ्रक सुखाय मदार दूधमें दिनभर घुटाय
टिकियाकरै ॥ ५८ ॥ मदार पत्रमें लपेट गजपुट आंचदे ऐसेही मदार दूधमें घोटि
घोटि सातपुटदेय ॥ ५९ ॥ (फिर) बरगदजटा क्वाथमें घोटि घोटि तीन पुटदेय
इसप्रकार निःसंदेह अभ्रक मरेगा सबकर्म योग्य होयगा ॥६०॥ (दूसरीविधि)
शुद्ध अभ्रक ले छठा छठाअंश मोथा व सोंठ दे कांजीमें दिनभर खरलकरि फिर
चीता के रसमें ॥ ६१ ॥ तब गजपुट आंचदे फिर निकार तीनबार त्रिफला रस-
में घोटि घोटि गजपुट आंच देय ॥ ६२ ॥ फिर बरियारा, गोमूत्र, मुशली,
कृष्णतुलसी और सूरन इनके रस में घोटि घोटि तीनबार गजपुट आंच देय
तौ अभ्रक मरै ॥ ६३ ॥ एक भाग शुद्ध अभ्रक दो भाग सुहागा देकर अंधमूषक
यगमें रुंधि गजपुटकी तेज आंच में फूंके इसकी ठंढी प्रकृति है सब रोगों में देना
योग्यहै ॥ ६४ ॥ (सुरमा शोधन व मारण) सुरमा चूर्णकरि जम्बीरी नींबू-

१ पञ्चधारि सूपर अङ्गार भरी घड़ आदिमें भरकरै जो औषध आपनीहो बसरी पाम्ली
दार खटकार देव रसभांते स्वराज्ञिये करने को राजवन्त्र कहाहै ॥

त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाःशुद्धिमृच्छति
६७ (अन्यच्च) अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकम् ।
शृङ्गवेररसैर्वापिविदधातिमनःशिलाम् ६८ तालकंकणशः
कृत्वातच्चूर्णंकाञ्जिकेक्षिपेत् । दोलायन्त्रेणयामैकंततःकूष्मा
ण्डजैर्द्रवैः ६९ तिलतैलपचेद्यामं यामञ्चत्रिफलाजलैः ।
एवंयन्त्रेचतुर्यामंपाच्यंशुद्ध्यतितालकम् ७० नरमूत्रेतु
गोमूत्रे सप्ताहंरसकंपचेत् । दोलायन्त्रेणशुद्धंस्यात्ततःका
र्येषुयोजयेत् ७१ लाक्षामीनपयश्छागंटङ्कणंमृगशृङ्गकम् ।
पिण्याकंसर्पपाशियगुञ्जोर्णागुडसैन्धवम् ७२ यथास्तिक्तं
घृतंक्षौद्रंयथालाभंविचूर्णयेत् । एभिर्विमिश्रिताःसर्वधात
वोगाढवह्निना । मूषाध्माताःप्रजायन्ते मुक्तसत्त्वानसंश
यः ७३ कुलित्थकोद्रवक्काथैर्दोलायन्त्रेविपाचयेत् । व्या

ग्नीकन्दगतंवज्रं त्रिदिनैःशुद्धिमृच्छति ७४ ततस्तत्तन्तुबद्धं खरमूत्रेनिषेचयेत्। पुनस्ताप्यंपुनःसेच्यमेवंकुर्यात्त्रिसप्तधा ७५ मत्कुणैस्तालकंपिष्ट्वा यावद्भवतिगोलकम्। तद्गोलेनिहितंवज्रं तद्गोलंचाधिकंधमेत् ७६ सेचयेदश्वमूत्रेण तद्गोलंचक्षिपेत्पुनः। रुद्ध्वाध्मातंपुनःसेच्यमेवंकुर्यात्त्रिसप्तधा। एवंचम्रियतेवज्रं चूर्णंसर्वत्रयोजयेत् ७७ हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तेक्वाथेकौलत्थजेक्षिपेत्। तप्तंतप्तंपुनर्वज्रं भूयाच्चूर्णंत्रिसप्तधा ७८ मण्डूकंकांस्यजेपात्रेनिगृह्यस्थापयेत्सुधीः। सभीतोमूत्रयेत्तत्र तन्मूत्रेवज्रमावपेत्। तप्तन्तप्तंबहुधावज्रस्यैवम्मृतिर्भवेत् ७९ वैक्रान्तंवज्रवच्छोध्यं नीलंवालोहितंतथा। हयमूत्रेतुतत्सेच्यं तप्तंतप्तंहि सप्तधा ८० ततश्चमेषदुग्धेन पञ्चाङ्गेगोलकंक्षिपेत्। पुटेन्मूषापुटेरुद्ध्वा कुर्यादेवंचसप्तधा ८१ वैक्रान्तंभस्मतां

टेयाकी जड़की लुगदीमें हीरारख कपड़ेमें बांधि तीनदिन सिद्ध करे तब हीरा शुद्धहो फिर आगिमें तपाय खर(गधे) के मूत्रमें २१ बार बुझावै ॥७४।७५॥ मत्कुण कहे खटकिरना और हरताल पीसि गोलाकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंचदेकर मूषायंत्रमें राखि भाथीमें फूंके ॥ ७६ ॥ (फिर) अश्वमूत्रमें २१ बार बुझाय हरताल गोलामें धरि फूंके इक्कीसवार अश्वमूत्र में बुझाय फूंके ऐसे हीरा भस्म होताहै. इसका चूर्ण सर्वत्र साध्य है ॥ ७७ ॥ (पुनर्विधिः) हींग, सेंधालोन, कुलथी, क्वाथमें डारि उसमें हीरा तपाइ तपाइ २१ बार बुझावै तो हीरामरै ॥ ७८ ॥ (तृतीयविधि) मेंढक कांसेके पात्रमें मूंदै उसे डरावै जब भयसे मूते उस मूतमें हीरा, तपाय तपाय बहुत बुझावै तो खिलकै चूर्णहो मरिजाय ॥ ७९ ॥ वैक्रांत शोधनमारण) वैक्रांत कच्चे हीरेको कहते हैं कालाहो या लाल सो हीरेकी नाईं शोधै लाल करिकैरि १४ वार बुझाय ॥ ८० ॥ मेढासिंगी के पंचांगके गोले में धरि मूषायंत्रमें धरि संपुटकरि फूंकदे इसीतरह सातवार फूंकै ॥ ८१ ॥ तब वैक्रा-

१ उत्पन्न होने के समय विकार होनेसे वैद्योंने हीराको वैक्रान्त कहाहै [illegible]

त्यातिवज्रस्थानेमियोजयेत्।स्वेदयेद्दोलिकायन्त्रेजयन्त्याः स्वरसेनच ॥ मणिमुक्ताप्रवालानां यामैकंशोधनंभवेत् ८२ कुमार्यातन्दुलीयेन स्तन्येनचनिषेचयेत् । प्रत्येकंस प्तवेलञ्चतप्तप्तानिकृत्स्नशः ८३ मौक्तिकानिप्रवालानि तथारत्नान्यशेषतः ॥ क्षणाद्विविधवर्णानि म्रियन्तेनात्रसं शयः ८४ उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत् ॥ वै क्रान्तंसर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८५ शिलाजतुसमा नीय ग्रीष्मतप्तशिलाच्युतम् । गोदुग्धैस्त्रिफलाक्वाथैर्भृङ्ग राजैश्चमर्दयेत् ॥ आतपेदिनमेकन्तु तच्छुष्कंशुद्धतां व्रजेत् ८६ मुख्यांशिलाजतुशिलां सूक्ष्मखण्डप्रकल्पित म् । निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः ८७ म र्दयित्वाततोनीरं गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वा चमृत्पात्रे धारयेदातपेबुधः ८८ उपरिस्थंघनंयत्स्या त्तत्क्षिपेदन्यपात्रके । धारयेदातपेतस्मादुपरिस्थंघनंन येत् ८९ एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतु । भू

त भस्महोय सो हीरेकी ठौरदेय ॥ (सर्वरत्नशोधन व मारण) मणि मोती वा माणिक वा मूंगा जयन्ती रसदे दोलायंत्र में एकपहर सिद्धकरै तो शुद्ध होय ॥ ८२ ॥ घीकुवार चौराई वा स्त्रीका दूध इन तीनोंमें सातसातवार माणिकादि तपाय तपाय बुझावै ॥ ८३ ॥ मूंगा मुक्तादि ये सब क्षणभरमें मरै पलट जातेहैं इसमें सं शयनहीं ॥ ८४ ॥ मूंगा, मोती, सोनेमाखी की रीतिसे भी मरतेहैं और सब रत्न हीरेकी नाईं शोधे व मारै ॥ ८५ ॥ गौर (शिलाजीत शोधन) ग्रीष्मकी धामसे पर्वतसे चुवा शिलाजीत लाय गायका दूध वा त्रिफला क्वाथ वा भंगरेके रसमें भर भर घोटि दिनभर घाममेंधरै सूखजाय तो शुधिजाय ॥ ८६ ॥ (दूसरीरीति) स्वच्छ शिलाजीतकी शिलाले छोटे छोटे टूकरकै अति उष्णजलमें पहरभर धरै ॥ ८७ ॥ उसे पानीमें पीसै फिर छानके लैलेय फिर माटीके बासनमें करि घाममें धरै ॥ ८८ ॥ जब मलाई परै उसे काढि और पात्रमें रक्खै फिर और जब नचा करै ॥ ८९ ॥ दे फिर मलाई लेले पहिली मलाई में रखता जाय इसीभांति दो मासतक करै

यात्कार्यक्षमंवह्नौ क्षिप्त्वालिङ्गोपमंभवेत् ९० निर्धूमंच ततःशुद्धं सर्वकर्मसुयोजयेत् । अधःस्थितंत्वतःक्षेपंत स्मिन्नीरंविनिःक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्घर्मेपूर्ववच्चैवनञ्च येत् ९१ अत्राङ्गारैर्धमेत्किट्टं लोहजंतद्गवांजलैः । सेच येत्तप्ततप्तंच सप्तवारंपुनःपुनः ९२ चूर्णयित्वाततःक्वाथे द्विगुणेत्रिफलाभवैः । आलोड्यभर्जयेद्वह्नौ मण्डूरंजाय तेवरम् ९३ क्षारवृक्षस्यकाष्ठानिशुष्काण्यग्नौप्रदीयते । नीत्वातद्भस्मसृत्पात्रेक्षिप्त्वानीरेचतुर्गुणे ९४ विमर्द्यधा रयेद्रात्रौ प्रातर्वस्त्राजलंनयेत् । तन्नीरंक्वाथयेद्वह्नौ याव त्सर्वंविशुष्यति ९५ ततःपात्रात्समुल्लिख्य क्षारोग्राह्यः सितप्रभः । चूर्णाभःप्रतिसार्यःस्यात्पेयःस्यात्क्वाथवत्स्थि तः । इतिक्षारद्वयंधीमान् युक्तकार्येषुयोजयेत् ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तब शिलाजीत कार्यकारी होताहै और आगिमें रखने से लिंगाकार होजाता है ॥ ९० ॥ निर्धूमभये जानिये कि शिलाजीत अच्छा बनगया पहिली मलाई इसप्रकार बनी फिर पहिली मलाई के तरे और जो बहुधारका निकला पानी उसके तरे थि-राइरहे इन दोनोंको गरमपानी देदे पीसि फिर दोमासताई दूना पानी डारि शुद्ध करै ॥ ९१ ॥ (अथ मंडूरविधि) कीटी लोहेका मैल बहेराकी लकडी के कोयलामें लालकरि गोमूत्रमें सातवार बुझावै ॥ ९२ ॥ तब कीटका चूर्णकरि दूने त्रिफला क्वाथमें मिलाय पात्रमें धरि आंचमें त्रिफला क्वाथ जरायकै उतारिले तब मंडूर अच्छा होताहै ॥ ९३ ॥ (अथ क्षारविधि) क्षारवृक्षकी लकडी को राखकरि चौगुने पानीमें घोलि ॥ ९४ ॥ रातभर राखि प्रभात थिराना पानी ले आगिपर चढाय पानी जरावै जब पानी जरिजाय ॥ ९५ ॥ तब उतारिले उसीको क्षार कहते हैं सफेद होजाता है और सब पानी न जरै तो क्वाथ समरहताहै ये दो प्रकार क्षार वैद्यजन औषधोंमें देते हैं "कुरैया, पलाश, बकायन, बेहेडा, अमल-तास, मदार, अमली, सेहुँड, चिरचिरा, पाढा, केला, जमालगोटा, सहिजन और मूली" इत्यादि क्षारवृक्ष कहाते हैं ॥ ९६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

पारदःसर्वरोगाणांजेतापुष्टिकरःस्मृतः । सुदिनेसाधनंकुर्यात्संसिद्धिंदेहलोहयोः १ रसेन्द्रः पारदःसूतोहरजःसूतकोरसः । बुधैस्तस्येतिनामानिज्ञेयानिरसकर्मसु २ ताम्रतारारनागाश्चेहमवङ्गौचतीक्ष्णकम् । कांस्यकंवृत्तलोहंच धातवोनवसंस्थिताः । सूर्यादीनांग्रहाणांतेकथितानामभिःक्रमात् ३ राजीरसोनमूषायांरसंक्षिप्त्वाविबन्धयेत् । वस्त्रेणदोलिकायन्त्रेस्वेदयेत्काञ्जिकैस्त्र्यहम् । दिनैवंमर्द्दयेत्सूतंकुमारीसम्भवेर्द्रवैः ४ तथाचित्रकजैःक्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् । काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकञ्चमर्दयेत् ५ त्रिफलायारतथाक्वाथैरसोमर्द्यःप्रयत्नतः । ततस्तेभ्यःपृथक्कुर्यात्सूतंप्रक्षाल्यकाञ्जिकैः ६ ततःक्षिप्त्वारसंखल्वेरसादर्द्धंचसैन्धवम् । मर्द्दयेन्निम्बुकरसैर्दिनमेकमनातुरम् ७ ततोराजीरसोनश्चपशुण्यश्चनवसादं

पाराको सर्वरोग जीतनेवाला व पुष्टिकारक कहते हैं शुभ दिन शुद्ध करना आरम्भ करै अच्छा सिद्धहो तो जरा व्याधि दूरकरै लोहादि धातु दारे में संस्कार करै उत्तम होय शरीर पुष्टि करती है प्रमाण ॥ अचर्मसराजेन मधनंपरप्रादिभिः। अथमंमून्नसारैश्च तैलेनाप्यथमायमम् ॥ १ ॥ (पारानाम) रसेंद्र पारद, सूत, हरज, सूतक और रस ये छः नाम पंडित रसक्रिया में समझलेवें ॥ २ ॥ तांबा, रूपा, पीतल और सीसा, सोना, रांगा, फौलाद, कांसा और लोहा ये नव धातु सूर्यादि नवग्रहके क्रमसेही नाम समझलेइ ॥ ३ ॥ (रसशोधन) राई, लहसुन की लुगदीका मूसायंत्र करि पाराभरि मुखमूंदि गाडै वस्त्रमें बांधि दोलायंत्रमेंकांजी के संग तीनदिन आंचदे शुद्धकरै फिर एक दिन घिकुवार के रसमें घोटै ॥ ४ ॥ एकदिन चीताक्वाथमें एकदिन मकोयरसमें ॥ ५ ॥ एकदिन त्रिफलाके रसमें घोट पारा निकारि धोय लेय ॥ ६ ॥ पारा एकभाग सेंधा अर्द्धभाग इनपर नींबूके रसमें खूबघोटै ॥७॥ राई, लहसुन अच्छा नौसादर ये सब पारेके समानले पारेके संगदे

१ सूर्यचन्द्रमसौभौम.गविशोनीरभार्गवौ। सूर्यसुन मैसेकेत कनुलेलितायदा ८

रः । एतैरससमैस्तद्वत्सूतोमर्द्यस्तुषाम्बुना ८ ततःशंशो
ष्यचक्राभंकृत्त्वालिप्त्वाचहिङ्गुना । द्विस्थालीसम्पुटेकृत्वा
पूरयेल्लवणेनच ९ अथस्थालींततोमुद्रांदद्याद्दृढतरा
म्बुधः । विशोष्याग्निंविधायाधोनिषिञ्चेदम्बुचोपरि १०
ततस्तुकुर्यात्तीव्राग्निं तदधःप्रहरत्रयम् । एवंनिपातये
दूर्ध्वेरसोदोषविवर्जितः । अथार्द्धपिठरीमध्येलग्नोग्राह्यो
रसोत्तमः ११ लोहपात्रेविनिःक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ।
तप्तेघृतेतत्समानांक्षिपेद्गन्धकजंरजः १२ विद्रुतंगन्धकंज्ञा
त्वादुग्धमध्येविनिःक्षिपेत् । एवंगन्धकशुद्धिःस्यात्सर्वका
र्येषुयोजयेत् १३ मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम्।
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् १४ निम्बूरसैर्नि
म्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम्। पिष्ट्वादरदमूर्ध्वंचपातयेत्सूत
युक्तिवत्।ततःशुद्धंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् १५ का
लकूटंवत्सनागःशृङ्गकश्चप्रदीपनः । हालाहलोब्रह्मपुत्रो

तुषाम्बुमें सब मिलाय मर्दनकरै ॥ ८ ॥ जब सूतकै गाढाहो तब टिकरी बना हींग लेपकरि फिर एक हांडी नोनभरि तिसके बीचमें पूर्वोक्त टिकिया धरि तिसपर दूजीहाडी के मुंहरगरेहों जिसमें संधि न रहै तब कपडौटी करि आचदेय ऊपर भीजी कथरीराखै उसे सींचतारहै नीचे तीनपहर तक आच लेजरावै जब ठंढीहो तब उपरवाली हाडेमें जो दोषवर्जित रस लपटा छुडायके सब कायमें युक्तकरै ९।१०। ११ ॥ (गंधकशोधन) लोहेकी कडाही में घी अतितप्तकरै घीके समान गंधक चूर्ण छोडै जब गलै तब चौगुने दूधमें गरमही नाइकै बुझावै तौ गधक शुद्धहोकर सर्व कार्योंमें योग्य होताहै ॥ १२ । १३ ॥ (सिंगरफशोधन) सिंगरफको भेड़के दूध और नींबूके रसमें घोटि सुखावै इसे भावना कहिये ऐसे सात भावना देने से सिंगरफ निश्चय शुद्ध होताहै ॥ १४ ॥ (सिंगरफसे खार निकालने की विधि) नींबूरस वा नींबपत्र रसमें पहरभर सिंगरफ घोटि फिर डमरूयंत्रकरि उतारिलेय "डमरूयंत्र यों कहते हैं" जैसे प्रथम पारा उडायाहै उडाय लेने से भी पारा शुद्धहोकर सर्व कार्यकारक होजाताहै ॥ १५ ॥ (अथ पारेका मुख करनाकहे

हारिद्रःसक्तुकस्तथा । सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ताविषभेदाअ
मीनव १६ अर्कसेहुण्डधत्तूरालाङ्गलीकरवीरकः गुञ्जाहि
फेनमित्येताः सप्तोपविषजातयः १७ एतैर्विमर्दितःसूत
श्छिन्नपक्षः प्रजायते । मुखंचजायतेतस्यधातूंश्चग्रसते
परान् १८ अथवाकटुकक्षारौराजीलवणपञ्चकम् । रसो
नोनवसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः । समांशैःपारदादेतै
र्जम्भीरेणरसेनवा ॥ निम्बूतोयैःकाञ्जिकैर्वाघोष्णखल्वेवि
मर्दयेत् १९ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुचरंमुखम् । अथ
वाचिन्दुलीकिट्टैःरसोमर्द्यस्त्रिवासरम् । लवणाम्लैर्मुखंत
स्यजायतेधातुघस्मरम् २० अथकच्छपयन्त्रेणगन्धजार
णमुच्यते । मृत्कुण्डेनिक्षिपेन्नीरंतन्मध्येचशरावकम् २१
महत्कुण्डपिधानाभंमध्येमेखलयायुतम् । लिप्त्वाचमेखला
मध्येचूर्णंतत्ररसंक्षिपेत् २२ रसस्योपरिगन्धस्यरजोदद्या

शुधाकर करनाभी कहते हैं) कालकूट, वत्सनाभ, सिंगिया, मैंधन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सक्तुक और सौराष्ट्र ये नव विषहैं औ पदार्थ सेहुँड़, धतूरा, कलिहारी, कनर, लालघुंघुची, अफीम ये सात उपविषहैं ॥ १६ । १७ ॥ इन सब विषमें मर्दन करने से पारा पक्षहीन होजाताहै समस्त धातुओं के भक्षण करने को समर्थ होताहै ॥ १८ ॥ (अथ दूसरा प्रकार) त्रिकुटा दोनों क्षार और राई और पांचोंलोन, लहसुन, नौसादार और सहँजनकी छालये सब समभागले चूर्ण करै तब पारे के समानले जंभीरीरस वा नींबूरस वा कांजीमें गरमकरै खरलकरै ॥ १९ ॥ तीन दिनरात कर पारा सब धातुओं को खाय और बोले न पर्द पारा के मुख होताहै और चांगेरी वा बीरबहूटी में तीनदिन घोटै फिर पांचोंलोन और नींबूके रसमें घोटै तब पारेका मुखखुलै और धातु भक्षणकरै ॥ २० ॥ (कच्छपयंत्रकरि गंधक फूकनेकी विधि) एक माटी का कुंडाले जिसमें चार अंगुल पानी भरि एक सरवाँ राखि उस सरवाकी कोर पानी एक अंगुल ॥ २१ ॥ तिसमें पारा और गंधक समभाग धरि ऊपरदूसरा सरवा ढकिके चूनेसे मुख निःसंधि करि उसके मुँहपर पाती लगाकरबंदकरै जिसमें पवन न जाय

त्समांशकम् । ततोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् २३ ततोपरिपुटंदत्त्वाचतुर्भिर्गोमयोपलैः । एवंपुनःपुनर्गन्धंष ड्गुणंजारयेद्बुधः ॥ गन्धेजीर्णेभवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निःसर्व कर्मसु २४ धूमसारंरसंतोरींगन्धकंनवसादरम् । यामैकंमर्द येदम्लैर्भागंकृत्वासमांशकम् २५ काचकुप्यांविनिक्षिप्य तांचमृद्वस्त्रमुद्रया । विलिप्यपरितोवक्त्रंमुद्रांदत्त्वाचशोषये त् २६ अधःसच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत् । पिठरीं वालुकापूरैर्भृत्वाचाकूपिकागलम् २७ निवेश्यचुल्ल्यां तदधःकुर्याद्वह्निंशनैःशनैः । तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकं ज्वालयेत्क्रमात् २८ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेसूतकोत्त मः । स्फोटयेत्स्वांगशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत् । अध स्थंम्रियतेसूतंसर्वकार्येषुयोजयेत् २९ अपामार्गस्यबी जानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् । तत्सम्पुटेन्यसेत्सूतंमलयूदु ग्धमिश्रितम् ३० द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडङ्गगिरिमेदक म् । एतच्चूर्णमधोर्ध्वंचदत्त्वामुद्रांप्रकल्पयेत् ३१ तंगोलं

न गिरै तब ऊपर से चार बिनुआं कंडाकी आंचदेवे इसीप्रकार छःगुणा पारा गंधक समानदे चार कंडाकी आंच देदेकर फूंकै तौ पारा तीक्ष्णाग्निकारी होकर सर्व कार्य योग्य होताहै ॥२०।२४॥ (अथ पारदभस्मविधि) धुआंकासार (कलूंंआं) पारा, फटकरी, गंधक और नौसादर इन सब द्रव्योंको समभागले पहरभर नींबूके रसमें घोटि ॥२५॥ फिर आतशी शीशीमें भरि कपड़ौटीकरि धूपमें सुखावै तब एक नांदले बीच पेंदीमें छेदकर उस छिद्रपर अभ्रकधरि उसपर शीशी स्थितकरि ऊपर बालू भरि चूल्हेमें धरि तरे आगिबारि पहर बारह पहले अतिमंद आंचकरि फिर क्रम क्रम आंच तीव्रकरे तौ पारा न उड़ै सिद्ध होजाय जब सिराय तब शीशी निकारि फोरै उसमें गंधक ऊपर गले में लागरहै पेंदीमें होयगा उस गंधक को फेंक पारा समेटिले यह पारा सर्वकार्य योग्य होजाताहै ॥ २६।२९ ॥ (पुनः) चिरचिरा बीज पीसि दोमूषा बनाय पारा कठगूलरके दूधमें घोटि ॥ ३० ॥ मूषाके अंदर इसचूर्ण के बीचमें पाराधरे गूमाफूल, विडंग, गेरका चूर्ण ऊपर दूसरा मूसाधरि कपड़ौटी,

संधयेत्सम्यङ्मृन्मूषासम्पुटेसुधीः । मुद्रांदत्त्वाशोषयित्वाततोगजपुटेपचेत् । एवमेकपुटेनैवजायतेभस्मसूतकम् ३२ काकोदुम्बरिकादुग्धैरसेकिञ्चिद्विमर्दयेत् । तद्दुग्धघृष्टहिङ्गोश्चमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ३३ धृत्वातत्सम्पुटेसूतंतत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञोमृन्मूषासम्पुटेऽधिके ३४ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतकोयातिभस्मताम् । नागवल्लीरसैर्घृष्टःकर्कोटीकन्दगर्भितः । मृन्मूषासम्पुटेपक्वःसूतोयात्येवभस्मताम् ३५ खण्डितंमृगशृङ्गंचज्वालामुख्यारसैःसमम् । रुद्ध्वाभाण्डेपचेच्चुल्ल्यांयामयुग्मंततोनयेत् ३६ अष्टांशंत्रिकटुंदत्त्वानिष्कमात्रंतुभक्षयेत् । नागवल्लीरसैःसार्द्धंवातपित्तज्वरापहम् ३७ अयंज्वरांकुशोनाम्नारसःसर्वज्वरापहः । पारदंरसकंतालंतुत्थंटङ्कणगन्धके । सर्वमेतत्समंशुद्धंकारवेल्लरसैर्दिनम् ३८ मर्दयेल्लेपयेत्तेनताम्रपात्रोदरंभिषक् । अङ्गुल्यर्द्धप्रमाणेनततोरुद्ध्वाचतन्मुखम् ३९ विपचेद्वा

करि माटीलेपकै सुखावै एक गजपुट आंचदे ऐसे पारा एकही आंच में भस्म होजाताहै ॥ ३१ । ३२ ॥ (पुनः) कठगूलरके दूधमें पाराघोटि फिर उसी दूधमें हींग पीसि मूसाबनाइ पारा धरि कपड़ौटी करि मांटीके मूसा में धरै पुनः कपड़ौटी करि ॥ ३३ । ३४ ॥ बीस गोइठाकी आंचदे पारा भस्म होताहै (पुनः) पान के रसमे पारा घोटि बांझखखसा की जड कोलके भरै उसीमें मूंदि कपड़ौटी करै माटी लेप सुखाय थोड़ी आंचमें फूंके से पारा भस्म होता है ॥ ३५ ॥ (अथ ज्वरांकुश) हरिण के सींग चूर्णकरि बराबर जैतका रसले माटी के बासनमें धरि मुंह मूंदि दोपहरकी आंच देकर उतारिलेवे ॥ ३६ ॥ फिरआठवां अंश त्रिकुटादे पीसे चाररत्ती ज्वरांकुश पानके रसमें खिलावै तौ वात, पित्त, ज्वर नाशकरै ॥ ३७ ॥ यह ज्वरांकुश नामरस सब ज्वरको हरताहै (ज्वरारिरस) पारा, खपरिया हरताल, तूतिया, सुहागा और गंधकये समानशोधि करेलेके रस में एकदिन ॥ ३८ ॥ घोटिके ताम्रपात्रमें आधा अंगुलमोटालेसि पात्रमुखमूंदि ॥ ३९ ॥

लुकायन्त्रेक्षिप्त्वाधान्यानितन्मुखे।यदास्फुटन्तिधान्यानि तदासिद्धंविनिर्दिशेत् ४० ततोनयेत्स्वाङ्गशीतंताम्रपात्रो दराद्भिषक्।रसंज्वरारिनामानंविचूर्ण्यमरिचैःसमम्४१मा षैकंपर्णखण्डेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरान्। त्रिदिनैर्विषमंतीव्र मेकद्वित्रिचतुर्थकम् ४२ तालकंतुत्थकंताम्रंरसंगन्धंमन शिलाम्। कर्षकर्षंप्रयोक्तव्यंमर्दयेत्त्रिफलाम्बुभिः ४३ गोलंन्यसेत्सम्पुटकेपुटंदद्यात्प्रयत्नतः। ततोनीत्वार्कदुग्धे नवज्रीदुग्धेनसप्तधा४४क्वाथेनदन्त्याःश्यामायाभावयेत्स प्तधापुनः।माषमात्रंरसंदद्यात्पञ्चाशन्मरिचैर्युतम् ४५गुडं गद्यानकंचैवतुलसीदलयुग्मकम्। भक्षयेत्त्रिदिनंभक्त्या शीतारिर्दुर्लभंपरम् ४६ पथ्यंदुग्धौदनंदेयंविषमंशीतपू र्वकम्। दाहपूर्वंहरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ ४७ हन्याद्धि कंसनतं चैववैवर्ण्यंचनियच्छति। भागैकःस्याद्रसाच्छुद्धा देताया:पिप्पलीशिवा ४८ अकारकरभोगन्धःकटुतैलेन

कपड़ौटी करि बालुकायंत्र में धरि यंत्रमुख खुलारावि आचदेय जब उस बालू में धानडारे से खीलहोजाय तब जानिये कि रस सिद्ध होगया ॥ ४० ॥ जब स्वभावसे ठंढाहो तब उसे पात्रसे छुड़ायले उस ज्वरांकुशके समान मरिच मिलाय पीसलेय एकमाश पानके टुकड़ेमें धरि खिलावैज्वरको नाशकरै तीनदिन खानेसे अतिकठिनज्वर, अन्तरिया, तिजारी और चातुर्थिकये सब दूरहोयं॥ ४१।४२ ॥ (शीतज्वारि रस) हरताल, तूतिया और तावा भस्म, शोधा पारा, गन्धक शुद्ध और मैनशिलये सब कर्ष कर्षभर लेकर त्रिफलाके रसमें घोटै॥४३॥ गोला बांधि कपड़ौटी माटी लेस खूब फूकिमदार और मेहुँड़केदूधमें सातभावनादे॥ ४४॥ फिर जमालगोटा की जड़के काढ़ेमें फिर निशोथ के काढ़े में सात भावनादे तब एक माशेरस पचास मरिच ॥ ४५ ॥ छ माशे गुड़ दो तुलसीदल भक्तिपूर्वक तीन दिन खाय शीतारि रस इसका नाम है बहुत दुर्लभ है ॥ ४६ ॥ पथ दूधभातदेय जूड़ी, दाह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक ॥ ४७ ॥ अन्तरिया, नित्यज्वर और ज्वर जनितविकार सब नाश होवैं (अथ ज्वरघ्नी गुटिका) शुद्ध पारा एकभाग

शोधितः। फलानिचेद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताह्यमी ४९ एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसे। माषोन्मितांवटींकृत्वादद्यात्सर्वज्वरेभिषक्। छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीगुटिकामता ५० शुद्धोबुभुक्षितःसूतोभागद्वयमितोभवेत्।तथागन्धस्यभागौद्वौकुर्यात्कज्जलिकान्तयोः५१ सूताच्चतुर्गुणेष्वेवपारदेषुविनिक्षिपेत्। भागेकंटङ्कणंदत्त्वागोक्षीरेणविमर्दयेत् ५२ तथाशङ्खस्यखण्डानांभागानष्टौप्रकल्पयेत्। क्षिपेत्सर्वंपुटस्यान्तश्चूर्णलिप्तशरावयोः ५३ गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापाच्यंगजपुटेनच। स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यपिष्ट्वात त्सर्वमेकतः५४षड्गुञ्जासम्मितंचूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः। घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनपैत्तिके ५५ क्षौद्रेणकफजेदद्यादतीसारेक्षयेतथा। अरुचौग्रहणीरोगेकार्श्येमन्दानलेतथा ५६ कासश्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथरसोहितः। तस्योपरिघृतान्नंचभुञ्जीतकवलत्रयम्। भवेत्क्षणेकमुत्तानःशयीतानुपधानके ५७ अनम्लमन्नंसघृतंभुञ्जीतमधुरंद

पलुवा, पीपरि, हड़जंगी ॥४८॥ अकरकरहा, कडुआ तेलका शोधागन्धक और इन्दूरन ये चार चार भाग ॥ ४९ ॥ इन्दूरनरस में घोटि मापमात्र गोली बांधि तरुणज्वर में गुर्च रस में वैद्य ज्वरघ्नी गुटिकाको खिलावे ॥ ५० ॥ (लोकनाथ रस) पारा बुभुक्षित और धातुभक्षक दोभाग दोनोंको खरलकरि कजरी करै पारेसे चौगुनी कौड़ीकी भस्म पारे समान सुहागा गायके दूधमें घोटै ॥ ५१।५२॥ पारेसे अठगुणी शङ्खकी भस्म शुद्ध मब पीसि दो सरवों के भीतर लेस ॥ ५३ ॥ दोनोंको सम्पुटकरि वस्त्र लपेटि माटी लगाय गजपुटमें फूंकदे जब ठण्ढाहो तब खुरचके निकारै खरल करै ॥५४॥ फिर छःरत्ती यह रस मिरच संङ्ग खरलकरि वातरोगमें घीमें दे पित्तमें मक्खन साथ दे ॥ ५५ ॥ कफरोगमें शहदमें दे अतीसार, छर्दि, अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि ॥ ५६॥ कास, श्वास और गुल्म(गोला) इन रोगोंमें शहदयुक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घी भात खाय फिर क्षण

धि। प्रायेणजाङ्गलंमांसं प्रदेयंघृतपाचितम् ५८ सदुग्ध भक्तंदद्याच्चजातेऽग्नौसान्ध्यभोजने।सघृतान्मुद्गवटकान्व्य ञ्जनेष्वेवचारयेत् ५९ तिलामलककल्केनस्नापयेत्सर्पिषा थवा। अभ्यञ्जयेत्सर्पिषाचस्नानंकोष्णोदकेनच ६० क चित्तैलंनगृह्णीयान्नबिल्वंकारवेल्लकम् । वार्ताकंशफरींचि ञ्चांत्यजेद्व्यायाममैथुने ६१ मद्यंसन्धानकंहिङ्गुशुण्ठी माषान्मसूरिकान् । कूष्माण्डंराजिकांकोलंकाञ्जिकंचैव वर्जयेत् ६२ त्यजेद्युक्तांनिद्रांचकांस्यपात्रेचभोजनम्। ककारादियुतंसर्वंत्यजेच्छाकफलादिकम् ६३ आहृयोयंलो कनाथस्तुशुभेनक्षत्रवासरे। पूर्णातिथौसितेपक्षेजातेचन्द्र बलेतथा ६४ पूजयित्वालोकनाथंकुमारींभोजयेत्ततः। दानं दद्याद्द्विघटिकामध्येग्राह्योरसोत्तमः ६५ रसात्सञ्जाय तेतापस्तदाशर्करयायुतम्।सत्त्वंगुडूच्यागृह्णीयाद्वंशलोच नयायुतम् ६६ खर्जूरंदाडिमंद्राक्षामिक्षुखण्डानिचारयेत्।

भर विना तकिये बिछौने खाटपर सुवाना से वे फिर चाहै जैसे शयनकरै ।। ५७ ।। खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे घृतके सङ्ग भातखाय और अवश्य जङ्गली मृगादिपशु भक्ष्य मास घीमें अच्छीतरह भूँजिखाय ॥ ५८ ॥ और सन्ध्याके समय पका अर्द्धा वशेष दूधभात भोजन करै और मूँगके मोदक अधिक घृतमें बने भोजन सङ्गखाय ॥ ५९ ॥ *तिल, आँवरा पीसि उबटन लगाय वा घी मर्दनकरि न्हाय उष्णोदक से* कमर ताईं न्हाय ।। ६० ।। तेल न छुवै बेल, करेला, भाटा, मछरी, अमली, श्रम और स्त्रीभोगको त्यागै ।। ६१ ॥ मद्य, अचार, हींग, सोंठ, उर्द, मसूर, पेठा, राई, बेर और काजीको तजै ।। ६२ ॥ ओसमें न सोवै कासेमें न खाय ककारादि आम के फल और सागोंको तजै ॥ ६३ ॥ यह लोकनाथरस शुभनक्षत्र, वार, पूर्णाति- थि, शुक्लपक्ष, बलवान् चन्द्रमादेखि ॥ ६४ ॥ लोकनाथ रसको पूजि कुँवारी जि- वाय दानदेय द्विघटिका साधि भक्षण आरम्भकरै ॥ ६५ ॥ इसके खाने पर तप आतीहै तब मिश्री, गुर्चका सत और वंशलोचन इन सबको मिलायकर देवै ।। ६६ ।। खजूर, अनार, दाख व उखकी गँडेरी दे तो रसताप दूरहो धनियाकी छाल दूरि

अरुचौनिरतुपंधान्यंघृतभृष्टंसशर्करम् ६७ दद्यात्तथाम्बु
नैधान्यंगुडूचीक्काथमाहरेत्। उशीरंधान्यकक्काथं दद्यात्सम
धुशर्करम् ६८ रक्तपित्तेकफेश्वासेकासेचस्वरसंक्षये। अग्नि
भृष्टंजयाचूर्णंमधुनानिशिलीयते ६९ निद्रानाशेऽतिसारेच
ग्रहण्यांपावकक्षये। सौवर्चलाभयाकृष्णाचूर्णंमुष्णजलैः
पिवेत् ७० शूलेऽजीर्णेतथाकृष्णामधुयुक्ताज्वरेहिता। छर्दी
श्वासरक्तेऽर्शोषेचगुदाङ्कुरे ७१ नासिकाश्रुतिरक्तेचरसंदा
डिमपुष्पजम्। दूर्वायाःस्वरसंनस्येप्रदद्याच्छर्करान्वितम्
७२ कोलमज्जांकणांबर्हिपक्षभस्मसशर्करम्। मधुनालेह
येच्छर्दिहिक्काकोपप्रशान्तये ७३ विधिरेपप्रयोज्यस्तुराव
रिमन्पोटलीरसे। मृगाङ्कहेमगर्भमौक्तिकाख्येप्रेपुचाहु
स्येवंलोकनाथोक्तोरसःसर्वरुजोजयेत् ७४ भूर्जवत्तनुपत्रा
णिहेम्नःसूक्ष्माणिकारयेत्। तुल्यानितानिसूतेनखल्वेक्षि
प्त्वाविमर्दयेत् ७५ काश्चनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा।

करि घीमें भूंजिकै चूर्ण करि मिश्री मिलाय खिलावै ॥ ६७ ॥ इसी तरहसे धनियां गुर्चका काढाडे, खस व धनेका काढादे, मधु व मिश्रीको मिलायदे ॥ ६८ ॥ रक्त पित्त, कफ, श्वास, कास और स्वरभंग ये सब अच्छे होयँ भांग भूंजि चूर्ण करि लोकनाथरसयुक्त रातको खिलावै ॥ ६९ ॥ तथा नींदनाश, अतीसार, संग्रहणी व मन्दाग्निमें सोचर, हड़ पीपरिसाथ रसदेकर गरमपानी पिलावै ॥७०॥ तो शूल व अजीर्ण को दूरिकरै पीपरि शहदयुक्त साथ तो ज्वर,ऽतरक्त, छर्दि वि येर्ग को दूरिकरै ॥७१॥ (नासार्श कारण) अनाररस में दे दूर्वारस मिश्री लोकनाथरसयुक्त नासदे ॥ ७२ ॥ बेरमिंगी, पीपरि, मोरपंखकी भस्म, मिश्री, श हदयुक्त साथ तो छर्दि व हिंचकी को दूरिकरै ॥ ७३ ॥ ये जो भांति भांति के अनोपान लोकनाथमें कहे सो पोटली के रसमें भी सब उसी रीतिसे देनाचाहिये जैसे मृगांक, हेमगर्भ, मौक्तिकाख्य और पंचामृतादि पोटलिकारस इनरसों में लोक नाथोकरीति सदृश करै तो सम्पूर्णरोग अच्छेहों ॥ ७४ ॥ (मृगांकपोटलीर स क्षयादि पर) सोनेका पत्र समानतौल सोने के सम पारा मिलाय खरल

लाङ्गल्यावारसैस्तावद्यावद्भवतिपिष्टिका. ७६ ततोहेम्न श्चतुर्थांशंटङ्कणंतत्रनिःक्षिपेत् । पिष्टंमौक्तिकचूर्णंचहेमं द्विगुणमाहरेत् ७७ तेषुसर्वसमंगन्धंक्षिप्त्वाचैकत्रमर्दये त् । तेषांकृत्वाततोगोलंवासोभिःपरिवेष्टयेत् ७८ पश्चा न्मृदावेष्टयित्वाशोषयित्वाचधारयेत् । शरावसम्पुटस्यान्ते तत्रमुद्रांप्रदापयेत् ७९ लवणापूरितंभाण्डेस्थापयेत्तंचस म्पुटे । मुद्रांदत्त्वाशोषयित्वाबहुभिर्गोमयैःपुटेत् ८० ततः शीतेसमाहृत्यरान्धंसूतसमंक्षिपेत् । घृष्ट्वाचपूर्ववत्खल्वेपु टेद्गजपुटेनच. ८१ स्वाङ्गशीतंततोनीत्वागुञ्जायुग्मंप्रयो जयेत् । अष्टभिर्मरिचैर्युक्तःकृष्णात्रयमथापिवा ८२ वि लोक्यदेयादोषादिस्तेक्ष्वरसरक्तिका । सर्पिषामधुनावापि देयादोषाद्यपेक्षया ८३ लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्स्वस्थम नाःशुचिः, । श्लेष्माणंग्रहणींकासंश्वासंक्षयमरोचकम् । मृगाङ्कोयंरसोहन्यात्कृशंत्वंबलहानिताम् ८४ सूतात्पाद

करे ॥ ७५ ॥ कचनार का रस वा भरणीरस वा करियारस में घोटे जबतक गोला बंधजाय ॥ ७६ ॥ सोने का चौथ्याई सुहागादे और सोनेका दूना मोती का चूनादे ॥ ७७ ॥ इनसबके समान गंधकदे सब खरलकरि गोलाबांधि दूर क- पड़ा लपेटे ॥ ७८ ॥ फिर माटी से लेस सुखाय शरावसंपुट करि ॥ ७९ ॥ लोन पूरित पात्रमें संपुटधरै उसका मुंहसुखाय गजपुट में फूंकदे ॥ ८० ॥ ठंढाभयेपर नि- कारिकै सोने के समान पारा और सोने समान गंधकको युक्तकरि पूर्ववत् रसमें खरलकरि फिर उसीक्रिया से गजपुट में फूंकै ॥ ८१ ॥ जब ठंढाहो तब निकासि दो गुंजा रस आठ मिरच वा तीन पीपरि के संगदे ॥ ८२ ॥ और दोषको विचारि के भांपर रचीभर घाट वा बाद समझके देइ घी अथवा शहदके साथ दोष वि- चारिके देनाचाहिये ॥ ८३ ॥ पथ्य लोकनाथसदृश इसमें भी देना योग्य है चित्त एकाग्रकरि अतिपवित्र होकर खावै तौ श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी और अरुचि इन रोगों को यह मृगांकरस दूर करता, व बलहीनको बलवान् करताहुआ,

प्रमाणेनहेमपिष्टिंप्रकल्पयेत् । तयोःस्याद्द्विगुणोगन्धोमर्दयेत्काञ्चनारिणा ८५ कृत्वागोलंक्षिपेन्मूषासम्पुटेमुद्रयेत्ततः । पचेद्भूधरयन्त्रेणवासरत्रितयंबुधः ८६ ततःउद्धृत्यतत्सर्वं,दद्याद्गन्धंचतत्समम् । मर्दयेदार्द्रकरसेश्चित्रकस्यरसेनवा ८७ स्थूलपीतवराटांश्च पूरयेत्तेनयत्नतः । एतस्मादौषधात्कुर्यादष्टमांशेनटङ्कणम् ८८ टङ्कणार्द्धं विषंदत्वापिष्ट्वासेहुण्डदुग्धकैः । मुद्रयेत्तेनकल्केनवराटानांमुखानिच ८९ भाण्डेचूर्णंप्रलिप्याथ धृत्वामुद्रांप्रदापयेत् । गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापुटेद्गजपुटेनच ९० स्वाङ्गशीतंरसंनीत्वाप्रदद्याल्लोकनाथवत् ॥ पथ्यंमृगाङ्कवद्देयंत्रिदिनंलवणंत्यजेत् ९१ यदाच्छर्दिर्भवेत्तस्यदद्याच्छिन्नारसंतदा ॥ मधुयुक्तंतदाश्लेष्मकोपेदद्याद्गुडार्द्रकम् ९२ विरेकेभर्जिताभङ्गाप्रदेयादधिसंयुता । जयेत्कासंक्षयंश्वासंग्रहणीमरुचिन्तथा ९३ अग्निंचकुरुतेदीप्तं

दुर्बलको मोटा करताहै ॥८४॥ (कफक्षयीपर हेमपोटलीरस) पारा, पारेकी चौथ्याई सोनाले खरलकरै जब पीठी होजाय तब दोनोंसे दूनी गंधकदे कचनारके रसमें घोटि गोलाकरै ॥ ८५ ॥ सो मूषायंत्र में भरि संपुटकरि वस्त्रलपेट माटी लगाय सुखाय भूधरयंत्रमें फूंकदे भूधरयंत्र एकहाथ गहिरा, लंबा व चौड़ा खोदि तिसमें छोटागर्हा खोदि औषधरख माटीसे दाबि तिसपर विनुवांकंडा कसी करि थड़े गढ़ेमें भरि तीनदिन आंचदे ॥ ८६ ॥ जब स्वभावसे शीतलहो तब निकारि समान गंधकले अद्रक वा चीतेके रसमें घोटि ॥ ८७ ॥ बड़ी पीली कौड़ी में भरि औषधका अष्टमांश सुहागा ॥ ८८ ॥ सुहागे का आधा सिंगिया दोनों सेहुड़के दूधमें पीसि कौड़ी का मुख बंदकरि ॥ ८९ ॥ फिर माटीपात्रमें चूनालेसि कौड़ी में भरि दूसरे दिवस बंदकरि मुद्रितकरि गजपुटसे आंचदे ॥ ९० ॥ ठंढाभये निकारि लोकनाथकी रीति से खिलावै व मृगांककी रीति से पथ्यदे तीनदिन लोन वर्जितरहै ॥ ९१ ॥ जो छर्दि होय तो गुर्चका रस वा काथ मधुयुक्तदे कफमें गुड़ अद्रकरस युक्तदे ॥ ९२ ॥ अतीसारमें भूनीभांग व दही दोनोंके संगदे तथा

कफवातंनियच्छति। हेमगर्भःपरोज्ञेयोरसःपोटलिकाभि
धः९४ रसस्यभागाश्चत्वारस्तावन्तःकनकस्यच। तयो
श्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वादशभागिकः ९५ कुर्यात्कज्ज
लिकांतेषांमुक्ताभागाश्चषोडश। चतुर्विंशच्चशङ्खस्य
भागौकंटङ्कणस्यच ९६ एकत्रमर्दयेत्सर्वंपक्वनिम्बुकजैर
सैः। कृत्वातेषांततोगोलंमूषासम्पुटकेन्यसेत् ९७ मुद्रांद
त्वाततोहस्तमात्रेगर्तेचगोमयैः। पुटेद्गजपुटेनैवस्वाङ्ग
शीतंसमुद्धरेत्९८ त्रिंशद्गुञ्जाचतुर्मानंदद्याद्व्योषाज्यसंयु
तम्। एकोनत्रिंशदुन्मानमरिचैःसहदीयते९९ राजतेमृन्म
येपात्रेकाचजेवापिलेहयेत्। लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्स्मय
तमान्नरः १०० कासेश्वासेक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे। अ
तीसारेप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका १ शुद्धसूतोविषंगन्धं
प्रत्येकंशाणसम्मितम्। धूर्त्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्वि
गुणीभवेत् २ हेमाभंकारयेदेषांचूर्णंसूक्ष्मंप्रयत्नतः। देयं

कास, क्षयी, श्वास, ग्रहणी व अरुचि इनमें भी दही व भंगके साथदे ॥ ९३ ॥ अग्निदीपन व कफवातनाशन होकर यह हेमपोटलीरस श्रेष्ठ कहाताहै ॥ ९४ ॥ (पुनर्हेमगर्भरस कास पर) पारा चारभाग व सोना चारभाग इन दोनों की पीठीकरि द्वादशभाग गंधकदे ॥ ९५ ॥ व तीनोंको कज्जलीकरि सोलहभाग मोती चौबीस भाग शङ्ख व एकभाग सुहागा ॥ ९६ ॥ ये सब एकत्र करि पके नींबूके रसमें घोटि गोलाबांधि मूषापुट में धरि मुद्रा साधि ॥ ९७ ॥ सुखाय हाथभर भूमिको खोदि उसमें धराय हाथभर कंडा भराय फूंकिदे जब शीतल होजावे तब निकारि धरै ॥ ९८ ॥ चारिरत्ती रस मिर्च उन्तीस गोघृतमें पीसिदेवे ॥ ९९ ॥ चांदी वा माटी वा कांचके पात्रमें धरि खिलावै और लोकनाथ रस सम पथ्य बतावै ॥ १०० ॥ तो यह कास, श्वास, क्षयी, वात, कफ, ग्रहणी व अतीसारवाले को देय यह हेमगर्भ पोटली इन सब रोगनको हरती है ॥ १ ॥ पारा गंधक विष शोधे चारि चारि मासे धतूराबीज बारहमासे सबका दूना ॥ २ ॥ चोक चोक बिना फूट सब सुत

जम्बीरमज्जाभिरुचूर्णंगुञ्जाद्वयोन्मितम् ॥ ३ ॥ आर्द्रकस्वर
सैर्वाऽपिज्वरंहन्तित्रिदोषजम् । एकाहिकंद्व्याहिकंवातृती
यंवाचतुर्थकम् । विषमञ्चज्वरंहन्याद्विख्यातोयंज्वराङ्कु
शः ॥ ४ ॥ दरदंवत्सनाभंचमरिचंटङ्कणंकणाम् । चूर्णयेत्सम
भागेनरसोह्यानन्दभैरवः ॥ ५ ॥ गुञ्जैकंवाद्विगुञ्जंवा वलंज्ञा
त्वाप्रयोजयेत् । मधुनालेहयेच्चापिकुटजस्यफलत्वचम् ।
चूर्णितंकर्षमात्रन्तुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ॥ ६ ॥ दध्यन्नंदा
पयेत्पथ्यंगव्याज्यंतक्रमेववा । पिपासायांजलंशीतंविज
याचहितानिशि ॥ ७ ॥ विषंपलमितंसूतः शाणिकश्चूर्णये
द्द्वयम् । तच्चूर्णंसम्पुटेधृत्वाकाचलिप्तशरावयोः ॥ ८ ॥ मुद्रां
दत्वाचसंशोष्यततश्चुल्ल्यांनिवेशयेत् । वह्निंशनैःशनैः
कुर्यात्प्रहरद्वयसङ्ख्यया ॥ ९ ॥ ततउत्पाट्यतन्मुद्रामुपरि
स्थशरावकात् । संलग्नोयोभवेत्सूतःसंग्रह्णीयाच्छनैःश
नैः ॥ १० ॥ वायुस्पर्शोयथानस्यात्ततः कूप्यांनिवेशयेत् ।

करि सूक्ष्म चूर्णकरि दो गुंजा रस जंभीरी के ॥ ३ ॥ वा अदरकरस में दे त्रिदोष
जनित ज्वर नाशकरै नित्य आनेवाला, अंतरिया, तिजरिया, चातुर्थक व विषम
ज्वर को यह ज्वरांकुश निश्चय कर नाश करता है ॥ ४ ॥ (आनन्दभैरवरस
अतीसारपर) शुद्ध सिंगरफ, सिंगिया, मिरच, सुहागा व पीपरि ये सब स-
मानले महीन चूर्णकरिये यह आनन्दभैरवरस ॥ ५ ॥ रोगीका बलदेखि एक
गुंजा वा दो गुंजा इन्द्रयव व कुरयाछाल इन दोनों को दशमाशे पीसि रसयुक्त श-
हदमें मिलाय चटावै तो त्रिदोषजन्य अतीसार दूरहोय ॥ ६ ॥ गऊका दही वा
घृत वा मट्ठा पथ्य भातसाथ खाय ठंढा पानी पिलावै और भांग अच्छीतरह
धोय बनाय रातको पिलावै ॥ ७ ॥ (सन्निपातपर लघुसूचिकाभरण)
सिंगिया १ पल पारा ४ माशे दोनों खरलकरि दो परई काँच के लुकरी हुई
में धरिके ॥ ८ ॥ मुद्राकरि सुखाय चूल्हेपर चढ़ाय मंदमंद दो पहरकी आंचदेय ॥
९ ॥ दोनों मुद्राकरि ऊपर के सरवा में लगा धुआं होले से लीलले ॥ १० ॥
जिस पात्र में पवन न जासके उस शीशी में धरै मुंहमूंदके शीशी करिलेइ "सू-

यावत्सूचीमुखेलग्नंकूप्यांनिर्यातिभेषजम् ११ तावन्मा त्रोरसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातिनि । क्षुरेणप्रच्छितेमूर्धिनत तोङ्गुल्याचघर्षयेत् १२रक्तभेषजसम्पर्कान्मूर्च्छितोपिहि जीवति । तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति । यदाता पोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते १३ सूतभस्मसमंगन्धंगन्धा द्पादंमनःशिला । माक्षिकंपिप्पलीव्योषंप्रत्येकंशिलया समम् १४ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवैः । सप्त धाभावयेत्शुष्कंदेयंगुञ्जाद्वयोन्मितम् १५ तालपर्णीरसै श्चानुपञ्चकोलशृतोपिवा । जलबुन्दोरसोनामसन्निपातं नियच्छति । जलयोगश्चकर्त्तव्यस्तेनवीर्यंभवेद्रसः १६ शुद्धसूतंविषंगन्धंमरिचंटङ्कणंकणा । मर्दयेद्धूर्तजैर्द्रावैर्दिन मेकंचशोषयेत् १७पञ्चवक्त्रोरसोनामद्विगुञ्जःसन्निपातहा।

चीमुख एक सुई समले कहे उसकामुख सुई समानहो उसे सूचीमुख कहते हैं " उससे जितना निकसै ॥ ११ ॥ तितना सन्निपातमूर्च्छितका शिर मुड़ाय पछने देय जो रक्त निकले उसी घावपर उस रसको अँगुरी से मले ॥ १२ ॥ जो रुधिर व रस में मिलजाय तो मूर्च्छित जागै तैसेही सांपका काटा जागै फिर इसे इस उपचार से तापआवै तब उस रोगी को मधुर अर्थात् गंडेरी, अनार, छुहारा व दाखादि को खिलावै ॥ १३ ॥ (सन्निपात पर जलबुन्दरस) पाराभस्म समान गन्धककी चौथ्याई मैनशिल, सोनामाखी, पीपरि, सोंठि, मिर्च सब मैनशिल समान ले ॥ १४ ॥ खरलकरि मछरी के पित्तमें सात भावनादे तैसेही मयूरपित्त में सात भावनादे सुखाय दो गुंजा खवावै ॥ १५ ॥ श्वेत मुसली के रसमें और पंचकोल, सोंठि, मिर्च, पीपरि, चाव व चीता इनके काढे में दे यह जलबुन्दरस सन्निपातको दूर करता है जल ठण्ढा पियै व ठण्ढे जल से हाथ मुँह धोवै व जल का स्पर्श राखै तो औषध बल पातीहुई सन्निपात को दूर करती है ॥ १६ ॥ (सन्निपात पर पंचवक्त्ररस) ॥ शुद्धपारा, सिंगिया, गन्धक, मिरच, सुहागा, पीपरि व धतूराके रसमें एक दिन मर्दनकरै घाममें सुखावै ॥ १७ ॥

१ जलबुन्दोरसोनामेतिपाठान्तरम् ॥

अर्कमूलकषायन्तुसत्र्यूषमनुपाययेत् ॥१८॥ युक्तंदध्योदनं पथ्यंजलयोगंचकारयेत्। रसेनानेनशाम्यन्तिसद्योद्रेणकफोद्भवाः ॥१९॥ मध्वार्द्रकरसंचानुपिबेदग्निविवृद्धये ॥ यथेष्टंघृतमांसाशीशक्तोभवतिपावकः ॥२०॥ रसगन्धौसमानांशं धत्तूरफलजैरसैः। मर्दयेद्दिनमेकन्तुतत्तुल्यंत्रिकटुक्षिपेत्। उन्मत्ताख्योरसोनाम्ना नस्यैर्यात्सन्निपातजित् ॥२१॥ निस्त्वग्जेपालबीजंचदशनिष्कंविचूर्णयेत्। मरिचम्पिप्पलींसूतंप्रतिनिष्कंविमिश्रयेत् ॥२२॥ भाव्योजम्बीरजैर्द्रवैः सप्ताहंसम्प्रयत्नतः। रसोयमञ्जनेदत्तःसन्निपातंविनाशयेत् ॥२३॥ सूतंटङ्कणकंतुल्यंमरिचंसूततुल्यकम्। गन्धकंपिप्पलीशुण्ठीद्वौद्वौभागौविचूर्णयेत् ॥२४॥ सर्वतुल्यंक्षिपेद्दन्तीबीजंनिस्तुषितंभिषक्। गुञ्जैकंरेचनंसिद्धं नाराचोयंमहारसः। आध्मानंमलविष्टंभमुदावर्त्तंचनाशयेत् ॥२५॥

यह पंचवक्र रस दो गुंजा सन्निपात में देइ तौ सन्निपात दूर होजाय ॥ (मन्दारमूल काथ) सोंठि, मिरच व पीपरि के सङ्ग दे यही अनोरान है ॥ १८ ॥ पथ्य दही भातदे और जलयोग करै जलमें बैठि ओपरसे स्नान करै ... देय तो कफजनित उपद्रव अच्छे होयँ ॥ १९ ॥ अद्रक शहद सङ्ग देय तौ अग्नि दीपन करै और यथायोग्य घृत, मांस खाई तौ अग्नि मेदन करै ॥ २० ॥ (सन्निपात पर उन्मत्तरस) पारा, गन्धक सम भागले धतूरफलके रससे खरल करि तिसके समान त्रिकुटा दे पीसि इस उन्मत्तरसको नासदेने से सन्निपात दूरहोता है ॥ २१ ॥ (सन्निपात पर अञ्जन) जमालगोटा छीलि पिसा दूरकरि चालिस माशे चूर्ण करै मिरच, पीपरि व सोंठि चार चार मासे ले ॥ २२ ॥ जंभीरीरस में सात दिन घोटिये अञ्जनकरै तौ सन्निपात दूरहोय ॥ २३ ॥ (शूलपर नाराचरस) पारा, सुहागा सममाग करि समान मिरच, गन्धक, पीपरि व सोंठि दो २ भागले खरल करै ॥ २४ ॥ सब के समान शुद्ध जमालगोटा दे एकत्रकरि खरलकरै गुंजाभर देने से रेचन होय यह नाराच नामरस आध्मान, मलविष्टम्भ व उदावर्त्त ये सब रोग नाश करता है ॥ २५ ॥

दरदंटङ्कणंशुण्ठी पिप्पलीचैककार्षिकाः। हेमाह्वापलमा
त्रास्याद्दन्तीबीजंचतत्समम् २६ विचूर्ण्यैकत्रसर्वाणिगो
दुग्धेनैवसाधयेत्। त्रिगुञ्जंरेचनंदद्याद्विष्टम्भाध्मानरोगिषु
२७ सूतभस्मत्रिभागंस्याद्भागैकंहेमभस्मकम्। मृततार
स्यभागैकंशिलागन्धकतालकम् २८ प्रतिभागद्वयंशु
द्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत्। वराटान्पूरयेत्तेनक्षागीक्षीरेणटङ्क
णम्। पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वाम्मृद्भाण्डेसन्निरोधयेत् २९ शुष्कंग
जपुटेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वाङ्गशीतलम्। रसोराजमृगाङ्कोयंच
तुर्गुञ्जःक्षयापहः। दशपिप्पलिकाक्षौद्रैरेकोनत्रिंशदूष
णैः ३० शुद्धंसूतंद्विधागन्धंकुर्यात्खल्वेनकज्जलीम्। तयोः
समंतीक्ष्णचूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ३१ द्वियामान्तेकृतंगो
लंताम्रपात्रेनिधापयेत्। आच्छाद्यैरण्डपत्रेणयामार्द्धेत्युष्ण
ताभवेत् ३२ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादहोरात्रात्समुद्धरेत्।

(शूलपर इच्छाभेदीरस) शुद्धशिंगरफ, सुहागा, सोंठि व पीपरि कर्ष-कर्ष भर, चोक पलभर जमालगोटा-पलभर ॥ २६ ॥ सब खरलकरि गोदूध में तीन गुंजा रेचनार्थ देय इस इच्छाभेदी रससे विष्टम्भ व आध्मान दूरहो ॥ २७ ॥ (क्षयीपर राजमृगांकरस) पाराभस्म तीन भाग, सोनाभस्म एक भाग तारभस्म एक भाग, मैनशिल, शुद्धगन्धक, हरताल ॥ २८ ॥ दो २ भाग सब घोटि कौडी में भरि, बकरी के दूध में सुहागा पीसि, कौडीका मुख मूँदि माटी पात्रमें धरि सम्पुटकरि ॥ २९ ॥ सुखाय गजपुटमें फूंकदेय जब सिराय तब खरलकरे इस राजमृगांकरसको चारगुंजा देय तो क्षयी क्षयरोग नाशै दश पीपरि शहद या उन्नीस मिरच शहद सङ्गदेय ॥ ३० ॥ ([illegible]पर स्वयमग्निरस) शुद्ध पारेसे दूनी शुद्धगंधक खरलकरि कजलीकरि दोनोंके समान पौलादकी भस्मले सबको घीकुवारके रसमें ॥ ३१ ॥ दो पहरभर घोटि ताम्रपात्र में रख रेंड़ पत्तेसे ढांपि आधे पहरभर धूपमें धरे उष्णहोय ॥ ३२ ॥ तब नाजकी राशिमें एक दिनरात डारि

१ मृताभ्रमथवा[illegible]-तारकम् ॥

संपीड्यंगालयेद्वस्त्रेततोवारितरंभवेत् ३३ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवङ्गकैः । नवभागोन्मितैरेतैःसमःपूर्वरसोभवेत् ३४ सञ्चूर्ण्यलोडयेत्क्षौद्रेभक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयम् । अयमग्निरसोनाम्नाक्षयकासनिकृन्तनः ३५ सूतार्धगन्धकोमर्द्योयामैकंकन्यकारसैः । द्वयोस्तुल्यंताम्रपत्रंपूर्वकल्केनलेपयेत् ३६ दिनैकंस्थालिकायन्त्रपक्कमादायचूर्णयेत् । सूर्यावर्तोरसोह्येषद्विगुञ्जःश्वासजिद्भवेत् ३७ शुद्धंसूतंमृतंलोहंताप्यंगन्धकतालकम् । पथ्याग्निमन्थनिर्गुण्डीत्र्यूषणटङ्कणंविषम् ३८ तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुण्डिकाद्रवैः । मुण्डीद्रवैर्दिनैकन्तुद्विगुञ्जंवटकीकृतम् ३९ भक्षयेद्वातरोगार्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः । रास्नामृतादेवदारुशुण्ठीवातारिजंशृतम् । सगुग्गुलुंपिबेत्कोष्णमनुपानंसुखावहम् ४० दग्धान्कपर्दिकान्पिष्ट्वात्र्यूषणंटङ्कणंविषम् ।

कै निकारि लेय फिर खरलकरि वस्त्रमें छानिले तब जलपर डारै तौ तिरैगी ॥ ३३ ॥ त्रिकुटा त्रिफला इलायची जायफल लोंग ये सब नवभाग इन सब समान स्वयमग्निरस ले ॥ ३४ ॥ ये सब खरलकरि शहद में दो निष्क खाय यह अग्निरस क्षयी व कास को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (श्वासपर सूर्यावर्तरस) पारा की आधी गन्धक पहरभर घीकुवारके रसमें घोटि दोनों के सम तांबेका पात्र ले तिसपर लेपकरि यह कजरी ॥ ३६ ॥ एक दिन थालीयंत्र में पकाय ऐंचले थालिकायन्त्र माटीकी हांडीमें लोनभरि तिसपै तांबेका पत्रधरि मुँहमूंदि कपडौटी करि फूंक देय यह सूर्यावर्तरस पीसि दो गुंजा खवावै तौ श्वास नाशकरै ॥ ३७ ॥ (स्वच्छन्दभैरवरस) शुद्धपारा, मरालोहा, सोनामासी, गंधक, हरताल, हड, अरणी, मेवड़ी, त्रिकुटा, भुनासुहागा, सिंगिया, मेवड़ीरस ॥ ३८ ॥ त्रिकुटा, भुना सुहागा, सिंगिया व मेवड़ी रसमें सब मिलाय समान खरल करि फिर एक दिन गोरखमुंडीके रसमें खरल करि दो गुंजाके समान गोलीकरै ॥ ३९ ॥ यह स्वच्छन्द भैरवरस वातरोगी को खिलावै तथा रासन, गुर्च, देवदारु, सोंठ व रण्डकी जड़ इनका काढ़ाकरि गुग्गुलयुक्त गरम इसके सङ्ग पिलावै यह अनुपान सुखदायी

गन्धकंशुद्धसूतञ्चतुल्यंजम्बीरजैर्द्रवैः ४१ मर्दयेद्रक्षये न्माषंमरिचाज्यंलिहेदनु । निहन्तिग्रहणीरोगंपथ्यंतक्रौद नंहितम् ४२ मृतंताम्रमजाक्षीरैःपाच्यंतुल्यैर्गतद्रवैः । त त्ताम्रंशुद्धसूतञ्चगन्धकंचसमंसमम् ४३ निर्गुण्डीस्वर सेर्मर्द्यदिनंतद्गोलकंत्रजेत् ।यामैकंवालुकायन्त्रेपाच्यंयोज्यं द्विगुञ्जकम् ४४ बीजपूरकमूलञ्चसजलंचानुपाययेत् । रसस्त्रिविक्रमोनाम्नामासैकेनाश्मरीप्रणुत् ४५ तालंता प्यंशिलांसूतंशुद्धंसैन्धवकङ्कणाम् । समांशंचूर्णयेत्खल्वे सूताद्द्विगुणगन्धकम् ४६ गन्धतुल्यंमृतंताम्रंजम्बीरे र्दिनपञ्चकम् । मर्द्यंषड्भिःपुटैःपाच्यंभूधरेसम्पुटेपचेत् । पुटेपुटेद्रवैर्मर्द्यंसर्वमेतत्तुषट्पलम् ४७ द्विपलंमारितंताम्रं लोहभस्मचतुष्पलम् । जम्बीराम्लेनतत्सर्वंदिनंमर्द्यंपुटे लघु ४८ त्रिंशदंशंविषंचास्याक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् । म

है ॥ ४० ॥ (हंसपोटली ग्रहणीपर) भुनी कौडी पीसि सोंठ, मिर्च, पीपरि, सुहागा, सिंगिया, गन्धक और शुद्धपारा इन सब द्रव्योंको समानले जंभीरी के रसमें ॥ ४१ ॥ खरलकरि माशा एकभर मरिच व घीकेसाथ खाय तब ग्रहणी नाशहोय माठा भात पथ्य देय ॥ ४२ ॥ (त्रिविक्रमरस अश्मरीपर) मरा तांबा, बकरी दूध समानले किसी पात्रमें धरि आंचदे दूधतरै उतारिले तब तांबे के समान शुद्धपारा, गन्धक ॥ ४३ ॥ मेवड़ीके रसमें एक दिन घोटि गोलीकरि मूसायन्त्र में भरि वालुकायन्त्र में आंचदे तब दो गुंजा खिलावै ॥ ४४ ॥ बिजौरा की जड़के रसमें वा काढ़ेमें यह रसदेय इस रसका त्रिविक्रम नामहै माशेभर सेवन करै तो पथरीको दूर करता है ॥ ४५ ॥ (कुष्ठपर महातालेश्वर रस) हर- ताल, सोनामाखी, मैनशिल, पारा, सेंधव व सुहागा ये सब समान खरलकरि पारे से दूनी गन्धकदे ॥ ४६ ॥ गन्धकके तुल्य मरा तांबा जंभीरी के रसमें पांच दिन घोटि शरावसम्पुट में धरि कपड़ौटी करि भूधरयन्त्र में फूंकदे ऐसे छःबार फूंकदे फिर निकारि बिजारस में पांच दिन घोटै पूर्ववत् आंचदे तब छःपल रसले ॥ ४७ ॥ मरा तांबा दोपल व लोह मरा चारपल ये दोनों जंभीरी रसमें एक दिन

हिषाज्येनसम्मिश्रंनिष्कार्द्धंभक्षयेत्सदा ४९ मध्वाज्यैर्बा कुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदनु । सर्वकुष्ठंनिहन्त्याशुमहाताळेश्वरोरसः ५० सूतभस्मसमोगन्धो मृतायस्ताम्रगुग्गुलू। त्रिफलाचमहानिम्बश्चित्रकश्चशिलाजतु ५१ इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंशाणषोडश। चतुष्षष्टिकरञ्जस्य बीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ५२ चतुष्षष्टिमृतंचाभ्रंमध्वाज्याभ्यां विलोडयेत्। स्निग्धभाण्डेघृतंखादेद् द्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत्। रसःकुष्ठकुठारोयं गलत्कुष्ठनिवारणः ५३ शुद्धंसूतं द्विधागन्धंमर्द्यंकन्याद्रवैर्दिनम्। तद्गोलांपिठरीमध्येताम्रपात्रेणरोधयेत्। सूतकाद्द्विगुणेनैवशुद्धेनाधोमुखेनच ५४ पार्श्वेभस्मनिधायाथपात्रोर्ध्वंगोमयंजलम्। किञ्चित्किञ्चित्प्रदातव्यंचुल्ल्यांयामद्वयंपचेत्। चण्डाग्निनातदुद्धृत्य स्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ५५ काष्ठादुम्बरिकावह्नित्रिफलारा

घोटि दश गोइटा में आचदे ॥ ४८ ॥ इस भस्मका तीसवा अंश सिंगियादे रालकरै तब दो मारे भसके घीमें नित्य खाय ॥ ४९ ॥ इसके पीछे बकुचीका चूर्ण दश मारे शहद युक्त घीके साथ खाय तो सब कुष्ठ नाशहोयँ इसका नाम महाताळेश्वर है॥ ५० ॥ (कुष्ठकुठाररस) पारा भस्म, गन्धक, पसालोहा, ताम्र गुग्गुल, त्रिफला, बकायन, चीता और शुद्धशिलाजीत ॥ ५१ ॥ ये द्रव्य सोलहशाण चौसठि शाण करंज बीजका चूर्ण ॥ ५२ ॥ अभ्रक भस्म ६४ शाण सब इकट्ठी करि शहद और घीमें मिलाय समान घृत भाडमें भरि धरि इसे आठमाशे खिलावै तौ सब कुष्ठ दूरकरै यह कुष्ठकुठार रस गलित कोढ भी नाशकरता है ॥ ५३ ॥ (उदयादित्यरस) शुद्ध पारा व दूनी गन्धक एक दिन घीकुवार के रसमें मर्दन करि गोली बांधि माटीके पात्रमें धरि पारेसे द्विगुणा तांबेकी गहरी कटोरी बनाय उस माटीपात्र के भीतर गोलेपर ढांपि किसी वस्तु से निःसंधिकरि बंद करि ॥ ५४ ॥ चारों ओर ढकने के राखभरि चूल्हे पर धरि दोपहर आंचदेय और उस तांबेके ढकनेपर पानीमें गोबर घोलि थोडा थोडा छोडता जाय अन्त में तीव्र आंचदेय ठंढा भये उतारि ॥ ५५ ॥ कठगूलर, चीता, त्रिफला, अम्.

जयंदकम् । विडङ्गबाकचीबीजं क्राथयेत्तेनभावयेत् ५६ दिनैकमुदयादित्योरसोदेयोद्विगुञ्जकः । विचर्चिकांदद्रु कुष्ठं श्वेतकुष्ठञ्चनाशयेत् ५७ अनुपानंप्रकुर्वीतबाकुचीफलचूर्णकम् । खादिरस्यकषायेणसमेनपरिपाचितम् ५८ त्रिशाणंवागवांक्षीरैःक्राथैर्वात्रिफलोद्भवैः । त्रिदिनान्तेभवेत्स्फोटःसप्ताहाद्वाकिलासके ५९ नीलंगुञ्जांचकासीसंधत्तूरंहंसपादिकम् । सूर्यभक्तांचचाङ्गेरींपिष्ट्वातुल्यान्विलेपयेत् ६० स्फोटस्थानप्रशान्त्यर्थंसप्तरात्रंपुनःपुनः । श्वेतकुष्ठंनिहन्त्याशुसाध्यासाध्यंनसंशयः ६१ अपरंश्वित्रलेपोपिकथ्यतेऽत्रभिषग्वरैः । गुञ्जाफलाग्निचूर्णंचलेपितं श्वेतकुष्ठनुत् । शिलापामार्गभस्मानिलिप्तंश्वित्रंविनाशयेत् ६२ शुद्धसूतंचतुर्गन्धंपलंयामंविचूर्णयेत् । मृतताम्राभ्रलोहानांदरदंचपलंपलम् ६३ सुवर्णरजतंचैवप्रत्येकंद

लताकपत्र, विडंग व बकुची बीज इनका क्वाथकरि रसकी भावनादे ॥ ५६ ॥ एक दिन घोटि यह उदयादित्य रस दो गुंजा खिलाने से विचर्चिका, दाद व श्वेतकुष्ठ अच्छा होजाय ॥ ५७ ॥ अनुपान खदिरसार काथ वा गऊका दूध वा त्रिफले के काथमें तीन शाण बकुची चूर्ण दो गुंजा रसयुक्त खाय तो तीन दिनके अन्तमें स्फोट कुष्ठ दूरहो सात दिनके अन्तमें सफेद कुष्ठ दूरहो ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ (श्वित्रपर लेप) नीलपत्र, गुंजा, कसीस, धतूरा, हंसपद, सूर्यमुखी और छोटी लुनियां ये सब सम भाग लेप करने से ॥ ६० ॥ जहां फूटाहो तहां तो सात दिन में गलितकुष्ठ अच्छा होय और श्वेतकुष्ठ साध्य वा असाध्य दूर होय ॥ ६१ ॥ इसीपर श्रेष्ठ वैद्य और लेप कहते हैं घुंघुची व चीताको जल में पीसि लगाने से श्वेतकुष्ठ दूरहोय मैनशिल चिरचिरा राख पीसि पानी के साथ लेपकरै तो श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ ६२ ॥ (कुष्ठपर, सर्वेश्वर रस) शुद्ध पारा एकपल, गन्धक चारपल एकपहर खरल कर मराताम्बा, अभ्रक, लोह, सिंगरफ ये शुद्ध सब एक एक पल ॥ ६३ ॥ मरासोना व चांदी एकपल मारे

शनिष्ककम्। माषैकंमृतवज्रञ्चतालंशुद्धपलद्वयम् ६४
जम्बीरोन्मत्तवासाभिःस्नुह्यर्कविषमुष्टिभिः। मर्दयेद्धयारिजैः
द्रवैःप्रत्येकेनदिनंदिनम् ६५ एवंसप्तदिनंमर्द्यतद्गोलंवस्त्र
वेष्टितम्। वालुकायन्त्रगंस्वेद्यंत्रिदिनंलघुवह्निना ६६ आ
दायचूर्णयेच्छ्लक्ष्णंपलैकंयोजयेद्विषम्। द्विपलंपिप्पली
चूर्णमिश्रंसर्वेश्वरोरसः ६७ द्विगुञ्जोलिह्यतेक्षौद्रैःसुतिमं
डलकुष्ठजित्। वाकुचीदेवकाष्ठंचकर्षमात्रंसुचूर्णयेत्। लि
हेदेरण्डतैलाक्तमनुपानंसुखावहम् ६८ हेमाह्वांपञ्चपलि
कांक्षिप्त्वातक्रघटेपचेत् तक्रेजीर्णेसमुद्धृत्यपुनःक्षीरेघटे
पचेत्। क्षीरेजीर्णेसमुद्धृत्यक्षालयित्वाविशोषयेत् ६९ त
च्चूर्णपञ्चपलिकंमरिचानांपलद्वयम्। पलैकंमूर्छितंसूतमे
कीकृत्वानुभक्षयेत्। निष्कैकंसुतकुष्ठार्तःस्वर्णक्षीरीरसोह्व
यम् ७० भस्मसूतंमृतंकान्तंमुण्डभस्मशिलाजतु। शुद्धंता
र्प्यंशिलाव्योषंत्रिफलांकोलबीजकम् ७१ कपित्थंरजनी

चूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् । विंशद्वारंविशोष्याथमधुयुक्तंलिहेत्सदा ७२ निष्कमात्रंहरेन्मेहान्मेहबद्धरसोमहान् । महानिम्बस्यबीजानि पिष्ट्वाषट्सम्मितानिच ७३ पलंतण्डुलतोयेनघृतनिष्कद्वयेनच । एकीकृत्यपिबेच्चानुहन्तिमेहंचिरन्तनम् ७४ चतुःसूतस्यगन्धोष्टौरजनीत्रिफलाशिवा । प्रत्येकंचद्विभागंस्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रकम् ७५ प्रत्येकंचत्रिभागंस्यात्त्र्यूषंदन्तीचजीरकम् । प्रत्येकमष्टभागंस्यादेकीकृत्यविचूर्णयेत् ७६ जयन्तीस्नुक्पयोभृङ्गवह्निवातारितैलकैः । प्रत्येकेनक्रमाद्भाव्यंसप्तवारंपृथक्पृथक् ७७ महावह्निरसोनामनिष्कमुष्णजलैःपिबेत् । विरेचनंभवेत्तेनतक्रभक्तंससैन्धवम् ७८ दिनान्तेदापयेत्पथ्यंवर्जयेच्छीतलंजलम् । सर्वोदरहरःप्रोक्तोमूढवातहरःपरः ७९ गन्धकंतालकंताप्यंमृततास्रंमनःशिला । शुद्धंसूतंचतुल्यांशंमर्दयेद्भावयेद्दिनम् । पिप्पल्यास्तुकषायेणवज्री

निफला, झरबेरीकी गुद्दी ॥७२॥ कैथा और हल्दी इन सबका चूर्ण भँगरेके रसमें घोटै जब सूखजाय तब शहद मिलाय चाटै ॥ ७२ ॥ ४ माशे नित्यखाय तो प्रमेह नाशहोय इस रस को मेहबद्ध नाम कहते हैं बकायन के बिया छः पीसि लेय ॥ ७३ ॥ चारि पैसाभर चावल का धोवन आठमाशे घी सब मिलायके पियै तो बहुत दिनों प्रमेह दूर होताहै ॥ ७४ ॥ (जलोदर पर वह्निरस) पारा पल चार, गन्धक पल आठ, हल्दी, त्रिफला व हड ये सब दो २ पल, निशोथ, जैपाल और चीता ॥ ७५ ॥ ये सब तीन २ पल, त्रिकुटा, जमालगोटे की जड़ और श्वेत जीरा आठ २ पल सब मिलाय खरलकरै ॥ ७६ ॥ अरणी का रस सहुड़का दूध भँगरा चीताएण्ड का दा रेंड़ीका तेल इनमें क्रमसे सातसात भावना दे ॥ ७७ ॥ यह महावह्निरस चार माशे गुदमें धरि गरमपानी से उतारि जाय तब मल गिरै सन्ध्याको रेचन के पीछे पथ्य मट्ठा भात सैंधवलोन देकर गरम जल पियै सब पेटके रोग दूरहोयँ व मूढवात दूरहो ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ (गुल्मपर विद्याधररस) शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामाखी, मरातावा,

क्षीरेणभावयेत्॥८०॥ निष्कार्द्धंभक्षयेत्क्षौद्रैर्गुल्मंप्लीहादिकं जयेत्। रसोविद्याधरोनामगोमूत्रंचपिबेदनु ८१ टङ्कणं हारिणंशृङ्गंस्वर्णंशुल्वंमृतंरसम्। दिनैकमार्द्रकद्रावैर्मर्दयेरु द्ध्वापुटेपचेत् ८२ त्रिनेत्राख्योरसःरोयंमाषंमध्वाज्यकैर्लि हेत्। सैन्धवंजीरकंहिङ्गुमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु। पक्तिशूलं हरत्याशुमासमात्रंनसंशयः ८३ शुद्धंसूतंद्विधागन्धंयामै कंमर्दयेद्दृढम्। द्वयोस्तुल्यंशुद्धताम्रंसम्पुटेतंनिरोधयेत् ८४ ऊर्ध्वाधोलवणंदत्त्वामृद्भाण्डेधारयेद्भिषक्। ततोगज पुटेपक्त्वास्वाङ्गशीतंसमुद्धरेत् ८५ सम्पुटंचूर्णयेत्सूक्ष्मं पर्णखण्डेद्विगुञ्जकम्। भक्षयेत्सर्वशूलार्त्तोहिङ्गुशुण्ठीसजी रकम्॥८६॥ वचामरिचजंचूर्णंकर्षमुष्णजलैःपिबेत्। असाध्यं नाशयेच्छूलंरसोयंगजकेशरी ८७ शुद्धसूतंविषंगन्धमज मोदांफलत्रयम्। सर्जक्षारंयवक्षारंवह्निसैन्धवजीरकौ ८८

मैनशिल और पारा सब समानले खरलकरि फिर पीपरि क्वाथमें दिनभर खरल करै एक दिन सेंहुड दूध में खरल करै॥ ८०॥ दो मासे शहद सङ्ग चाटै तौ गुल्म व प्लीहा दूरहोय यह विद्याधर रस खाय ऊपर से गोमूत्र पियै॥ ८१॥ (त्रिनेत्ररस पक्तिशूलपर) सुहागा, हरिणशृंग, सोना, तांबा और पारामरा एक दिन अदरकके रसमें घोटि गजपुटमें फूंकदे॥ ८२॥ यह त्रिनेत्ररस माशा भर घृत शहद में चाटै तिसपर सेंधव, जीरा, हींग, घृत और शहद चाटै यों मास भर चाटनेसे पसुरी की समस्त पीडा दूरहोय॥ ८३॥ (शूलपर गजकेशरी रस) शुद्धपारा व दूना शुद्ध गन्धक दोनों बलपूर्वक घोटि, तिसके समान शुद्ध तानेके कुटके करि कजली में मिलाय सम्पुटकरै॥ ८४॥ फिर माटी के पात्रमें नोन बीचमें सम्पुटगाडि गजपुट आंचदे ठंढाभये निकाले॥ ८५॥ तब खरल करि पनेपान में दो गुंजारस खवावै तौ पेटका शूल मिटै और उसीपर भुनीहींग, सोंठ, जीरा॥ ८६॥ वच और मरिच इनका चूर्ण उष्णोदकके साथ पियै तौ असाध्य शूल भी नाश होजाय यह गजकेशरी रस कहाता है॥ ८७॥ (मन्दाग्नि पर अग्नितुण्डीरस) शुद्ध पारा, विष, गन्धक, अजमोद, त्रिफला, सज्जी

सौवर्चलंविडङ्गानिसामुद्रंत्र्यूषणंसमम्। विषमुष्टिंसर्व्व
तुल्यंजम्बीराम्लेनमर्दयेत्। मरिचाभांवटींखादेद्वह्निमान्द्य
प्रशान्तये ८९शुद्धसूतंविषंगन्धंसमंसर्वंविचूर्णयेत्। मरि
च्चंसर्वतुल्यांशं कण्टकार्य्याःफलद्रवैः। मर्दयेद्भावयेत्स
र्वमेकविंशतिवारकम् ९० वटींगुञ्जात्रयंखादेत्सर्वाजीर्णप्र
शान्तये। अजीर्णकण्टकश्चायंरसोहन्तिविसूचिकाम् ९१
मृतंसूतंमृतंताम्रंहिङ्गुपुष्करमूलकम्। सैन्धवंगन्धकंतालंक
टुकींचूर्णयेत्समम् ९२ पुनर्नवादेवदालीनिर्गुण्डीतन्दुली
यकैः। तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकंमर्दयेद्दृढम् ९३ माषमा
त्रंलिहेत्क्षौद्रैरसंमन्थानभैरवम्। कफरोगप्रशान्त्यर्थंछिन्ना
क्वाथंपिबेदनु ९४सूतहाटकवज्राणिताम्रंलोहंचमाक्षिकम्।
तालंनीलाञ्जनंतुत्थमहिफेनंसमांशकम् ९५ पञ्चानांलवणा
नांचभागमेकंविमर्दयेत्। वज्रीक्षीरैर्दिनैकंतुरुद्ध्वातंभूधरे

जवाखार, चीता, सेंधव, जीरा ॥ ८८ ॥ कालानोन, विडङ्ग, पागालोन और त्रिकुटा ये सब समान भागले और सबके समान कुचलाले जंभीरीके रसमें घोटि मरिच सम गोली बांधि खाय इस अग्नितुण्डरससे मन्दाग्नि दूर होजाती है ॥ ८९ ॥ (विसूचिका (हैजा) पर अजीर्णकंटकरस) पारा, सिंगिया और गन्धक ये तीनों शुद्ध सबसम भागले खरल करि सबके समान मरिचदे भटकटैया फलके रसमें भिजोय इकीसबार घोटि ॥ ९० ॥ तीनरत्ती भर वटी बनाय कर खावे तो इस अजीर्णकण्टकवटी के खाने से सब अजीर्ण शान्त होयँ और विसूचिका को हने ॥ ९१ ॥ (अथ मन्थानभैरव) मृतक पारा व तांबा, हींग, पुष्करमूल, सेंधव, शुद्ध गन्धक, हरताल और कुटकी ये सब सम भाग खरल करि ॥ ९२ ॥ गदापुरैना, बंदाल, मेवड़ी, चौराई और कडुवीतोरई इन सबके रसमें एक एक दिन बलपूर्वक क्रमसे घोटि ॥ ९३ ॥ माशाभर शहद युक्त नित्य खाय यह मंथानभैरवरस कहाता है इसपर कफरोगनाशार्थ गुर्च का क्वाथ पिये ॥ ९४ ॥ (अथ वातनाशकरस) शुद्धपारा, शुद्धसोना, शुद्धहीरा, शुद्धलोह, शुद्धसोनामाखी, शुद्धहरताल, शुद्धसुरमा, शुद्धतूतिया और अफीम ये

पचेत् ९६ माषैकमार्द्रकद्रावैर्लेहयेद्वातनाशनम् । पिप्पलीमूलजंक्वाथंसकृष्णमनुपाययेत् । सर्वान्वातविकारांस्तु निहन्त्याक्षेपकादिकान् ९७ कनकस्याष्टभागाःस्यु सूतो द्वादशभिर्मतः । गन्धोपिद्वादशप्रोक्तस्ताम्रंशाणद्वयोन्मितम् ९८ अभ्रकस्यचतुःशाणंमाक्षिकस्यद्विशाणिकम् । वङ्गोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकम् ९९ विषंत्रिशाणिकंचैवलाङ्गलीपलसम्मिता । मर्द्दयेद्दिनमेकञ्चरसैरम्लफलोद्भवैः २०० दद्यान्मृदुपुटंवह्नौततश्चूर्णंतुकारयेत् । माषमात्रोरसोदेयः सन्निपातेसुदारुणे १ आर्द्रकस्वरसेनैवरसोनस्यरसेनवा । किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगन्दरम् । ज्वरंगरमजीर्णंचहरेद्रोगहरोरसः २ रसोगन्धस्त्रित्रिकर्षौकुर्य्यात्कज्जलिकांद्वयोः । ताराभ्रताम्रवङ्गाहिसाराश्चैकैककार्षिकाः ३ शिग्रुज्वालामुखीशुण्ठीबिल्वेभ्य

समानभाग ॥ ९५ ॥ एक भागमें पांचोलोन ये सब द्रव्यले एकदिन सेंहुड़के दूध में खरलकरै संपुट में राखि भूधरयंत्रमें पचावै ॥ ९६ ॥ माशेभर रस अदरकके रसमें मिश्रितकरि खावे तो सब वायु नाश होयँ अथवा पिपरामूल क्वाथ में पीपरि मिलायके देय तो सब वात विकार आक्षेपकादि निलाय जायँ ॥९७॥ (सन्निपात पर कनकसुन्दर रस) आठभाग सोनाभस्म, बारहभाग पाराभस्म, शुद्धगन्धक बारहभाग, दोशाण ताम्रभस्म ॥ ९८ ॥ अभ्रकभस्म ४ शाण, सोनामाखी भस्म २ बङ्ग २ सुरमाभस्म ३ लोहाभस्म ८ ॥ ९९ ॥ विष ३ पल, कलियारी पलभर ये द्रव्य और रस एक दिन जम्बीरी नींबू में खरलकरै ॥ २०० ॥ संपुटकरि थोडी आंचदै फूंकि फिर खरलकरै माशाभर खिलावै तो अत्यन्त बढा हुआ सन्निपात दूरहोय ॥ १ ॥ अदरक वा लहसुन के रसमें खिलावै तो, किलास, सर्वकुष्ठ, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषविकार और अजीर्ण इन रोगों को यह कनकसुन्दर रस हरताहै ॥ २ ॥ (सन्निपात पर भैरवरस) पारा ३-कर्ष व गन्धक ३ कर्ष इनदोनोंको घोटि कजलीकरि तारा, चांदी, पीतर, वंग और पोलाद ये पाचोंभस्म कर्षभर ॥ ३ ॥ सहिंजन ज्वालामुखी व सोंठि का काढा बेलके, फल

स्तन्दुलीयकात् ॥ प्रत्येकंस्वरसैःकुर्याद्यामैकैकंविमर्दये
त् ४ कृत्वागोलंततवस्त्रैलेवणैःपूरितंन्यसेत्। काचभाण्डे
ततःस्थाल्यांकाचकूपींनिवेशयेत् । वालुकाभिःप्रपूर्याथ
वह्नियामद्वयंभवेत् ५ ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमि
श्रयेत् । प्रवालचूर्णकर्षेण शाणमात्राविषेणच । कृष्णस
र्पस्यगरलैर्दिवसंभावयेत्तथा ६ तगरंमुशलीमांसीहिमाह्वा
वेतसःकणा । नीलिनीपत्रकंचैलाचित्रकश्चकुटेरकः ७श
तपुष्पादेवदालीधत्तूरागस्त्यमुण्डिकाः । मधूकजातिमद
नारसैरेषांविमर्दयेत् । प्रत्येकमेकवेलंचततःसंशोष्यधारये
त्८बीजपूराद्रकद्रावमरिचैःषोडशोन्मितैः। रसोद्विगुञ्जाप्र
मितःसन्निपातेषुदीयते। प्रसिद्धोयंरसोनाम्नासन्निपातस्य
भैरवः ९ तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः। द्विभा
गोगन्धकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेदिमान् १०कपित्थस्वरसैर्गा
ढंमृगशृङ्गेततःक्षिपेत् । पुटेन्मध्यपुटेनैवसमुद्धृत्यचमर्दये

का रस चौराईरस इन रसमें पहरपहरभर घोटि ॥ ४ ॥ गोलाबांधि कपड़ौटीकरि दो कांचके प्याले एकमें लोनभरि गोला धरि दूसरा लोन पूरित प्याला ढांकि कपड़ौटीकरि तब माटी पात्र के वालुकायंत्रमें धरि दोपहरकी आंचदेय ॥ ५ ॥ ठंढा भये निकारि खरलकरि फिरि मूंगा चूर्ण कर्षभर, विष शाणभर व काले सांपका जहरयुक्त एक दिन खरलकरै फिर कांचकी शीशीमें भरि वालुकायंत्रमें दोपहरकी आंचदे ठंढाभये निकारि चूर्णकरै ॥ ६ ॥ तगर, मुशली, जटामांसी, चोक, जगन्नाथी पीपरि, नीलकीपाती, इलायची, चीता, कटसरैया ॥ ७ ॥ सौंफ, धनतोरई, धतूरा, अगस्त्य, मुंडी, महुआ, चमेली और मैनफल इनसबका रस वा काढ़ा करि क्रम से एकएकबार घोटि सुखाय राखे ॥ ८ ॥ जंभीरीरस वा अदरकरस १६ मरिचों से दोगुंजा प्रमाण रसके साथ सन्निपात में देय यह प्रसिद्ध सन्निपातभैरवनाम रस कहाताहै ॥ ९ ॥ (अथ ग्रहणीकपाटरस) चांदी, मोती, सोना और लोहा इनकी भस्म एक एक भाग, शुद्धगंधक दो भाग और शुद्ध पारा तीन भाग ये सब खरलकरि ॥ १० ॥ फिर कैथेके रसमें खरलकरि हरिणके सींगमेंभरि कपड़ौटी

त् ११ वत्सारसैः सप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा। लोध्रं प्रतिविषा मुस्तं धातकीन्द्रयवाः स्मृताः । प्रत्येकैः स्वरसैर्नित्यं भावना स्यात्त्रिधा त्रिधा १२ माषमात्रो रसो देयो मधुना मरिचैस्तथा । हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणीं सर्वजामपि । कपाटो ग्रहणीरोगे रसोयं वह्निदीपनः १३ मृतसूताभ्रकं गन्धं यवक्षारं सटङ्कणम् । अग्निमन्थं वचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः १४ ततो जयन्तीजम्बीरभृङ्गद्रावैर्विमर्दयेत् । त्रिवासरं ततो गोलं कृत्वा संशोष्य धारयेत् । लोहपात्रे शरावञ्च दत्त्वोपरि विमुद्रयेत् १५ अधो वह्निं शनैः कुर्याद्यामार्द्धं ततउद्धरेत् । रसतुल्यां प्रतिविषां दद्यान्मोचरसं तथा । कपित्थविजया द्रावैर्भावयेत्सप्तधा भिषक् १६ धातकीन्द्रयवामुस्तं लोध्रं बिल्वं गुडूचिका । एतद्रसैर्भावयित्वा वेलैकैकं च शोषयेत् १७ रसं वज्रकपाटाख्यं शाणैकं मधुना लिहेत् । वह्निशुण्ठीविडं बिल्वं लवणं चूर्णयेत्समम् । पिबेदुष्णाम्बुना चानु सर्व

करि तीस गोयँठा की आंचदे ठंढाभये निकारि निकारि खरलकरि ॥ ११ ॥ घरि-पारारसमें सातवार खरलकरि फिर तीनवार निरचिरारसमें खरलकरिफिर लोध, अतीस, मोथा, धवपुष्प, इन्द्रयव और गुर्च इनके रसमें तीन तीनवार क्रमसे खरल करि ॥ १२ ॥ माशाभर रस शहद मरिच मिलाय चाटै तो सब अतीसार व ग्रहणी को दूरिकरै यह ग्रहणीकपाट अग्निको दीपन करताहै ॥ १३ ॥ वज्र कपाटरस ग्रहणीपर) पारामस्म, अभ्रकभस्म, शुद्धगन्धक, जवाखार, सुहागा, अरणी बीज और वालवच यें सब समानभागले ॥ १४ ॥ यह रस जैंत,जंभीरी व भंगरा इनके रसमें तीन तीन दिन घोटि गोलाकरि सुखाय लोहेकी कढैया में धरि माटी पात्रसे बंदकरि ॥ १५ ॥ मंद मंद चार घड़ी आंचदे उतारिलेय तब उस रस के समान अतीस व मोचरस डालि कैथा व भांग के रसमें वैद्य सातसात बारघोटै ॥ १६ ॥ फिर धवपुष्प, इन्द्रयव, मोथा,लोध,बेल और गुर्च इनके रसमें एकएक बार घोट सुखायले ॥ १७ ॥ यह वज्रकपाटरस शाणभर शहद के संगखाय ऊपर से चीता,सोंठि,पांगानोन,बेल और सेंधव इन सबका समभाग चूर्णकरि उष्णजलके

जांग्रहणींजयेत् १८ तारंवज्रंसुवर्णंचताम्रंसूतंचगन्धकम् । लोहंक्रमविवृद्धानिकुर्यादेतानिमात्रया १९ विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमयेघटे । विमुच्यपिठरीमध्येधारयेत्सैन्धवैर्भृते । पिठरींमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यांनिवेशयेत् २० वह्निंशनैः शनैः कुर्याद्दिनैकंततउद्धरेत् । स्वाङ्गशीतंचसंचूर्ण्यभावयेदर्कदुग्धकैः २१ अश्वगन्धाचकाकोलीवानरीमुशलीक्षुरी । त्रिस्त्रिर्वेलंरसैरासांशतावर्याश्चभावयेत् । पद्मकन्दकसेरूणांरसैःकासस्यभावयेत् २२ कस्तूरीव्योपकर्पूरकङ्कोलैलालवङ्गकम् । पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णंविमिश्रयेत् २३ सर्वैःसमांशर्करांचदत्वाशाणोन्मितांभजेत् । गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः । तरुणीरमयेद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते २४ सूतोवज्रमणिर्मुक्तातारंहेमसिताभ्रकम् । रसैःकर्षमितानेतान्मर्दयेदिरिमेदजैः २५ प्रवालचूर्णंगन्धश्चद्विद्विकर्षंविमिश्रयेत् । ततोऽश्वग

नाय खाय तौ सब ग्रहणी दूरिहोयँ ॥ १८ ॥ (मदन कामदेवरस) चांदी हीरा,सोना और तांबा इन चारोंकी भस्म तथा पारा, गंधक व लोहा ये तीनों शुद्ध इन सातोंको क्रमसे बढती भागले ॥ १९ ॥ घीकुवारके रसमें घोटि शीशीमें धरि कपड़ौटीकरि माटीपात्र में नीचे ऊपर नोनधरि बीचमें शीशीधरि संपुटकरि चूल्हेपर धरि ॥ २० ॥ दिनभर मंद मंद आंच बारि फिर निकारि मदारकेदूधमें खरलकरि॥ २१ ॥ असगंध काकोली बिना भी असगंध, किमाच, मुशली, तालमखाना और शतावरि इनके रसमें तीन तीन भावना दे फिर कमलकी जड़ कसेरू व कांस इनकी तीन तीन भावनादेय ॥ २२ ॥ कस्तूरी, त्रिकुटा,कपूर, शीतलचीनी, इलायची और लवंग पीसि पूर्वचूर्ण जो भावनादिसे सिद्धकिये का अष्टमांश कस्तूर्यादिचूर्णयुक्त करि ॥ २३ ॥ सबके समान शक्कर मिलाय शाणभरि खाय आठ पैसाभरि दूधपियै पथ्य मधुर करै इसके खानेसे बहुत स्त्रियों से गमनकरै परन्तु धातु न घटै ॥ २४ ॥ (अथ कंदर्पसुन्दररस) शुद्धपारा, हीरा, मोती,चांदी,सोना व कृष्णाभ्रक ये पांच भस्म सब कर्ष कर्ष भरले खैरकाथमें एकदिन घोटै ॥ २५ ॥ मूंगेका चूर्ण

न्धास्वरसैर्विमर्द्यमृगशृङ्गके। क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावये
द्धातकीरसैः २६ काकोलीमधुकंमांसीबलात्रयविशोङ्गुल
म्। द्राक्षापिप्पलिवन्दाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् २७ परूषकं
कसेरुश्चमधुकंवानरी तथा। भावयित्वारसैरासांशोषयि
त्वाविचूर्णयेत् २८ एलात्वक्पत्रकंमांसीलवङ्गागुरुकेशर
म्। मुस्तंमृगमदःकृष्णाजलंचन्द्रश्चमिश्रयेत् २९ एत
च्चूर्णैःशाणमितैरसंकन्दर्पसुन्दरम्। खादेच्छाणमितंरात्रौ
सिताधात्रीविदारिका ३० एतासांकर्षचूर्णेनसर्पिःकर्षेण
संयुतम्। तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिबेत्सुस्थितमानसः। रम
णीरमयेद्बह्वीर्हानिकापिनगच्छति ३१ शुद्धंरसेन्द्रभागै
कंद्विभागंशुद्धगन्धकम्। क्षिपेत्कज्जलिकांकुर्यात्तत्रती
क्ष्णभवंरजः। क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यंप्रहरैकंविमर्दयेत्
३२ तत्रकन्याद्रवैर्घर्मेत्रिदिनंपरिमर्दयेत्। ततःसञ्जायते
तस्यसोष्णोधूमोद्गमोमहान् ३३ अथतत्पिण्डितंकृत्वाता

व शुद्धगंधक दोदो कर्ष मिलाय असगंध के रसमें एकदिन घुटाय मृगसींग में भर कपरौटी करि थोड़ी आंचमे धरि फूंकदे फिर धवफूलके रस वा क्वाथमें भावनादे॥ २६॥ फिर काकोली जिना आसन, मुलेठी, जटामासी, वरियारा, गुलसकरी, ककई, मसीड़, हिंगरट, मुनका, पीपरका बादा, कटसरैया, वनमूंग, मुदुगपर्णी, माषपर्णी॥ २७॥ फालसा, कसेरू, महुआ और किमाचबीज इनसवों के रसमें एक एक भावनादे सुखाय खरलकरि धरिराखै॥२८॥ इलायची, तज, पत्रज, ज्यामांसी, लौंग, अगर, केशर, मोथा, कस्तूरी, पीपरि, सुगन्धबाला और कपूर इनका चूर्णकरि॥२९॥ शाणभरले और शाणभर पूर्वोक्त कन्दर्पसुन्दररस और खांड़, आँवरा व विदारीकंद॥ ३०॥ इन सबको मिलाय कर्षभर घी रातिको खाय विपपीपुरुप दूधपियै सो पुरुप बहुत स्त्रीसंग भोगकरै तौ वीर्यहानि नहीं होतीहै॥ ३१॥ (क्षयीपर लोहरसायन) शुद्धपारा एकभाग व शुद्धगंधक एक भाग इन दोनों को घोटि कजली करि तीन भाग शुद्ध पोलादका चूर्ण कजली संग पहरभर घोटि॥ ३२॥ फिर घीकुआरके रसमें ३दिन घाममें बैठि घोटै तब घाम और घोटनेकी गरमीसे बहुत

स्पपात्रेनिधायच । मध्येधान्यकुशूलस्यंत्रिदिनंधारयेद्बु
धः ३४ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेतुक्षिप्त्वाघर्मेनिधायच । रसैः
कुठारच्छिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ३५ संशोष्यघर्मेक्वाथे
श्चभावयेत्त्रिकटोस्त्रिधा । वासामृताचित्रकाणांरसैर्भाव्यंक्र
मात्त्रिधा ३६ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजलैः ।
निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्वासंभृङ्गकुरण्टकैः ३७ पलाशकद
लीद्रावैर्बीजकस्यशृतेनच । नीलिकालम्बुपाद्रावैर्बब्बूलफ
लिकारसैः ३८ भावयेत्त्रित्रिवेलंच ततोनागबलारसैः । श
तावरीगोक्षुरकैः पातालगरुडीरसैः । त्रित्रिवेलंयथालाभं
भावयेदेभिरौषधैः ३९ ततःप्रातर्लिहेदाज्यमधुभ्यांकोलमा
त्रकम् । पलमात्रंबलाक्वाथंपिबेदस्यानुपानकम् ४० मास
त्रयाच्छीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम् । मन्दाग्निश्वास
कासौचपाण्डुताकफमारुतौ ४१ पिप्पलीमधुसंयुक्तंहन्या
देतन्नसंशयः । वातास्रम्मूत्रकृच्छ्रंचग्रहणींचोदरंतथा ४२

भुआं ल्हैगा ॥ ३३ ॥ जब कड़ाही गोला बांधि रेंडपत्र लपेट तांबे के पात्र में रख मुख मूंदि धानमें तीन दिन गाड़रक्खै ॥ ३४ ॥ फिर निकारि घैंच घाममें धरि सभुआके रसमें तीन भावनादे ॥ ३५ ॥ जब सूखिजाय तब सोंठि, मिर्च व पीपरि तीनोंके तीनक्वाथ करि तीन भावना दे फिर रूसा, गुर्च व चीता इन्हें एक एक के रसमें तीन तीन भावनादे ॥ ३६ ॥ जलसे निकारि लोहपात्रमें धरि त्रिफलामें घोलि मेवड़ी, अनारका छिलका, भसींड़, भंगरा, कटसरैया ॥ ३७ ॥ पलाश, केलाइक्षरस व विजयसार के रसका क्वाथ, नीलगुण्डीरस, बबूरकी छाल ॥ ३८ ॥ ये सब इन के रस वा क्वाथमें तीन तीन भावनादे फिर वरियारा, शतावरि, गुखुरू व छरहट इनके रसमें तीन तीन भावना देना जो मिलै ॥ ३९ ॥ प्रभात समय आठमाशे रस घृत शहद में मिलावै तिसपर वरियाराक्वाथ पलभर पिये यह अनुपान है ॥ ४० ॥ तीन महीना सेवनकरै श्वेत वार न होयँ और त्वचाकी झुरीपड़ना दूरहोय मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, पांडु, कफ और वायुविकार इनके अर्थे ॥ ४१ ॥ पीपरि, शहदयुक्त खाय तो वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी, जलोदर ॥ ४२ ॥

अण्डवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्त्वमधुप्लुतम् । बलवर्णकरंवृ
ष्यमायुष्यंपरमंस्मृतम्४३कूष्माण्डंतिलतैलंचमाषान्नंरा
जिकांतथा। मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः २४४॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेरसशोधनमारणं
द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥

तथा अंडवृद्धि न रहै गुर्चका सत और शहदयुक्त देवे तौ बल सुन्दरता व आयुको बढ़ाता है ॥ ४३ ॥ श्वेत कुम्हड़ा, तिल-तैल, उड़द, राई, मद्य और खटाई इन पदार्थों को लोह खानेवाला त्याग देवै ॥ २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेभाषाटीकायांद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरस्यवार्तिकभाषासमेतोद्वितीयखण्डस्समाप्तिमगादितिशिवम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

❀ शार्ङ्गधरसंहिता ❀

भाषाटीकासमेता ॥

(तृतीयखण्डः)

प्रथमाध्यायः ॥

स्नेहश्चतुर्विधः प्रोक्तोघृतंतैलंवसातथा । मज्जाचतंपिबेन्मर्त्यः किञ्चिदभ्युदितेरवौ १ स्थावरोजङ्गमश्चैवद्वियोनिः स्नेहउच्यते । तिलतैलंस्थावरेषुजङ्गमेषुघृतंवरम् । द्वाभ्यांत्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रिवृतोमहान् २ पिबेत्त्र्यहंचतुरहंपञ्चाहंषडहंतथा।सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्मीभवतिसेवितः ३ दोषकालाग्निवयसांबलंदृष्ट्वाप्रयोजयेत् । हीनांचमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ४ अमा

(अथोत्तरखण्डःप्रारभ्यते) प्रथम स्नेहपानक्रिया—स्नेह चारिभांतिका कहिये घृत १ तेल २ वसा कहे "मांसमें मिली चर्बी" ३ हाड़के भीतरकी मज्जा ये चारों स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावै ॥ १ ॥ वे स्नेह दोप्रकारके हैं स्थावर और जंगम स्थावरकहिये(अचर)जहां उपजै वहीं स्थिररहै ऐसे स्नेह अनेक प्रकार के हैं उनमेंसे तिलका तेल श्रेष्ठहै जंगमकहे(चर)जो श्वासासहितहैं तिनसे उत्पत्ति घृतादि अनेकनमें घृत श्रेष्ठहै (अथ स्नेह भेद) घी,तेल वैद्य तिसे यम कहै घी तेल वसा मिलावै तौ त्रिवृत्कहैं घी,तेल,वसा, मज्जासंयुक्तहो तौ महान् कहतेहैं ॥ २ ॥ (अथ स्नेहपानक्रम) घृत रोगीको तीनदिन पिलावै तेल चारदिन वसा पांच दिन मज्जा छहदिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने से आहार होजाता है औषध सदृश गुण नहीं करता है ॥ ३ ॥ (अथ स्नेहमात्रा प्रकार) वातादि दोष, ऋतुकाल, जठराग्नि, अवस्था और निर्बल, सबल व

त्रयातथाकालेमिथ्याहारविहारतः । स्नेहः करोतिशोफार्शी तन्द्रांनिद्रांविसंज्ञिताम् ५ अकालेचातिमात्रंवाअसात्म्यं यच्चभोजनम् । विषमाशनयद्रुक्तंमिथ्याहारः सकथ्यते ६ दीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यपलसम्मिता । मध्यमायत्रि कर्षास्याज्जघन्याचद्विकर्षिका ७ अथवास्नेहमात्राः स्युस्तिस्रोन्याः सर्वसम्मताः । अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यद्धि तुमध्यमा ८ जीर्यत्यल्पादिनार्द्धेचसाविज्ञेयासुखावहा । अल्पास्यादीपनीवृष्यास्वल्पदोषेचपूजिता ९ मध्यमास्नेहनीज्ञेयावृंहणीअमहारिणी । ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी १० केवलंपैत्तिकेसर्पिर्वातिकेलवणान्वितं

म् । पेयंबहुकफेवापिव्योषक्षारसमन्वितम् ११ रूक्षक्ष
तविषार्त्तानावातपित्तविकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनांच
सर्पिःपानंप्रशस्यते १२ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाः प्रवृद्धक
फमेदसः । पिबेयुस्तैलसात्म्यायेतैलंदीप्ताग्नयस्तुये १३
व्यायामकर्शिताः शुष्करेतोरक्तमहारुजः । महाग्निमारु
तप्राणावसायोग्यानराः स्मृताः १४ क्रूराशयाःक्लेशसह्या
वातार्तादीप्तवह्नयः । मज्जानंचपिबेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतो
हितम् १५ शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि ।
वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा १६ नस्याभ्य
ञ्जनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे । तैलंघृतंवायुञ्जीतदृष्ट्वादो
षबलाबलम् १७ घृतेकोष्णंजलंपेयंतैलेयूषः प्रशस्यते ।

घृत, कफरोगमें सोंठ, मिर्च, पीपरि व जवाखार पीसि घृतमें युक्तकरि प्यावै ॥ ११ ॥ (अपर रोगोंपरघृत) रूखाई, उरःक्षत, विषार्त, वात पित्त दोष, हीनबुद्धि और सुधि भूलना इनमें अवश्य घृत पिलाना श्रेष्ठ कहाहै ॥ १२ ॥ (तेल योग्य रोगी) कृमिविकार, वायुवृद्धि, शरीर कफ और मेदवृद्धि इनमें तेल पिलावै जो तेल उसे स्वाभाविक अहित न हो तो अग्नि दीप्त करेगा ॥ १३ ॥ (वसापान योग्य) जो मनुष्य दंड कसरत व कुश्तीआदि तथा परिश्रम करि दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण शुष्करक्त शरीरपीड़ा भस्मक आक्षेपकादि वायु पल्लिष्ठ इनमें वसा पिलाना योग्य है ॥ १४ ॥ (अस्थि मज्जा योग्य) दुष्ट कोष्ठको क्लेशित को वायुपीड़ित को प्रबलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्य है तथा घी, सर्व शरीर को, हितदायक है ॥ १५ ॥ (अथ स्नेहपान समय) शीत कालमें दिनको पिलावै उष्णकालमें रात को वात पित्त अधिकवाले को रातको वात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावै ॥ १६ ॥ (घृतादिक कर्म विशेषपर नामके कारण) मर्दनको कुल्लीको मस्तकमें दावने का कान आंखिमें डालने

१ विज्जारदशगर्भमज्जा मांससारास्थिसारयोरिति भागुरराव तापि ॥ मज्जोक्तामज्जयास इतिद्विरूपकाशावेति ॥ ।

२ आम, अग्नि, पच व मूत्र इनके आशय, यकृत् और प्लीहा तथा हृदय, उण्डुक और फुप्फुस य नव कोष्ठ कहाते हैं ॥

वसामज्ज्ञोःपिवेन्मण्डमनुपानंसुखावहम् १८ स्नेहद्विषः शिशून्वृद्धान्सुकुमारान्कृशानपि। तृष्णातुरानुष्णकाले सहभक्तेनपाययेत् १९ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूः स्वल्पतण्डुला। सुखोष्णासेव्यमानातु सद्यः स्नेहस्यकारिणी २० शर्कराचूर्णसम्मृष्टेदोहनस्थेघृतेतुगाम्। दुग्ध्वाक्षीरंपिवेदुष्णंसद्यःस्नेहनमुच्यते २१ मिथ्याहाराद्विहाराद्वायस्यस्नेहोनजीर्यति। विष्टभ्यवापिजीर्येतवारिणोष्णेनवामयेत् २२ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायांपिवेदुष्णोदकंनरः। तेनोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तंप्रतिरुचिस्तथा २३ स्नेहेनपैत्तिकस्याग्निर्यदातीक्ष्णतरीकृतः। तदास्योदीरयेत्तृष्णांविषमांतस्यपाययेत्। शीतंजलंवामयेच्चपिपासातेनशाम्य

को घृत वा तेल वातादि दोष सबल निर्बल विचारि वैद्य युक्तकरै ॥ १७ ॥ (अथ स्नेहपानानुपान) घृत उष्णोदकके संगपिये तेल यूषसंयुक्त चरबी हाड़ मज्जा मांड युक्त पिये तौ सुखदहोय यूप मांड विधि मध्यखण्डमें देखिकरना ॥ १८ ॥ स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह न भावै तिसे अन्न के संग देना और बालक, बूढ़ा, सुकुमार, दुर्बल व तृष्णायुक्त ऐसे मनुष्यको भातके साथ गरमी में देना ॥ १९ ॥ (स्नेह यवागू) तिल भलेप्रकारे कूटि थोड़ाचावलका चूर्ण डारि थोड़ाघृत और जल देकर पतला पकायले तब गुनगुना खाय तौ तुरन्त धातु को उत्पन्न करताहुआ शरीर को चिकना करता है ॥ २० ॥ (अथ धारोष्णे दुग्धविधिः) दोहनी के भीतर मिश्री पीसि घृत मिलाय लिप्तकरै तिस में दुग्ध दुहाय तुरन्त गर्म गर्म पिये तौ तुरन्त धातु उत्पन्न होजावे ॥ २१ ॥ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफकृत पदार्थ खानेसे स्नेह न पचाहो वा मलारोध किया हो तौ उष्ण जलसे वमन करावै तौ अजीर्णका दोष मिटता है ॥ २२ ॥ जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तौ तप्तजल प्यावै जब शुद्धडकार आवै व अन्नपर इच्छाकरै तब जानै कि अजीर्ण शान्त भया ॥ २३ ॥ (स्नेह जन्य पित्तकोप यत्न) पित्तप्रकृतिवाले को स्नेहपान से गरमी होती है प्यास विशेष लगती है उसे ठण्ढाजल पिला वमन करावै तौ प्यासकी ऊष्मा (गरमी)

यामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये ५ येषांनस्यंविधातव्यंव स्तिश्चापिहिदेहिनाम् । शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वंस्वेद्या श्चतेमताः ६ पश्चात्स्वेद्यागतेशल्येमूढगर्भगदेतथा । स्वे द्याःपूर्वंत्रयःप्लीहभगन्दर्यर्शसांतथा ७ अश्मर्याश्चातुरो जन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणा । सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णाहारे चकारयेत् ८ स्वेदाद्धातुस्थितादोषाः स्नेहक्लिन्नस्यदेहि नः । द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठान्तर्गतायान्तिविरेकताम् ९ स्विद्य मानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य शीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णीदुर्बलोमेहीक्षतक्षीणः पिपासितः । अतीसारीरक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ११

कराय बोझ उठवाय ऐसी युक्तियों से कफ मेदयुक्त वायुरोग दूर होताहै ॥ ५ ॥ और नासेयोग्य बस्तियोग्य रेचनयोग्यको प्रथम स्वेद निकलाय उपाय करै ॥ ६ ॥ जिस स्त्रीके पेटके भीतर गर्भका शालहो वा मूढगर्भहो इन दोका गर्भ जब बाहर होजाय तब स्वेदकरै जिस मनुष्यकी प्लीह भगंदर अर्श ॥ ७ ॥ और अश्मरी इन चारों रोगासों को प्रथम स्वेदन करि शस्त्र उपाय करना उचितहै स्वेदकर्म करने का समय स्थान आहारपचने के अनन्तर जिस स्थान में पवनका प्रवेश न होसकै तहां बैठायके स्वेदकर्मकरै ॥ ८ ॥ "स्वेदकिये पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठावै तौ वातादिक दोष और रसादि सप्तधातु के विकार मलको पतला करिके वसके साथ निकलजाते हैं यह अन्य ग्रंथका मतहै" और शार्ङ्गधर मत (राय) से स्वेदी मनुष्य के पसीना निकलतेही रसादि सप्तधातुमें स्थित वातादि विकार मलको पतलाकरि निकलजाते हैं ॥ ९ ॥ (स्वेदीके चित्त स्वस्थकरनेका यत्न) जिसका स्वेदकरि पसीना निकालनेसे मल पतलाहो चित्त सावधानहो तौ छाती पर चंदन लगाने से सावधानहोगा जिसका शरीर तैलमें भिजोया गयाहै और मल पतला गिरताहै उसकी आंखोंपर कदली वा केवड़ाके जलमें वस्त्र भिजोयके धरने से चित्त स्वस्थ होगा ॥ १० ॥ स्वेद अयोग्य अजीर्णी दुर्बल प्रमेही उरःक्षतपीडित प्यासातुर अतीसारयुक्त रक्तपित्त रोगी पांडुरोगी उदररोगी ॥ ११ ॥

१ नासिका में औषध डालने के प्रयोगको नस्यकर्म कहते हैं ॥

२ गुदामें पिचकारी लगाने के कर्मको बस्ति कहते हैं ॥

मदार्तोगर्भिणीचैवनहिस्वेद्यंविजानता। एतानपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ मृदुस्वेदंप्रयुञ्जीततथाहृन्मुष्कदृष्टिषु। अतिस्वेदात्सन्धिपीडादाहतृष्णाक्लमोभ्रमः १३ पित्तासृक्पिटकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत्। तेषुतापाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिः १४ कपालकन्दुकांगारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते। ऊष्मस्वेदःप्रयोक्तव्योलोहपिण्डेष्टिकादिभिः १५ प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकायेवस्त्रावचेष्टिते। अथवातविनाशार्हद्रव्यक्काथरसादिभिः १६ उष्णेर्घटंपूरयित्वापार्श्वेछिद्रंविधायच। विमृद्यास्यंत्रिखण्डांचधातुजांकाष्ठवंशजाम् १७ षडङ्गुलास्यांगोपुच्छांनाडींयुञ्ज्याद्धिहस्तिकाम्। सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम् १८ हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्वेदयेद्वातरोगिणम्। पुरुषा

मदार्त, गर्भिणी ऐसे रोगी को स्वेदन न करै जो अवश्य करनाहो तो सूक्ष्म स्वेदले ॥ १२ ॥ (अल्पस्वेदनविधि) हृदय अंडवृद्धि नेत्ररोग इनरोगों में थोड़ा स्वेदले अतिस्वेदोपद्रव सन्धिपीडा, दाह, तृष्णा, ग्लानि, भ्रम ॥ १३ ॥ रक्त पित्तसे फुंसी इनके शमन करने के लिये शीतोपचारकरै शान्तिहोय (अथ तापस्वेद) ताप, वालू, कपड़ा ॥ १४ ॥ हाथ कपड़े की गेंद बनायके और अँगार ये छः भाँतिके तापस्वेद कहे जैसा जहां योग्यहो तैसाकरै (अथोष्मविधिः) पत्थरादि तप्तकरि सेंकने को ऊष्मकहे लोहेका गोला वा ईंट या पत्थर तपाय ॥ १५ ॥ उसपर खट्टा पदार्थ थोड़ा छिड़क सुखोष्ण भये लेके कंबल उढ़ाय स्वेदनकरै दूसरा वातहारी कहे दशमूलादि क्वाथ वा रस ॥ १६ ॥ उष्णकरि घड़े में भरि मुख मूंदि बगल छेदि धातु की वा बांस की टो हाथ लम्बी नल बनावै गोपूंछ की सूरति तिसके खण्ड तीनकरै एक छः अंगुल बाकीके दो समान पतली ओरसे उस छः अंगुलके टुकड़े का मोटा मुख घड़े के छेद में प्रवेशकर उस में मध्यखण्ड ऊंचा करिजोरै ॥ १७ । १८ ॥ फिर तीसराखण्ड सीधालगाय गजशुण्ड सा करि तीनों सन्धि मूंदि तब रोगी को घी व तेल लगाय व लेप करि कम्बल उढ़ाय सब ओर से ढक निःसन्धि

यामृमात्रीवाभूमिमुत्कीर्यखादिरैः १९ काष्ठैर्दग्ध्वातथाभ्यु
दयक्षीरधान्याम्लवारिभिः । वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वे
दयेन्नरम् २० एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानःस्वेदमाचरे
त् । अथोपनाहस्वेदंचकुर्याद्वातहरौषधीः २१ प्रदिह्यदेहं
वातार्तंक्षीरमांसरसान्वितैः । अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैः
स्नेहसंयुतैः २२ ततोग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच । द
धिसौवीरकक्षारैर्वीरतर्वादिनातथा २३ कुलित्थमाषगोधू
मैरतसीतिलसर्षपैः । शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजी
रकैः २४ एरण्डमूलबीजैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः । मिशि
कृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः २५ प्रसारण्यश्वगन्धा

करि तब उस गजपुटिड को मुख कम्बलके भीतरःखोलि स्वेदनकरे तो पसीना निकसै (तृतीय) रोगा के शरीर से बीताभर अधिक लम्बा चौड़ा गढाखोदि द्वादशांगुल गहिरा खैरकी लकड़ी भरि ॥ १९ ॥ फूंकि झारझारि गढे में दूध व कांजी वा मट्ठा छिड़क वायुहारी रण्डपत्र बिछाय रोगी को सुलायँ भारी वस्त्र उढावै तो पसीना निकलै ॥ २० ॥ (चौथा) पूर्वप्रकार गढा तपाय उर्द आदि पानीले छिड़क रण्ड बड़पातादिसे शय्या रचि पूर्ववत् स्वेदनकरै ॥ २१ ॥ (अथ ग्रन्थान्तरे) वातहारी द्रव्य घड़े में धरि जलभरि मुँहबन्दकरि चारगड़ी आंच दे उतारिलेय रोगीको उष्णतेल मल खरहरीखाटपर सुलाय कपड़ा उढाय नीचे घड़ाधरि नितम्ब की ओर घटमुखछोर वाफदे पसीना पोंछि पोंछि ले इस उष्ण संज्ञक स्वेदसे रसादिक सातों धातु के वातादिकें दोष पसीने साथ सब निकल जाते हैं ॥ २२ ॥ (अथोपनाहक्रिया) दशमूलादि वातहारी द्रव्यों का चूर्णकर उसमें दूध व हरिणादिकों का मांस मिलाय कुछ गर्म कर वायुपीड़ित जो अंगहो उसमें गात्रा लेपकर वस्त्र ओढाय पसीना निकाले इस क्रिया को उपनाह कहते हैं (अथोपनाह महाशाल्वण क्रिया अर्थात् पोटलिकासिक्तविधि) ग्रामीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य, गोदधि, खञ्जी, जवाखार, खारालोन, वीरतर्वादि गण वा गुलुरुमूल ॥ २३ ॥ कुलथी, उड़द, गेहूं, अलसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, निरगुण्डी, मगरैला ॥ २४ ॥ रेंडी, रासन, मूल, सहिजना, सोवाबीज, पीपरि, नागरोई पांचो

भ्यांवलाभिर्द्दशमूलकैः । गुडूचीवानरीबीजैर्यथालाभंसमा
हृतैः २६ स्विन्नैश्चवस्त्रसम्बद्धैःसदासंस्वेदयेन्नरम् । महाशा
ल्वणसंज्ञोयंयोगः सर्वानिलार्त्तिहृत् २७ द्रवस्वेदस्तुवात
घ्नंद्रव्यक्काथेनपूरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहये
त् २८ सौवर्णेराजतेवापिताम्रआयसदारुजे । कोष्ठकं
तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषट्त्रिंशदङ्गुलम् २९ आयामेनतदेव
स्याच्चतुष्कसृणितथा । नाभेःषडङ्गुलंयावन्मग्नःक्काथस्य
धारया ३० कोष्ठकेस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ।
एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम् । एकान्तरेद्व्यन्तरेवा
स्नेहोयुक्तोवगाहने ३१ शरीरेबलमाधत्तेयुक्तस्नेहोवगाह
ने । शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ३२ जलसिक्त
स्यवर्द्धन्तेयथामूलेङ्कुरास्तरोः । तथाधातुविवृद्धिस्तुस्नेह
सिक्तस्यजायते ३३ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाश

लोन ॥ २५ ॥ अनार, कटनरैया, असगन्ध, बरियारा, दशमूल, गुर्च और किमाचविया इनमें जितने मिलैं ॥ २६ ॥ उन्हें जलमें पीसि तपाय पोटली बाँधि सेंकै ठण्ढी परे गरम तवेपर तपाय तपाय सेंकै इस शाल्वण-प्रयोग से सब वायु पीड़ा दूर होती है ॥ २७ ॥ (अथ द्रवस्वेदविधि) दशमूलादि वायुहर्ता द्रव्यों का क्काथ बनाय रोगी कड़ाह वा चौकोन कोठर ॥ २८ ॥ सोने, चांदी, तांबा, लोहा वा काठ छत्तीस अंगुल ऊंचा बनाय बैठाय ॥ २९ ॥ वह काढ़ाले रोगी के ऊपर पतली धार से नावै नाभिके छः अंगुल ऊंचे आवै तब हाथ को हटावै इसीप्रकार एक वा दो दिन टार टार करै इसी भांति तेल, दूध, घृत और द्रवस्वेदन भी करै फिर पवन को बचावै ऐसे दो तीनदिन घृत वा तेल लगाय करै सब नसें और रोमों का मुख खुलि जाता है जो पवन प्रवेश करने पावे तो उनके मुख से स्नेहादि पदार्थ प्रवेश के वायु को निकाल देते हैं शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं ॥ ३० । ३१ । ३२ ॥ दृष्टान्त जैसे जड़में जल सींचनेसे वृक्ष बढ़कर पुष्टहोजाता है तैसेही द्रवसंज्ञक स्वेद से मनुष्य का रोग नाशहोता व उमर बढ़ती है तैसेही रसादि सप्तधातुओं में वातदोष बढ़ने से

नः।शीतशूलाद्युपरमेस्तम्भगौरवविग्रहे।दीप्तेग्नौमार्दवेजा तेस्वेदनाद्विरतिर्मता ३४ सम्यक्स्विन्नंविमृदितंस्नानमु ष्णाम्बुभिश्शनैः। भोजयेच्चानभिष्यन्दिव्यायामंचनकार येत् ३५ इति श्रीशार्ङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयोऽध्यायः २॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्। वमनंरेच नंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् १ बलवन्तंकफव्याप्तंहृल्लासा दिनिपीडितम्। तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत् २ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देग्नौश्लीपदेर्बुदे। हृद्रोगकुष्ठ वीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुच ३ विदारिकापचीकासश्वासपी नसवृद्धिषु। अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारके ४ नासाताल्वोष्ठपाकेषुकर्णस्रावेद्विजिह्वके। गलशुण्ड्याम तीसारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ५ मेदोगदेरुचौचैववमनंका रयेद्भिषक्। नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः। ना

पेट वा मलमार्ग में भरभराहटहो तो तेलस्वेदकरै ॥ ३३ ॥ इससेपरे वातनाशक और यत्न नहीं जवताई स्वेदकरै कि वायुशूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोय अग्निदीप्त देह कोमल हलकी हो तब न करै ॥ ३४ ॥ स्वेदकरे पर तेल लगाय सुखोष्ण जलसे न्हाय कफकारी भोजन करै ॥ ३५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शरद्, वसन्त और प्रावृट्काल के आदि चतुरवैद्य वमन (छर्दि) व रिरेचन (दस्त) को करावै क्योंकि अश्विनीकुमार संहितादि सब ग्रन्थकार ऐसेही कहते आये हैं इसमें मनुष्य की प्रकृति शुद्ध रहती है ॥ १ ॥ (वमन योग्य) जिसे वमन करने की सामर्थ्यहो कफ व्याप्तहो मुखसे लार गिरती हो जिसे वमन हितहो धीरचित्तहो उसे वमन करावै ॥ २ ॥ विषरोग, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, फीलपांव, अर्बुद, हृद्रोग, कुष्ठ, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम॥ ३ ॥ विदारी, अपची, कास, श्वास, पीनस, अण्डवृद्धि, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसार ॥ ४ ॥ नासा, ओष्ठ, तालुपाक, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलगण्ड, अतीसार, पित्त, श्लेष्म ॥ ५ ॥ मेद् और अरुचि इन रोगोंमें वैद्य वमन करावै (वमन अयोग्य) तिमिरी, गुल्मरोगी,

तिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ६ मदार्त्तोबालको रूक्षःक्षुधितश्चनिरूहितः । उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुश्छर्दिः केवलानिली ७ पाण्डुरोगीकृमिव्याप्तः पठनात्स्वरघातकः । एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः ८ कफव्याप्ताश्चतेवाम्यामधुकाथरयपानतः । सुकुमारंकृशंवालंवृद्धंभीरुंनवामयेत् ९ पीत्वायवागूमाकण्ठंक्षीरतक्रदधीनिच । असात्म्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लिश्यदेहिनः १० स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्त्तते । वमनेषुचसर्वेषुसैन्धवंमधुनाहितम् ११ बीभत्संवमनंदेयंविपरीतंविरेचनम् । क्वाथ्यद्रव्यस्यकुडवं श्रपयित्वाजलाढके १२ अर्द्धभागावशिष्टंचवमनेष्ववचारयेत् । क्वाथपाने नवप्रस्था ज्येष्ठामात्राप्रकीर्त्तिता १३ मध्यमाषण्मि

उदररोगी, कृश (दुर्बल), अतिवृद्ध, गर्भिणी, मोटा, घावसे व्याकुल ॥ ६ ॥ मदपीडित, बालक, रूक्षदेही, भूखा, निरूहण बस्ति लिया, उदावर्ती, ऊर्ध्वरक्ती, छर्दिरोगी, केवल वातार्त्त ॥ ७ ॥ पाण्डुरोगी, कृमी और बहुवाक्य श्रमसे स्वरभङ्गी ऐसे रोगियों को वमन करावै और अजीर्णयुक्त व विषपीडित ॥ ८ ॥ तथा कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुलेठी व महुआकी छालका क्वाथ पिलाय वमन करावै और सुकुमार, दुबला, बालक, बूढा और भयभीत इनको कभी वमन न करावै ॥ ९ ॥ (वमन के पूर्व उपचार) जिसे वमन करानाहो उसे पहिले पेटभर यवागू, दूध, मट्ठा, दही, मलमादल पदार्थ और कफकारी पदार्थ इनके खाने से दोष ऊपर उभरआते है ॥ १० ॥ तब वमनकी औषध देय तौ वमन अच्छे प्रकार होताहै और स्नेह पानकियेको अच्छेप्रकार होताहै वमन योग्य पदार्थ सब वमन प्रयोग में सैंधव वा शहद युक्त औषध हितकारक होती है ॥ ११ ॥ जो तूतिया वा तांबा घृत युक्त देते हैं वह बीभत्स वमनहै जिसे बीभत्स वमन दिये पर रेचनदेना हो तौ घृत न खानेदेय वमन औषध यदि क्वाथका बनाना क्वाथकी द्रव्य कुडव भरि कूटिके आढकभर जलमें औटाय ॥ १२ ॥ आधा जलजाय तब उतारिलेय फिर वमन करनेवाले मनुष्यको पिलावै (वमन क्वाथ पानकरनेका प्रमाण) वमन क्रियाका क्वाथ नवप्रस्थ पिलावै सो ज्येष्ठमात्राहै ॥ १३ ॥

ताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी। कल्कचूर्णावलेहानांत्रि
पलंश्रेष्ठमात्रया १४ मध्यमांद्विपलांविद्यात्कनिष्ठांपलस
म्मिताम्।वमनेचापिवेगास्स्युरष्टौपित्तान्तमुत्तमाः १५ षड्
वेगामध्यमावेगाश्चत्वारस्त्ववरामताः। वमनेचविरेकेच
तथाशोणितमोक्षणे १६ सार्द्धत्रयंदशपलंप्रस्थमाहुर्मनी
षिणः। कफंकटुकतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत्।सस्वा
दुलवणाम्लोष्णैस्संसृष्टंवायुनाकफम्१७ कृष्णाराठफलैः
सिन्धुकफेकोष्णजलैःपिबेत्। पटोलवासानिम्बैश्चपित्तेशी
तजलंपिबेत् १८ सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबे
त्। अजीर्णेकोष्णपानीयंसिन्धुपीत्वावमेत्सुधीः १९ वम

ढ़ःप्रस्थ पिलावै सो मध्यममात्रा है तीन प्रस्थ पिलावै सो छोटी मात्राहै वमन कार्य में कल्कादिक औषध का प्रमाण वमन में कल्क चूर्ण अवलेह तीन तीन पल देना सो बड़ी मात्राहै ॥ १४ ॥ दो दो पलकी मध्यममात्रा है एक एक पलकी लघुमात्रा जानना वमन कार्य उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ तीन भांतिका होताहै (वेगका प्रमाण) जिस मनुष्य को वमन की औषध देय उसके सात बारताईं सब दोष गिरें आठवींबार पित्तगिरै तौ उत्तम वेगहै ॥ १५ ॥ पांचवार में सब दोषगिरि छठींवार पित्त गिरै वह मध्यमवेगहै तीनवार में सब दोषगिरि चौथी बार पित्त गिरै वह कनिष्ठ वेगहै वमनादिक में प्रस्थप्रमाण वमन और रेचन तथा सिरारक्त-मोक्षण अर्थात् फस्तलेने में ॥ १६ ॥ प्रस्थ साढ़ेतेरह पलका जानना दोषविशेष में वमनोपचार द्रव्य कटु तीक्ष्ण उस पदार्थ से वमनकराने से कफार्त्ती का कफ नाश होताहै मधुर व शीतल पदार्थकरि वमनकरानेसे पित्त नाश होताहै मधुर खार खटाई उष्ण पदार्थ से कफयुक्त वात नाश होताहै सोंठ, मिर्च व पीपरि ये तीक्ष्णहैं गुनका मुनक्कादि मधुर हैं ॥ १७ ॥ (कफमें वमनविधि) कफप्रकृति को पीपरि, मैनफल व सेंधव चूर्णकरि उष्णजल में पिलाने से बारबार कफ गिरैगा पित्तप्रकृति को परवरनीमपत्र चूर्णकरि ठण्ढे पानी में पिलानेसे बार बार पित्त गिरैगा ॥ १८ ॥ और कफ, वातपीड़ित को मैनफल दूधमें पिलाने से कफ वात दूर होताहै और सेंधव उष्णजल में पिलाने से अजीर्ण मिटता है ॥ १९ ॥

नपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितम्। कण्ठमेरण्डनालेन स्पृशन्तंवामयेद्भिषक् २० ललाटंवमतःपुंसःपार्श्वेद्वौचप्रबोधयेत्। प्रसेकोहृद्ग्रहःकोठःकण्डूदुश्छर्दिताद्भवेत् २१ अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारौविसंज्ञता। जिह्वानिःसर्पणंचाक्ष्णोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः २२ रक्तच्छर्दिःष्ठीवनंचकण्ठेपीडाचजायते। वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्याद्विरेचनम्। वदनान्तःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः २३ स्निग्धाम्ललवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः। फलान्यम्लानिखादेयुस्तस्यचान्येग्रतोनराः २४ निःसृतांतुतिलद्राक्षाकल्कलिप्त्वाप्रवेशयेत्। व्यावृत्तेक्ष्णिघृताभ्यक्तेपीडयेच्चशनैःशनैः २५ हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यंचश्लेष्मवातहृत्।

वमन करने की रीति वमन औषध पीके दोनों घुटने तोरिके बैठे और रंड पत्र की डण्डी शुद्धकरि गरे में प्रवेश करै तौ वमन होगा और वमन करनेवाले का मस्तक और दोनों ओरकी पसुरी सहराताजाय इसी रीतिसे वैद्यलोग वमन कराते हैं ॥ २० ॥ (वमन कोपलक्षण) जो वमन अच्छी तरह न होय तौ रोगीके मुखसे लार बहै हृदय में पीड़ारहै कोठे में खुजली ये उपद्रव होतेहैं ॥ २१ ॥ (अति वमन उपद्रव) तृष्णा अधिक, हिचकी, डकार, अज्ञानता, जीभ निकलना, नेत्र चंचलता, संभ्रमचित्त, ठोढ़ी जकड़ना ॥ २२ ॥ मुख से रुधिर गिरना, बारबार थूकना और कण्ठपीड़ा ये अतिवमन के लक्षण हैं ॥ (अतिवान्त चिकित्सा) जो वमन अधिकहो तौ उसे मृदुरेचनकरै ॥२३॥ (वमनमें जिह्वा ऐंठनेपर चिकित्सा) अति उबकाई,अति जीभ ऐंठजातीहै उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना वा खट्टा वा सलोना सो घीयुक्त को खवाय उसके मुखमें रखदेना वा दूध, दही व घृत इनमें से कोई में सानि मुखमें राखै और उसके सम्मुख अन्य मनुष्य को खट्टे फलादि खिलावै तो उसे देखने से वामनी की जीभमें पानी छूटै तौ जीभ कोमल होजाती है औरप्रकृति स्वस्थ होती है ॥ २४ ॥ (अतिवान्त से जीभ बाहर निकल आवै उसका यत्न) जो उबकाते उबकाते जीभ निकल आवै तौ तिल व दाख पीसि जीभपर लेपकर बैठायदेय और जो आखें चंचल भईहों तौ आंखपर घी लगाय धीरे धीरे

रक्तपित्तविधानेनरक्तच्छर्दिमुपाचरेत् २६ धात्रीरसाञ्जनो शीरलाजाचन्दनवारिभिः । मन्थंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्र शर्करम् । शाम्यन्त्यनेनतृष्णाद्याःपीडाश्छर्दिसमुद्भवाः २७हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिर्दीप्ताग्निंचैवलाघवम् । कफपित्त विनाशश्चसम्यग्वान्तस्यचेष्टितम् २८ ततोपराह्णेदीप्ता ग्निंमुद्गषष्टिकशालिभिः । हृद्यैश्चजाङ्गलरसैःकृत्वायूषंच भोजयेत् २९ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यंकण्डूश्चग्रहणीविषम् । सुवान्तस्यनपीडाचैस्यन्त्येतेकदाचन ३० अजीर्णशीत पानीयंव्यायामंमैथुनंतथा । स्नेहाभ्यङ्गंप्रकोपंचदिनैकंव र्जयेत्सुधीः ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

स्निग्धस्विन्नस्यवान्तस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् । श्र

सहराय देय ॥ २५ ॥ (वमन में हनुस्तम्भ उपचार) जो वमन के अन्त में ठोढ़ी जकड़ जाय तौ सेंकने व कफवातहारी द्रव्यों के सूंघने से खुलजाती है (वमन के अन्तमें रक्तगिरने का यत्न) जो वमांत में रुधिर आनेलगे तौ रक्तपित्तपद्धमें कहा रक्तपित्तोपचार करै ॥ २६ ॥ (अति वमन से प्यास पड़ने का यत्न) जो तृष्णा बढ़ै आंवले का रस, रसौत, खस, धानकी खीलें व लालचन्दन ये पांचों पल भर चारपल ८६ पानीमें मथिके घी, शहद संयुक्त मिश्री डालिकै पिलावै तौ शांति होय (रसांजन करे रसोत बनाने की विधि) दारुहल्दीका काथ करि तिसके समान बकरी का दूध मिलाय औटि गाढ़ा करि सुखाय ले उसे रसांजन कहते हैं ॥ २७ ॥ (वमन उत्तम होने का लक्षण) जो वमन अच्छा हो तौ हृदय, कण्ठ व मस्तक के कफादिकका दोष न रहै अग्नि दीप्तहो अंग हलका हो कफपित्तजनित विकार नाश होयँ ॥ २८ ॥ (वमनपर पथ्य) मूंग साठी के चावलोंका यूषदेना वा हिरन का मास अथवै खसी मासका यूष दे ॥ २९ ॥ सम्यक् वमन भये तंद्रा, निद्रा, मुखमें दुर्गंध, खाज, संग्रहणी व विषदोष ये रोग नहीं रहते न होते हैं ॥ ३० ॥ (वमन पर संयम) भारी व गरिष्ठ पदार्थ, ठंढा जल, परिश्रम, मैथुन, तेलमर्दन व क्रोध जिसदिन वमन करे तौ इनसे बचारहै ॥ ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

(वमनान्तमें विरेचन) प्रथम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्मकरि स्नेह कर्म करै

वान्तरेयस्त्वधःस्रस्तोग्रहणींछादयेत्कफः १ मन्दाग्निगौरवंकुर्य्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम्। अथवापाचनैरामंबलासंचविपाच्चयेत् २ स्निग्धस्यस्नेहनैःकार्य्यंस्वेदैःस्विन्नस्यरेचनम्। शरदृतौवसन्तेचदेहशुद्धौविरेचयेत्। अन्यदात्ययिकेकालेशोधनंशीलयेद्बुधः ३ पित्तेविरेचनंदद्यादामोद्भूतेगदेतथा॥शरीरजानांदोषाणांक्रमेणपरमौषधम्॥वस्तिर्विरेकोवमनंतथातैलघृतंमधु ४ दोषाःकदाचित्कुप्यन्ति जितालङ्घनपाचनैः। येतुसंशोधनैःशुद्धानतेषांपुनरुद्भवः ५ बालवृद्धावतिस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः। श्रान्तस्तृषार्त्तःस्थूलश्चगर्भिणीचनवज्वरी ६ नवप्रसूतानारी

फिर वमन करै तब रेचनकरै सो रेचन उत्तम प्रकार है और प्रथम कर्महीन रेचन करै,कफ नीचेजाय ग्रहणी कहे पित्तधरा अग्निधरा ढाइलेताहै ॥ १ ॥ इसकारण से अग्निमंद, देहभारी, देह जकडना, प्रवाहिका कहे दारुण अतीसार ये रोग उत्पन्न होते हैं जो कर्महीन रेचन शीघ्रदियाचाहै तौ नीचे गिरनेवाला कफ और आव तिसे सूखे रेंडकीजड़ आदि सेवन कराय पचाय रेचनकरै और भेड, चरक, सुश्रुत व वाग्भट इनका मत यहहै कि प्रथम वमन कराय छःदिन विताय तीन दिन स्नेहपान कराय फिर तीन स्वेद साधित तीन वाद सोरहें दिनमें लङ्घन देकर रेचनकरावै ॥ २ ॥ (रेचनका दूसरा प्रकार) जो घृत दूधकरि स्निग्ध मनुष्य वा मट्टीके गोला व ईंट करि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन और वमन करावै क्वार, कातिक, चैत व वैशाखमें रेचन कर्म किये देह शुद्ध होजाती है और जो वैद्य रोगीका रोग विचार तिनके निवारणार्थ अनुक्तकालमें भी विरेचन करै ॥ ३ ॥ विशेष रेचन योग्य पित्त विकार, आमवायु, उदररोग, आनाह, वद्धकोष्ठ, वद्ध इनरोगों को विशेष शुद्धकरि कराय परमौषध क्रमसे जानना वस्तिकर्म, रेचनकर्म, वमनकर्म, तेल, घृत, शहद यथारोग यत्नकरै ॥ ४ ॥ (दोष निवारण में उत्कर्ष रेचन) वातादि दोष लङ्घन पाचनकरि दवजाते हैं परन्तु थोड़े कुपथ किये ते उभर आते हैं और जो रेचनकरि वातादि दोषों से शुद्ध किये शरीर वेग नहीं उभरते ॥ ५ ॥ (रेचन के अयोग्य) बालक, वृद्ध, अतिस्नेह पानपर उरःक्षत, क्षीणमनुष्य, भययुक्त, श्रमित, तृषित, स्थूलशरीर,

चमन्दाग्निश्चमदात्ययी ॥ शल्यार्दितश्चरूक्षश्चनविरेच्याविजानता ७ जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगन्दरी । अर्शःपाण्डूदरोग्रन्थीहृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनिरोगःप्रमेहार्त्तागुल्मप्लीहव्रणार्दिताः । विद्रधिच्छर्दिविस्फोटविसूचीकुष्ठसंयुता ९ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेढ्रामयान्विताः । प्लीहशोफाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः । शूलिनोमूत्रघातार्त्ताविरेकार्हानरामताः १० बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः । बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ११ मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा । क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः १२ मृदुर्द्राक्षापयश्चञ्चुतैलैरपिविरिच्यते । मध्यमस्त्रिवृतातिक्तारराजवृक्षैर्विरिच्यते । क्रूरःस्नुक्पयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः १३

गर्भिणी, नवज्वरी ॥ ६ ॥ तुरन्त पुत्रजनिता स्त्री, मन्दाग्नि, अतिमदपीड़ित, शल्यवेधित, क्षतयुक्त और रूक्ष कहे निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना ॥ ७ ॥ (रेचनयोग्य) जीर्णज्वरी, विषपीड़ित, वातरक्त व भगंदर रोगी, अर्शरोगी, पांडुरोगी, उदररोगी, ग्रन्थिरोगी, हृदयरोगी, अरुचिसे पीड़ित ॥ ८ ॥ योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा, व्रणी, विद्रधि, छर्दि, विस्फोटक, विसूची, कुष्ठ ॥ ९ ॥ कानरोग, नाकरोग, मस्तकरोग, मुखरोग, गुदारोग, गरमी, यकृत्, सूजन, नेत्ररोग, कृमिरोग, सोमलादि रोग शूल और मूत्राघात इन रोगन करि पीड़ित मनुष्य को रेचन देवै ॥ १० ॥ (रेचन तीन प्रकार) कोमल मध्यम व कराल कोष्ठवेधक जिस मनुष्यकी कोमल प्रकृतिहो उसका कोठा मृदुहै जिसकी केवल प्रकृतिहै, उसका कोठा मध्यम है जिसकी केवल वात प्रकृति हो उसका कठोर कोठा है सो कहे कोठेवाला रेचन विषम में दुःखपाताहै उसे रेचन करने से मलस्राव शीघ्र नहीं होताहै ॥ ११ ॥ कोमल कोठा समुझि मृदुरेचन करावै मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्र विरेचन करावै मृदु मध्यमादिककोष्ठी को मृदु मध्यमादि औषधदे कोमलकोष्ठी को दाख, दूध व रेंडी का तेलयुक्त करि रेचन दे मध्यमकोष्ठी को निशोथ, कुटकी व अमलतास इनका रेचन दे क्रूरकोष्ठी को सेंहुड़ का दूध वा जमालगोटा इनका रेचन दे ॥ १२ । १३ ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःकफान्तिका । वेगैर्विंशतिभिर्मध्या हीनोक्तादशवेगिका १४ द्विफलंश्रेष्ठमाख्यातं मध्यमंचपलंभवेत् । पलार्द्धंचकषायाणां कनीयस्तु विरेचनम् १५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्षमध्वाज्यलेहतः । कर्षद्वयंपलंवापि वयोरोगाद्यपेक्षया १६ पित्तोत्तरेत्रिवृच्चूर्णं द्राक्षाक्वाथादिभिःपिबेत् । त्रिफलाक्वाथगोमूत्रैःपिबेद्व्योषंकफार्दितः १७ त्रिवृत्सैन्धवशुण्ठीनां चूर्णमम्लैःपिबेन्नरः । वातार्दितोविरेकायजाङ्गलानांरसेनवा १८ एरण्डतैलंत्रिफलाक्वाथेनद्विगुणेनवा । युक्तम्पीत्वा पयोभिर्वा नचिरेणविरिच्यते १९ त्रिवृताकौटजंबीजं पिप्पलीविश्वभेजम् । मृद्वीकायारसक्षौद्रं वर्षाकालेविरेचनम् २० त्रिवृद्दुरालभामुस्ताशर्करादिव्यचन्दनम्।

उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अन्त में कफ गिरे ऐसे तीस वेग आवैं सो उत्तम मात्रा है वेगकहे दस्त जिसमें बीस वेग तक अन्तमें कफ गिरे वह मध्यम है जिसमें दश वेग तक कफ गिरे वह हीनरेचन मात्राहै ॥ १४ ॥ (रेचन क्वाथादि प्रमाण) रेचन में क्वाथ की मात्रा दो पल उत्तम एक मध्यम आधापल कनिष्ठमात्रा है ॥ १५ ॥ (रेचन कल्कादिक प्रमाण) कल्क मोदक चूर्ण तीनों का कर्ष कर्ष प्रमाणहै और शहद घृतयुक्त रेचन देय वा रोगीका रोग, अवस्था व बलको देखि दो कर्ष से पलभर तक यथोचित मात्रा देना ॥ १६ ॥ (रेचनमें द्रव्यप्रकार) पित्तमें निशोथ चूर्ण दाख क्वाथमें गुलकन्द गुलाब फूल बड़ी सौंफके काढ़े में देय कफ होनमें सोंठ, मिर्च पीपरि चूर्ण व त्रिफला क्वाथमें पियावें कफदोष दूर होइ ॥ १७ ॥ वातकोप में निशोथ, सोंठ, सेंधव चूर्ण, नींबूरस वा कांजी वा जंगली जन्तुके मांसका यूषयुक्त देइ तो रेचन अच्छाहो वायुरोग शान्तहो ॥ १८ ॥ (अपर औषध रेचनपर) रेंडी तेल से दूना त्रिफलाक्वाथ प्यावै वा दूना दूध उसमें प्यावै झाड़ा जल्दहो ॥ १९ ॥ (रेचन ऋतु भेदसे) निशोथ, इन्द्रयव, पीपरि, सोंठ व दाखके क्वाथ शहद डारि वर्षामें प्यावे ॥ २० ॥ (शरद में)

द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्वंशीतलंपघनात्यये २१ त्रिवृताचि
त्रकंपाठाह्यजाजीसरलावचा । हेमक्षीरीचहेमन्तेचूर्णमु
ष्णाम्बुनापिबेत् २२ पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामात्रिवृता
सह । लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम् । त्रिवृताश
र्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् २३ अभयामरिचंशुण्ठी
विडङ्गामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्त
मेवच २४ एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत् ।
त्रिवृदष्टगणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा २५ मधुनामोद
कंकृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंवानु
पिबेज्जलम् २६ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेव्यते ।
पानाहारविहारेषुभवेन्नियंन्त्रणंसदा २७ विषमज्वरम
न्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान् । दुर्नामकुष्ठगुल्मार्शोगल
गण्डभ्रमोदरान् २८ विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयना
मयान् । वातरोगंतथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् २९

निशोथ, जवासा, मोथा, सुगन्धवाला, मिश्री श्वेतचन्दन, मुलेठी, दाख क्वाथमें प्यावै तौ रेचनहो ॥ २१ ॥ (हेमन्तमें) निशोथ, चीता, पाढा, जीरा, देवदारु, वच और चूक इनका चूर्ण उष्णजलके साथ पियै तौ रेचनहो ॥ २२ ॥ (शिशिर व वसन्त में) पीपरि, सोंठ, सेंधव, बिधारा, निशोथ इनका चूर्ण शहद युक्त चाटै तौ रेचनहो ग्रीष्म में निशोथ का चूर्ण शक्कर समभाग युक्तकरि फाकै तौ रेचनहो ॥ २३ ॥ (रेचन पर अभयादिक मोदक) हड़, मिर्च, सोंठ, विड़ंग, आवला, पीपरि, पीपरामूल, तज, पत्रज व मोथा ॥ २४ ॥ ये सब समान भागले जमालगोटा की जड़ त्रिगुण निशोथ अठगुणा शक्कर छ:गुणी ॥ २५ ॥ शहद में मल कर्ष कर्ष भरकी गोली बांधि प्रभात एकन्याय शीतलजल पियै ॥ २६ ॥ जब वेग मल को रोंकाचाहै तब तत्ताजलपियै और खान पान विहार यत्न से परहेज रक्खे ॥ २७ ॥ तौ विषमज्वर मंदाग्नि, पाण्डु, कास, भगन्दर, दुर्नाम, कुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगण्ड, भ्रम, उदररोग ॥ २८ ॥ दाह, प्लीह, प्रमेह, यक्ष्मा,

अभयामोदकाह्येतेरसायनवराःस्मृताः। पृष्ठपार्श्वोरुज घनकट्यूदररुजंजयेत्। सततंशीलनादेषांपलितानिप्र णाशयेत् ३० पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी। सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेन्नरः३१निर्वातस्थो नवेगांश्चधारयेन्नस्वपेत्तथा। शीताम्बुनस्पृशेत्कापिको ष्णंनीरंपिबेन्मुहुः ३२ बलादोषश्चपित्तानिवायुर्वान्तेयथा व्रजेत्। रेकात्तथामलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ३३ दुर्वि रक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धत्वंकुक्षिशूलता। पुरीषवातसङ्गश्च कण्डूमण्डलगौरवम् । विदाहोरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दि श्चजायते३४तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वासंस्नेह्यरेचयेत्। तेनास्योपद्रवायान्तिदीप्ताग्नेर्लघुताभवेत् ३५ विरेक

नेत्ररोग, वातरोग, पेटफूलना, मूत्रकृच्छ्र, पथरी ॥ २९ ॥ पीठ, पसुरी, छाती, जांघ, कटि और पेट इनके रोग दूरहों इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही बाल पकना मिटै यह रसायनश्रेष्ठहै ॥ ३० ॥ (रेचनअच्छेप्रकार होनेका यत्न) रेचनौषध पीकै ठंढे जल से आंखें व मुख पोंछै व सुगन्धादि फूल सूंघ पानखा या करै इस योग के करने से चित्त स्वस्थ रहता है व अच्छी तरह वेग आतेहैं॥ ३१ ॥ (रेचन समय साधना) पवन व मलमूत्र को न रोंकै न श्रोटै ठंढा जल न छुवै ज्योंज्यों वेग होय त्योंत्यों वारवार तत्तापानी पियै इससे खुलकर मल गिरैगा ॥ ३२ ॥ सम्यक् रेचन में जैसे सम्यक् वमन में कफ और खाईहुई औ षध से पित्त, वायु व सवदोष मुख से गिरते हैं वैसेही ये सब मलमार्ग से गिरते हैं ॥ ३३ ॥ (रेचन देने पर वेग न होय तिसके उपद्रव) जिस मनुष्य को रेचन देने से वेग अच्छी तरह न आवै उसकी नाभिके नीचे कड़ापन और कोष में शूल मल में वायु मिलजाय खजुली, मण्डल, देह जकड़ना, दाह, अ रुचि, पेटफूलना, भ्रम व छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ३४ ॥ (अशुद्ध रेचनयत्न) जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रातका आरग्वधादि पा चन दे फिर स्नेहविधि से घृत पिलाय कोठा चिकना करि रेचन देने से शुद्ध रेचन होगा सव उपद्रव शान्त होंगे और जठराग्नि दीप्तहो व देह हलकी होजाती

स्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच।शूलंकफातियोगःस्या
न्मांसधावनसन्निभम् । मेदोनिभञ्जलाभासं रक्तंवापिवि
रिच्यते ३६ तस्यशीताम्बुभिःसिक्तंशरीरंतन्दुलाम्बु
भिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ३७ सहकार
त्वचः कल्कोदध्नासौवीरकेणवा । पिष्टोनाभिप्रलेपेनह
न्त्यतीसारमुल्बणम् ३८ अजाक्षीरंपिवेद्वापिवैष्किरंहारिणं
तथा । शालिभिःषष्टिकैःस्वल्पंमसूरैर्वापिभोजयेत् ३९
शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् । लाघवेमनस
स्तुष्ट्यामनुलोमेगतेनिले ४० सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनं
पाययेन्निशि । इन्द्रियाणांबलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीपनम् ।
धातुस्थैर्य्यंवयस्थैर्य्यंभवेद्रेचनसेवनात् ४१ प्रवातसेवा
शीताम्बुस्नेहाभ्यङ्गमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनंवापिनसे
वेतविरेचितः ४२ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूंभोजयेत्कृता

है ॥ ३५ ॥ (अतिविरेक में उपद्रव) मूर्च्छा, कांच निकरना, पेटमें शूल, कफ अधिक गिरना, मांस के धोवन सदृश गिरना, चरबी सी वा पानी व रुधिर गिरै ॥ ३६ ॥ (अतिविरेकोपद्रव यत्न) ठण्डे जल से शरीर पोंछै व गुलाब केवडा छिरके व यत्न से पोंछि वा चावलका धोवन शहदयुक्त पीवै और शर्द औषध दे मृदुवमन करावे इससे उपशमन होताहै ॥ ३७ ॥ आम कीछाल गोदधि व सौवीर इन्हें पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावै तो वेग बन्दहो अथवा सौवीर में आम की छाल पीसि नाभि पर लगावै" सौवीर की क्रिया मध्यखण्ड में कहीहै" ॥ ३८ ॥ (झाडा बन्द करने को) बकरी का दूध, शकुनीचिडिया का मांस यूप, भात व मसूरी सत साठीचावलका भात खाय ॥ ३९ ॥ और अनार व ठंडे पदार्थका सेवन करै वेग बन्दहोय (स्वल्प विरेकमें लक्षण) शरीर हलका प्रसन्नचित्त स्वस्थ गमन वायु ॥ ४० ॥ ऐसे लक्षण देखि रातिको पाचन देना वा पाचनार्थ ' रेंडमूल, सोंठ, धनियेंका क्वाथ दे" रेचन सेवने से इन्द्रियां बलवान् हों बुद्धि प्रसन्नरहे अग्नि दीप्तरहे धातुपुष्टहो व अवस्था बढ़कर स्थिर होती है ॥ ४१ ॥ (रेचन पर वर्जित) बयार, ठण्डा जल

म्। जाङ्गलैर्विष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् ॥ ४२ ॥
इति शार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरेचनाऽध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

वस्तिर्द्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् । वस्ति
भिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः १ यःस्नेहैर्दीयते
सस्यादनुवासननामकः । कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनि
गद्यते २ तत्रानुवासनाख्योहिवस्तिर्यःसोत्रकथ्यते । पू
र्वमेवततोवस्तिर्निरूहाख्योभविष्यति ३ निरूहादुत्तरंचै
ववस्तिःस्यादुत्तराभिधः । अनुवासनभेदश्चमात्रावस्ति
रुदीरितः ४ पलद्वयंतस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् ।
अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ५ नानुवा
स्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । अस्थाप्यानानुवा
स्याःस्युरजीर्णोन्मादतृड्युताः । शोकमूर्च्छारुचिभयश्वा

तैलस्पर्श, अजीर्ण, श्रम व मैथुन इनसे बचारहे ॥ ४२ ॥ (रेचनपर पथ्य) चावल, मूंग की यवागू वा हरिणादि मांसका यूप वा लवा बटेर तीतर मांसका यूप भात में दे ॥ ४३ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे उत्तरखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अथ वस्तिकर्म) गुदाके भीतर अण्डकोशकी जड़तांई द्रव्यभरि पिचकारी देनेको वस्ति कहते हैं सो दो प्रकारकी है अनुवासन १ निरूहण २ जिस में घी तैलादि चिकनी वस्तु भरि दीजै उसे अनुवासनवस्ति कहते हैं और काढा, दूध व तेल मिश्रित पिचकारी भरि पीड़ितकरै वह निरूहणवस्ति कहाती है ॥ १ । २ ॥ सो प्रथम अनुवासन वस्ति है पीछे निरूहण है इसी से निरूहण को उत्तरवस्ति भी कहते हैं ॥ ३ । ४ ॥ (अनुवासन की द्रव्यका प्रमाण) स्नेहादि दो पल व एक पलका प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद हैं (अनुवासन योग्य) रूक्षप्रकृती वा स्नेहपानरहित को वा अग्नि दीप्त करनेको केवल वातरोगी को ये अवश्य अनुवासन योग्यहैं ॥ ५ ॥ (अथानुवासन अयोग्य निरूहण योग्य) कुष्ठी, प्रमेही, मोटा शरीर और उदर रोगी ये अनुवासन योग्य नहीं हैं और अजीर्ण, उन्मादी, तृषी, शोक, मूर्च्छा-

सकासक्षयातुराः६नेत्रंकार्यंसुवर्णादिधातुभिर्वंशवेणुभिः। नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ७ एकवर्षात्तुषड्वर्षंयावन्मानंषडंगुलम् । ततोद्वादशकंयावन्मानंस्याद्ष्टसम्मितम् । ततःपरंद्वादशभिरङ्गुलैर्नेत्रदीर्घता८मुद्गच्छिद्रंकलायाभं छिद्रंकोलास्थिसन्निभम् । यथासंख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् ९ आतुराङ्गुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुखम् १० तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात् । योजयेत्तत्रवस्तिचबन्धद्वयविधानतः ११ मृगाजशूकरगवांमाहिषस्यापिवाभवेत् । मूत्रकोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेनचर्मजः । कषायरक्तःसुमृदुस्तीक्ष्णः स्निग्धोदृढोहितः १२

अरुचि, भय, श्वास, कास व क्षय इनसे पीडित को निरूहण वस्ति अयोग्य है ॥ ६ ॥ परन्तु अनुवासन योग्य है वस्ति करे (पिचकारी निर्माण विधि) नेत्रयाहे पिचकारी की नल जो गुदामें प्रवेशी जाय सो सुवर्णादि धातुकी, बांस, नरकुल, गजदन्त व मृगसींग की हो और उसका अग्रभाग पन्ना व बिल्लौरका बनावै ॥ ७ ॥ नली योग्य अवस्था जो वर्ष एक से छः वर्षताई बालक के वस्ति की नली छःअंगुल बनावै और छः वर्ष से बारह वर्षताई की आठअंगुलकी बनावै और बारह वर्षसे ऊपरवाले की नली बारह अंगुलकी बनावै ॥ ८ ॥ (नली छिद्रप्रमाण और निर्माणविधि) छः अंगुलकी नलीका प्रवेश करनेवाला मुख मूंग समान करै नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलकी मटरसा दूसरा मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवाली का झरबेरी के बेर समान दूसरी अंगुली समानरावै नली बहुत चिक्नी रहै गोपुच्छ सदृश ॥ ९ ॥ एकओर पतली दूसरी ओर मोटी मोटी ओरके चौथाई भाग में दो छल्ले जडेहों तिसमें थैली हरिणादि के मूतने की चढाइ पूर्वोक्त छल्लोंका मध्य थैली समेत बहुत पुष्ट कसै जिसमें थैली औषध न और राहसे निकले तब पिचकारी ठीक जानो ॥ १० । ११ ॥ थैली निर्मित जानो-हरिण, छाग, वराह, बैल व भैंसा इनके मूत्रकी थैली उस नली में लगावै जो ये न मिलें तो इनके चमडे को कमलपत्र सम काटि

व्रणवस्तेस्तुनेत्रंस्याच्छ्लक्ष्णमष्टाङ्गुलोन्मितम्। मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच १३ शरीरोपचयंवर्णंबलमारोग्यमायुषः। कुरुतेपरिवृद्धिंचवस्तिःसम्यगुपासितः १४ दिवसान्तेवसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते। ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम् १५ नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत्। मदंमूर्च्छांचजनयेद्विधास्नेहःप्रयोजितः १६ रूक्षंभुक्तवतोत्यन्तंबलंवर्णंचहीयते। युक्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयित्वानुवासयेत्। हीनमात्रावुभौवस्तीनातिकार्यकरौस्मृतौ १७ अतिमात्रौतथानाहक्लमातीसारकारकौ। उत्तमस्यपलैःषड्भिर्मध्यमस्यपलैस्त्रिभिः १८ पलाधर्द्धेनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने। शताह्वासैन्धवाभ्यांचदेयंस्नेहेचचूर्णकम् १९ तन्मात्रोत्तमम

दोनों ओर छीलि साफ करि थैली समान बनाय नलीपर चढावै॥ १२॥ (व्रणादि पिचकारी का प्रमाण) घाव फोड़ा नासूरादि की पिचकारी आठ अंगुल लम्बी मूंग पैठने मुवाफिक छेद रहै गृध्र के पत्तसदृश मोटी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोग है॥ १३॥ (वस्तिगुण) वस्ति अच्छेप्रकार हो तौ शरीर पुष्ट औ कांति, बल, आरोग्य व आयुवृद्धि करै॥ १४॥ (वस्तिसेचनकाल) वसन्तऋतुमें सन्ध्यासमय स्नेहवस्ति करे अनुवास्ति करना ग्रीष्म वर्षा शरद् में रात को करना॥ १५॥ रोगी को उष्ण चिकना भोजन रात को खिलाय अनुवासन करने से मद या मूर्च्छा उत्पन्न होती हैं और रूखे भोजन से बल व कांति की हानि होय ये दोनों तरह वस्तिकर्म करै ये रोग होते हैं॥ १६। १७॥ (वस्तिकर्म में न्यूनाधिकमात्रादोष) अनुवासन वा निरूहण में हीन मात्रा देने से रोग नहीं जाता अति मात्रा देने से आनाह, ग्लानि व अतीसार ये उपजते हैं वस्तिकी उत्तम मात्रा छः पलकी पली को अनुवासन देना मध्यम पलको तीन पलकी॥ १८॥ पलहीन को हीन मात्रा डेढपल देना स्नेह में और द्रव्य मात्रा शतावरि सेंधव का चूर्ण छः माशे की उत्तम मात्रा चारि माशे की मध्यम दोमाशे की कनिष्ठ जानना (विरेचन पर वस्तिप्रकार) विरे-

ध्यान्ताः पट्चतुर्द्वयमाषकैः । विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजात बलायच २० भुक्तान्नायानुवास्यायवस्तिर्देयोनुवासनः । अथानुवास्यंस्वभक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः २१ भोजयित्वायथाशास्त्रंकृतंचङ्क्रमणंततः । उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयोजयेत्स्नेहवस्तिना २२ सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजङ्घाप्रसारिणः । कुञ्चितापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धगुदेन्यसेत् २३ बद्ध्वावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेद्दक्षिणेनैव मध्यवेगेनधीरधीः २४ जृम्भाकासक्षवादींश्चवस्तिकाले नकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीडने २५ ततःप्रणिहितःस्नेहउत्तानोवाक्छतंभवेत् । जानुमण्डलमावेष्ट्यकुर्याच्छोटिकयायुतम् २६ एकामात्राभवेदेषासर्वत्रैषविनिश्चयः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावीर्यंप्रसर्पति २७ ताडयेत्तलयोरेनंत्रीन्वारांश्चशनैःशनैः ।

चन किये को सात दिन विताय बल आने पर ॥ १९ । २० ॥ भोजन कराय अनुवासन वस्तिकरना (पिचकारी पीड़ित प्रकार) अनुवासन कर्म के प्रथम तेल लगाय गरम पानी से नहवाय ॥ २१ ॥ यथालिखित भोजन कराय कुछ टहलाय पवन, मल व मूत्र की शङ्का मिटाय ॥ २२ ॥ बाईं करवट पौढ़ाय दाहिना गोड़ सिकोड़ बायां पसारि मलमार्ग में घी लगावै ॥ २३ ॥ तब पिचकारी थैली में यथा लिखित स्नेह मात्रा भरि थैलामुख बस्ति का मुख सूत से बांधि बायें कर धारि धीरे धीरे मलमार्ग में दो अंगुल प्रवेशै ॥ २४ ॥ तब दाहिने हाथ से द्रव्यभरी थैली मन्द मन्द पीड़ित करै जिसमें भीतर पिचकारी देते हैं उस समय उसांसी छींक खांसी न आवै (रोगीको वस्तिप्रदसमय) पिचकारी दे तीस मात्रा साईं रोके इतनी देर में स्नेहादिक अन्दर प्रवेश होजायगा फिर सौ मात्रा तक सीधा सुलावै (मात्राप्रमाण) जानु मण्डल कहे "कटि से घुटनी पर्यन्त" तिसके चारों ओर चुटकी बजाता हाथ घुमावै ॥ २५ । २६ ॥ तौ एकमात्राहोय यह सब ग्रन्थन में निश्चय है (वस्तिके पीछे कृत्य) वस्ति पीड़ित करि रोगी के पांव हाथ व शरीर फैलाय लम्बा करदे इससे सातों धातु अपने अपने स्थानमें फैल

स्फिक्ताडयेच्चैव ततः श्रोणीं शय्यां चैवोत्क्षिपेत्ततः ॥ २८ ॥ जाते
विधाने तु ततः कुर्यान्निद्रां यथासुखम् । सानिलः सपुरीष
श्च स्नेहः प्रत्येति यस्य तु ॥ उपद्रवविनाशीघ्रं स सम्यग
नुवासितः ॥ २९ ॥ जीर्णान्नमर्थसायाह्ने स्नेहे प्रत्यागते पु
नः ॥ लघ्वन्नं भोजयेत्कामं दीप्ताग्निस्तु नरो यदि ॥ ३० ॥ अनु
वासिता देयं स्यादुष्णोदकम् । धान्यशुण्ठी
कषायो वा स्नेहव्यापत्तिनाशनम् ॥ ३१ ॥ अनेन विधिना षड्वा
सप्त वाष्टौ नवापि वा ॥ विधेया बस्तयस्तेषामन्ते चैव निरूह
णम् ॥ ३२ ॥ दत्तस्तु प्रथमो बस्तिः स्नेहयेद्बस्तिवङ्क्षणौ ॥ सम्य
ग्दत्तो द्वितीयस्तु मूर्द्धस्थमनिलं जयेत् ॥ ३३ ॥ बलवर्णौ च
जनयेत्तृतीयस्तु प्रयोजितः ॥ चतुर्थपञ्चमौ बस्ती स्नेहयेते
रसं सृजम् ॥ षष्ठो मांसं स्नेहयति सप्तमो मेद एव च ॥ ३५ ॥

मेनवमश्चापिमर्ज्जानंचयथाक्रमम् ३५ एवंशुक्रगतान्दो
षान्द्विगुणःसाधुसाधयेत्। अष्टादशाष्टादशकान्वस्तीनो
योनिषेवते ३६ सकुञ्जरबलोप्यश्वंजयेत्तुल्योमरप्रभः। रू
क्षायबहुवातायस्नेहवस्तिंदिनेदिने ३७दद्याद्वैद्यस्तथान्ये
षामन्यांवाधामपाहरेत्। स्नेहोल्पमात्रोरूक्षाणांदीर्घकाल
मनात्ययः ३८ तथानिरूहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्य
ते। अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ३९ तस्यान्यो
न्यतरोदेयोनहिस्निग्धस्यतिष्ठति। अशुद्धस्यमलोन्मिश्रः
स्नेहोनैतियदापुनः ४० तथाशैथिल्यमाध्मानंशूलंश्वास
श्चजायते। पक्वाशयेगुरुत्वंचतत्रदद्यान्निरूहणम् ४१ ती
क्ष्णंतीक्ष्णौषधैर्युक्तांफलवर्तिंहितायच। यथानुलोमनंवा
युर्मलंस्नेहश्चजायते ४२ तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यंच

होते हैं ॥ ३५ ॥ इस प्रकार से नव द्विगुनी अठारह वेग देने से शुक्रधातुका दोष नाश होजाता है ॥ ३६ ॥ और जिसे पचीस वेगहों तिसे हाथी घोड़े सदृश बलहो और देवतासमान कांतिहो (अल्पमत में) जो रूक्ष वातकरि अधिक पीड़ित हो उसे अनुवासन वस्ति जब जब प्रयोजन जाने तब तब देय ॥ ३७ ॥ और चिकने या मोटे मनुष्यको जब जब उचित जाने तब तब निरूहणवस्ति देय तौ रोग नाश होताहै, ऐसे मनुष्य को स्नेहवस्ति हलकी हलकी नित्य-प्रति देय ॥ ३८ ॥ और जो रोग चिरकाल का होय तौ निरूहण वस्ति हलकी हलकी नित्यप्रति देय (स्नेह शीघ्र निकलनेपर) जब स्नेहादि शीघ्र निकल आवे तब निरूहणवस्ति करै इसी रीतिसे जितने वेग देय सबके अंतमें बृंहण देता जाय (स्नेहस्राव न होनेपर उपद्रव) जो विरेचन वमनकरि शुद्ध किया वस्तिकर्म किया तिसमें स्नेहादिक करनेसे ये उपद्रव होते हैं ॥ ३९।४०॥ शिथिल गात्र, पेटफूलना, शूल, स्वास, ओझरी कठोर इन उपद्रवके दूरकरने को तीक्ष्ण निरूहण देना ॥ ४१ ॥ तीक्ष्ण औषध युक्त फलवर्ती जिसमें वायु अधोमार्गी हुई मल युक्त स्नेहको गिरावे तिसे तीक्ष्ण रेचन तीक्ष्ण नास देने से शमन होते हैं ॥४२॥ जो स्नेहवस्ति करने से कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतर रुके

मानिकृतानिमुनिपुङ्गवैः १ निरूहस्यापरंनामप्रोक्तमास्था
पनंबुधैःस्वस्थानस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् २ नि
रूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थंपादोत्तरंमतम् ॥ मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टं
हीनंचकुडवास्त्रयः ३ अतिस्निग्धोत्क्लिष्टदोषौक्षतोरस्कः
कृशस्तथा। आध्मानच्छर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीडितः
४ गुदशोफातिसारार्तोविसूचीकुष्ठसंयुतः। गर्भिणीमधु
मेहीचनास्थाप्यश्चजलोदरी ५ वातव्याधावुदावर्तेवाता
सृग्विषमज्वरे। मूर्च्छातृष्णोदरानाहमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच
६ वृद्ध्यसृग्दरमन्दाग्निप्रमेहेषुनिरूहणम्। शूलेऽम्लपि
त्तहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः ७ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्ध
स्विन्नमभोजितम्। मध्याह्नेगृहमध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत्

के अनेक भेद हैं जहां जैसा देना चाहिये तहां मुनीश्वरोंने तैसाही नाम धरा है। यथा स्नेहनवस्ति दोषउत्क्लेश न दोषशमनवस्ति यह नाम प्रकार जानना ॥ १ ॥ निरूहणका दूसरा नाम आस्थापनवस्ति कहते हैं इस कारण से कि उत्पन्न हुये दोषसंयुक्त रसादिक धातु अपने स्थान में प्राप्त हैं उनको, वातादिक दोष या रोगों को दूरकरि शुद्ध धातुओं को स्थितकरती है ॥ २ ॥ (निरूह में क्वाथ प्रमाण) निरूह सवा प्रस्थ की उत्तममात्रा है प्रस्थभरकी मध्यम तीन कुडव की कनिष्ठमात्रा कहाहै ॥ ३ ॥ (निरूहमें अयोग्य) अतिस्निग्ध, कोठेवाला, उत्क्लिष्ट दोषवाला, उरःक्षती, कृशी, आध्मानी, छर्दिरोगी, हिक्की, अर्शी, कासरोगी, और श्वासी ऐसे मनुष्य ॥ ४ ॥ गुदाके निकट पीड़ित, शोथी, अतीसारी, शीत, रक्त, कुष्ठी, गर्भिणी, मधुमेही और जलोदरी इन रोगियों को निरूहण देना योग्य नहीं ॥ ५ ॥ (निरूहवस्ति योग्य) वात, उदावर्त, वातरक्त, विषमज्वर, मूर्च्छा, तृष्णा, उदर, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी ॥ ६ ॥ पुराना, रक्तस्राव, मन्दाग्नि, प्रमेह, शूल, अम्लपित्त और हृदयरोग इन रोगों से युक्त को निरूह देना योग्य है ॥ ७ ॥ (निरूहवस्तिविधान) जिसे निरूह देनीहो तिसे मल मूत्रकी शंका निवारण कराय प्रसन्न करनेकी चेष्टा विशेष कोठा शुद्धकरि देह में तैलमर्दन तप्तजल से अङ्ग पोछना तथा थोड़ा सेकि दोपहर समय से भोजन त्यागि जिसे जहां देना होय तिस तैसी औषधमिश्रितकरि और पूर्वोक्त

त् ८ स्नेहबस्तिविधानेन बुधः कुर्यान्निरूहणम् । जातेऽनि-
रूहे च ततो भवेदुत्कटकासनः ॥ ९ ॥ तिष्ठेन्मुहूर्तमात्रं तु निरू-
हागमनेच्छया । अनायातं मुहूर्तात्तु निरूहं शोधनैर्हरेत् १०
निरूहैरेव मतिमान्क्षारमूत्राम्लसैन्धवैः । यस्य क्रमेण गच्छ-
न्ति विट्पित्तकफवायवः । लाघवं चोपजायेत सुनिरूढं तमा-
दिशेत् ॥ ११ ॥ यस्य स्याद्बस्तिरल्पाल्पवेगो हीनमलानिलः ।
मूत्रार्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूढं तमादिशेत् ॥ १२ ॥ विरिक्त-
तामनस्तुष्टिः स्निग्धतान्यधिनिग्रहः । आस्थापनस्नेहब-
स्त्योः सम्यग्दानं तु लक्षणम् ॥ १३ ॥ अनेन विधिना युञ्ज्यान्नि-
रूहबस्तिदानवित् । द्वितीयं वा तृतीयं वा चतुर्थं वा यथोचित-
म् १४ सस्नेह एकः पवने पित्ते द्वौ पयसा सह । कषायकटुरूक्षा-
द्याः कफे कोष्णास्त्रयो मताः ॥ १५ ॥ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टक्षीर-
यूषरसैः क्रमात् । निरूहं योजयित्वा च ततस्तदनुवासयेत् १६

अनुवासन बस्तिविधानसे निरूहणबस्ति करै ॥ ८ । ९ ॥ फिर औषध बाहर
निकलने के कारण मुहूर्त्त भर "दोनोंही" कहीं" उकडूं बैठावे इतने में औषध
गिरै तो अच्छा जो न गिरै तो शोधन करै रेचन ॥ १० ॥ या भी न गिरै तो
जवाखार, गोमूत्र, खट्टे का रस व सैंधव मिलाय फिर निरूहकी देनेसे गिरै।
(अच्छी निरूहलक्षण) निरूह अच्छी होय तो जिससे मल, पित्त, कफ व
वायु गिरै और शरीर हलका होजाय तो निरूह भला जानिये ॥ ११ ॥
(अशुद्धबस्तिलक्षण) जिसके बस्तिदेने से त्रिदोषजन्य विकार और मल
नहीं निकलगये उसके मूत्रमार्ग में पीड़ा शरीरजड़ता और अरुचि होय ॥ १२ ॥
(निरूहस्नेहबस्तिलक्षण) देह हलकी, मन प्रसन्न, देह चिकना रोगनाश ये
अच्छी बस्ति के लक्षण हैं ॥ १३ ॥ जो चतुर बस्तिकर्म जाननेवाले वैद्य हों
निरूहबस्ति करैं नहीं तो बस्ति विरुद्ध होती है (निरूहबस्तिदानप्रमाण)
निरूहबस्ति एक या दो या तीन या चार बार जैसा दोष हो दे ॥ १४ ॥
वातरोग में स्नेहयुक्त निरूह एकबार दे पित्त में दूध दो बार कफ में कषायकटु
रूक्षादियुक्त सुखोष्ण करके तीनवार दे ॥ १५ ॥ त्रिदोषमें क्रमसे दूध मांसरसयुक्त

सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः ।; वस्तिस्तीक्ष्णः
प्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी॥१७ दद्यादुत्क्लेशनंपूर्वंमध्य
दोषहरंततः।पश्चात्संशमनीयंचदद्याद्वस्तिंविचक्षणः॥१८
एरण्डबीजंमधुकंपिप्पलीसैन्धवंवचा।हवुषाफलकल्कश्च
वस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः १९ शताह्वामधुकंबिल्वंकौटजंफलं
मेवचासकाञ्जिकःसगोमूत्रोवस्तिर्दोषहरःस्मृतः२० शोध
नद्रव्यनिष्क्काथस्तत्कल्कैःस्नेहसैन्धवैः। युक्त्याखजेनम
थितावस्तयःशोधनाःस्मृताः २१ प्रियङ्गुर्मधुकोमुस्तातु
थैवचरसाञ्जनम्। सक्षीरःशस्यतेवस्तिर्दोषाणांशमनेस्मृ
तः२२त्रिफलाकाथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः। ऊषकादि
प्रतीवापैर्वस्तयोलेखनास्स्मृताः २३ बृंहणद्रव्यनिष्काथः

क्रमसे वारंवार देना तिस पीछे स्नेहवस्ति देना ॥ १६ ॥ सुकुमार वा वृद्ध वा बालक को इनको निरूह देना, सुकुमारादि की तीक्ष्णवस्ति से बल और आयु घटती है इंद्र वा आवर्त्तादि कटुई कुलथी व यवादि रूक्ष हैं ये द्रव्य आदि मध्यान्त क्रमसे देना प्रथम दोष उभारना मध्य से दोष नाशन व अन्त में दोष क्षीण करि शमनकारक देना ॥ १७ ॥ १८ ॥ (दोष उभारन द्रव्य) रेंड़ी बीज, महुआछाल, पीपरि, सेंधा, वच और हाऊबेर इनकी पिचकारी में दोष उभरता है ॥ १९ ॥ (दोषनाशकद्रव्य) शतावरि, मुलेठी, बेल और इन्द्रयव, इनको कांजी में पीसि गोमूत्र युक्त पिचकारी दोषहारक देना ॥ २० ॥ (दोषशमन औषध) निशोथ आदिक शोधन द्रव्यका काथकरि तैल वा सेंधव डारि मथिके दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा और द्रव्यको कल्क भी मथिके पिचकारी देना ॥ २१ ॥ मकरापूल, महुआछाल, नागरमोथा और रसौत ये सब समभाग दूधमें पीसि दोषशमनार्थ देना ॥ २२ ॥ (लेखनवस्ति) त्रिफलाकाथमें गोमूत्र, शहद व, जवाखार ये द्रव्य समान भागले ऊषकादिगण द्रव्य मिश्रितकरि लेखनवस्ति देना लेखन कहे "जो मेद दूषित तिन रोगिनको दुबलाकरै" ॥ २३ ॥ (बृंहणवस्ति) मुसली, गुलरू व केवाचबीज इत्यादि बृंहण द्रव्य हैं सो धातुको बढ़ाती है इनको काथकरि महुआ की छाल दाख व

१ मदोरोगादिकों वा मोटापा, फल्का और शैथल्यादि घटाते हैं ॥ [illegible]

कल्कैर्मधुरकैर्युतः। सर्पिर्मांसरसोपेता वस्तयो बृंहणा मताः॥ २४ चन्दनं सवनी शेलुशाल्मली धन्वनागरा। क्षीरसिद्धाः क्षौद्रयुक्ता नाम्ना पिच्छिलसंज्ञिताः॥ २५ अजोरभ्रैणरुधिरैर्युक्ता देया विचक्षणैः। मात्रा पिच्छिलवस्तीनां पलैर्द्वादशभिर्मता॥ २६ दत्त्वादौ सैन्धवस्याक्षं मधुनाप्रसृतिद्वयम्। विनिर्मथ्य ततो दद्यात्स्नेहस्य प्रसृतित्रयम्॥ २७ एकीभूते ततः स्नेहे कल्कस्य प्रसृतिं क्षिपेत्। सम्मूर्च्छिते कषायं तु चतुष्प्रसृतिसम्मितम्॥ २८ क्षिप्त्वा विमथ्य दद्याच्च निरूहं कुशलो भिषक्। वाते चतुष्पलं क्षौद्रं दद्यात्स्नेहस्य षट्पलम्॥ २९ पित्ते चतुष्पलं क्षौद्रं स्नेहस्य च पलत्रयम्। कफे षट्पलिकं क्षौद्रं स्नेहस्यैव चतुष्पलम्॥ ३० एरण्डक्वाथतुल्यांशं मधुतैलं पलाष्टकम्। शतपुष्पापलार्द्धेन सैन्धवार्द्धेन संयुतम्॥ ३१ मधुतैलकसंज्ञोऽयं वस्तिर्देयो विलो-

अनारादि मधुर द्रव्य का कल्क और घृत तथा मांसरस ये सब पूर्वोक्त काथ में डालि धातु बढाने को पिचकारी देय॥ २४॥ (पिच्छिलवस्ति) बेरकी छाल, इलायची, लसोडेकी छाल, सेमर, जवासा, व सोंठ ये सब समान भाग ले दूध में पीसि शहद॥ २५॥ छाग, मेढा, व हरिण इनका रुधिर, मिश्रित करि चतुर वैद्य दोष मिटाने के लिये पिच्छिलवस्ति को देते हैं इस की मात्रा का प्रमाण बारहपल है (निरूहणवस्ति प्रमाणविधि) अक्ष व कर्ष की एकही संज्ञा है सेंधा १ कर्षभर, शहद चारपल मर्दन करि छहपल घी दे॥ २६। २७॥ एकत्र करै इस में दोपल पूर्वोक्त कल्क द्रव्य मिलावै अथवा पूर्वोक्त कल्कद्रव्यका कार्य कहे (क्वाथ) करि लीजिये॥ २८॥ आठपल प्रमाण कुशल वैद्य इकट्ठी करि मथि निरूहवस्ति देय निरूहवस्ति की साधारण विधि जानो (विशेष विधान) वात में ४ पल मधु ६ पल स्नेह इकट्ठा करि पिचकारी देना॥२९॥ पित्त में ४ पल मधु, ३ पल स्नेह इकट्ठाकरि पिचकारी देय कफ में छहपल मधु ४ पल स्नेह एकत्र करि देनो॥ ३०॥ (मधुतैलवस्ति) रेंडमूलकाथ ८ पल शहद तेल आठ आठ पल बडी सौंफ व सेंधा आधा आधा पल ये सब एकत्र रि-

डितः । मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ३२ ॥ बल
वर्णकरश्चैव वृष्यो बृंहणदीपनः । क्षौद्राज्यक्षीरतैलानां प्र
सृतिः प्रसृतिर्भवेत् ३३ हपुषार्द्धाक्षसंयुक्तो वस्तिः स्याद्दी
पन: परः । एरण्डमूलनिष्क्वाथो मधुतैलं ससैन्धवम् ३४ एष
युक्तरसो वस्तिः सवचापिप्पलीफलः । पञ्चमूलस्य निष्क्वा
थस्तैलं मागधिका मधु ३५ ससैन्धवः समधुकः सिद्धवस्ति
रिति स्मृतः । स्नानमुष्णोदकैः कुर्याद्दिवास्वप्नमजीर्ण
ताम् । वर्जयेदपरं सर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् ३६ ॥ इति
श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे निरूहणविधिः षष्ठोऽध्यायः ६ ॥
अतः परं प्रवक्ष्यामि वस्तिमुत्तरसंज्ञितम् । द्वादशाङ्गुलकं
नेत्रं मध्ये चकृतकर्णिकम् १ मालतीपुष्पवृन्ताभं छिद्रं सर्ष
पनिर्गमम् । पञ्चविंशतिवर्षाणामधो मात्राद्विकार्षिकी २
तदूर्ध्वं पलमानं स्यात्स्नेहस्योक्ता विचक्षणैः । अथास्यापन
द्रुणभर मधि ॥ ३१ ॥ यह मधुतैल वस्ति है इसे देने से मेदरोग, गुल्म, कृमि,
प्लीह, मल या उदावर्त ये रोग नाश होते हैं॥ ३२॥ बल कांति, श्री, इच्छा, धातु
वृद्धि अग्नि दीप्त होय (दीपन वस्ति) शहद, घी, दूध ये मिल ये दो पल ॥ ३३ ॥
हाऊबेर व सैंधव करके सूक्ष्म पीसि सबै मिलाय पिचकारी दिवे से अग्नि दीप्त
होय (युक्तरसवस्ति) रेंडमूलकाथ शहद तेलमें सेंधा ॥ ३४ ॥ वच, पीपरि,
मैनफल, चारों समभाग चूर्णकरि मिलायें पिचकारी देय यह युक्तरसवस्ति सब
रोगों पर दीजाती है (सिद्धवस्ति पंचमूल क्वाथ) तेल और मधु मुलेठी
कायफल पीपरि व सैंधव मिलाय देय यह सिद्धवस्ति सब रोगनपर देते हैं (वस्ति
में सेव्य निषेध पदार्थ) वस्तिसेवक उष्ण जलसे नहाइ दिन में न सोवे
अजीर्ण न होय और स्नेहवस्ति के समान सब आचरण करै ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
इति श्रीशार्ङ्गधरसंहिताकोत्तरखण्डे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥
(अथोत्तरवस्तिविधान) उत्तर वस्ति कहे "मूत्रमार्ग में पिचकारी देने
की विधि" तिस में प्रमाण बारह अंगुल लम्बी तिसके मध्य में पखुरी ॥ १ ॥ चं-
मेली के पुष्प डाँडे व चमेली पुष्प की डंडी समान मोटी रहे (मात्राप्रमाण)
मनुष्य के २५ वर्षताईं स्नेहमात्रा दो कर्ष की देय ॥ २ ॥ पचीसके उपर पलभर

शुद्धस्यतस्यस्नानभोजनैः ३ स्थितस्यजानुमात्रेचपी ठेविष्टशलाकया। स्निग्धयामेढ्रमार्गेचततोनेत्रंनियोज येत् ४ शनैश्शनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्रमध्येङ्गुलानिषट् । ततोव पीडयेद्बस्तिंशनैर्नेत्रंचनिर्हरेत् ५ ततःप्रत्यागतेस्नेहेस्ने हवस्तिक्रमोहितः । स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलंनेत्रंकुर्याद्दशा ङ्गुलम् ६ मूत्रप्रवेशंयोज्यंचयोन्यंतश्चतुरङ्गुलम् । द्व्यङ्गु लंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मनेत्रंनियोजयेत् ७ मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबा लानांत्वेकमङ्गुलम् । शनैर्निष्कम्पमाधेयंसूक्ष्मंनेत्रंविचक्ष णैः ८ योनिमार्गेषुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी । मूत्र मार्गेपलोन्मानाबालानांचद्विकार्षिकी ९ उत्तानायैस्त्रियै दद्यादूर्ध्वजान्वैविचक्षणः । अप्रत्यागच्छतिभिषग्बस्तौ

देना (अथास्थापनवस्तिविधि) स्थापन कहे उत्तर सेवक को शुद्ध स्नान भोजन करायें ॥ ३ ॥ घुटने टेकाय बैठावै वा घुटनेको टेकि खड़ारहे तब इष्ट श- लाका चांदीका दो अंगुल मुंहपरमुरा ८ अंगुलसीधा सरसोंतिकरिजाने माफिक छेद होता है उस में घी वा तेल लगाय मूत्रमार्ग में ॥ ४ ॥ धीरे धीरे छः तथा आठअंगुल प्रवेशकरे यत्नपूर्वक जिसमें पीड़ा न करै जब मूत्र थैलीतक पहुंचि खट- खट बजै सो जानो इसके पथरीहै ॥ ५ ॥ इसी शलाका से बन्द मूत्रभी खुलजाता है शलाकाछिद्र से बहिजाता है और जो पिचकारी देनी हो तो शलाकाकी पेंदी पर थैली चढ़ाय औषधभरि पूर्ववत् पीडनकरै इससे मूत्रकृच्छ्रादि दूरहोते हैं यह उत्तरबस्ति क्रम है ॥ ६ ॥ (स्त्रीकेउत्तरवस्तिविधान) स्त्री की योनि में दो छिद्र होते हैं एक मूत्रमार्ग दूसरा गर्भमार्ग योनि यही है उसकी शलाका छंगु- निया की मुटाई दशांगुल की पूंछ निकरने माफिक छेद राखि चारि अंगुल योनि में प्रवेश पिचकारी दे और मूत्रमार्ग में सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश ॥ ७ ॥ बालक के अंगुल एक शलाका प्रवेशै चतुर वैद्य कम्पहीन बालक के रसायन से देय पिचकारी पीडने में हाथ न कँपै ॥ ८ ॥ (स्त्रियों की बस्ति की मात्रा प्रमाण योनिमार्गे) पिचकारी देने की मात्रा दो पल औषध लेना मूत्रमार्ग की मात्रा एकपल है बालकं बस्तिकी दो कर्षहै ॥ ९ ॥ निपुणवैद्य स्त्रीको उताना

वित्तरसंज्ञिते १० भूयोवस्तिंनिदध्याच्चसंयुक्तैः शोधनैर्गु णैः । फलवर्तिंनिदध्याद्वायोनिमार्गेदृढंभिषक् ११ सूत्रै स्त्रिनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दह्यमानेतथा वस्तौदद्याद्वस्तिंविचक्षणः १२ क्षीरवृक्षकषायेणपयसा शीतलेनच । वस्तिःशुक्ररजःपुंसां स्त्रीणामार्तवजारुजः १३ हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहिनांक्वचित् । सम्य ग्दत्तस्यलिङ्गानिव्यापदःक्रमएवच १४ वस्तेरुत्तरसंज्ञ स्यशमनंस्नेहवस्तिना । घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्याश्लक्ष्णेस्वा ङ्गुष्ठसन्निभा । मलप्रवर्त्तिनीवर्त्तिःफलवर्त्तिश्चसास्मृता १५ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुनाशार्ङ्गधरेणविरचितायांसं हितायांचिकित्सास्थानेउत्तरखण्डेउत्तरवस्तिविधानन्नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनंन

पीडाय पिचकारी पीडितकरै फिर उकुडूबैठाय दियाहुआ स्नेह गिरावै ॥ १० ॥ (शोधनद्रव्य मूत्रकृच्छ्रादि में शोधनद्रव्य) रेंडी तेलादि द्रव्यभरि पिचकारी देय अथवा फलवर्ति रेंडबीजादि सूत वा वस्त्रकी कडीवत्ती बनाय रेंड तेलादि में तातरि भिजोय उसपर रेंड़ी पीसि चुपरि योनि में रासै ॥ ११ ॥ १२ ॥ जो वस्ति किये नाभितरे वस्तिस्थान अधिक उष्णहोय तौ वड़ व गूलर की छाल के क्वाथ की पिचकारी देना व ठंढे दूध की इन से वस्ति शुद्ध होती है और शुक्रसंबंधी पीडा और स्त्रीके आर्तवसम्बन्धी रोगपीडा दूरहोय ॥ १३ ॥ प्रमेहीको उत्तरवस्ति कभी अयुक्तनहीं (उत्तरवस्तिलक्षण) उत्तरवस्ति में स्नेहवस्ति हुई तेर शुक्र सम्बन्धी प्रमेहादिक पीड़ा दूर होती है उसके ये लक्षणहैं ॥ १४ ॥ (मलमार्गे फलवस्तिविधान) मलमार्ग में चीलगाय मल गिराने के कारण रेचन द्रव्य रेंडबीजादि कड़ी वत्तीपर लेपि गुदा में धरै इसे फलवर्ति कहते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

(अथ नस्यकर्म) नाक की राह औषध देनेको नास कहते हैं इसके दो नाम

स्यकर्मेति तस्यनामद्वयंमतम् १ नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तो रेचनंस्नेहनंतथा। रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम् २ कफपित्तानिलध्वंसे पूर्वमध्यापराह्णके। दिनस्यगृह्यते नस्यं रात्रावप्युत्कटेगदे ३ नस्यंत्यजेद्भोजनान्ते दुर्दिने चापतर्पणे। तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ४ अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः। क्रुद्धश्शोकाभिभूतश्च तृषार्त्तोवृद्धबालकौ ५ वेगावरोधीस्नातश्च स्नातुकामश्चवर्जयेत् ६ अष्टवर्षस्यबालस्य नस्यकर्म समाचरेत्। अशीतिवर्षाद्दूर्ध्वंचनावननैवदीयते ७ अथ वारेचनंनस्यं ग्राह्यंतैलैःसुतीक्ष्णकैः। तीक्ष्णभेषजसिद्धैर्वास्नेहैःक्वाथैरसैस्तथा ८ नासिकारन्ध्रयोरष्टौ षट्चत्वा

है नावन एक नस्य दो ॥ १ ॥ नस्य रीति दो विधिकी है एक रेचन दूसरी स्नेहन और रेचनको कर्षण भी कहिये सो वातादि लेखनको कर्षण करनेवाली है और स्नेहन नस्य धातुको वृद्ध करती है इससे बृंहण कहिये ॥ २ ॥ (नस्यकर्म समय) कफदूषितको प्रात नस्यदेना पित्तदूषितको मध्याह्न में देना वायुदूषितको संध्या के भीतरदेना और जो अतिपीडितहो तौ रात्रिकोदेना ॥ ३ ॥ (अथ नस्यनिषेधः) नस्यकर्म ऐसे को वर्जितहै भोजन करचुके पर तुरतही न दे दुर्दिन कहे आंधी वा पवन अति चलै वा मेघाच्छादितहो और लंघनी को पीनसके आरम्भ में गर्भिणीको विषदूषित को ॥ ४ ॥ अजीर्णीपर वस्तिकृतको स्नेहपीतको पानी वा मद्यपीको तर्पणकृतको क्रोधशोकार्त्तो वृद्ध और बालकको ॥ ५ ॥ मलमूत्र वायु अवरोधीको तुरत स्नान कियेपर स्नानाकांक्षीको ऐसे मनुष्यन को और इन कर्मन कियेपर नस्यकर्म न करै ॥ ६ ॥ (नस्यकर्मणि योग्यायोग्य) आठवर्ष के उपरान्त अस्सीवर्षपर्यंत नासकर्म करना ॥ ७ ॥ (रेचन नासाविधि) रेचनकारक द्रव्यकी नास देनाचाहै तौ सराई वा सरसोंका तेल तीक्ष्ण है तिसकी नासदेना वा तीक्ष्ण द्रव्य में सिद्ध किया तेल वा तीक्ष्णद्रव्य का क्वाथ वा तीक्ष्णद्रव्यका स्वरसले तेल घृत सिद्धकरि नासदेना ॥ ८ ॥ (रेचने नस्यप्रमाणम्) रेचनसम्बन्धी औषधकी आठबूंद दोनों नथुनों में नास

रश्चबिन्दवः । प्रत्येकंरेचनेयोज्यंमुखमध्यान्त्यमात्रया ९
नस्यकर्मणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम् । हिङ्गुस्याद्यव
मात्रन्तु माषैकंसैन्धवंमतम् १० क्षीरंचैवाष्टशाणंस्या
त्पानीयंचत्रिकार्षिकम् । कार्षिकंमधुरंद्रव्यं नस्यकर्मणि
योजयेत् ११ अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ । शि
रोविरेचनस्थानेतौतुदेयौयथायथम् १२ कल्कीकृतादौ
षधाद्यः पीडितोनिस्सृतोरसः । सोवपीड:समुद्दिष्टस्ती
क्ष्णद्रव्यसमुद्भवः १३ षडङ्गुलाद्विवक्त्राया नाडीचूर्णंततो
धमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंवक्तं यातैःप्रधमनंहितम् १४
ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगे कफजेस्वरसंक्षये । अरोचकेप्रतिश्या
ये शिरःशूलेचपीनसे १५ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यंवैरे
चनंहितम् । भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनदीयते १६
गलरोगेसन्निपाते निद्रायांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमि
षुयुज्यतेचावपीडनम् १७ अत्यन्तोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषुच

देय तो उत्तममात्रा है छःबूंदकी मध्यम चारिबूंदकी कनिष्ठमात्रा कहाती है ॥९॥ (नस्येद्रव्यप्रमाणम्) नासदेनेको तेलादि सिद्धकरने में तीक्ष्ण औषध एक शाण देना हींग यवभरि सैंधव मापभरि ॥ १० ॥ दूध आठ शाण पानी तीन कर्ष प्रमाण मीठीद्रव्य कर्षप्रमाण देना ॥ ११ ॥ (मस्तकरेचनविधि) मस्तकरेचन दो प्रकारका है एक अवपीडन दूसरा प्रधमन ये मस्तकरेचन जानना ॥ १२ ॥ (अवपीडन वा प्रधमन विधान) तीक्ष्ण द्रव्य पीसिकै स्वरसलेनेको अवपीडन कहते हैं ॥ १३ ॥ दूसरी छः अंगुल प्रमाण नली दो मुखकी बनाई एकपर तीक्ष्ण द्रव्यका चूर्णधरि नाकमें प्रवेशकरि दूसरे मुखमें मुँहलगाय फूँके उसे प्रधमनकहते हैं तीक्ष्णद्रव्य सोंठि, मिर्च व पीपरि इसे त्रिकुटा कहते हैं ॥१४॥ (रेचन वा स्नेहन नासयोग्य) ऊर्ध्वगत कहे भृकुटी, मस्तक, कपाल, दशमद्वार पर्यंत गतरोग कफ- जन्य, स्वरभंग, अरोचक, नाक टपकना, माथेकी पीड़ा, पीनस, सूजन, मृगी और कुष्ठ इनमें रेचन उचितहै स्त्री, दुर्बल व बालक इन्हें स्नेह उचित नहीं है ॥ १५ । १६ ॥ (अवपीडनयोग्य) कंठरोग, सन्निपात, निद्रा, विषमज्वर व मनोविकार इनमें

दीयते । चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्धितीक्ष्णतरंयतः १८ न
स्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यांपिप्पल्यासैन्धवेनच । जलपिष्टे
नतेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः १९ हनुमन्यागलोद्भूतान
श्यन्तिभुजपृष्ठजाः। मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्ध
वैः २० नस्यंकोष्णजलेपिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोधने । अप
स्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके२१ सैन्धवंश्वेतमरिचं
सर्षपाःकुष्ठमेवच। वस्तमूत्रेणपिष्टानिनस्यंतन्द्रानिवारण
म् २२ रोहीतमत्स्यपित्तेनभावितंसैन्धवंवचा। मरिचंपि
प्पलीशुण्ठीकङ्कोलंलशुनंपुरम्। कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्र
धमनंबुधैः २३ अथ बृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना।
मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदौस्नेहनेमतौ २४ मर्शस्यतर्प
णीमात्रामुख्यशाणैःस्मृताष्टभिः । मध्यमाचचतुःशाणै

अवपीड़न नासयोग्यहै ॥१७॥ (प्रधमन योग्य) मूर्च्छा, अपस्मार व संन्यासादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादि करि नासदेना॥१८॥ (अथ रेचन संज्ञकनस्य) गुड़ सोंठि औटिकै व अद्रकरस गुड़पोलि नासदे पीपरि व सेंधा औटिके दे तिससे नेत्र, कान, नाक, माथा॥ १९ ॥ ठोड़ी, कंध, गल, हाथ व पांय की पीड़ा अच्छीहोय (पुनःप्रकार) महुवे की छालका गाभा, पीपरि, बच, मिरच व सेंधानमक ॥ २० ॥ इन्हें पीसि तप्त जलसे नासदेय तौ मृगी, उन्माद सन्निपात व अपतन्त्र ये सब रोग मिटैं शरीर हलका हो बुद्धि सावधानहो तो जानना॥२१॥ (पुनस्तृतीय प्रकार) सेंधव,श्वेत मिरच,सरसों व कूट ये सब छाग मूत्रमें पीसि नास देने से तन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ॥२२॥(अथ प्रधमननस्य) सेंधव, बच, मिरच, पीपरि, सोंठि, कंकोल, लहसुन, गुग्गुल व कायफर इनका चूर्ण रोहू मछली के पित्तामें पुटदेइ एकनली के मुंहमेंधरि,दूसरा मुख नाक में प्रवेशि औषध की ओर से फूंकदेय तो तंद्रादि अचेतनरोग नाशहोयँ इस चूर्ण का प्रधमन नाम है ॥ २३ ॥ (अथ बृंहणनस्यविधान) बृंहणकहे धातुको पुष्ट करै व बढ़ावै इस बृंहणनास की मात्रा-बृंहणता के दो भेद हैं एकमर्श दूसरा प्रतिमर्श ये दोनों बृंहण हैं ॥ २४ ॥ इनके योग्य, मर्श में, तर्पणी नस्यकी मात्रा

नश्यन्तिरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रजाः ४१ वलीपलितनाश श्चबलमिन्द्रियजंभवेत् । बिभीतनिम्बकंभारीशिवाशेलु श्चकामिनी ४२ एकैकंतैलंनस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् । अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे । देशेवातरजोयुक्ते कृतदन्तनिघर्षणम् ४३ विशुद्धंधूमपानेन स्विन्नंभालंगलं तथा । उत्तानशायिनंकिञ्चित्प्रलम्बशिरसंनरम् ४४ आस्तीर्णहस्तपादंचवस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नमितनासाग्रंवैद्योनस्येनयोजयेत् ४५ कोष्णमच्छिन्नधारंचहेमतारादिशुक्तिभिः । शुक्त्यावापत्रशुक्त्यावाप्रोतैर्वानस्यमाचरेत् । नस्यन्त्रासिच्यमानेषशिरोनैवप्रकम्पयेत् ४६ नकुप्येन्नप्रभाषेतनोछिन्द्येन्नहसेत्तथा । एतर्हिविहितस्नेहोनैवान्तः सम्प्रपद्यते ४७ ततःकासप्रतिश्यायशिरोक्षिगदसम्भवः । शृङ्गाटकमभिव्याप्यस्थापयेन्नागिलेद्द्रवम् ४८ पञ्चसप्तदशैवस्युर्मात्रानस्यस्यधारणे । उपविश्याथनिष्ठीवेन्नासावक्त्रगतंद्रवम् ४९ वामदक्षिणपार्श्वाभ्यांनि

नास) बहेडा नीँब, संभारी, हड, लसोड़ा व कुटकुटकी ॥ ४१ । ४२ ॥ इनके बीजनका तेल भिन भिन्न चाहि नास देय तो बाल कारे होवैं (नस्यविधि) पवन व धूरि वर्जित स्थानमें मनुष्य दातूनकरि ॥ ४३ ॥ हुका पी गला मस्तक शुद्धकरि चामधें उतान्ना दौंके पीछे शिर झुकाय नाक ऊंची रहै ॥ ४४ ॥ हाथ पाव फैलाय कपड़े स आखेंढाकि नाकका अग्रभाग नवाय वैद्य नहीं धीरेसे एक एकओर नस्य देय ॥ ४५ ॥ (नस्य देने का पात्र) सोने, रूपे, तांबे वा सीसे का होय वा सींपीपत्र द्रोण वा कपड़ेकी पोटलीसे नासदेय नासलेनेवाला माथा न कँपावै ॥ ४६ ॥ क्रोध न करै बोले नहीं मारवी, मच्छड़ व खटकीरादि काटने न पावैं हसे नहीं ऐसे नस्यविना नस्यद्रव्य भीतर नहीं होगी ॥ ४७ ॥ ख्वासी खाजाती है तो खरावहो मस्तक में आखिन में कंठपीड़ा उत्पन्न करती है ॥ ४८ ॥ (नस्ये - साधारणप्रकार•) नास देनेसे शृगाटक में औषध प्रवेशनार्थ पाच वा सात वा दशमात्रा ताईं नास धारणकरे जब मुँहमें उतर आवै तब फेरपरे ॥ ४९ ॥ दाहिने

ष्ठीवेत्सम्मुखेनहि। नस्येनीतेमनस्तापं रजःक्रोधंचसन्त्य जेत् ५० शयीतनिद्रांत्यक्त्वाचउत्तानोवाक्शतंनरः। तथावैरेचनस्यान्तेधूमोवाकवलोहितः ५१ नस्येत्रीण्युप दिष्टानि लक्षणानिसमासतः। शुद्धहीनातियोगानिवि शेषाच्छास्त्रचिन्तकैः ५२ लाघवंमनसःशुद्धिं स्रोतसां व्याधिसंक्षयः। चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षण म् ५३ कण्डूपदेहौगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः। मूर्ध्निहीन विशुद्धेतुलक्षणंपरिकीर्त्तितम् ५४ मस्तलुङ्गागमोवात वृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः। शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढेवि रेचयेत् ५५ हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत्। स म्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येनिषेचयेत् ५६ कफप्रसकः शिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः। लक्षणंतदातिस्निग्धंरूक्षंतत्र प्रदापयेत् ५७ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्याचारिकमादि

थायें थूकदे सम्मुख उसके थूकने से औषध गिरजाती है शृंगाटक उसे कहते हैं जो नाकके दोनों छेद मीहतक पहुँच दो गलेको चलेगये हैं ॥ ५० ॥ एक दाहिनी एकबाईं भृकुटी के नीचेही कपाल को चलेगये हैं (नस्य बाउजल) नास लेकर संताप न करे धूलि, क्रोध, बैठना व निद्रा सौमाया ठाईं इनसे बचे उताना परारहै धुवां न पीवै थूक न लीलै ॥ ५१ ॥ (नस्यशुद्ध आदिभेद) नास विषे तीन लक्षण शास्त्रज्ञ कहतेहैं शुद्ध, हीन व अतियोग सो मैं संक्षेप से कहताहूं ॥ ५२ ॥ उत्तम शुद्धयोग भये से देह हलकी, मनशुद्ध, सुख, नाकरंध्र शुद्ध शिर रोगरहित चित्त इंद्रिय प्रसन्न ये शुद्धयोग के लक्षणहैं ॥ ५३ ॥ (हीनयोग) लघुयोग भये देह खुजली, गुरुत्व, मुख व नाकसे कफ गिरे ये हीनयोग के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥ (अतियोग लक्षण) मस्तक की मज्जा नाकसे गिरे वायु वृद्धि, इंद्रिय संभ्रम व माथा खाली ॥ ५५ ॥ (हीनशुद्धयोगयत्न) कफवायुहारक द्रव्यकी भलीभांति नास दे फिर घी की नासदेय ॥ ५६ ॥ (अतिस्निग्ध लक्षण) जो नस्यकर्म से स्निग्धता अधिक हो वौ कफ अधिक गिरै माथा भारी इंद्रिय भ्रम ऐसे मनुष्य को रूक्ष नासदेना ॥ ५७ ॥ (नासमें

शेत्। वमनंरेचनंनस्यंनिरूहमनुवासनम्। एतानिपंञ्च कर्माणिकथितानिमुनीश्वरैः ५८॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनस्यविधिरष्टमोऽध्यायः॥८॥

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा। रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूपनः १ शमनस्यतुपर्यायोमध्यः प्रायोगिकस्तथा। बृंहणस्यापिपर्यायोस्नेहनोमृदुरेवच २ रेचनस्यापिपर्यायोशोधनस्तीक्ष्णएवच। अधूमार्हाश्च खल्वेतेश्रान्तोभीरुश्चदुःखितः ३ दत्तवस्तिर्विरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा। पिपासितश्चदाहार्तस्तालुशोषीतथोदरी ४ शिरोभितापीतिमिरीछर्द्याध्मानप्रपीडितः। क्षतोरस्कःप्रमेहार्त्तःपाण्डुरोगीचगर्भिणी ५ रूक्षःक्षीणोभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः। भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा ६ अकालेचातिपीतश्चधूमःकुर्यादुपद्रवान्।

पथन) आभिप्यंधनकरे "दद्यादि भक्तम" इसमें सुष्ठु पूर्वोक्त आचार करे (पञ्चकर्म्म संख्या) वमन, विरेक, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासनवस्ति ये पंचकर्म मुनीश्वरों ने कहे हैं ॥ ५८ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुबोधकेउत्तरखण्डेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

(अथ धूमपानविधानम्) धूमपान छः प्रकारके हैं शमन, बृंहण, विरेचन, कासहा, वामन और व्रणधूपन ये छः प्रकार जानना ॥ १ ॥ (शमनादि धूमोंके पर्याय) शमन धूमपान की पर्याय संज्ञा मध्य और प्रायोगिक बृंहण पर्याय स्नेह और मृदु ॥ २ ॥ रेचन पर्याय शोधन और तीक्ष्ण धूम में अयोग्य थकित भयभीत दुःख पीड़ित ॥ ३ ॥ धूमसेवन अयोग्य प्राणी वस्तिक्रिया दस्त आते को रातिजागे को प्यासेको दाहसे पीडित को तालु उदर सूखनेवालेको ॥ ४ ॥ शिररोगी को तिमिररोगी को वमकी रोगीको आध्मानरोगी को पेट फूलने को उरःक्षतीको प्रमेही पाण्डुरोगीको गर्भिणी को ॥ ५ ॥ रूक्षको क्षीणको दूध, शहद, घृत स्वरस, मद्य, दही वा मछली इनके भोजन किये को बालक वृद्ध दुर्बल इनको धूमपान योग्य नहीं ॥ ६ ॥ और असमय धूमपान करने से उपद्रव उत्पन्न

तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनाञ्जनतर्पणम् ७ सर्पिरिक्षुरसंद्रा क्षापयोवाशर्कराम्बुवा । मधुराम्लौरसौवापिशमनायप्रदापयेत् ८ धूमश्चद्वादशाद्वर्षाद्ग्राह्यतेऽशीतिकान्नरः । कासश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ९ वातश्लेष्मविकारांश्च हन्याद्धूमःसुयोजितः । धूमोपयोगात्पुरुषः प्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनाः १० दृढकेशद्विजश्मश्रुसुगन्धवदनोभवेत् । धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्विका ११ कनिष्ठिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा । धूमनाडीभवेद्दीर्घा शमनेरोगिणोङ्गुलैः १२ चत्वारिंशन्मितैरतद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौस्मृता । तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मितैः १३ दशाङ्गुलैर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाडिका ॥ कलायमण्डलंस्थूलाकुलित्थागमरन्ध्रिका १४ अथोपिहांप्रलि

होते हैं (अकाले धूमपानादि कृत उपद्रव की चिकित्सा) धूमपानके भये उपद्रव में घी पिलावै नास देय अंजन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाखका यूष दे ॥ ७ ॥ घृत, ऊखरस, दाख, दूध, मिश्री व शक्कर घोलि खिलावै वा इनका रस शहद युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु वा खटमिट्ठा पदार्थ दे तो धूमउपद्रव शांतहो ॥ ८ ॥ (धूमपानावस्था समय) धूमसेवन बारह वर्ष से अस्सी वर्ष पर्यन्तके मनुष्य को करावै जो धूमपान अच्छा बनै तो श्वास, कास, नाक बहना, गले व माथे की पीडा ॥ ९ ॥ वात कफजन्य विकार सब दूर हों (धूमपानविषे उपयोगी की प्रकृति) अच्छे धूमपान भये चक्षुरादि इन्द्रिय व अन्तःकरण तथा वाणी ये प्रसन्न होती हैं ॥ १० ॥ और केश, दन्त व ठोढ़ी दृढहो धूमनाडी तीन खण्ड तीन पर्व की ॥ ११ ॥ छगुनिया सी मोटी मटरसाछेदहो दीर्घहो ॥ १२ ॥ शमनधूमपान की नली४०अंगुल लम्बी ले मृदुसंज्ञककी ३२ अंगुल लम्बी तीक्ष्णसंज्ञककी २४ अंगुल लम्बी कासघ्न की, १६ अंगुल लम्बी ॥ १३ ॥ वामनीसंज्ञक की १० अंगुल लम्बी और व्रण कहे घाव में धूनी देने की १० अंगुल की लम्बी परन्तु व्रणकी नली पूर्वोक्त नलियों से महीन हो और छेद कुलथी प्रवेश करने लायक रहे

न्पेत्रसङ्गलदणांद्वादशाङ्गुलम् । धूमद्रव्यंस्यकल्केनलेपश्चाष्टाङ्गुलःस्मृतः १५ कल्कंकर्षमितंलिप्त्वाछायाशुष्कं नकारयेत् । ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तांवर्तिमादरात् १६ अङ्गारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्यरन्धके । वदनेनपिवेद्धूमं वदनेनैवसन्त्यजेत् १७ नासिकाभ्यांततःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः।सरावसम्पुटेक्षिप्त्वाकल्कमङ्गारदीपितम् १८छिद्रेनेत्रंविवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् । एलादिकल्कंशमने स्निग्धंसर्जरसंमृदौ । १९ । रेचनेतीक्ष्णकल्कंचकासघ्नेक्षुद्रिकोषणम्।वामनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूमस्यपानकम्२० व्रणेनिम्बवचाद्यंचधूपनंसंप्रशस्यते। अन्येपिधूमगेहेषुकर्तव्यारोगशान्तये २१ मयूरपिच्छंनिम्बस्यपत्राणिबृहतीफलम् । मरिचंहिङ्गुमांसीचबीजंकार्पाससम्भवम् २२

तौ व्रण धूनित होवैगा ॥ १४ ॥ (धूमपानस्यैकविधानम्) द्वादश अंगुल की सींक छिलके समेत धूमद्रव्य कल्क चढाय छांह में सुखाय सींक निकारि चकला कल्क लिप्त रहिजाय ॥ १५ । १६ ॥ उसके छेदमें धूमचोरी महीन बत्ती मनेरा जलाय देय दूसरा छोर मुँह में ले धुवा खैंचे और मुँहसे धुवा छोडै ॥ १७ ॥ और बुद्धिमान् नाकसे पी मुँह से छोडै (धूनी विधान) दो सकोरे एक संपुट करै ऊपर छेदरहै उस छेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै तब दुमुहीं नलीले एक संपुटके छिद्रमें दूसरे मुँहसेव्रणपर धुवां देय (कल्कधूमद्रव्याणि) शमन धूमपान में एलादि गणका कल्क देय मृदु में घृतादि स्नेह राल मिलाय कल्ककारि देय ॥ १८ । १९ ॥ तीक्ष्णमें सरसों व मधु आदिकोंको कल्ककरि देय कास में मरिच भटकटैयादि कल्ककरि देय वमन हेतु चर्मादिका धुवादेना ॥ २० ॥ व्रण में नींब बचादि कल्ककरिदेय (वाग्भटोक्त एलादिगण) उभय इलायची, शिलारस, कूट, कसेरू मूल, मकरा, जटामांसी, खस, रोहिषतृण वा अगिया घास, कपूर, कचरी, खिरमानी, अजवायन, तज, तमालपत्र, तगर, मोथा, चमेली, केसर, सीपी, नागरमोथा, देवदारु, अगर, केसर, हिमाचमूल, गूगल, राल, कपूर, चम्पापुष्प ये एलादिगण हैं ॥ २१ ॥

छागरोमाहिनिर्मोकंविष्ठावैडालकीतथा। गजदन्तश्चतच्चूर्णंकिञ्चिद्घृतविमिश्रितम् २३ गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहाञ्जयेत्। पिशाचान्राक्षसाञ्जित्वासर्वज्वरहरंभवेत् २४ परिहारस्तुधूमेषुकार्योरेचननस्यवत्। नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलवंशादिजान्यपि २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेधूमपानविधिर्नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नैहिकःशमनस्तथा। शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितद्विधः १ स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवाते स्वादुशीतैःप्रसादनः। पित्तेकट्वम्ललवणैरूक्षैःसंशोधनःकफे २ कषायतिक्तमधुरैःकटूष्णोरोपणेव्रणे। चतुःप्रकारोगण्डूषःकवलश्चापिकीर्तितः ३ असञ्चारीमुखेपूर्णोगण्डूषाकवलश्चरः। तत्रद्रव्येणगण्डूषःकल्केनकवलःस्मृतः ४

(बालग्रह निवारण धूप) मोरपंख, निम्बपत्र, भटकटैया, मरिच, हींग जटामांसी, बिनयर ॥ २२ ॥ केचुरी, बिलारबीट और हाथीं दांत इन ग्यारहों के चूर्ण में घृत मिलाय ॥ २३ ॥ घर धूपित करने से सब बालग्रह पिशाच व राक्षसों के उपद्रव और इन सम्बन्धी सर्व ज्वर नाशहोयें ॥ २४ ॥ (धूमपान में परिहार) रेचन नस्य सदृश करना धुआं पीनेकी नली धातुमय या बांसकी में पिये ॥ २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

(गंडूष कवल व प्रतिसारणकी विधि) गंडूष ४ प्रकारके हैं स्नैहिक शमन, शोधन व रोपण योंहीं ४ प्रकार के कवल भी हैं ॥ १ ॥ (स्नैहिक गंडूष भेद) चिकना उष्ण पदार्थ स्नैहिकहै वायु प्रबलता में दीजै ठंढा पदार्थ शमन में पित्त विकार में कडुवा खट्टा लवण शोधन में कफ विकार में ॥ २ ॥ कषाय कटु मधुर तसक्कारि रोपण में देना व्रणादि में ऐसेही कवल में जानना ॥ ३ ॥ (गंडूष कवल रीति) जो गीला काढादि मुंहमें भरि खूब गुलगुलावै

१ द्रवपदार्थों से कुल्ले करनेका प्रकार ॥
२ पदार्थों को मुख में धर चबाने का प्रकार ॥

दद्याद्द्रवेषुचूर्णंचगण्डूषेकोलमात्रकम् । कर्षप्रमाणःक
ल्कश्चदीयतेकवलोबुधैः ५ धार्यन्तेपञ्चमाद्वर्षाद्गण्डूषकव
लादयः। गण्डूषात्सुस्थितःकुर्यात्स्विन्नभालगलादिकः६
मनुष्यस्त्रीस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात् । कफपूर्णास्य
तांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ७ नेत्रघ्राणस्रुतिर्यावत्तावद्ग
ण्डूषधारणम् । तिलकल्कोदकंक्षीरंस्नेहोवास्त्रैहिकेहितः
८ तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच । सक्षौद्रोहनुव
क्त्रस्थोगण्डूषोदाहनाशनः ९ वैशद्यंजनयत्यास्येसन्दधा
तिमुखव्रणान् । दाहतृष्णाप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम्१०
विषक्षाराग्निदग्धेचसर्पिर्धार्यंपयोथवा।तैलसैन्धवगण्डूषो
दन्तचालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यंगण्डूषःकाञ्जि
कोजयेत्।सिन्धुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितः १२त्रिफ

उसे गंडूष कहैं जो कल्ककारि मुँहमें धरि फेराकरै सो कवल है॥ ४ ॥ (उभयोर्द्रव्यप्रमाणम्) गंडूष के कार्यमें द्रव्य प्रमाण कोल कवल में कर्ष वर्षे देना ॥ ५ ॥ (गंडूष व कवलयोग्य अवस्था) पांचवर्ष के ऊपर सावधान करि रोगनिवारणार्थ कपाल, गला व मुख कुछ सेंक तीन वा पांच वा सात दोषनाशक गंडूष (कुल्ले) करै (पुनःप्रमाण) जो मुखमें कफ भरआवै वा तीनों दोष शान्तितक ॥ ६ । ७ ॥ वा नेत्र नाकसे जल टपकनेतक गंडूषकरै वातरोग स्नेह गंडूष तिलकल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध ये देना ॥ ८ ॥ (पित्त शमन-गंडूषम्) तिल, नीलकमल, घृत, खांड, दूध व शहद युक्त कुल्ले करने से पित्तजदाह ठोढी और मुखसे दूरहोय ॥ ९ ॥ (व्रणादि पर गंडूष) शहदके कुल्ले करनेसे मुख निर्मल, मुखमें घाव,दाह व प्यास ये उपद्रव दूरहों मुख शुद्धहो॥१०॥ (विषादिपर गंडूष) घृत वा दूध के कुल्ले करने से विष विकार चूने से फटा अग्निसे जरामुख अच्छाहो दांत हलनेपर तिल तैल सेंधव युक्त कुल्ले करने से दांत हलना दूर होताहै ॥ ११ ॥ (मुखशोषपर) मुख सूखना व फीका रहना कांजीके कुल्लेसे शांति होय (कफदोषपर) अदरख के रसमें सेंधव, त्रिकुटा व राई पीसि मिलाय कुल्ले करने से कफ दोष मिटजाता है ॥ १२ ॥

त्रामधुगण्डूषःकफासृक्पित्तनाशनः।दार्वीगुडूचीत्रिफला द्राक्षाजात्यश्चपल्लवाः १३ यवासश्चेतितत्क्वाथःषष्ठांशः क्षौद्रसंयुतः। शीतोमुखेधृतोहन्यान्मुखपाकंत्रिदोषजित् १४यस्यौषधस्यगण्डूषस्तस्यैवप्रतिसारणम्।कवलश्चापितस्यैवदेयोऽत्रकुशलैर्नरैः। केसरंमातुलुङ्गस्यसैन्धवव्योषसंयुतम् १५ हन्यात्कवलतोजाड्यमरुचिंकफवातजाम्।कल्कोवलेहश्चूर्णंचत्रिविधंप्रतिसारणम् १६ अङ्गुल्यग्रगृहीतंचयथास्वंमुखरोगिणाम्। कुष्ठंदार्वीसमङ्गाचपाठातिक्ताचपीतिका १७ तेजनीमुस्तलोध्रंचचूर्णंस्यात् प्रतिसारणम्। रक्तस्रुतिदन्तपीडांशोथंदाहंचनाशयेत् १८ हीनयोगात्कफोत्क्लेशोरसाज्ञानारुचीतथा। अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णाक्लमोभवेत् १९ व्याधेरवचय

(कफ रक्तपित्तपर) त्रिफला चूर्ण शहद में डारि कुल्ला करनेसे कफ, रक्त पित्त दोष मुखमें न रहै (मुखरोगपर) दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दाख, चमेली ॥ १३ ॥ और जवासा ये समान भागलेक्वाथकरि छठवा भाग शहददे ठंढे कुल्ले करनेसे त्रिदोष मुखपाक मिटताहै ॥ १४ ॥ गंडूष करनेवाली द्रव्य प्रतिसारण (मंजन) और कवल भी कुशली जनों को जानना चाहिये (कवल विधान) केसर, बिजौरा सूंठी, सैंधव व त्रिकुटा ॥ १५ ॥ इन सबका कौर बनाय मुख में त्रिलोवै तौ मुख की कठोरता और कफ व वात की अरुचि दूर हो (प्रतिसारण प्रकार) प्रतिसारण में तीन प्रकार औषध देनेकेहैं कल्क, अवलेह व चूर्ण ॥ १६ ॥ जैसा मुख में दोष देखै वैसी औषध अंगुली के अग्रभाग से मुखके भीतर मलै (प्रतिसारण चूर्ण) कूट, दारुहल्दी, धवपुष्प, पाढा, कुटकी, हल्दी ॥ १७ ॥ तेजबल, नागरमोथा व लोध इनका चूर्ण जीभ और दांत की जड में वा सार मल गिरावै इस प्रतिसारण से दांतपीडा, रक्त गिरना, मसूढा सूजन और दाह ये रोग दूरहोवें ॥ १८ ॥ (गण्डूषादि हीन धूकभये से उपद्रव के लक्षण) हीन भये कफ अधिक, स्वाद अज्ञानता होती है अरु से अरुचि, अतियोग से मुख पकना, पिड़िकी होना, मुखशोष,

स्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम्। इन्द्रियाणांप्रसादश्चगण्डूषैः शुद्धिलक्षणम् २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेगण्डूषादिविधिर्दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

आलेपकस्यनामानिलिप्तोलेपश्चलेपनम्। दोषघ्नो विषहावर्ण्योमुखलेपस्त्रिधामतः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भाग स्त्रिभागार्द्धाङ्गुलोन्नतः। आर्द्रोव्याधिहरःस्याच्छुष्को दूषयतिच्छविम् २ पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थशिग्रुमेव च। पिष्टांचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा ३ विभीतफल मज्जाक्तलेपोदाहार्तिनाशनः। शिरीषंमधुयष्टींचतगरंर क्तचन्दनम् ४ एलामांसीनिशायुग्मंकुष्ठंबालकमेवच। इ तिसंचूर्ण्यलेपोयंपञ्चमांशघृतप्लुतः ५ जलेनक्रियतेसुद्धै र्दशाङ्गइतिसंज्ञितः। विसर्पान्विषविस्फोटाञ्छोथान्दुष्टव्र

प्यास व ग्लानि ये उपद्रव होते हैं ॥ १९ ॥ (सम्यक् गण्डूष लक्षण) मुख व्याधिनाश, चित्त प्रसन्न, मुख निर्मल, हलका व इन्द्रियों की प्रसन्नता ये लक्षण होते हैं ॥ २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

(अथ लेपविधानम्) लेपके तीन नामहैं, लिप्त, लेप व लेपन लेपदोषघ्न व विषघ्न होकर वर्ण्यभदहै ॥ १ ॥ मुखलेप तीन प्रकारका है उसका प्रमाण तीन भांति है जो अंगुलभर मोटा लेपहो सो दोषघ्न है, पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावै सो विषघ्न है, अर्द्धांगुललेप वर्ण्य है ऐसे तीन प्रमाण हैं ओदालेप रोगहर्ता है सूखा कांतिहर्ता है ॥ २ ॥ (दोषघ्न लेप) गदापुर्ना, देवदारु, सोंठ, सफेद सरसों और सहिंजने की छाल ये पांचों समान भागले कांजी में पीसि सूजन पर लेपनकरै तौ सूजन दूरहोगी ॥ ३ ॥ बहेडे की मींगीके लेपसे दाह व पीड़ा नाशहो (दशांगलेप) सिरस की छाल, मुलेठी, तगर, लालचन्दन ॥ ४ ॥ इलायची, जटामासी, हल्दी, दारुहल्दी, कूट और नेत्रवाला ये दशौ सममाग चूर्णकरि पंचमांश घृत मिलाय ॥ ५ ॥ पानीमें पीसि लेपकरनेसे विसर्प, विषदोष, विस्फोटक, सूजन व दुष्ट फोड़ा ये सब नाशहों इसका दशांगलेप

पाञ्जयेत् ६ अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः । शोथमारुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ७ लाङ्गल्यतिविषालावृजाखिनीमूलबीजकैः । लेपोधान्याम्बुसम्पिष्टःकीटविस्फोटनाशनः ८ रक्तचन्दनमञ्जिष्ठालोध्रंकुष्ठप्रियङ्गवः । वटाङ्कुरामसूराश्चव्यङ्गघ्नामुखकान्तिदाः ९ मातुलुङ्गजटासर्पिःशिलागोशकृतोरसः । मुखकान्तिकरोलेपःपिटिकाव्यङ्गकीलजित् १० लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटिकापहः । तद्वद्गोरोचनायुक्तम्मरिचंमुखलेपनात् ११ सिद्धार्थकवचालोध्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । व्यङ्गेषुचार्जुनत्वग्वामञ्जिष्ठावासमाक्षिका १२ लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्वखुरजामषी । अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाविलेपनात् १३

नामहै ॥ ६ ॥ (विषघ्नलेप) बकरीके दूधमें तिलोंको पीसि माखनयुक्त लेप करै वा कारीमाटी व तिलका लेपकरै तो विषसंभव सूजन व भिलावेंं सूजन दूर होय॥ ७ ॥ (पुनर्लेप) कलिहारी, अतीस, कड़ुदूध या कड़ुतुरई पूरी तीनों के बीज पांचों के समान कांजी में पीसिकै कीटदंश व विस्फोट पर लगाने से रोग मिटते हैं ॥ ८ ॥ (कांतिकारकलेप) रक्तचन्दन, मँजीठ, लोध, कूट, मालकंगनी, वटांकुर व मसूर ये सब समान भागले जलमें पीसि लेपकरै व्यंग (झांई) रोग मिटै व कांतिबढ़ै ॥९॥ (पुनः) बीजपूर की जड़.घृत, मैनशिल, गोबरका रस मिलाय लेपै कांति बढ़ै मुहाँ और झाईरोग ये सब दूरहोयँ ॥ १० ॥ (तारुण्यपिटिका (मुहांसे) पर लेप) जो तरुण मनुष्य के मुँहपर छोटी २ पिड़िकी उभरें यह तारुण्यपिटिकाह (लेप) लोध, धनियां और बच ये तीनों समभाग लै पीसि लेपकरै तथा गोरोचन व कालीमिर्च पानी में पीसि लगावै ॥ ११ ॥ अथवा सरसों, बच, लोध और सेंधव ये समभाग ले जलमें पीसिले ये तीनप्रकार के लेपहैं इनके लगाने से मुँहपर की तरुणपन की पिटिका अच्छी होयँ (व्यंग रोगपर लेप)अर्जुनवृक्ष की छाल वा मँजीठ वा श्वेत घोड़ेके नखकी भस्म इन तीनों में से कोई द्रव्य शहद संयुक्त लेपकरै तो व्यंगरोग मिटै (मुखपर की झांईपर लेप) मदार के दूध में हल्दी को घिस लगावै ॥ १२ । १३ ॥

मुखकाण्र्यंशमंयाति चिरकालोद्भवंध्रुवम् । वटस्यपाण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् १४ कुष्ठंकालीयकंलोध्रमेभिर्लेपंप्रयोजयेत् । तारुण्यपिटिकाव्यङ्गनीलिकादिविनाशनम् १५ पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच । मूत्रपिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रंहन्यादरुंषिकाम् १६ खदिरारिष्टजम्बूनांत्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः । कुटजत्वक्सैन्धवंवालेपोहन्यादरुंषिकाम् १७ प्रियालबीजमधुककुष्ठमाषैःससैन्धवैः । कायोंदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः १८ दुग्धेनखाखसंबीजंप्रलेपाद्दारुणंजयेत् । आम्रबीजस्यचूर्णंतुशिवाचूर्णंसमंद्वयम् १९ दुग्धपिष्टःप्रलेपोयंदारुणंहन्तिदारुणम् । रसस्तिक्तपटोलस्यपत्राणांतद्विलेपनात् २० इन्द्रलुप्तंशमंयातित्रिभिरेवदिनैर्ध्रुवम् । इन्द्रलुप्तापहोलेपोमधुनाबृहतीरसः २१ गुञ्जामूलफलंवापिभल्लातकरसोपिवा । गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येनमधुसर्पिषा २२ शिरःप्रलेप

तो बहुत दिनकी भई मुखपरकी झाई निश्चय दूरहोयँ (तारुण्य पिटिकापर लेप) बटके पीलेपत्ते, चमेली, रक्तचन्दन ॥ १४ ॥ कूट, दारुहल्दी और लोध इन सबोंको एक में पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग (झाई) दूरहोयँ ॥ १५ ॥ (रूखी पर लेप) पुराने तिलोंकी खली व कुक्कुट (मुर्गा) की बीट दोनों गोमूत्र में पीसि लेपकरै रूखी दूरहोय ॥ १६ ॥ (पुनःप्रकार) खैर, नींब व जामुन इन तीनोंकी छाल गोमूत्रमें पीसि लेपकरै रूखी नाशहोय (दारुणरोग पर लेप) चिरौंजी, मुलेठी, कूट उड़द और सेंधव ये पांचों समानभागले पीसि शहदयुक्त लेपकरै दारुणरोग मिटै ॥ १७ । १८ ॥ (पुनर्लेप) खसखस पीस दूधमें लेपकरै वा आमकी मिजुरी छोटीहड़ ॥ १९ ॥ दूधमें पीसिलेपै तो दारुणरोग नाशहोय (इन्द्रलुप्त पर लेप) कड़ुवे परवलकी पत्तीका रस तीन दिनलेपै तो बादखोरा दूरहो (पुनः) भटकटैया और शहदका लेपकरै ॥ २० । २१ ॥ घुंघुचीकी जड़ वा फलके रसका शहदके साथ लेपकरै वा भिलावेंका रस शहदके साथ लेपकरने से बादखोरा दूर हो (केशवर्द्धन लेप) गुखुरू व तिलपुष्प

नंतेनकेशसंवर्द्धनंपरम्।हस्तिदन्तमषींकृत्वाछागीदुग्धंर
साञ्जनम् २३ रोमाणितेनजायन्तेलेपात्पाणितलेष्वपि।
यष्टीन्दीवरमृद्वीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः २४ इन्द्रलुप्तःशमं
यातिकेशाःस्युःसघनादृढाः। चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृ
ङ्गास्थिभस्मभिः २५ तैलेनसहलेपोयंरोमसञ्जननःपरः।
इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् २६ प्रत्यहंतेन
कालाग्निसन्निभाःकुन्तलाह्यलम्। अयोरजोभृङ्गराजत्रि
फलाकृष्णमृत्तिका २७ स्थितमिक्षुरसेमासंलेपनात्पलि
तंजयेत्।धात्रीफलत्रयंपथ्येद्वेतथैकंविभीतकम्२८पञ्चा
म्रमज्जालोहस्यकर्षैकंचप्रदीयते।पिष्ट्वालोहमयेभाण्डेस्था
पयेदुषितंनिशि २९ लेपोयंहन्तिनचिरादकालपलितंमह
त्। त्रिफलानीलिकापत्रंलोहंभृङ्गरजःसमम् ३० अजा
मूत्रेणसम्पिष्टंलेपात्कृष्णीकरंस्मृतम्।त्रिफलालोहचूर्णंच

इनका समान चूर्ण करिके समान घृत व शहद में फेंटि ॥ २२ ॥ लगावै तो बालयाँई बालजमे पर हाथीदातको जलाय रसौत और बकरीके दूधमें पीसिलेप करै ॥ २३ ॥ जहां बाल न हों यथा हथेली में तौ भारजगें और अङ्गमें क्यों न जमेंगे (रसौतविधि) निरूहण बस्तिमें कही है (इंद्रलुप्तपर लेप) मुलेठी, कमल व दाखको तिलतेल, घृत व गऊके दूधमें पीसि लेपकरै ॥ २४ ॥ बादखोरा दूरहोय बाल सघनहों (पुनः) चतुष्पद जीवोंकी चर्म, रोम, नख, सींग और हाड़ इनकी भस्म ॥ २५ ॥ तिल तेलमें फेंटि लेपकरै तौ नष्ट बाल जामैं (केश कृष्णीकरण) इंद्रायनके बीजका तेल पाताल यंत्रसे निकारि सफेदबालों में लगावै तो काले होजावैं (पुनः) लोह, चून, भंगरा, त्रिफला, काली माटी ये छवों समान चूर्ण करि ॥ २६ । २७ ॥ उख्ख रस में सानि मास भर राखि कुछ दिनोंमें लेपकरै तौ अकालके श्वेतबाल काले होवैं (तृतीयः) आंवरा तीन बहेड़ा दो ॥ २८ ॥ आमकी गिठुली पांच लोहचून एक कर्ष ये सब कढ़ाही में अतिसूक्ष्म घोटै उसी में दिन रात रहने दे ॥ २९ ॥ फिर लेपकरै तौ श्वेत केश काले हों (चतुर्थः) त्रिफला, नीलपत्र, लोह

दाडिमत्वग्विसंतथा ३१ प्रत्येकंपञ्चपलिकंचूर्णंकुर्याद्वि चक्षणः। भृङ्गराजरसस्यापिप्रस्थषट्कंप्रदापयेत् ३२ मासमेकंततःकुर्याच्छागीदुग्धेनलेपनम्। कूर्चेशिरसिरा त्रौचसंवेष्ट्येरण्डपत्रकैः ३३ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्यात्स्ना नंतेनप्रजायते। पलितस्यविनाशश्चत्रिभिर्लेपैर्नसंशयः ३४ शङ्खचूर्णस्यभागौद्वौहरितालञ्चभागिकम्। मनः शिलाचार्द्धभागास्वर्जिकाचैकभागिका ३५ लेपोयंवारि पिष्टस्तुकेशानुत्पाट्यदीयते। अनयालेपयुक्त्याचसप्तवे लंप्रयुक्तया ३६ निर्मूलंकेशस्थानंस्यात्क्षपणस्यशिरोय था। तालकंशाणयुग्मंस्यात्षट्शाणंशङ्खचूर्णकम् ३७ द्विशाणिकंपलाशस्यक्षारंदत्त्वाप्रमर्दयेत्। कदलीदण्डतो येनरविपत्ररसेनवा ३८ अस्यापिसप्तभिर्लेपैर्लोमशातन

चून और भंगरा ये सम भागले ॥ ३० ॥ बकरी के मूत्रमें पीसि पकेबालों पर लगाये तो काले होयँ (पंचमलेप) त्रिफला, लोहचून, अनारकी छाल और कमलका कन्द ॥ ३१ ॥ ये पांचों औषध पांच पल और भंगरेका रस छः प्रस्थ निचोरि पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि लोहेकी कड़ाही में सूक्ष्म करि घोटे ॥ ३२ ॥ एक मासभरि राखै तिस पीछे निकारि बकरी के दूधमें घिस श्वेत बालोंपर लेपकरै और ऊपर से रेंडके पत्ता बांधै ॥ ३३ ॥ रातिभरि बांधेरहै प्रभात स्नान करते समय धोय डारै योंही तीन दिन लेप करने से सफेद बाल काले होयँ ॥ ३४ ॥ (अथ लोमशातन प्रकार बाल गिरानेका लेप) शंखचूर्ण दोभाग, हरताल एक भाग, मैनशिल अर्द्धभाग, सज्जी एक भाग ॥ ३५ ॥ ये सब दवाई पानी में पीसि जहांके बाल गिराने मंजूरहों वहां लेप करै बाकी बालोंको कपड़े से ढका राखै लेप के पहिले बाल दूर करिकै तब उस ठौरमें यह लेप सातबार करै ॥ ३६ ॥ सब बाल गिरैं फिर न होयँ जैसे बाल बनाये पर यह रोमशातन अतिउत्तम है (पुनः) हरताल दो शाण, शंखचूर्ण छःशाण ॥ ३७ ॥ पलाशक्षार दोदो शाण केले के दण्डके पानी में वा आकपत्र के रसमें पीसि ॥ ३८ ॥ सातबार लेप करने से बाल गिरजायँ बाल

मुत्तमम् । सुवर्णपुष्पीकासीसं विडङ्गानिमनःशिलाः ३९ रोचनासैन्धवंचैवलेपनाच्छ्वित्रनाशनम् । वायस्येडगजाकुष्ठकृष्णाभिर्गुटिकाकृता ४० वस्तमूत्रेणसम्पिष्टाप्रलेपाच्छ्वित्रनाशिनी । बाकुचीवेतसोलाक्षाकाकोदुम्बरिकाकृणा ४१ रसाञ्जनमयश्चूर्णीतिलाःकृष्णास्तदेकतः । चूर्णयित्वागवांपित्तैःपिष्ट्वाचगुटिकाकृता ४२ अस्याःप्रलेपाच्छ्वित्राणिप्रणश्यन्त्यतिवेगतः । धात्रीसर्जरसश्चैवयवक्षारश्चचूर्णितः ४३सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मनाशने । दार्वीमूलकबीजानि तालकंसुरदारुच ४४ ताम्बूलपत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् । शङ्खचूर्णंशाणमात्रंसर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ४५ लेपोयंवारिणापिष्टःसिध्मनाशकरःपरः । हरीतकीसैन्धवंचगैरिकंचरसाञ्जनम् ४६ बिडालकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहः।रसाञ्जनंव्योषयुतंसम्पि

गिराने को यह लेप उत्तम है (सफेद कुष्ठपर लेप) पीली चमेली, गजपीपरि, कसीस, विडंग, मैनशिल ॥ ३९ ॥ गोरोचन, सैंधव इनों समभाग गोमूत्र में पीसि लेप करै श्वेत कुष्ठ दूरहोय (पुनः) कौवाठोढी, कूट और पीपरि ये सब समान भागले ॥४०॥ सभी (बकरे) के मूत्र में पीसि लेपकरे श्वेत कुष्ठ दूरहोय (तीसरा) बकुची, अमलवेतस, लाख, कठगुलरी, पीपरि ॥ ४१ ॥ रसौत लोहचून, काले तिल आठों समभाग गोपित्तमें पीसि लेपकरै ॥ ४२ ॥ तो श्वेत कुष्ठ अतिशीघ्र दूरहोय (सेहुआं परलेप) आंवरा, राल व जवाखार ये तीन ॥ ४३ ॥ सौवीर वा कांजी में पीसि लेप करै सेहुआं दूरहोय "सौवीर और कांजी का विधान रेचनाध्याय से जानना" (पुनः) दारुहल्दी, मूरी के बीज, हरताल, देवदारु ॥ ४४ ॥ और पान ये सब कर्ष कर्षः भर शंख चूर्ण शाणभर सब ॥ ४५ ॥ पानी में पीसि लेपकरै सिध्म जो सेहुआं सो दूर होय (नेत्रलेप) हड़, सेंधव, गेरू और रसौंत ये चारों समान भागले ॥ ४६ ॥ पानी में पीसि पलकपर लेपकरै तो सर्व नेत्ररोग दूरहोवैं, (पुनः) रसौत, सोंठ, मिर्च और पीपरि ये चारों समान भाग ले पानी में पीसि गोली

लानांचमूलैःकुर्यात्प्रलेपनम् ६२ शिरोर्त्तिंपित्तजांहन्या
द्रक्तपित्तरुजंतथा । हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागुरुदारु
भिः ६३ मांसीरास्नोरुबूकैश्चकोष्णोलेपःकफार्तिनुत् ।
शुण्ठीकुष्ठप्रपुन्नाटदेवकाष्ठैःसरोहिषैः ६४ मूत्रपिष्टैःसुखो
ष्णैश्चलेपःश्लेष्मशिरोर्त्तिनुत् । सारिवाकुष्ठमधुकवचाकृ
ष्णोत्पलैस्तथा ६५ लेपस्सकाञ्जिकस्नेहःसूर्यावर्त्तार्द्धभेद
के । वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णाःपुनर्नवाः ६६ शङ्खके
नन्तवातेचलेपःसर्वशिरोर्त्तिजित् । अथलेपविधिश्चान्यः
प्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः ६७ द्वौतस्यकथितौभेदौप्रलेपाख्यप्र
देहकौ । चर्मार्द्रमाहिषंयद्वत्प्रोन्नतंसमितिस्तयोः ६८ शीत
स्तनुर्विशोषीचप्रलेपःपरिकीर्त्तितः । आर्द्रोघनस्तथोष्णः

दूबकी जड़, खस और नरकट की जड़ ये नवों द्रव्य समान भाग ले पानी में पीसि माथेपर लेप कियेसे ॥ ६२ ॥ पित्तसम्बन्धी और रक्त पित्त सम्बन्धी मस्तक पीड़ा दूरहो । कफसम्बन्ध शिरपीड़ापर) मेवड़ी बीज, तगर, बाल-छड़, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु ॥ ६३ ॥ जटामांसी, रासन और रण्डमूल ये दश द्रव्य पानी में पीसि गरम करि माथे पर लेपै तौ कफसम्बन्धी पीड़ा दूरहो (पुनः) सोंठ, कूट, चकौंड़ा बीज, देवदारु, रोहिष बिना अगिया घर ये पांचों द्रव्य समान भागले ॥ ६४ ॥ गोमूत्र में पीसि सुखोष्ण माथेपर लेपेसे कफजन्य पीड़ा दूरहो (सूर्यावर्त्त आधाशीशी पर) सारिवन, कूट, मुलेठी, वच, पीपरि और नीलकमल ॥ ६५ ॥ ये कांजी में पीसि रण्डतेलयुक्त लेप कियेसे सूर्यावर्त्त (आधाशीशी) दूरहो (शंखक अनन्तवात सर्व शिरोरोग पर) विदारीकन्द, नीलकमल, दूब, कारे तिल और गदापुरैना ये पांचों समान भागले पानीमें पीसि ॥ ६६ ॥ लेप किये से शंखक अनन्तवात व सब शिरपीड़ा मिटे पुनर्विधान) ज्ञानी वैद्योंकी सम्मतिसे लेपका दूसरा विधान कहाजाता है ॥ ६७ ॥ (एक प्रलेपाख्य दूसरा प्रदेहक इनकी ऊँचाई का प्रमाण) ये दोनों लेप भैंसेके गीले चमड़े की मुटाईकी तरह रहैं तो गुणदायक हैं ॥ ६८ ॥ शीतवीर्य सूक्ष्मप्रदेश बाधारहित है और घनाप्रलेप

स्यात्प्रलेपःश्लेष्मवातहा ६९ रोमाभिमुखमादेयोप्रलेपा
ऽप्यप्रदेहकौ । वीर्यमभ्यविंशत्याशुरोमकूपैःशिरामुखैः
७० नरात्रौलेपनंकुर्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् । शुष्यमाणमु
पेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति ७१ तमसापिहितोह्यूष्मारोमकूप
मुखेस्थितः । विनालेपेननिर्यातिरात्रौनलेपयेत्ततः ७२
रात्रावपिप्रलेपादिर्विधिःकार्योविचक्षणैः । अपाकिशोथेग
म्भीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ७३ आदौशोथहरालेपोद्वितीयो
रक्तसेचनः । तृतीयश्चोपनाहःस्याच्चतुर्थःपाटनक्रमः ७४
पञ्चमःशोधनोभूयात्षष्ठोरोपणइष्यते । सप्तमोवर्णकरणो
व्रणस्यैतेक्रमामताः ७५ बीजपूरजटामांसीदेवदारुमहौष
धम् । रास्नाग्निमन्थोलेपोयंवातशोथविनाशनः ७६ म
धुकंचन्दनंमूर्वानलमूलंचपद्मकम् । उशीरंवालकंपद्मं

जानो उष्णप्रदेहक कफ व वात को हरता है ॥ ६९ ॥ ये दोनों लेप रोम दूर करायके लगावे रोम दूर होनेसे रोममुख खुलके अच्छीतरह से लेप गुण प्रवेश करताहै ॥ ७० ॥ (लेपमें निषेध) रातको लेप न करै और बारका लेप सूखै न पावै क्योंकि सूखने से रोम उचरैं तौ देह में अधिक पीड़ा करै ॥ ७१ ॥ (रात्रिलेप निषेधकारण) रात्रिको तम वेगसे शरीर की उष्णता ऊपर रोम मुखपर आय रहती है विना लेप निकर जाती है इस कारण रात्रिको लेप न करै ॥ ७२ ॥ (रात्रिके लेपकी विधि) रात्रिको लेप चतुर वैद्य निश्चय करै जहां व्रण चिरकाल तक पकता नहीं और गम्भीर शोथहो वा रक्त कफ सम्भव हो ॥ ७३ ॥ (व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपक्रम) प्रथम लेप सूजन दूर करने को दूसरा जगह में रुधिर को यथास्थान में निकला के फैलाने को तीसरा व्रणपर की खाल को मृदु और पतली करने को चौथा व्रण फोर के बहाने को ॥ ७४ ॥ पांचवां शुद्ध करनेको जो पीब न बाकी रहै छठवां पूरने को सातवां घाव के चर्मको शरीर की रंगति करने को जो पीर न रहै ॥ ७५ ॥ (व्रणमें वातशोथनिवारणलेप) बिजौरामूल, जटामांसी, देवदारु, सोंठ, रासन और अरणीमूल ये सब समान, भांगके पानी में पीसि लेपकरे वातशोथ शान्त हो ॥ ७६ ॥ (पित्तशोथ पर) मुलैठी, रक्तचन्दन, मूर्वा, नरसलकी

पित्तशोथेप्रलेपनम् ७७ कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्व क्पिकताशिवा। मूत्रपिष्टःसुखोष्णोयंप्रदेहःश्लेष्मशोथ हृत् ७८ द्वेनिशेचन्दनेद्वेचशिवादूर्वापुनर्नवा। उशीरंपद्म कंलोध्रंगैरिकञ्चरसाञ्जनम् ७९ आगन्तुकेरक्तजेचशोथे कुर्यात्प्रलेपनम्। शणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः ८० सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः। दन्तीचित्र कमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसीगुडः ८१ भल्लातकश्चकाशीश सैन्धवंदारणेस्मृतः। चिरविल्वोग्निकोदन्तीचित्रकोहय मारकः ८२ कपोतकङ्कगृध्राणांमलंलेपेनदारणम्। स्वर्जि कायावशूकाढ्याःक्षारालेपेनदारणाः ८३ हेमक्षीर्यास्तथा लेपोव्रणेपरमदारणः ८४ तिलसैन्धवयष्ट्याह्वनिम्बपत्रानि

जड़,पद्माक,खस,नेत्रबाला और कमल ये आठों समानभागले पानी में पीसि लेप करें तो पित्तशोथ दूरहो ॥ ७७ ॥ (कफशोथपर लेप) पीपरि, पीना, सहिं-जनेकी छाल, पालू वा खांड़ और हड़ इन पांचोंको गोमूत्रमें पीसि गुनगुना लेप करे यह प्रदेह संज्ञक लेप कफशोथको दूर करता है ॥ ७८ ॥ (आगन्तुक और रक्तशोथपर लेप) हल्दी, दारुहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन हड़,दूब, गदापुरैना, खस, पद्माक, लोध, गेरू और रसौंत ये सरसमभागले पानीमें पीसि ॥ ७९ ॥ लेप करने से आगन्तुक और रक्तशोथ दूरहो (व्रणपकाने पर लेप) सनकी जड़, मूली, सहिंजने के बीज, तिल, सरसों ॥ ८० ॥ सत्तू, जोहकीट, अलसी के बीज ये आठों समानले पानीमें पीसि प्रदेह संज्ञक लेपसे व्रणपकैगा (व्रण फोरनेपर लेप) जमालगोटा,चीताकी जड वा छाल—सेहुँड़ व मदारका दूध, गुड़ ॥ ८१ ॥ भिलावां, कसीस और सेंधव ये औषध दोनों दूधमें पीसि व्रणपर लेपकरनेसे फूटै (पुनः) करंजमींगी, भिलावां, दन्तीकीजड़,चीताछाल कनेरकी जड ये पाचों चूर्णकरे ॥ ८२ ॥ तथा कबूतर सफेद चील वा गिद्धके बीटमें समान मिलाय लेपकरे फोड़ा फूटै (तीसरा लेप) सज्जी व जवाखार इन दोनोंका लेपकरै ॥ ८३ ॥ अथवा हेमक्षीरी (चोककी) जड़की छालका लेप करै फोड़ा फोड़नेमें बहुत प्रबलहै ॥ ८४ ॥ (व्रणशोधन लेप) तिल, सेंधव, मुलेठी, नींबपत्र, हल्दी, दारुहल्दी और निसोथ ये सब समभागले चूर्ण

शायुगैः। तद्वद्घृतयुतैःपिष्टैःप्रलेपोव्रणशोधनः ८५ नि
म्बपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुतः। तिलैश्चसहसंयुक्तोले
पःशोधनरोपणः ८६ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोहन्याद्व्र
णकृमीन्।लशुनस्याथवालेपोहिङ्गुनिंबमथोथवा८७ नि
म्बपत्रंतिलादन्तीत्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम्। दुष्टव्रणप्रशम
नोलेपःशोधनरोपणः८८ मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकाञ्जि
कवारिणा। कोष्णंकुर्यान्नाभिलेपंशूलशान्तिर्भवेत्ततः ८९
शिग्रुशेफालिकैरण्डयवगोधूममुद्गकैः। सुखोष्णोबहुलोले
पःप्रयोज्योवातविद्रधौ९० पैत्तिकेसर्पिषालाजमधुकैःशर्क
रान्वितैः। प्रलिम्पेत्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचन्दनैः९१ इ
ष्टिकासिकतालोहकिट्टगोशकृतासहासुखोष्णश्चप्रदेहोयं

करि घीमें पेपि फूटे फोड़ेपर लगावे वा इनके कल्क की टिकिया बनाय घीमें छोड़ जलावे जब टिकिया जलजाय तब उतार घी राखिछांड़ै टिकिया फेंकि देय ये दोनों प्रकार व्रण शुद्धकरै ॥ ८५ ॥ (व्रणशोधन व रोपणपर लेप) नींबपत्र, घृत, शहद, दारुहल्दी, मुलेठी, तिल इन सबको पीसि के लेप किये ते व्रण शुद्ध होके पूरआताहै ॥ ८६ ॥ (कृमिनिवारण लेप) करंज, नींब और बकायन इन तीनों को पीसि कृमि के स्थान में भरै तौ कृमि मरजायँ वा लहसुन वा हींग पीसिभरै वा हींग वा नींबपत्र भरै तौ कृमिनाशैं ॥ ८७ ॥ (व्रण शोधन व रोपण पर लेप) नींबपत्र, तिल, दन्तीकी जड़ और सेंधव ये सब समान पीसि शहदयुक्त लेप किये ते व्रण शुद्ध होके पूरि आवै ॥ ८८ ॥ (पेट पीर पर नाभिलेपन) मैनफल व कुटकी इन दोनों को कांजी में पीसि कुछ गरम करि नाभिपर लेप किये से पेटशूल मिटता है ॥ ८९ ॥ (वातविद्रधि पर) सहिंजने की छाल बकायनपत्र, रेंडमूल, यव, गेहूं और मूंग ये सब पीसि सुखोष्ण लेप करेसे वातविद्रधि दूरहोती है ॥ ९० ॥ (पित्तविद्रधिपर) लावा, मुलेठी व शक्करको घीमें लेपकरेसे वा असगंध, खस और रक्तचंदनको दूधमें पीसि लेपकरै से पित्तविद्रधि दूरहो ॥ ९१ ॥ (कफविद्रधि पर) ईंट, बालू, लोह, कीट और गोबर इनचारोंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरै इस प्रदेह लेपसे कफविद्रधि-

सूत्रैःस्याच्छेष्मविद्रधौ ९२ रक्तचन्दनमञ्जिष्ठानिशामधुकगैरिकैः।क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागन्तुनिमित्तजे ९३ निचुलःशिग्रुबीजानिदशमूलमथापिवा ।प्रदेहोवातगण्डेषुसुखोष्णःसंप्रदीयते ९४ देवदारुविशालेचकफगण्डेप्रलेपयेत् ।सर्षपारिष्टपत्राणिदग्ध्वाभल्लातकैःसह ९५ छागमूत्रेणसम्पिष्टमपच्याम्प्रलेपनम् ।सर्षपाञ्छिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान् ९६ मूलकस्यचबीजानितक्रेणाम्लेनपेषयेत् ।गण्डमालार्बुदंगण्डंलेपेनानेनशाम्यति ९७ तक्षयित्वाक्षुरेणाङ्गं केवलानिलपीडितम् ।तत्रप्रदेहंदद्याच्चपिष्टंगुञ्जाफलैःकृतम् ९८ तेनापबाहुजापीडाविश्वाचीगृध्रसीतथा ।अन्यापिवातजापीडाप्रशमंयातिवेगतः ९९ धत्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः ।प्रलेपःश्लीपदंहन्ति

दूर होजाती है ॥ ९२ ॥ (आगन्तुक विद्रधि पर) रक्तचंदन, मँजीठ, हल्दी, मुलेठी और गेरू ये सब समानभागले दूध में पीसि चोट या रुधिरविकारपर लेपकरे अच्छाहो ॥ ९३ ॥ (वातगलगंड पर) बेत और सहिजने के बीज इनदोनों को समानभागले जलमें पीसि शीत गरम प्रदेहमग्रत लेप करे तैसे ही दशमूल पीसि लेपकरे ॥ ९४ ॥ (कफगलगंड पर) देवदारु व इंद्रायण की जड़ इन दोनोंको पीसि प्रदेहकलेप कफ व गंडमालाको दूरकरै (अपची पर) सरसों, नींमपत्र और भिलावा इन तीनोंको समभाग राखिकरि ॥ ९५ ॥ बकरे के मूत्रमें लेपकरै तो अपची दूरहो (गंडमाला अर्बुद व गलगंडपर लेप) सरसों, सहिंजनके बीज, सनई के बीज, अलसी, यव ॥ ९६ ॥ और मूली के बीज ये सब औषध समानभागले खटाये भये मट्ठे में पीसिके लेपकरे तो गंडमाला, अर्बुद और गलगंड ये रोग दूरहोवैं ॥ ९७ ॥ (अपबाहुकपरलेप) केवल वातपीड़ित कोई अंग अपने स्वाभाविक कर्म में पीड़ाकरे तहां के रोम दूर करि घुंघुचीको पीसि सुखोष्ण लेप करने से अपबाहुक वायु विश्वाची हाथकी वायु और गृध्रसी जंघाकी वायुमंभव पीड़ा जावे ॥ ९८।९९ ॥ (फीलपांव पर लेप) धतूरा, रेंड और मेंउड़ी इन तीनों की पत्ती, गदहपुरना व सहिंजनकी छाल और सरसों ये सबों पीसि पतिरा करिभये फीलपाव पर लेप किये अच्छे

चिरोत्थमपिदारुणम् १०० अजाजीहपुषाकुष्ठमेरण्डवद्
रान्वितम्। काञ्जिकेनतुसंपिष्टंकुरण्डघ्नंप्रलेपनम् १ क
रवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा। असाध्यापिव्रजत्यस्तं
लिङ्गोत्थारुक्प्रलेपनात् २ दहेत्कटाहेत्रिफलांसामर्षांमधु
संयुताम्। उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ३ रसाञ्ज
नंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम्। सक्षौद्रंलेपनंयोज्यमुपदं
शगदापहम् ४ अग्निदग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः। सा
मृतैःसर्पिषास्निग्धैरालेपंकारयेद्भिषक् ५ तिन्दुकीत्वक्कषा
यैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपनात्। यवान्दग्ध्वामषीकार्यातैलेनयु
तयातया ६ दद्यात्सर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणरोपणः। पला
शोदुम्बरफलैस्तिलतैलसमन्वितैः ७ मधुनायोनिमालि
म्पेद्गाढीकरणमुत्तमम्। माकन्दफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेप
नात् ८ गतेपियौवनेस्त्रीणांयोनिर्गाढातिजायते। मरिचंसै

होय ॥ १०० ॥ (कुरण्ड "अण्डवृद्धि" रोगपर) कालाजीरा, हाऊबेर, कूट
एरण्डछाल और नेत्रबाल ये पांचों समानभागले कांजी में पीसि अण्डकोश पर
लेप किये अच्छे होयँ ॥ १ ॥ (उपदंश कहे गरमीपर लेप) कनेर की जड़
पानी में पीसि इन्द्रियपर लेपै तौ उपदंशसम्बन्धी असाध्य पीडा दूरहोय ॥ २ ॥
(पुनः) चिकनी कढाही में जलाय राखकरि शहदमें कँदिकरि लेपकरे तो गरमी
के घाव शीघ्र पूर आते हैं ॥ ३ ॥ (पुनः) रसौत, सरसों व हड इन तीनों को
समानभागले पीसि शहद में घोरि उपदंशसम्बन्धी राद बहते व्रणपर लेपकरै
तौ उपदंश को हरता है ॥ ४ ॥ (अग्निदग्धपर लेप) वंशलोचन, पाकरि,
रक्तचन्दन, गेरू और गुर्च ये पांचों पीसि घी मिला जलेपर लगावै ॥ ५ ॥ अथवा घी
को चोराईकाथ में मिलाय लेप करै तौ जलेकी पीडा शांतहोय (पुनः) यवकी
राख तिलके तेलमें मेलि ॥ ६ ॥ लगावै तौ दग्ध व्रण पूरि आवै (योनि
संकोचनलेप) पलाश (ढाक) के फूल, गूलरफल तिलके तेलमें पीसि ॥ ७ ॥
शहद मिलाय योनिमें लेपकरै तौ संकुचित होय (पुनः) मायफल व कपूर को
पीसि शहद में कँदि लेपकरै ॥ ८ ॥ गिरीहुई योनि तनिआवै (पुरुष इन्द्रिय

न्धवंकृष्णातगरंबृहतीफलम् ९ अपामार्गस्तिलाःकुष्ठंय वामाषाश्चसर्षपाः। अश्वगन्धाचतच्चूर्णंमधुनासहयोजये त् १० अस्यसन्ततलेपेनमर्दनाच्चप्रजायते । लिङ्गवृद्धिः स्तनोत्सेधःसंहतिर्भुजकर्णयोः ११ सिताश्वगन्धासिन्धू त्थच्छागक्षीरैर्घृतंपचेत्।तल्लेपान्मर्दनाल्लिङ्गवृद्धिःसञ्जाय तेपरा १२ इन्द्रवारुणिकापत्ररसैःसूतंविमर्दयेत्। रक्तस्यक रवीरस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहुः १३ तल्लिप्तलिङ्गसंयोगाद्योनिद्रा वोभिजायते। ताम्बूलपत्रचूर्णंतुचूर्णंकुष्ठशिवाभवम् १४ वारिणालेपनंकुर्याद्गात्रदौर्गन्ध्यनाशनम्।कुलित्थसक्तवः कुष्ठंमांसीचन्दनजंरजः १५ सक्तवश्चणकस्यैवत्वचंचै कत्रकारयेत् । स्वेददौर्गन्ध्यनाशश्चजायतेस्यावधूलना त् १६ वचासौवर्चलंकुष्ठंरजन्योमरिचानिच । एतल्लेप प्रभावेणवशीकरणमुत्तमम् १७ अभ्यङ्गःपरिषेकश्चपि

कठोर करनेका लेप) मरिच, सैंधव, पीपरि, तगर, भटकटैया के फल ॥ ९ ॥ लटजीरा के बिया, काले तिल, कूट, यव, उड़द, सरसों और असगन्ध ये सब समान पीसि शहद मिश्रितकरि ॥ १० ॥ नित्य इन्द्रिय पर मलाकरै तौ इन्द्रिय मोटीहोय व स्त्री के स्तनपर लगाया करै तौ कठोर पड़जायँ और पुरुषके भुजदण्ड व कानपर मर्दन करना भलाहै ॥ ११ ॥ (पुनर्लेप) श्वेत फूलका असगन्ध व सैंधव इन दोनोंको सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत व घृतका चौगुना भेड़ीका दूध एक करि आंचपर दूध जलाय घी छानि इन्द्रियपर लगावै तो इन्द्रिय मोटीहोय ॥१२॥ (योनिद्रव लेप) इन्द्रायण पत्रका रसले पारा रक्त कनेर के सोंटेमें घोटि चार चार रस डाले ॥ १३ ॥ जब कजरी पीठी सम होजाय तब इन्द्रिय पर लेपि स्त्री प्रसंग करै तो स्त्री सुख पावै पहिले वीर्यपातकरै (देहदुर्गन्धनिवारण लेप) पान, कूट व हड़को पानीमें पीसि लेपकरे दुर्गंध दूरहोय (पुनः) कुलथी भूंजि कूट, जटामासी व श्वेतचन्दन का बुरादा ॥ १४ ॥ व भूंजे चने इन सबको पीसि कपड़-छानकर धूराकरै तो देहदुर्गंध दूरहो ॥ १५ ॥ (वशीकरण लेप) वच, काला-लोन, कूट, हल्दी, दारुहल्दी और मिर्च ये सब समान भागले पानीमें पीसि

चुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्द्धतैलंचतुर्द्धास्याद्बलवच्चयथोत्तरम् १८ त्रयोभ्यङ्गादयःपूर्वंप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः । शिरोवस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः १९ शिरोवस्तिश्चर्मणःस्याद्द्विमुखोद्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणस्तंवद्ध्वामस्तकेमाषपिष्टकैः २० सन्धिरोधंविधायादौ स्नेहैःकोष्णैःप्रपूरयेत् । तावद्धार्यस्तुयावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः २१ वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम् । विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते २२ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्ताहमेववा । विमुच्यशिरसोवस्तिंगृह्णीयाच्चसमन्ततः २३ ऊर्ध्वकायंततःकोष्णनीरैःस्नानंसमाचरेत्। अनेन दुर्जयारोगावातजायान्तिसंक्षयम् २४ शिरःकम्पादय

देहमें लोकवश होने के निमित्त लगावै तो अच्छा है ॥ १६ । १७ ॥ (मस्तक में तेल लगानेकी विधि) अभ्यङ्ग कहे "तैलमर्दन" परिषेक कहे "तेल चुपड़ना" पिचु कहे "रुई के पहलको तेलमें बोरि माथे में बांधै" वस्ति कहे "माथे में चौफेर चर्म बांधि तेलभरै" ये चार प्रकार हैं सो क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान् कहाते हैं ॥ १८ (शिरोवस्तिविधान) अभ्यङ्ग, परिषेक और पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं और शिरोवस्तिविधि तथा मात्रा यहां नहीं कही सो आगे श्लोक में कहेंगे ॥ १९ ॥ (शिरोवस्तिप्रकार) मस्तकपर औषध धारण करने को शिरोवस्ति कहते हैं बारह अंगुल चौड़ी व हाथभर लम्बी शिरके समान इकाकार हरिणचर्मकी सी लेइ दोनों ओर खुली ढील न हो सो माथेपर चढ़ाय भीतर से चारों ओर उर्द के पीठेसे ॥ २० ॥ निस्संधि करै फिर नीचे चढ़े भये चमड़ेको अंगुलभर पीठेसे चारों ओर निस्संधि करि सुखोष्ण तेलभरै (शिरोवस्तिप्रमाण) जबतक नाक, नेत्र व मुखसे जल न बहै ॥ २१ ॥ अथवा मस्तकव्यथा न मिटै वा हजार मात्रा तक वस्ति स्थित रहै (मात्राप्रमाण) अनुवासनवस्ति में कहिआये हैं (शिरोवस्तिकाल) भोजनके प्रथम पांच व सातदिन शिरोवस्ति करै (शिरोवस्तिके पीछे क्रिया) माथेपर धारण कीहुई वस्तिके चारोंतरफ एकसां उचारकर पटक देवे जब वस्तिको उखाड़ चुके तो ॥ २२।२३ ॥ सुखोष्ण जल से माथा धोवाय नहावे (शिरोवस्तिगुण) वातजन्य शिरःकम्पादि दुर्जय

स्तेन सर्वकालेषु योजयेत् । स्वेदयेत्कर्णदेशं तु किंचिल्लुःप्रा
र्दवशायिनः २५ मूत्रैः स्नेहैरसैः कोष्णैस्ततः कर्णप्रपूरये
त् । कर्णं तु पूरितं रक्षेच्छतं पञ्चशतानि च २६ सहस्रं चाति
मात्राणां श्रोत्रकण्ठशिरोगदे । स्वजानुनः करावर्तं कुर्याच्छो
टिकया युतम् २७ एषा मात्रा भवेदेका सर्वत्रैव पनिश्चयः ।
रसाद्यैः पूरणं कर्णे भोजनात्प्राक्प्रशस्यते २८ तैलाद्यैः पूर
णं कर्णे भास्करेऽस्तमुपागते । पीतार्कपत्रमाज्येन लिप्त्वा व
ह्नौ प्रतापयेत् २९ तद्रसः श्रवणे क्षिप्तः कर्णशूलहरः परः ।
कर्णशूलातुरे कोष्णं बस्तमूत्रं ससैन्धवम् ३० निक्षिपेत्तेन
शाम्यन्ति शूलपाकादिका रुजः । शृङ्गवेरं च मधुकं मधुसैन्ध
वमामलम् ३१ तिलपर्णीरसस्तैलं टङ्कणं निम्बुकद्रवम् ।
कदुष्णं कर्णयोर्देयमेतद्वेदनापहम् ३२ कपित्थमातुलु
ङ्गाम्लशृङ्गवेररसैः शुभैः । सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णौ कर्णशूलो

रोग दूर होते हैं इस से वैद्य सदा इस रोग में शिरोबस्ति करावै ॥ २४ । २५ ॥
(कर्णोपचार) मनुष्यको कुछ स्वेद करि तुरन्त गोमूत्र व तेल व स्वरस कुनकुना
कान में पूरै ॥ २६ ॥ (कर्णमें द्रव्यधारण प्रमाण) कान, कंठ व शिरोगों के
निवारणार्थ सौ मात्रा व पांचसौ व हजार मात्रातक राखै (मात्राप्रमाण)
घुटनों पर चुटकी बजाते हाथघूमे चौफेर सो मात्रा प्रमाण है (कर्णपिचार
समय) कान में औषध भोजनके प्रथम रसादिक पूरै ॥ २७ । २८ ॥ और
तेल आदि संध्यासमय पूरै (कर्णव्यथापर औषध) अकौवा में जो पके
पीलेपड़जाते हैं तिन्हैं लोज उनपर घृत लगावै तब लथारि आगि में सेक लेय
जब गरम होय तब निकालि ॥ २९ ॥ कानमें छोड़े तो सब कर्णशूल दूरहोवै
(पुनः) छागमूत्र में सैंधा डारि कुछ तचा ॥ ३० ॥ करि कान में पूरै तो कान
के भीतरकी पिटिका दूर होय (तृतीय) अदरकका रस मुलेठी, शहद, सैंधव,
आंवरा ॥ ३१ ॥ तिलपर्णी " दूब में होती है और गुलुकीसी सब दूरसे पंची
सफेद फली तिनमदत होती है वह तिलपर्णी है " सरसों का तेल, सुहागा व
नींबूका रस ये सब पीसि कान में डालै तो कानकी पीड़ा दूरकरै ॥ ३२ ॥ कैथा

पशान्तये ३३ अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्तांल्लँवणान्वि
तान्। सन्निदध्यात्स्नुहीकाण्डेकोरितेतच्छदावृते ३४ पु
टपाकक्रमंकृत्वारसैस्तत्प्रपूरयेत्। सुखोष्णैरतेनशाम्य
न्तिकर्णपीडाःसुदारुणाः ३५ महतःपञ्चमूलस्यकाण्डा
न्यष्टाङ्गुलानितु।क्षौमेणावेष्ट्यसंसिच्यतैलेनादीपयेत्ततः
३६ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णंतेनपूरयेत्। ज्ञेयंतद्दीपि
कातैलंसद्योगृह्णातिवेदनाम् ३७ एवंस्याद्दीपिकातैलंकुष्ठे
देवदारौतथा।तैलंश्योनाकमूलेननन्देःनोपरिपाचितम् ३८
हरेदाशुत्रिदोषोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात्। कल्कक्वाथेनच
ष्ट्याह्वाकाकोलीमाषधान्यकैः ३९शूकरस्यवसांपक्त्वाकर्ण
नादार्तिहारिणी।स्वर्जिकामूलकंशुष्कंहिङ्गुकृष्णासमन्वि

और कैथफलका रस बिजौरारस,अमलबेतके रस बिना चूकरस और अदरकरस ये चारों सुखोष्ण कान में डालने से कर्णशूल नाश होवें ॥ ३३ ॥(पंचम) मदारका कोमल टिंगुना नींबूरस में पीसि तिलका तेल व सेंधानोन मिलाय गोला बांध सेहुंडा के मोटे खण्ड में पोलाकरि गोला धरै अच्छी भांति दाबि उसीके पत्र लपेटि कपडौटी करि माटी चढाय मधुरी आंच में पकाय पुटपाक सदृश पकजाय तब निकालि माटी कपडा उतारि कूटके रस निचोरलेय फिर उस रसको सुखोष्णकरि कान में डारै तौ कानकी दारुणशूल शान्तहोय ॥ ३४ । ३५ ॥ (कर्णशूलपर दीपिकातैल) महापञ्चमूलकी जड़ आठ अंगुल रुई वा वस्त्र लपेट दीपमें बारि चिमटो से पकरि कटोरी में टपकावै,वही,गुनगुना तैल कानमें डालनेसे कानकी तपक दूर होतीहै तथा शहद, पञ्चमूल, बेल, रण्ड, टेंटी,शिवनी और पाटल इनकी जड़को कहते हैं ॥ ३६ । ३७ ॥ (पुनः) टेंटू तेल व टेंटूमूल को पानी में पीसि कल्क करि चौगुना तिल तेलको मिलाय समान जल देय जलजराय उतारि सहता सहता॥३८॥कानमें डालनेसे त्रिदोष-जन्य कर्णशूल मिटै (कर्णनादपर तेल) मुलेठी, असगन्ध,माष और धनियां इनचारोंका क्वाथ व कल्क ॥ ३९ ॥,शूकर की चरबी में पचाय जब चरबी रहिजाय तब कान में डालै तौ कर्णनाद को निकालै (कर्णनादपर क्षारतेल)

तम् ४० शतपुष्पाचतत्तैलंपक्कंशुक्तंचतुर्गुणम् । प्रणादंशूलबाधिर्य्यंस्रावंकर्णस्यनाशयेत् ४१ अपामार्गक्षारजलेतत्क्षारंकल्कितंक्षिपेत् । तेनपक्कंजयेत्तैलंबाधिर्य्यंकर्णनादकम् ४२ शम्बूकस्यतुमांसेनपचेत्तैलंतुसार्षपम् । तस्यपूरणमात्रेण कर्णनाडीप्रशाम्यति ४३ चूर्णंपञ्चकषायाणांकपित्थरसमेवच । कर्णस्रावेप्रशंसन्तिपूरणंमधुनासह ४४ तिन्दुकान्यभयालोध्रंसमङ्गाचामलक्यपि । ज्ञेयाःपञ्चकषायास्तुकर्मण्यस्मिन्भिषग्वरैः ४५ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूररसंक्षिपेत् । कर्णस्रावरुजोदाहाःप्रणश्यन्तिनसंशयः ४६ आम्रजम्बूप्रवालानिमधुकस्यवटस्यच । एभिःसंसाधितंतैलंपूतिकर्णोपशान्तिकृत् ४७ पूरणंहरितालेनगवांमूत्रयुते

सज्जी, सूखी मूली, हींग, पीपरि ॥ ४० ॥ और सौंफ ये पांचों समभाग ले चौगुने तिल तेलमें समान मध्यखण्डोक्त शुक्तमें पचावै जब केवल तेल रहजाय तब कान में चुवावै तौ कर्णनादशूल बधिरत्व व कान बहन इन रोगों को नशाता है ॥ ४१ ॥ (बधिरत्व पर अपामार्गक्षारतेल) लटजीरे की राख चौगुने पानी में घोलि धँगोलि रातिभर धर प्रातः निर्मल जलले चौथ्याई तेलदे पचाय पानी जलाय कान में डालै तौ बधिरत्व (बहिरापन) मिटै सुनने लगै ॥ ४२ ॥ (कर्णव्रण पर शंबूकतेल) घोंघेका मांस चौगुने तेलमें डालकरि पचाय ले यह तेल कान में डालै तो व्रण दूरकरै ॥ ४३ ॥ (कर्णस्राव पर औषध) पञ्चकषाय का चूर्ण, कैथरस और शहद मिलाय कान में डालै तौ कान बहना बन्द होजाय ॥ ४४ ॥ (पञ्चकषायवृक्ष) तेंदू, हड़, लोध, मँजीठ और आंवला इनपाचों में से हड़ व आंवलाका फल बाकीकी छाललेना चाहिये इस कर्म में श्रेष्ठ वैद्योंको पञ्चकषायसंज्ञक वृक्ष जानना चाहिये ॥ ४५ ॥ (पुनः कर्णस्राव पर) सज्जीको बिजौरा रसमें घोटि कान में डाले तो कान का बहना बन्द होय ॥ ४६ ॥ (पुनः) आम, जामुन, महुआ व बरगद इन चारों के कोंपल की लुगदी चौगुने तिल तेलमें जराय लेन कानमें डालने से पीब बहना बन्द होय ॥ ४७ ॥ (कर्णकीटपर लेप) हरिताल पीसि गोमूत्र

नच। अथवासार्षपंतैलंकर्णकीटहरंपरम् ४८ स्वरसंशिग्रु मूलस्यसूर्यावर्त्तरसंतथा । त्र्यूषणंचूर्णितंचैवकपिकच्छूरसंतथा । कृत्वैकत्राक्षिपेत्कर्णेकर्णकीटहरम्परम् ४९ सद्योमद्योनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् । सद्योहिङ्गुनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् ५० इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेलेपादिकर्णपूरणविधिरेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

शोणितंस्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच । प्रस्थंप्रस्थार्द्धकंचापिप्रस्थार्द्धार्द्धमथापिवा १ शरत्कालेस्वभावेनकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः। त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानस्युरक्तस्रुतेर्यतः २ मधुरंरक्तलोवर्णमशीतोष्णंतथागुरु । शोणितंस्निग्धविस्रंस्याद्विदाहश्चास्यपित्तवत् ३ विस्रताद्रवता रागश्चलनंविलयस्तथा। भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तगुणाःस्मृताः४रक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाहश्चजायते। रक्त

या कडुवे तेलमें मिलावे तो कर्णजन्तु दूरहोय ॥ ४८॥ (पुनः) सहिंजन मूल का रस, सूर्यमुखीका रस, सोंठ, मिर्च व पीपरिको पीसि वन वयमाच की जड़ का रस ये सब मिलाय फेंटि कानमें छोड़े तौ कर्णकीट मरैं ॥ ४९ ॥ हींग और शराब इन दोनों में से किसी वस्तुको कान में डाले तो शीघ्रही कर्णकीट को विनाशताहै ॥ १५० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

(अथ रुधिरमोक्षणप्रयत्न) मनुष्य के शरीर में रक्तजन्यविकार से कुष्ठादि रोग जानि रुधिर निकलवाने का प्रमाण कहते हैं प्रस्थभर वा अर्द्धप्रस्थ व चौथ्याई प्रस्थ करे कुड़व भर ॥ १ ॥ (रुधिरमोक्षणकाल) देह से रुधिर निकलाने से त्वचापर के रोग, फोड़ा,फुंसी व शोथादिक रोग दूर होतेहैं इस कारण शरद् काल में मनुष्य को रुधिर निकलाना उचित है ॥ २ ॥ (रुधिर गुण) रुधिर मधुर है लाल व कुछ गरम, गरुआ, चिकना, विसायँध गन्धी, पित्त समान उष्णलोहू का रूप गुण है ॥ ३ ॥ और रक्त पञ्चतत्त्वमय है निसायँधी गंध पृथ्वीगुण, गीलापन जलगुण, उष्णस्पर्श अग्निगुण, चलना वायुगुण,नीला होना और श्यामता लाना आकाशका गुण है ॥४ ॥ (रुधिर दुष्ट

मण्डलताकण्डूःशोथश्चपिटिकोद्गमः ५ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वं
शिराणांपूरणंतथा। गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजाय
ते६ क्षीणेऽम्लमधुराकांक्षीमूर्च्छाचत्वचिरूक्षता। शैथिल्यं
चशिराणाम्स्याद्वातादुन्मार्गगामिता ७ अरुणंफेनिलंरूक्ष
म्परुषंतनुशीघ्रगम्। अस्कन्दिसूचिनिस्तोदंरक्तंस्याद्वात
दूषितम् ८ पित्तेनपीतंहरितंनीलंकृष्णंचविस्रगम्। अस्क
न्द्युष्णंमक्षिकाणांपिपीलीनामनिष्टकम् ९ शीतञ्चबहुलं
स्निग्धंगैरिकोदकसन्निभम्। मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगं
कफदूषितम् १० द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम्। स
र्वलक्षणसंयुक्तंकाञ्जिकाभंचजायते ११ विषदुष्टंभवेच्छ्या
वंनासिकोन्मार्गगंतथा। विस्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वदुष्टकरंच

होनेके लक्षण) रुधिर कुपितभये देह में पीड़ा, व्रण, दाह, रक्तमण्डल, खाज, शोथ व देह पर फुंसी पैदा होताहै ॥ ५ ॥ (रक्त बढ़ने का लक्षण) रुधिर बढ़े सो देह व नेत्र लाल रहैं और नसें रक्तपूरित होकर फूल जाती हैं देह गरू रहती है नींद विशेष, मद व दाह ये उपद्रव होते हैं ॥ ६ ॥ (क्षीणरक्तलक्षण) जिसके रुधिर शरीरप्रमाण से घटजाताहै उसकी रुचि खट्टे व मीठेपर अधिक रहती है और मूर्च्छा, त्वचा रूखी, शिथिल शरीर और वायु ऊर्ध्वगामी होजाता है ऐसे लक्षण जानो ॥ ७ ॥ (वायु वरिष्ठ रक्त उपद्रव लक्षण) वायु कुपित रुधिर लाल रंग, फेनसदृश हो, रूखा, कर्कश, हलका, शीघ्रगामी, पतला व दर्दमें सुई समान कोंचता है ॥ ८ ॥ (पित्तकारि दुष्ट रुधिर लक्षण) पित्त कुपित रुधिर-पीला, हरित, नीला व काला, पके आमकी गन्ध वाला व जिसपर चींटी माखी न खायँ ॥ ९ ॥ (कफकारि दुष्टरुधिरलक्षण) कफ कुपित रक्तका स्पर्श ठण्ढा, चिकना, गेरूका रङ्ग मांस व कुन्की मिश्रित व गाढ़ा होकर स्थिर होता है ॥ १० ॥ (दो वा तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण) दो दोषकरि दूषित लोहूमें दो दोषके लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोषदूषित में पीवकी गन्ध होती है और सब लक्षण त्रिदोषके पाये जाते हैं और कांजी सदृश रंग होता है ॥ ११ ॥ (अतिदुष्ट रक्तलक्षण) विषकारण रक्त उपद्रव से नाककी राह पीना है आमकी सी बास (गन्ध) होती है व कांजी सदृश रंग धातुओं को

हु। इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् १२ शोथेदाहे
ङ्गपाकेचरक्तवर्णेसृजःस्रुतौ। वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्ज
येनिले१३पाणिरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते। ग्रन्थ्य
र्बुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमन्थिषु १४ विदारीस्तनरोगेषु
गात्राणांसादगौरवे। रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपूतिघ्राणास्य
देहके १५ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिटिकोद्गमे। कर्णौष्ठ
घ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि १६ उपदंशेरक्तपित्तेरक्त
स्रावःप्रशस्यते। एषुरोगेषुशृङ्गैर्वाजलौकालावुकैरपि १७
अथवापिशिरामोक्षैःकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः। नकुर्वीतशिरामो
क्षंकृशस्यातिव्यवायिनः १७ क्लीवस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूति
कापाण्डुरोगिणाम्। पञ्चकर्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचा
र्शसाम् १९ सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरश्वासकासिनाम्।
छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्विन्नतनोरपि २० ऊनषोडशव
र्षस्यगतसप्ततिकस्यच। आघातस्रुतिरक्तस्यशिरामो

बहुत दुष्ट करता है (शुद्धरक्तलक्षण) शुद्धरक्त वीरबहूटी के रंगवाला हो
कर पतला होताहै स्पर्श में उष्ण व शीघ्रचारी कहाताहै ॥ १२ ॥ (रक्तमो
क्षणयोग्य) शोथमें दाहमें अंगपाक में रक्तवर्ण अंग में नाक से बहने में
वातरक्त, कुष्ठ, कष्टसाध्य पीड़ा वातसंयुक्त में॥ १३ ॥ हाथरोग में पीलपाऊँ-
वा विषकरि गिरे रक्तमें ग्रंथि, अर्बुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्ताधिमन्थ ॥ १४ ॥
विदारी,कुचरोग, देहजकड़ना, रक्ताभिष्यन्द, तंद्रा, दुर्गंध ॥ १५ ॥ यकृत्, प्लीह,
विसर्प, विद्रधि, पिटिका, कान, ओठ, नाक व मुख पकने मेंदाह,माथेकी पीड़ा ॥
१६ ॥ उपदंश व रक्तपित्त इनरोगों में रुधिर निकलाना उचित है (रक्तमो-
क्षणप्रकार) सिंगी, जोंक, तोंबी और फस्त इन चारों से रक्त निकलावै ॥
१७ ॥ वा शिरामोक्षों से मनुष्य रक्तनिकलावै (शिराछेदनअयोग्य) दुर्बल,
विषयी ॥ १८ ॥ नपुंसक, भीरु (डरपोक), गर्भिणी, गोदवाली, पांडुरोगी,
वमनादिपंचकर्मकृती, स्नेहादिकर्मकृती, अर्शरोगी ॥ १९ ॥ सर्वांगशोथयुक्त,
उदर,स्वास,कास, छर्दी,अतीसारी और अतिस्वेदी॥ २० ॥ व सोलहकेभीतर

क्षोनशस्यते २१ एषांचात्ययिकेयोगेजलौकाभिस्तुनिर्ह रेत् । तथाविविषयुक्तानांशिरामोक्षोपिशस्यते २२ गोशृ ङ्गेणजलौकाभिरलाबुभिरपित्रिधा । वातपि॰ कफैर्दुष्टंशो णितंस्रावयेद्बुधः २३ द्विदोषाभ्यांतुसंसृष्टंत्रिदोषैरपिदूषि तम् । शोणितंस्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैःपदेस्तथा २४ गृह्णातिशोणितंशृङ्गंदशाङ्गुलमितंबलात् । जलौकाहस्त मात्रंचतुम्बीचद्वादशाङ्गुलम् २५ पदमङ्गुलमात्रेणशि रासर्वाङ्गशोधिनी । शीतेनिरन्नेमूर्च्छातितन्द्राभीतिमदश्र मैः २६ युतानांनस्रवेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसङ्गिनाम् । अप्रव र्तिनिरक्तेचकुष्ठचित्रकसैन्धवैः २७ मर्दयेद्व्रणवक्त्रंचतेन सम्यक्प्रवर्तते । तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातिता पिते २८ पीत्वायवागूंतस्यशोणितंस्रावयेद्बुधः ।

तथा सत्तर के ऊपर अवस्था (उमर) वाले को अकस्मात् नाकसे रक्तगिरे तो ऐसे मनुष्य अयोग्यके कदाचित् फोड़ा फुंसी हो तो जोंक लगावै ऐसे रोगियोंका विषाद संयोग से रक्त अतिदुष्ट हो तो शिरामोक्षण करै २१ । २२ ॥ (दोषा- दिकमें रक्तनिकालनेका विधान) वायु दूषित रक्त सिंगीसे लेय, पित्तदूषित जोंक से लेय, कफदूषित तोंबीसे लेय ॥ २३ ॥ दो वा तीन दोषों से दूषित दुष्ट रुधिर शिराछेदन करि लेय ॥ २४ ॥ (सिंगी आदिसे रुधिर खिंचने का प्रमाण) सिंगी सिर और लगावै उस के चारोंओर दशअंगुलताईका रक्त खैंचली है जोंक हाथभरताई तोंबी बारह अंगुलताई ॥ २५ ॥ सूक्ष्मशिरा अंगुलभरकी और मोटी शिरा जो सब नसोंको रक्तदेय वह सब शरीरके रुधिरको शुद्ध करती है (रुधिरमोक्षणअयोग्य) शीतकाल में उपास में तंद्रा में मदमें व परिश्रम में ॥ २६ ॥ तथा मलमूत्रनिरोधमें ऐसे मनुष्यके शरीरसे रुधिर नहीं निकलता (शिरारक्त न देनेका यत्न) जो नस छिदकै रुधिर भलीभांति न द्रवै तौ कूट, चीता और सैंधव ये समान भागले पीसि ॥ २७ ॥ उस छेदपर रगड़ने से अच्छे प्रकार स्रवा देयगी (रक्तमोक्षणकाल) न जाड़ाहो न गरमीहो न स्वेद किये को न उष्णशरीरी को ॥ २८ ॥ जो रक्त निकाले तौ प्रथम यवागू

अतिस्विन्नेसोष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् २९ अति
प्रवर्ततेरक्तंतत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम्। अतिप्रवृत्तेरक्तेचलोध्र
सर्जरसाञ्जनैः ३० यवगोधूमचूर्णैर्वाधवधन्वनगैरिकैः।
सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयोः ३१ मुखंव्रणस्यव
द्ध्वाथशीतैश्चोपचरेद्व्रणम्। विध्येदूर्ध्वंशिरान्तांवादहेत्क्षा
रेणवाग्निना ३२ व्रणंकषायःसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमम्।
व्रणास्यंपाचयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराम् ३३ वामाण्ड
शोथेदक्षस्यकरस्याङ्गुष्ठमूलजाम्। दहेच्छिरांव्यत्ययेतु
वामाङ्गुष्ठशिरांदहेत् ३४ शिरादाहप्रभावेणशुष्कशोथः
प्रशाम्यति। विसूच्यांपाददाहेनजायतेग्नेःप्रदीपनम् ३५
सङ्कुचन्तियतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः। यदातृड्वियेक्त
स्त्रीह्नोःशिशोःसञ्जायतेसृजः ३६ तदातत्स्थानदाहेनस

दे तृसकर लोहू निकलावे (अतिरुधिरस्राव) जिसे स्वेद किये वा ऊष्मासे स्थूल नस से ॥ २९ ॥ रक्तअधिक आवै बन्द न हो तिसके हित यत्न आगेवाले श्लोकमें कहतेहैं रुधिर न थँभनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो तौ लोध, राल व रसौंत इन तीनों का चूर्ण ॥ ३० ॥ वा यव गेहूं का चूर्ण वा धव, जवासा और गेरु का चूर्ण वा सर्पकी कैंचुल वा रेशमी लत्ताकी भस्म इन में कोई ॥ ३१ ॥ फस्त के मुखपर बलकरि दाबदे उसपर चन्दनादि शीतोपचार करै शीतल लेपकरै जो इसमें बन्द न होय तौ उसके कुछ ऊपर फिरके फस्त दे वा अग्निसम खार उसके मुँहपर लगावै वा अग्निसे दागदे तौ बन्द होगा॥ ३२ ॥ इससे क्यों बन्द हो सो कहते हैं लोधादि से घाव मुरा अमलाताहै शीतल लेप से रक्त थँभता है क्षारादि से क्षत पचताहै जलानेसे नसका मुख सिकुड़ताहै ॥ ३३ ॥ (दग्धकृतरोगशांति) जिसका दहिना अण्डकोशफूलै उसके बायें हाथ के अंगूठे की जड़दागै जो बाम अण्डकोश फूलै तौ दहिने हाथ के अंगूठा की मूल दागै ॥ ३४ ॥ जो यह आरम्भ में करै तो अवश्य अच्छा होय और जिसे शीतरस हो उसके गोड़के तलवे अत्यन्तसेंके तौ रसवाहिनी व कफवाहिनी के मुख सिकुड़जाते हैं व अग्निदीप्त होती है ॥ ३५।३६ (दुष्टरक्त

स्कुचन्त्यसृजःशिराः। रक्तेदुष्टेवशिष्टेपिव्याधिर्नैवप्रकुप्य ति ३७ अतःस्रावंसावशेषंरक्तेनातिक्रमोहितः। आन्ध्य माक्षेपकंतृष्णांतिमिरंशिरसोरुजम् ३८ पक्षाघातंश्वा सकासौहिक्कांदाहंचपाण्डुताम्। कुरुतेविस्रुतंरक्तंमरणंवा करोतिच ३९ देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते। वि नातेनचजेज्जीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ४० शीतोपचारैःकुपि तेस्रुतरक्तस्यमारुते। कोष्णेनसर्पिषाशोथंसर्वतःपरिषे चयेत् ४१ क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः। रसः समुचितःपानेक्षीरंवाषष्टिकाहिताः ४२ पीडाशान्तिर्लघु त्वंचव्याधेरुद्रेकसङ्क्षयः। मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यग्वि स्राविते॑सृजि ४३ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवात

अशेष न होनेपर (दुष्ट रुधिर काढनेमें कुछ बाकी रहिजाय तौ रोग भी कोप न करैगा ॥ ३७ ॥ और अशेष होने वा ज्यादा निकलनेमें उपद्रव उत्पन्न होतेहैं अन्धता, आक्षेपक वायु, तृष्णा, तिमिर, माथे में पीड़ा ॥ ३८ ॥ पक्षाघात वायु, श्वास,कास,हुचकी,जलन और पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकलजाने पर मरनेका भी आश्चर्य नहीं होताहै ॥ ३९ ॥ क्योंकि रक्तसे शरीर की उत्पत्ति है और वही देहका आधारहै रक्त रहने से जीवरहै इसीकारण बुद्धिमान् वैद्य रुधिरकी रक्षा करतेहैं ॥ ४० ॥ (रुधिरमोक्षणपर दोपकोप) रुधिर निकले पर घाव पर पित्तकोप दीखै तौ शीतलचन्दनादि लेपकरै व वायुकोप दीखै तौ वा घावपर सूजन होय पीड़ा करै तौ सुसोष्ण घी लगावै तौ रोग नाश होय ॥ ४१ ॥ (रुधिरमोक्षणपर पथ्य) जो रक्त निकालने परनिर्बल भयाहो तौ खरगोश, भेड़, काला हरिण वा छाग इनका मांस खिलावै वा गोदूधमें साठी के चावलकी खीर करि खिलावै वा गऊके दूधसाथ भातको खिलावै ये पथ्य हितकारक हैं ॥ ४२ ॥ (सम्यक्रक्तमोक्षणलक्षण) पीड़ाविगत, शरी हलका, रोगका नाश व मनःप्रसन्न ऐसे लक्षणहों तौ रक्तमोक्षण अच्छा भया ॥ ४३ ॥ (रक्तमोक्षणपरनिषेध) परिश्रम, मैथुन, क्रोध, ठंढे पानीसे नहाना, बाहर जाना एकबार खाना व दिन में सोना तथा अजीर्ण, खटाई व

कात् । एकाशनंदिवानिद्रांक्षाराम्लकटुभोजनम् । शोकं
वादमजीर्णञ्चत्यजेदाबलदर्शनात् ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्ग
धरेउत्तरखण्डेरक्तमोक्षणविधिर्नामद्वादशोऽध्यायः १२॥
सेकआश्च्योतनंपिण्डीबिडालस्तर्पणंतथा । पुटपाको
ऽञ्जनंचैभिःकल्कैर्नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिः
सर्वस्मिन्नयनेहितः । मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुर
ङ्गुलम् २ सचापिस्नेहनोवातेरक्तेपित्तेचरोपणः । लेख
नश्चकफेकार्यस्तस्यमात्राऽधुनोच्यते ३ षड्भिर्वाक्छतैः
स्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे । वाक्छतैश्चत्रिभिःकार्यःसे
कोलेखनकर्मणि । कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौचात्ययिकेगदे
४ एरण्डत्वक्पत्रमूलैःशृतमाजंपयोहितम् । सुखोष्णंसेचनं
नेत्रेवाताभिष्यन्दनाशनम् ५ परिषेकोहितोनेत्रेपयःको
ष्णंससैन्धवम् ॥ रजनीदारुसिद्धंवासैन्धवेनसमन्वितम् ६

कडुवे पदार्थोंको त्यागै शोक, बकना, अजीर्ण और जिसमें जोर पड़ता देखै उस
को न करै ॥ ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

(अथ नेत्रोपचारप्रकार) नेत्ररोगपर सात प्रकारकी औषध कहते हैं
सेक, आश्च्योतन, पिण्डी, बिडाल, तर्पण, पुटपाक और अञ्जन ये सात प्रकार
नेत्ररोगमें कहे हैं ॥ १ ॥ (सेकविधान) दूध, घृत व रस आदिक रोगीकी
आंखें मुँदवाय चार अंगुल ऊपरसे महीन धारसे औषध गिरावै इसे सेक कहते हैं॥२॥
(सेकभेद) वातदूषित नेत्ररोग में स्नेहन सेक देय, रक्तपित्तपर रोपण सेक
देय, कफदूषित में लेखन सेक देय, दूध घृतादि स्नेहन द्रव्य हैं, लोध, मुलेठी व
त्रिफलादि ये रोपण द्रव्य है इन्हें दूधमें पीसिलें सोंठ, मिर्च व पीपरि ये लेखन
द्रव्य कहाते हैं अब आगे इनकी मात्रा कहते हैं ॥ ३ ॥ स्नेहन सेककी मात्रा छःसौ
रोपण सेककी चारसौ लेखनकी तीनसौ मात्रा ताई रावै (सेकादिकालभेदन)
दिनमें करै व रात्रिको तेज रोगमें करै ॥ ४ ॥ (वाताभिष्यन्दपर सेक)
रण्डकी छाल, पत्र, मूल व क्वाथ तथा बकरीका दूध सुखोष्ण करि सेकै तो वात
अभिष्यन्द नेत्रमें दूर हो ॥ ५ ॥ (पुनः) अर्थात् वा दूध सैंधव डालि सुखोष्ण

वाताभिष्यन्दशमनंहितंमारुतपर्यये। शुष्काक्षिपाकेचहि
तमिदंसेचनकंतथा ७ शाबरंमधुकंतुल्यं घृतभृष्टंसुचू
र्णितम्। छागक्षीरेस्थितंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ८
त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः। पिष्टैःशीता
म्बुनासेकोरक्ताभिष्यन्दनाशनः ९ लाक्षामधुकमञ्जिष्ठा
लोध्रकालानुसारिवा। पुण्डरीकयुतःसेकोरक्ताभिष्यन्दना
शनः १० श्वेतंलोध्रंघृतेभृष्टंचूर्णितंपटविस्रुतम्। उष्णाम्बु
नाविमृदितंसेकाच्छूलघ्नमम्बके ११ अथाश्च्योतनकंका
र्यंनिशायांनकथंचन। उन्मीलितेक्षिणदद्याद्ध्येबिन्दुभिर्द्व्य
ङ्गुलाद्धितम् १२ बिन्दवोष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशबिन्दवः।
रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः १३ उष्णेचशी
तरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः। वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्ते

करि सेंकै या हल्दी देवदारु व सेंधवको डालि छगरीपयसे सेंकै॥ ६ ॥ तो अभिष्य-
न्द, वातपर्यय व शुष्काक्षिपाक ये रोग दूरहोयँ ॥ ७ ॥ (पित्तरक्त व अ-
भिघातपर सेक) लोध व मुलेठी इन दोनोंके समान घृतमें भूंजि दूधमें मिलाय
तप्तकरि सेककरै तौ पित्त, रक्तविकार व अभिघातजनित दोष दूरहोयँ ॥ ८ ॥
(रक्ताभिष्यन्दपर सेक) त्रिफला, लोध, मुलेठी, शक्कर व नागरमोथा ये
सब समान भागले पीसि ठंढे पानीमें सेक किये से रक्त अभिष्यन्द दूरहोय॥ ९ ॥
(रक्ताभिष्यन्दपर) लाख, मुलेठी, मँजीठ लोध, कालासारिवा और कमल
ये सब पीसि पानीमें सेक करै तौ नेत्रनमे रक्ताभिष्यन्द दूरहो ॥ १० ॥ (नेत्र
शूलपर) सफेद लोधको घृतमें भूंजि चूर्णकरि पोटलीमें बांधि उष्णजलमें घोरि
घोरि आंखकी पलकन पर फेरै तौ नेत्रशूल दूरहो ॥ ११ ॥ (आश्च्योतन
विधान) आश्च्योतन कहे बिंदु चुवावना आंखिखोलि दूध क्काथ स्वरसादि
द्रव पदार्थ दो अंगुलीसे घोरि आंखिमें चुवाय देय इसको "आश्च्योतन" कहते
हैं इसको निशासमय कभी न करै ॥ १२ ॥ (लेखनादि आश्च्योतन
में बिंदु डालने का प्रमाण) लेखनकर्म में आठ बिंदु (बूंद) नेत्र में
देय स्नेहन में दश रोपण में बारह शीतकाल में सुखोष्ण ॥ १३ ॥ उष्ण

मधुरशीतलम् १४ तिक्तोष्णरूक्षंचकफेक्रमादाश्च्योतनं हितम् । आश्च्योतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाकुछतंहितम् १५ निमेषोन्मेषणंपुंसामङ्गुल्योश्छोटिकाथवा । गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः १६ बिल्वादिपञ्चमूलेनबृहत्येरण्डशिग्रुभिः । क्वाथआश्च्योतनेकोष्णोवाताभिष्यन्दनाशनः १७ अम्बुपिष्टैर्निम्बपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यलेपयेत् । प्रताप्यवह्निनापिष्ट्वातद्रसोनेत्रपूरणात् १८ वातोत्थंरक्तपित्तोत्थमभिष्यन्दंविनाशयेत् । त्रिफलाश्च्योतनंनेत्रेसर्वाभिष्यन्दनाशनम् १९ स्त्रीस्तन्याश्च्योतनंनेत्रेरक्तपित्तानिलार्तिजित् । क्षीरंतैलंघृतंवापिवातरक्तरुजंजयेत् २० पिण्डीकवलिकाप्रोक्ताबध्यतपट्टवल्कलैः । नेत्राभिष्यन्दयोग्यासात्रणेष्वपिनिबध्यते २१ अभिष्यन्देऽधिमन्थेच

(वातादि में आश्च्योतन योग्य) इत्यादि-

सञ्जातेश्लेष्मसम्भवे । स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्यशिरस्ती
क्ष्णैर्विरेचयेत् २२ अधिमन्थेषसर्वेषुललाटेवेधयेच्छिरा
म् । अशान्तेसर्वथामन्थेभ्रुवोरुपरिदाहयेत् २३ अभिष्य
न्देषुसर्वेषुबध्नीयात्पिण्डिकांबुधः । वाताभिष्यन्दशान्त्य
र्थेस्निग्धोष्णापिण्डिकाभवेत् । एरण्डपत्रमूलत्वङ्निर्मिता
वातनाशिनी २४ पित्ताभिष्यन्दनाशायधात्रीपिण्डीसुखा
वहा । महानिम्बफलोद्भूतापिण्डीपित्तविनाशिनी २५ शि
ग्रुपत्रकृतापिण्डीश्लेष्माभिष्यन्दनाशिनी । निम्बपत्रकृ
तापिण्डीश्लेष्मपित्तहराभवेत् २६ त्रिफलापिण्डकाप्रोक्ता
नाशिनीश्लेष्मपित्तयोः । पिष्ट्वाकाञ्जिकतोयेनघृतभृष्टा
चपिण्डिका २७ लोध्रस्यहरतिक्षिप्रमभिष्यन्दमसृग्भवम् ।
शुण्ठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्पसैन्धवैः २८ धार्या
चक्षुषिसंयोगाच्छोथकण्डूव्यथापहा । बिडालकोवहि

(नेत्राभिष्यन्दपर शिरोरेचन) जिसे कफकृत अभिष्यन्द व अधिमन्थहो उसके मस्तकमें तेल लगाय पसीना निकलाय नासलेय यह मस्तक शुद्ध करनेको भलाहै ॥ २२ ॥ (सर्वाधिमन्थपर) सब अधिमन्थ में शिरकी फस्तले अधिमन्थ में भौंह दग्ध करै तो आराम होय ॥ २३ ॥ (अभिष्यन्दादि पर) सर्वाभिष्यन्द में वही द्रव्यका कल्क नेत्रपर बांधै वाताभिष्यन्दमें चिकनी [illegible] उष्णद्रव्य की पिण्डी बाधै (वात व पित्ताभिष्यन्दपर) रेंडके पत्र मूल व छालको पीसि पिंडी करि नेत्र र बांधने से वाताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २४ ॥ आंवरे की पिण्डी बांधने से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय (पुनःपित्ताभिष्यन्दपर) बकायनके फलकी पिंडी बांधे से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २५ ॥ (कफाभिष्यन्दपर) सहिंजनके पत्तों की पिंडी बांधे से कफाभिष्यन्द दूर होय (कफपित्ताभिष्यन्दपर) निंबपत्र वा त्रिफलेकी पिंडी बांधे तो कफपित्ताभिष्यन्द दूरहोय (रक्ताभिष्यन्दपर) लोधको कांजीमें पीसि घृतमें भूनि पिंडीकरि बांधनसे ॥ २६ । २७ ॥ रक्ताभिष्यन्द विनाशहोय (नेत्रशोथ व कण्डूपर) सोंठ, नींबपत्र व थोड़ासा सेंधव मिलाय गुनगुनी पिंडीबांध ॥ २८ ॥ तो व्यथा व खुजली दूरहोय ॥ (बिडालादि-

लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः । तन्मात्रासापरिज्ञेयामुखलेप विधानवत् २९ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदार्वीतार्क्ष्यैःसमांश कैः। जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्रामयापहः ३० रसाञ्जनेन वालेपःपथ्याविश्वदलैरपि। कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमी पल्लवैरपि ३१ वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः। दग्धवाग्नौसैन्धवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ३२ पिष्टमञ्ज नलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम्। लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसो निम्बफलोद्भवः ३३ किञ्चिद्‌घनोबहिर्लेपोनेत्रबाधां व्यपोहति । संचूर्ण्यमरिचंकेशराजस्वरसंमर्दनात् ३४ लेपनादर्मणांनाशंकरोत्येषप्रयोगराट् । स्विन्नांभित्त्वा विनिष्पीड्यभिन्नामञ्जननामिकाम् ३५ शिलैलानत सिन्धूत्थैःसक्षौद्रैःप्रतिसारयेत् । अथतर्पणवंवच्मिनेत्र तृप्तिकरंपरम् ३६ यन्नूक्षंपरिशुष्कञ्चनेत्रंकुटिलमाविल

धान) आदि यूँद डाले ऊपरकी पलकपर लेपकरै परन्तु वरायदे इसे बिडाल कहै इसकी मात्रा मुखलेप समान जानो ॥ २९ ॥ (सर्वाक्षिरोग पर बिडाल) मुलेठी, गेरू, सेंधव, दारुहल्दी व रसवत ये पांचों समान पानीमें पीसि लेपकरै तौ सब नेत्राभिष्यन्द जायँ ॥ ३० ॥ (पुनः) रसौत जलमें पीसि लेपकरै अथवा हड़, सोंठ घीकुवार, चीता, अनारदाना ॥ ३१ ॥ अथवा वच, हल्दी व सोंठ या सोंठ, गेरू ये भिन्न २ पानी में पीसि लेप कियेसे सब नेत्ररोग दूरहोयँ (पुनः) सेंधव व लोधको भूनि मोम घीमें रगरि अंजन करि लेप भी करै तौ बेगही नेत्ररोग अच्छे होयँ (पुनः) नींबूरसको लोहपात्रमें रगरि ॥ ३२ । ३३ ॥ गाढाभये लेप किये से नेत्रबाधा हन होय (अर्मरोगपर लेप) भांगरेके रसमें मरिचको रगरि ॥ ३४ ॥ लेप करै तौ सब अर्मरोग नाशकरै यह राजप्रयोग है (प्रतिसारण अंजन-नामिका पिडिका पर) जब आंखिमें फोड़ा होतीहै इस पिडिका पर पकजावे फोरि अंगुली से दाबि निचोड़ ॥ ३५ ॥ मैनसिल, इलायची, तगर, सेंधव पीसि शहदमें रगरि लगावे तौ पिडिकाको दूरकरै ॥ (नेत्रपर तर्पण) नेत्रके संतुष्ट करने को वर्णन करते हैं ॥ ३६ ॥ रूखा योग्य जो नेत्र

म् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ३७ ति
मिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुक्राक्षिपाक
शोथाभ्यायुक्तंवातविपर्ययैः ३८ तन्नेत्रंतर्पणैर्ज्येयंनेत्रक
र्मविशारदैः । दुर्दिनात्युष्णशीतेषु चिन्तायासभ्रमेषु
च ३९ अशान्तोपद्रवेचाक्ष्णतर्पणंनप्रशस्यते । वाता
तपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः ४० आधारौमाषचूर्णे
नक्लिन्नेनपरिमण्डलौ । समौदृढावसम्बाधौ कर्त्तव्यौनेत्र
कोशयोः ४१ पूरयेद्घृतमण्डेन विलीनेनसुखोदकैः ।
अथवाशतधौतेन सर्पिषाक्षीरजेनवा ४२ निमग्नान्य
क्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेवहि । पूरयेन्मीलितेनेत्रे त
तउन्मीलयेच्छनैः ४३ धारयेद्वर्त्मरोगेषुवाङ्मात्राणांश
तंबुधः । स्वच्छेकफेसन्धिरोगेमात्रापञ्चशतंहितम् ४४
शुक्लेचषट्शतंकृष्णरोगेसप्तशतंमतम् । दृष्टिरोगेष्वष्ट

रूखे १ कठोरता व गुरुता युक्तहों झरित वरुनी शिर उत्पात, कृच्छ्रोन्मीलन कहे जल्दी पलकें लगें ॥ ३७ ॥ तिमिर, अर्जुन, फुल्ली, अभिष्यन्द, अधिमन्थ शुक्राक्षिपाक, सूजन और वातसंबन्धी व्यथा ॥ ३८ ॥ ये रोग तृप्तियोग्य हैं (तर्पण वर्जित) दुर्दिनमें अति उष्णकाल में अतिशीतकाल में चिन्ता परिश्रम और भ्रमों में ॥ ३९ ॥ और यदि नेत्र उपद्रव शान्त न हों तो ये तर्पण लायक नहीं कहाते हैं (तर्पणविधान) जिस स्थानमें बयारि, गरमी व धूरि न जाय इनके बचावको ठौर रोगी उताना पौढ़ै ॥ ४० ॥ तब उसके नेत्रों के चारों ओर जो हड्डी है तिसपर उड़द की पीठीले मेड़बाधै जैसे कटोरी दिवली होती है तब आंखि मुँदवाय उसमें पिघला घी वा औषधों का मंड करि वा सुखोष्ण जल वा सौबारका धोया घृत वा दूधका फेन वा नवनीत (नयनू) इनमें से कोई भरे ॥ ४१ । ४२ ॥ कुछ वेरमें धीरे धीरे पलक मिनमिलावै जिसमें सूक्ष्मसी औषध भीतर भी जाय ॥ ४३ ॥ (तर्पणमात्रा) जो पलक वा पोटे के रोगों पर तर्पण हो तौ सौ वाङ्मात्रा ताईं औषध भरी राखै जो कफादिजन्य नेत्रमें कोई व्याधिहो तौ पांचसै मात्रा पर्यन्त औषध स्थिर रहै ॥ ४४ ॥ सफेदी के

शतमधिमन्थेसहस्रकम् ४५ सहस्रंवातरोगेषुधार्यमेवंहि
तर्पणे। स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्येरितंततः ४६ यथा
स्वंधूमपानेनकफमस्यविशोधयेत्। एकाहंवात्र्यहंवापि
पञ्चाहंचेष्यतेपरम् ४७ तर्पणेतृप्तलिङ्गानिनेत्रस्येमानि
भावयेत्। सुखस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यंवर्णपाटवम् ४८ नि
वृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच। अथसाश्रुगुरु
स्निग्धंनेत्रंस्यादतितर्पितम् ४९ रूक्षमस्राविलंरुग्णं
नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम्। रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोः
स्यात्प्रतिक्रिया ५० अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिपुटपाकस्य
साधनम्। द्वौबिल्वमात्रौमांसस्यपिण्डौस्निग्धौसुपेषि
तौ ५१ द्रव्याणांबिल्वमात्रन्तुद्रवाणांकुडवोमतः। तदे
कस्थंसमालोड्यपत्रैःसुपरिवेष्टितम् ५२ पुटपाकेनतस्य

रोग में छःसै ताईं काले डेले के रोगमें सातसै ताईं रहै पुतरी रोग में आठसै ताईं अधिमन्थ ॥ ४५ ॥ वा वात रोग में हजार मात्रा ताईं औषध भरे रहै (तर्पण में कफाधि के उपाय) जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्नहो तो यव पीसि धूमपान कराय कफका शोधनकरै (तर्पणमें दिनप्रमाण) तर्पण एक दिन व तीन दिन व पांच दिन करै ॥ ४६ । ४७ ॥ (सम्यक् तर्पणलक्षण) तर्पण अच्छाहो तो सुखसे सोवै जागै नेत्र निर्मलहों और कांति बढ़ै ॥ ४८ ॥ दृष्टि शुद्धहो रोग नाश पलकें हलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं (अति-तर्पणलक्षण) अतितर्पण से नेत्र पानी बहावैं भारी रहैं व चिप निकारैं ॥ ४९ ॥ (हीनतर्पणलक्षण) नेत्र तेज लाल मैले युक्त व रोग करनेवाले हो (नेत्र सूक्ष्म स्निग्ध यत्न) जो नेत्र चिकने हों तो रूक्ष उपाय करै रूखेहों तो स्निग्ध उपायकरै ॥ ५० ॥ (पुटपाक की रीति कहते हैं) हरि-णादि मांस दोपल महीन करि एकपल घृतादि स्निग्ध मिलाय ॥ ५१ ॥ एकपल सूखी औषध दूध व द्रवपदार्थ कुडवभर ये सब मिलाय गोला बांधि पत्ता आदि पत्र से वेष्टितकरि ॥ ५२ ॥ काश्मरी आदि चन्दन इत्यादि करलेप कर गोला

१ तर्पणरूप औषध को नेत्र मुंदाय ऊपरसे डालते हैं। २ पुटपाक उसको कहते जो रसका नेत्र पर भाप धीरेधीरे देते हैं वेरस इसनाही नेत्र पर लगाते हैं॥

कृत्वांगुल्यायात्तद्रसम्मुखः। तर्पणोक्तविधानेनयथावदुपचा
रयेत् ५३ दृष्टिमध्येनिपेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः।
स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ५४ हितःस्नि
ग्धोतिरूक्षस्यस्निग्धस्यापिहिलेखनः। दृष्टेर्बलार्थमित
रःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ५५ सपिर्मांसवसामज्जामेदः
स्वाद्वौषधैःकृतः। स्नेहनःपुटपाकश्च धार्योद्वेवाक्छते
दृशोः ५६ जाङ्गलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः। कृ
ष्णलोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ५७ समुद्रफेन
कासीसस्रोतोजलधिमस्तुभिः। लेखनोवाक्छतंधार्यस्त
स्यतावद्विचारणम् ५८ स्तन्यजाङ्गलमध्वाज्यतिक्तकद्र
व्यपाचितः। लेखनात्त्रिगुणोधार्यः पुटपाकस्तुरोपणः
५९ वितरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापत्तिदर्शने। अथसम्प

निकालि रस निचोरि नेत्रपर मेसला चालि रसभरै॥ ५३॥ (नेत्रपुटपाक रस धारण विधान) पुटपाक रस स्नेहन, लेखन व रोपण भेदकरि ये तीन प्रकारका है रोगी को उताना सुलाय नेत्र खोलिकै भीतर डारै॥ ५४॥ (स्नेहादि भेद॥ पुटपाकक्रिया) रूखे नेत्रपर चिकना चिकनेपर रूखा पुटपाक करना सबलदृष्टि पर रोपण पुटपाकयोग्यहै जो नेत्रमें दुष्टरोग व रक्तपित्तव्रण व वायु उपद्रवहो तो आनेवाले श्लोक में कही द्रव्य धारेण पुटपाक करो॥ ५५॥ (स्नेहन पुटपाक) घृतमें हरिणादि मांस, वसा, मज्जा, मेदा और स्वाद्वौषध "काकोल्यादिगणका चूर्ण" शराव एककरि पीसि गोलाराधि पुटपाक करि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रा तक राखै इसे पुटपाक कहते हैं॥ ५६॥ लेखन पुटपाक यथोचित करै मृगोंका यकृत्, मांस, लोहचूर्ण, तांबा, शंख, मूंगा, सेंधव॥ ५७॥ समुद्रफेन, कसीस, सुरमा व बकरी के दहीका पानी, पूर्वोक्त रीति पुटपाकरस नेत्रमें सौमात्रातांई राखै यह लेखन पुटपाक कहाताहै॥ ५८॥ (रोपण पुटपाक) स्त्रीका दूध, मृगमांस, मधु, घृत व कुटकी ये सब मिलाय पुटपाककरि रसले आंखों में देय यह रोपण पुटपाक है तीनसै मात्रातक राखै जो पुटपाक न्यूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहैं व निमेषका दोष उत्पन्न होय

कदोपस्य प्राप्तमञ्जनमाचरेत् ६० हेमन्तेशिशिरेचैवं मध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते। पूर्वाह्णेचापराह्णेच ग्रीष्मे शरदि चेष्यते ६१ वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेवसन्तेचसदाहितः। लेखनंरोपणंचैव तथास्यात्स्नेहनाञ्जनम् ६२ लेखनं क्षारतीक्ष्णाम्लरसैरञ्जनमिष्यते। कषायतीक्ष्णरसयुक् सस्नेहंरोपणंमतम् ६३ मधुरस्नेहसम्पन्नमञ्जनंचप्रसादनम्। गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यञ्जनानिच ६४ कुर्याच्छलाकयाङ्गुल्याहीनानिचयथोत्तरम्। श्रान्तेप्ररुदिते भीतेपीतमद्येनवज्वरे ६५ अजीर्णेवेगघातेचनाञ्जनंसंप्रशस्यते। हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तिन्तीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ६६ प्रमाणंमध्यमेध्यर्द्धंद्विगुणंतुमृदौभवेत्। रसक्रियातूत्तमा

तन पके हुये सदृश तर्पणक्रिया करै तो पूर्वोक्तहोय (संपक दोष अंजन०) जिसकी आखिदेस भलीभाति पकचुकीहों तो उसके नेत्रों में अंजन लगाना फिर पँचयें दिन लगावै ॥ ५६ । ६० ॥ और साधारण में हेमंत व शिशिरऋतु में मध्याह्न में लगावै तथा ग्रीष्म व शरद् में पहर दिन चढ़े और पहर दिनरहे लगावे ॥ ६१ ॥ वर्षा में बरसता न हो बदरी न हो उष्मा अधिक न हों तब लगावै वसन्त में सब समय अंजनलगाना हितहै (अञ्जन भेद) अञ्जन लेखन, रोपण और स्नेहन भेदसे तीन प्रकारकाहै॥ ६२ ॥ सो तीक्ष्ण खट्टा, दो रस लेखन अञ्जन जानना कषाय कटु स्नेहन युक्त दो रस रोपण जानो ॥ ६३ ॥ मधुर रस स्नेह युक्त प्रसादन स्नेह जानो (अञ्जन प्रकार) गोली अञ्जन, रस अञ्जन, चूर्ण अञ्जन॥ ६४॥ गोलीसे रसांजन श्रेष्ठ रसते चूर्णांजन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अंगुली से लगावे (अञ्जन अयोग्य) थकित, रोनेंवाला, भयभीत, मद्यपिये, नवीनज्वरी ॥ ६५ ॥ अजीर्णी व मूत्रादिरोधी इन्हें अञ्जन अयोग्यहै (तीक्ष्णांजन की वर्त्ती) मेरजीबीज सम मोटी बनावै ॥ ६६ ॥ मध्यम में डेढ़ बीज सम मृदु में दो बीज सम गीले अञ्जन में मात्रा तीन बिडंगसम उत्तमहै दो बिडंगसम मध्यमहै एक बिडंग समान छोटी मात्राहै (शुष्क वैरेचनांजन प्रमाण) वैरेचन अञ्जन

स्यात्त्रिविडङ्गमिताहिता ६७ मध्यमाद्विविडङ्गास्याद्धी
नास्वेकविडङ्गका । वैरेचनिकचूर्णंतुद्विशलाकंविधीयते
६८ मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नैहिकेञ्जने ।मुखयोःकु
ण्ठिताश्लक्ष्णाशलाकाष्टाङ्गुलोन्मिता ६९ अश्मजाधा
तुजावास्यात्कलायपरिमण्डला । ताम्रलोहाश्मसञ्जाता
शलाकालेखनेमता ७० सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहने
मता । अङ्गुलीचमृदुत्वेनकथितारोपणेबुधैः ७१ सायं
प्रातश्चाञ्जनंस्यात्तत्सदानैवकारयेत् । नातिशीतोष्णवाता
भ्रवेलायांसम्प्रशस्यते ७२ कृष्णभागादधःकुर्यादपाङ्गंया
वदञ्जनम् । शङ्खनाभिर्विभीतस्य मज्जापथ्यमनःशिला
७३ पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् । छागीक्षीरे
णसम्पिष्यवर्तिंकुर्याद्यवोन्मिताम् ७४ हरेणुमात्रांसंघृष्य
जलैःकुर्यादथाञ्जनम् । तिमिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलम
र्बुदम् ७५ रात्र्यन्धंवार्षिकंपुष्पंवर्तिश्चन्द्रोदयाभवेत् ।

सलाई से नेत्रमें दोबार देय ॥ ६७ । ६८ ॥ मृदु अञ्जन का चूर्ण तीन बार फेरे घृतादि युक्त चूर्ण चारबार देय, वैरेचन कहे जिसके लगाने से नेनन से पानी गिरै (शलाका प्रमाण) पत्थर वा धातु की सलाई आठ अंगुल की मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण लेखन सलाई तांबे वा लोहेकी बनावै ॥ ६९ । ७० ॥ स्नेहन अञ्जनकी सोने वा चांदी की बनावै रोपण मृदुता से अंगुली बोरि नेत्रन में आंजै ॥ ७१ ॥ (अञ्जनसमय) अञ्जन सन्ध्या वा प्रभातकाल करै सदा समय न करै न अतिशीत न उष्ण कालमें न अतिवायु में न बदरी में अंजन करै ॥ ७२ ॥ और नेत्र में काले भाग के तरे करै (चन्द्रोदयवर्ती) शंखकी, बहेड़े की मींगी, हड़, मैनशिल ॥ ७३ ॥ पीपरि, मिर्च, कूट और बच ये आठों समानभाग ले बकरी के दूध में बहुत थोडि यवभरि ॥ ७४ ॥ मेवड़ी बीजके समान बत्ती बनाय पानी में रगरि नेत्र में आंजै जो तिमिर, मांसवृद्धि, काच बिंदु, पटलरोग, अर्बुद ॥ ७५ ॥ रतौंधी वर्षभरकी और फुली ये सब दूरहोयं (शुक्रादिकपर

पलाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभाविता ७६ करञ्जबीजव
र्तिस्तुशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत् । समुद्रफेनसिन्धूत्थशङ्ख
शौण्ड्यण्डवल्कलैः ७७ शिग्रुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्र
वल्लिखेत् । दन्तैर्दन्तवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्भवैः ७८ श
ङ्खमुक्ताम्भोधिफेनयुतैःसर्वैर्विचूर्णितैः । दन्तवर्तिःकृता
श्लक्ष्णंशुक्राणांनाशिनीपरा ७९ नीलोत्पलंशिग्रुबीजंना
गकेसरकन्तथा । एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितन्द्राविनाश
येत् ८० तिलपुष्पाण्यशीतिःस्युःषष्टिसङ्ख्याकणाभवे
त् । जातीकुसुमपञ्चाशन्मरिचानिचषोडश ८१ सूक्ष्मंपि
ष्ट्वाम्बुनावर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिमिरार्जुनशुक्राणां
नाशिनीमांसवृद्धिहृत् ८२ एतस्याश्चाञ्जनेमात्राप्रोक्ता
सार्द्धहरेणुका । रसाञ्जनंहरिद्रेद्वेमालतीनिम्बपल्लवाः ८३

लेखनवर्ती) ढाक के फूलका रस करंज की मींगी कईवार घोटि घोटि बत्ती स्वरूप वर्ता बनाय पानी में रगरि नेत्रमें आजै तो फुल्ली व मासवृद्धि आदिको दूर करती है जैसे शस्त्र से शुद्ध होजाती है (पुनः) समुद्रफेन, सेंधा, शङ्ख, मुरगे के अण्डे का छिलका ॥ ७६ । ७७ ॥ सहिंजन के बीज ये पांचों समान भागले महीनकरि जलमें पीसि गोली बाय सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरैतो शस्त्रादि का कुछ काम नहीं रहता (लेखनी दन्तवर्ती) हाथी, घोड़ा, वराह, ऊंट, बैल, बकरा, खर इन सातोंके॥७८॥ दांत शंख, मोती व समुद्रफेन इन सबोंका चूर्णकरि जलमें पीसि गोली बांधि सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरे से फुल्ली गिरिजाती है ॥७९॥ (तन्द्रानिवारण लेखनीवर्ती) नीलकमल, सहिंजनबीज और नागकेसर ये तीनों सम अति महीन पानीमें पीसि गोली करि सुखाय पानीमें घिसि आजै तो तंद्रा दूरहो ॥ ८० ॥ (रोपणीकुसुमवर्ती) तिलपुष्प अस्सी ८० पीपरि दाना साठि ६० चमेली पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें महीन पीसि देद मेवड़ीबीज तुल्य बत्ती बनाइये इसे कुसुमिका वर्ती कहते हैं इसको आजै तो तिमिर, अर्जुन, फुल्ली व मासवृद्धि ये सब दूरहोयँ॥८१ । ८२॥ इसके आजनेकी मात्रा डेढ़मेवड़ीबीज मात्र कही है (रसौंधिपर वर्ती) रसौंत

गोशकृद्रससंयुक्तावर्तिर्नक्तान्ध्यनाशिनी। धात्र्यक्षपथ्या
बीजानिएकद्वित्रिगुणानिच ८४ पिष्ट्वावर्तिञ्जलैः कुर्या
दञ्जनंद्विहरेणकम् । नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्त
था ८५ तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थसिताशङ्खमनःशिलाः। गै
रिकोदधिफेनौचमरिचंचेतिचूर्णयेत् ८६ संयोज्यमधुना
कुर्यादञ्जनार्थंरसक्रियाम्। वर्त्मरोगार्मतिमिरकाचशुक्रा
पहारकम् ८७ वटक्षीरेणसंयुक्तंमुख्यःकर्पूरजंरजः। क्षिप्र
मञ्जनतोहन्तिकुसुमंचद्विमासिकम् ८८क्षौद्राश्वलालासं
घृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जयेत्। अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योद
यादिव ८९ जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंकटुकीवचा। सैन्ध
वंबस्तमूत्रेणपिष्टंतन्द्राघ्नमञ्जनम् ९० शिरीषबीजगोमूत्र
कृष्णामरिचसैन्धवैः।अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिला

हल्दी, दारुहल्दी, चमेली पत्र और सेंधव ये पांचों समान ॥ ८३ ॥ गोबरकेपानी में गोली बनाय आंजेसे रतौंधी नाशहोवें (नेत्रस्राव पर रसेन्द्रवर्ती) आंवला मिंगी १ भाग बहेडा मिंगी २ भाग हड़मिंगी ३ भाग ॥ ८४ ॥ जलमें महीन पीसि दो मेवड़ी बीजसम गोलीकरि पानीमें घिसि आंजनेसे पानी बहना व वात रक्त जन्य पीडा मिटजातीहैं॥ ८५॥ (रसक्रिया) तूतिया, सोनामाखी, सेंधव, मिश्री, शंख, मैनशिल, गेरु, समुद्रफेन और मिरच ये नव सम भागले सूक्ष्म पीसि ॥ ८६ ॥ शहद मिलाय गोली बांधि अञ्जन करेसे पलकरोग, तिमिर, अर्म, काच-बिन्दु और फुल्ली ये रोग दूरहोवें ॥ ८७ ॥ (शुक्रपर रसक्रिया) बटदूध व शुद्धकपूर पीसि अञ्जनकरे दोमासकी फुल्ली भी दूरहो ॥ ८८ ॥ (तन्द्रापर लेखनी रसक्रिया) शहद और घोड़ेकी लारसे मरिच घिसके अञ्जन करनेसे ऐसे तन्द्रा दूरहो जैसे सूर्यके उदयसे अन्धकार दूर होताहै ॥८९॥ (पुनरञ्जन) चमेली के पुष्प मूंगा, मरिच, कुटकी, बच और सेंधव ये सब समान भागले छागके मूत्रमें गोलीबांधि लगावै तौ तन्द्रा निवारणहो ॥ ९० ॥ (सन्निपात परलेखन रसक्रिया) सिरसबीज, पीपरि, मरिच, सेंधव, लहसुन, मैनशिल और बच ये सातों समानभागले गोमूत्र में पीसि आंजे तौ सन्निपात शान्त

स्रचैः ९१ दार्वीपटोलंमधुकंसनिम्बंपद्मकोत्पलम् । प्रपौ
ण्डरीकंचैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ९२ विपाच्यपादशेषंतु
पूतंनीत्वापुनःपचेत् । शीतेतस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादां
शकांनरः ९३ रसक्रियैषादाहाश्रुरक्तरोगरुजंहरेत् । र
साञ्जनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिला ९४ समुद्रफेनोल
वणंगैरिकंमरिचानिच । एतत्समांशंमधुनापिष्ट्वाप्रच्छिन्न
वर्त्मनि ९५ अञ्जनंक्लेदकण्डूघ्नम्पक्ष्माणिचप्ररोहति । गुडू
चीस्वरसःकर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम् ९६ सैन्धवंक्षौद्र
तुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् । अञ्जयेन्नयनेतेनविस्तारतिमि
रंजयेत् । काचंकण्डूंलिङ्गनाशंशुक्लकृष्णगतान्गदान् ९७
दुग्धेनकण्डूंक्षौद्रेणनेत्रस्रावंचसर्पिषा । पुष्पंतैलेनतिमिरं
काञ्जिकेननिशान्धताम् ९८ पुनर्नवाजयेदाशुभास्करस्तित

हो ॥ ९१ ॥ (नेत्रदाहपर रसक्रिया) दारुहल्दी, पटोल, मुलेठी, नींब, पद्माख कमल और श्वेतकमल ये सातों समभागले कूटके चौगुने पानी में क्राथकरि ॥ ९२ ॥ चौथाई रहै तब उतारि छानै फिर औटाय गाढ़ाहोय जब सिराय तब मधु मिश्री मिलाय अंजनकरै तौ नेत्र जलना, बहना, रक्तविकार व नेत्ररोग दूरहोवें (बरुनी रोगपर रसक्रिया) रसौत, राल, चमेली फूल, मैनशिल ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ समुद्रफेन, सेंधन, गेरू और मिरच ये आठों समानभागले शहददेके अञ्जन करै तौ पाकरोग वर्म ॥ ९५ ॥ चिपचिपाहट और खाज ये सब दूरहों और पलक झरना न झरै फिर जमै (तिमिररोगपर रोपणी रसक्रिया) गुर्चका स्वरस कर्षभर मधु व सेंधव मासे मासे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तौ पिल्लार्म, तिमिर, काचबिन्दु, खुजली, लिंगनाश, सफ़ेद कृष्ण ढेले के सब रोग दूरहों ॥ ९६ ॥ (अंजनांते अनोपान) जो अञ्जन करे सामहो तौ दूध घसि लगावै तौ खुजली मिटै शहद में लगावै तो जल बहना दूरहो घृतयुक्त से फुली दूरहो तिल युक्त लगाये से तिमिररोग दूरहो कांजी में लगाये से रतौंधी दूरहो ॥ ९७ । ९८ ॥ जैसे सूर्योदय से अंधकार दूरहो तैसे गदापुरैना से अधि-पान सहाय से सब नेत्र रोग दूर होते हैं (नेत्रस्रावपर रोपणी रसक्रिया)

मिरं यथा॥वव्वूलदलनिष्काथोलेहीभूतस्तदञ्जनात्९९ने त्रस्रावंजयत्येषःमधुयुक्तोनसंशयः। हिज्जलस्यफलंघृष्ट्वा पानीयेनित्यमञ्जनम् १०० चक्षुःस्रावोपशान्त्यर्थंकार्यमे तन्महौषधम्। कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमञ्जयेत् १ई षत्कर्पूरसहितंस्मृतंनेत्रप्रसादनम्। सर्पिःक्षौद्रंचाञ्जनंस्या च्छिरोत्पातस्यशान्तये २ कृष्णसर्पवसाशङ्खः कतकाफल मञ्जनम्।रसक्रियेयमचिरादन्धानांदर्शनप्रिया३ दक्षाण्ड त्वक्छिलाकाचैःशङ्खचन्दनगैरिकैः। द्रव्यैरञ्जनयोगोयं पुष्पार्मादिविलेखनः४ कणाच्छागयकृन्मध्येपक्त्वातद्रस पेषिता॥अचिराद्धन्तिनक्तान्ध्यंतद्वत्सक्षौद्रऊषणम् ५ शा णार्द्धमरिचंद्वौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः। शाणार्द्धंसैन्धवंशा णानवसौवीरकांजनात् ६ पिष्टंसुसूक्ष्मंचित्रायांचूर्णांजनमि

बबूरपनका क्वाथ अतिगाढाभये ॥ ९९ ॥ शहद मिलाय आंजै तौ निश्चय नेत्र से पानी बहना दूरहो (पुनर्नेत्रस्राव पर) निर्मली फल पानी में रगरि लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय ॥ १०० ॥ (नेत्रशुद्ध होने के अर्थ स्नेहनी रसक्रिया) निर्मली शहदमें घसि किंचित् कपूर मिलाय आंजै तौ नेत्र अरोग होयँ ॥ १ ॥ (शिरोत्पातपर रसक्रिया) घृत व शहद मिलाय अंजनकरै तौ शिरोत्पातरोग दूर होयँ ॥ २ ॥ (धुंधपर रसक्रिया) काले सापकी चरबी, शंख और निर्मली ये सब खरलकरि आंजै तौ अँधियारा दिखाई देना दूरहोकर साफ दिखाई देय ॥ ३ ॥ (लेखनचूर्ण अञ्जन) मुर्गेके अण्डे का छिलका सफेद कांच, शंख, चन्दन, गेरू व सैंधव ये द्रव्य समान अञ्जन करि आंजने से फुली मांसार्मादि नाशहों ॥ ४ ॥ (रतौंधी पर चूर्ण) छाग की करेजीपर पीपरि धरि पकाय पीपरि ले उसी मांसके रसमें रगरि आंजै वा सोंठि, मिर्च और पीपरि को शहद में घिसि आजै तो रतौंधी न रहै ॥ ५ ॥ (फुंहआदि पर) मरिच अर्द्धशाण, पीपरि व समुद्रफेन दोदो शाण सुरमा नव शाण ॥ ६ ॥ ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्रमें ले महीन सुरमा बनाय नेत्रों में आंजने से आंखि रतुआना, कांचबिन्दु, कफजन्य पीडा व मल इनमें नेत्रको

दंशुभम्।कण्डूकाचकफार्तानांमलानांचविशोधनम् ७ शि
लायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाज्ञाव्यवारिणा। गृह्णीयात्तज्जलंस
र्वंत्यजेच्चूर्णमधोगतम् ८ शुष्कंचतज्जलंसर्वंपर्पटीसन्निभं
भवेत्।विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः ९ कर्पूर
स्यरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत्।अञ्जयेन्नयनेतेनसर्वदो
षहरंहितत् १० सर्वरोगहरंचूर्णंचक्षुषोःसुखकारिच। अ-
ग्नितप्तंचसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः ११ सप्तवेलंतथा
स्तन्यैः स्त्रीणांसिक्तविचूर्णितम्।अञ्जयेन्नयनेतेनप्रत्यहं
चक्षुषोर्हितम् १२सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः।
गतदोषमपेताश्रुसंपश्येत्सम्यगाशुतत् १३ त्रिफलाभृङ्ग
शुण्ठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा।गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोना
गःप्रतापितः १४ तच्छलाकाहरत्येवसर्वांश्नेत्रभवान्गदा
न्। गतदोषमपेताश्रुसंपश्यन्सम्यगम्भसि १५ प्रक्षाल्या
क्षियथादोषंकार्यंप्रत्यञ्जनंततः। नवानिर्गतदोषेक्षिणधा

शुद्ध करै ॥ ७ ॥ (सर्व नेत्ररोगपर रसचूर्णांजन) खपरियाले अति महीन खरलकरि वासन में पानी भरि घोलि थँरोइले पानी निकारि पात्रमें भरि आंच में जरायके खुरचि लेय सो खरल में डारि त्रिफलाक्काथकी तीनभावना देय ॥ ८ । ९ ॥ तब उसका दशवा अंश कपूर मिलाय फिर घोटि सो नेत्र में आजे से सब रोग दूरहों ॥ १० ॥ नेत्र सुख पावै (सर्वाक्षिरोगपर सौवीर अंजन) सुरमा सातवार खरल करि करि तपाय त्रिफलाक्काथ में बुझाय ॥ ११ ॥ वैसेही सातवार स्त्री के दूध में बुझाय अतिमहीन पिसाय नेत्राजन करेसे सब नेत्ररोग दूरहोय यह नेत्रनको निःसंदेह हितकारक है ॥ १२ । १३ ॥ (सीसशलाका विधान) त्रिफलाक्काथ, भंगरारस व सोंठिकाथ इनकी पुट दिया सीसा गलाय गलाय घी, गोमूत्र, शहद, बकरीदूध सबनमें सातसात वार बुझाय ॥ १४ ॥ शलाई बनाय नेत्रमें फेरेसे सबरोग दूरहों इसलिये और अंजनादि भी इससे लगाना भला है ॥ १५ ॥ (प्रत्यंजनविधि) जब सीस-शलाका फेरने से दोष दूरहोके नेत्रसे आंसू गिरते हैं तिसके पीछे शीतल बड़े

वनंसम्प्रयोजयेत् १६ प्रत्यञ्जनंतीक्ष्णतस्तेनेत्रेचूर्णःप्रसादनः। शुद्धनागेद्रुतेतुल्यंशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् १७ कृष्णाञ्जनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रचूर्णयेत्। दशमांशेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णेप्रदापयेत् १८ एतत्प्रत्यञ्जनंनेत्रगदजिन्नयनामृतम्। जयपालस्यमज्जानंभावयेन्निम्बुकद्रवैः १९ एकविंशतिवेलंतत्ततोवर्तिंप्रकल्पयेत्। मनुष्यलालयाघृष्टातांनेत्रेतयाञ्जयेत् २० सर्पदष्टविषंजित्वासञ्जीवयतिमानवम्। भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते। जातरोगाविनश्यन्तितिमिराणितथैवच २१ शीताम्बुपूरितमुखःप्रतिवासरंयःकालत्रयेणनयनंद्वितयंजलेन। आसिञ्चतिध्रुवमसौनकदाचिदक्षिरोगव्यथाविधुरतांभजतेमनुष्यः२२ आयुर्वेदसमुद्रस्यगूढार्थमणिसञ्चयम्। ज्ञात्वाकौशिचद्बुधै

पात्रमें जलभरि शिरबोरि उस पानी में आंखि खोलि देखै फिर नेत्रधोय प्रत्यंजन लगावै सो आगेकहेंगे ॥ १६ ॥ (सदोषनेत्रपर निषेध) जिस नेत्रमें दोषकी है तौ नेत्र धुवावै क्योंकि तीक्ष्णअंजन कर नेत्र सन्तप्तहों तिससे प्रत्यंजन प्रसाधनकरै सो कहते हैं (प्रत्यञ्जन चूर्ण) शुद्ध सीसागलाय समभाग शुद्ध पारादे ॥ १७ ॥ तब दो भाग सुरमादे उतारिले सब खरलकरि दशवां अंश कपूर दे फिर घोटै ॥ १८ ॥ इसे प्रत्यंजन कहते हैं इससे सम्पूर्ण नेत्ररोग नाश होते हैं और यह आंखिको अमृत है (सर्पविषनिवारण अञ्जन) भीतररा अंकुर दूर किया जमालगोटा नींबूरस में इक्कीस पुटदे घोटि गोली बनाय मनुष्यकी लारसे घिस सर्प डसे की आंखियों आंजै ॥ १९ । २० ॥ तौ विष शान्तहो मनुष्य जियै भोजन करके हाथ में घसै और नेत्रों में लगावै तो नेत्रों के तिमिरादि रोग नाश होवैं ॥ २१ ॥ (शीतलजल प्रकार) जो मनुष्य नित्यप्रति तीन वेला शीतल जल से कुल्ले कियाकरै व मुख धोया करै और नेत्रों को छीटेदेकै सींचाकरै वा पात्रमें भरि नेत्र उन्मीलन किया करै उस मनुष्य को नेत्रबाधा कभी न होय ॥ २२ ॥ (अथ ग्रन्थप्रशंसा) आयुर्वेदसमुद्र के विषय गूढार्थरूपी मणि संचित हैं तिनको अश्विनीकुमार व अश्वि-

स्तैस्तुकृताविविधसंहिताः २३ किञ्चिदर्थंततोनीत्वाकृते यंसंहितामया । कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वन्तुसाधवः २४ विविधगदार्तिदरिद्रनाशनंयाहरिरमणीवकरोतियोगरलैः । विलसतुशार्ङ्गधरस्यसंहितासाकविहृदयेषुसरोजनिर्मलेषु २५ अल्पायुषामल्पधियामिदानींकृतंसमस्तंश्रुतिपाठशक्ति । तदत्रयुक्तम्प्रतिबीजमात्रमभ्यस्यतामात्महितंप्रयत्नात् २६ इति त्रयोदशोऽध्यायः १३॥ इति तृतीयःखण्डः ॥

वैद्यादिक मुनियोंने सम्यक्प्रकार स्वसंहिता शुद्धकरि राखा ॥ २३ ॥ किञ्चित् सारांश ले शार्ङ्गधर ने सश्रम करी इसे साधुजन कृपाकरि देखें ॥ २४ ॥ (ग्रन्थपाठफलम्) जिन वैद्य कविनके निर्मल हृदयकमल में काथादि योगरत्न विलास करें ते शार्ङ्गधरसंहिता लक्ष्मी इव धारण करें हैं वैसी लक्ष्मी है कि रोगग्रसित दरिद्रनके दरिद्रको नाश करती है ॥ २५ ॥ इस कलियुगने मनुष्यों की आयु और बुद्धिको अल्प करदिया इस कारण आयुर्वेद पढ़ने की शक्ति नहीं इससे आत्मरक्षणार्थ इस आयुर्वेद बीजमात्र में अभ्यास करें ॥ २६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेउत्तरखण्डेजयपालकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥
इति शार्ङ्गधरस्यतृतीयखण्डस्समाप्तः ॥

२०२५५

(समाप्तोयंग्रन्थः)